हुमायूं नामा ।

अर्थात्

मुगल बादशाह हुमायूं का
जीवन चरित्र ।

जोधपुर निवासी

मुंशी देवीप्रसाद मुन्सिफ

लिखित ।

—:०:—

कलकत्ता,

भारतमित्र प्रेसमें कालीपद घोष

द्वारा मुद्रित ।

संवत् १९६९ विक्रमीय ।

57

1912

भूमिका।

हुमायूं बादशाहने अपने बाप बाबर बादशाहकी समान अपना इतिहास आप नहीं लिखा, जिससे उनकी और वृत्तान्तोंकी साथ साथ दुःख, दारिद्र्य, हानि, अनिष्ट और अपमानकी आदिकी सब बातें सर्वसाधारणके जाननेमें वैसी ठीक ठीक नहीं आ सकती, जैसी बाबर बादशाहके बाबरनामेसे आ जाती हैं।

अकबर बादशाहके वजीर और मीर मुनशी अबुल फजलने अकबरनामेके पहले दफतरमें हुमायूं बादशाहका वृत्तान्त बहुत विस्तारसे लिखा है, जो मानो इनके राज्यका स्वतन्त्र इतिहास ही है; लेकिन बाबरनामेके पढ़े पीछे जो कोई इनके जीवन चरित्रमें कालचक्रके प्रभाव और उतारचढ़ावकी घटनाओंके वैसे ही सच्चे सच्चे खिंचे हुए चित्र देखा चाहें, तो उसमें इतने थोड़े मिलेंगे, जिनका मिलना न मिलनेके बराबर है; परन्तु पाठकोंको निराश नहीं होना चाहिये। क्योंकि उनके सौभाग्यसे यह कमी भी उसी बादशाहके एक खिदमतगार जोहर अकबरने पूरी कर दी है, जो सदा सेवामें रहता था और इतिहासकी रुचिसे अपने स्वामीका सारा अच्छा बुरा हाल जैसा कुछ देखता था लिख लिया करता था। उसकी लिखावट भी बहुत सुगम और सरल है। शेख अबुलफज्लकी मुनशीगरीकी भांति उसमें चुनाचुनी और शब्दाडम्बर नहीं है, तोभी जैसा कुछ यथार्थ वर्णन उसने प्रत्येक घटनाका लिखा है, वैसा अबुलफज्लने याती उसको अपने ग्रन्थनायकका अपमान समझकर नहीं लिखा है, या तुच्छ जानकर छोड़ दिया है; परन्तु वह इस समय बड़े कामका है; किसलिये कि अब इतिहासप्रेमियोंमें सरस्वती देवीसे प्रकृति देवीकी भक्ति अधिक देखी जाती है।

जौहरने हुमायूं बादशाहको जीवनयात्राके जो वृत्तान्त लिखे थे, उनका ग्रंथ उसने उनके मरनेसे ३२ बरस पीछे सन ९९५ हिजरी संवत् १६४३ में बनाकर सर्वसाधारके आगे रख दिया, जिसका नाम वाकेआत हुमायूंनी है ; परन्तु अबतक छपा नहीं है और न पूरा हमारे देखनेमें ही आया। इसलिये हमने अपने इस हुमायूंनामेमें ऊपर तो अकबरनामेके दूसरे दफतरका सार खेंचा है और नीचे जगह जगह वाकेआत हुमायूंनीसे उचित टिप्पणी की है। सच पूछो तो मनुष्य प्रकृति और स्वाभाविक गुणोंका जो साधारण चमत्कार हुमायूं बादशाहकी जीवनयात्रामें है और जिसका प्रभाव पढ़नेवालोंके मन और स्वभावपर पड़ सकता है, वह इसी टिप्पणीमें है, जिसके वास्ते हम सबको जौहर अकबरका उपकार मानना चाहिये।

हुमायूं बादशाहकी जीवनीमें भी मनुष्य जन्मके सुख दुःखका दृश्य उसी प्रकारसे देखनेमें आता है जैसा कि, बाबरकी जीवनीमें है। राज छूट जानेके पीछे जैसे कष्ट बापको हुए थे, वैसे ही बेटेको भी हुए और परिणाम भी दोनोंका सरीखा ही था। जिससे दुःखके पीछे सुख होनेकी लोकोक्ति, जो प्राचीन कालसे चली आती है, सिद्ध होती है।

हुमायूं बादशाहकी अधिक हानि और क्षति भाइयोंके विरोधसे हुई, जिनको बारंबार अपराध और वैरियोंके समान वर्ताव करनेपर भी उन्होंने प्राणदण्ड नहीं दिया और अपने बापके बचनका पालन किया, जो यह कह मरे थे कि, भाइयोंके अपराध क्षमा करना और किसी हालतमें भी उनकी जान मत लेना।

हुमायूं बादशाहका स्वभाव भी सीधा और सरल था, उदारता भी उनके चित्तमें बहुत थी। क्षमा और क्षमता भी थोड़ी नहीं थी।

फारसी भाषाके पूरे पण्डित और कवि थे, तुरकी तो उनके घरकी ही बोली थी। अरबी भी पढ़े थे और हिन्दीमें भी बात-

जीत कर सकते थे क्योंकि २० वर्षकी अवस्थामें काबुलसे यहां आये थे।

ज्योतिषी तो बहुत ही बड़े थे और ज्योतिषकी धुन ही अन्तमें उनकी मृत्युका कारण हुई। जिस सांझको छतपरसे गिरकर मरे हैं, उसी सांझको शुक्र उदय होनेवाला था और उसीको देखनेके लिये कोठेपर चढ़े थे। उन्होंने ज्योतिष विद्याके यन्त्र और यन्त्रराज भी बहुत संग्रह किये थे और ग्रहोंको बेधकर स्पष्ट करनेके लिये एक यन्त्रशाला बनानेके विचारमें थे; परन्तु अवसर अवकाश नहीं मिला।

और सुनिये इतनेपर आप ज्यालोजिस्ट भी थे और राज छूट जानेपर खजाना तथा पुस्तकोंके सन्दूकोंके साथ साथ रङ्ग बिरङ्गे पत्थरोंके भरे हुए सन्दूक भी लिये फिरते थे। चित्रकारीका शौक भी था, अच्छे अच्छे चित्रकारोंको पास रखते थे, जिनसे अपने पुस्तकालयमें अनेक प्रकारके चित्र खिंचवाते थे और शाहजादोंको चित्रविद्या सिखलाते थे।

उनकी बुद्धि भी बहुत तीक्ष्ण थी और उन्होंने उसके प्रभावसे जो नयी नयी चीजें निकाली थीं, उनका वर्णन विशेष करके मौलाना मोहम्मदके हुमायूंनामेमें है।

हुमायूं बादशाहने उम्र भी अपने बापके बराबर अर्थात् ५० वर्षकी पायी, जिसमें आधी तो बादशाह होनेके पहले बीत गयी थी और आधीमें भी अगले १० वर्ष तो सुख चैन और राज्यकी उन्नतिमें व्यतीत हुए और पिछले १५ वर्षोंमें ५ बहुत ही खराब थे, जिनमें राज्य बिगड़ा और राजधानी छोड़कर परदेशोंमें भटकना और नाना प्रकारके कष्ट उठाना पड़ा उसके पीछे दस वर्ष सुख दुःखमें लष्टम पष्टम निकले; परन्तु इतना अच्छा हुआ कि, अन्तमें गया हुआ राज्य फिर हाथ आ गया और दिल्लीकी बादशाही अपने बेटेके वास्ते सिरहाने रखकर छोड़ मरे।

इस असार संसारका यही नियम है, कोई यहां न सदा रहा

होन रहेगा। बापके पीछे बेटा और बेटेके पीछे पोता यही आवागवनका तांता लगा हुआ है ; परन्तु बहुधा नियमके विरुद्ध भी हो जाता है कि, बाप तो बैठा रहे और बेटा उठ जावे, यह आपत्ति मुझपर अभी बीती है और इसी कारणसे यह भूमिकाका इतनी देरसे विक्षिप्त रूपमें लिखी जा सकी है।

भादों सुदी ११, संवत् १९५९। — देवीप्रसाद, जोधपुर, मारवाड़।

विषय सूची।

हुमायूंनामा।

हुमायूं बादशाह।

सन् ९३७ हि०

हुमायूं बादशाह ४ जीकाद मंगलवार सन् ९१३ (चैत सुदी ४ सं० १५६५, ७ मार्च सन् १५०८ ई०) को काबुलमें माहम बेगमसे पैदा हुए थे और अपने बाप बाबर बादशाहके पीछे ९ जमादिउल अव्वल सन् ९३७ (पौष सुदी १० शुक्र सं० १५८७) को आगरेमें तख्तपर बैठे। उस वक्त उनकी उमर २४ वर्षकी थी।

कुछ दिनों पीछे उन्होंने एक नाव रुपयोंसे भरकर यमुनामें जलविहार करते हुए लोगोंको लुटायी। मिरजा कामरांको काबुल कंधारमें, मिरजा असकरीको संभलमें और मिरजा हिंदालको अलवरमें जागीरें दीं। बदख्शां मिरजा सुलेमाके ही पास रहने दी। इसी तरहसे और सब सरदारों और सिपाहियोंको खातिर और रियायत करके राजी किया। मोहम्मद जमान मिरजा भी जो बदीउल जमान मिरजाका बेटा, सुलतान (१) हुसैन मिरजाका पोता और बाबर बादशाहका जमाई था, और अकसर बिगड़ा हुआ रहता था, ताबेदारी करने लगा।

कालञ्जरपर चढ़ाई।

बादशाहने ५ तथा ६ महीने पीछे कालञ्जर जाकर उसके किलेको घेरा। १ महीने पीछे किलेदारने तङ्ग होकर हुक्म उठा-

(१) यह सुलतान हुसैन मिरजा हिरातका बादशाह था।

लिया और १२ मन सोना दूसरी चीजों समेत भेंटमें भेजा। बादशाहने उसकी ताबेदारी मान कर वह किला उसीके पास रहने दिया।

चुनारपर चढ़ाई।

कालञ्जरसे बादशाहने चुनार (१) गढ़के ऊपर चढ़ाईकी और वहां पहुंच कर उस किलेको घेरा।

सन् ९३८ हि०(संवत १५८८। ८९)

यह मजबूत किला सुलतान इब्राहीम लोदीके पास था और उसकी तरफसे जमालखां बचा रखता था। सुलतान इब्राहीमके पीछे जब जमालखां भी अपने कपूत बेटेकी दुशमनीसे मारा गया, तब शेरखांने चालाकीसे उसकी खूबसूरत औरतके साथ, जिसका नाम लाड मलिका था, निकाह करके किला लेलिया था। जब बादशाही लशकर वहां पहुंचा तब शेरखां अपने बेटे जलाल खांको किलेमें छोड़ कर बाहर निकल गया और वकील भेजकर फरेब और कपटकी बातें कहलायीं, बादशाहने भी वक्त देखकर कबूल करलीं। तब उसने अपने बेटे अबदुलरशीदको बादशाहकी खिदमतमें रहनेके लिये भेजदिया।

सन् ९३९ हि० (संवत १५८९। ९०)

बब्बन और बायजीद पठानोंने पूर्वमें फसाद कर रखा था। बादशाह उनके ऊपर चढ़ गये। बब्बन लड़ाईमें मारा गया और बादशाह सुलतान जुनैद बरलासको जौनपुरमें छोड़कर राजधानीको लौट आये।

सन् ९४० हि०(संवत १५९०। ९१)

जब बादशाहकी चढ़ाईकी खबरें मुलकोंमें फैलीं, तब सुलतान बहादुर गुजरातीने वकील और भेंट भेजकर दोस्ती करनी चाही। बादशाहने भी मेंहरबानीके फरमान भेजकर उसकी तसल्ली करदी।

---

(१) इसको चनार, चिनार और चण्डालगढ़ भी कहते हैं।

दीन पनाह शहर।

बादशाहने इसी सालमें दिल्लीके पास जमनाके किनारेपर एक नया शहर बसाया, जिसका नाम दीनपनाह रखा।

मोहम्मद जमान मिरजापर चढ़ाई।

फिर मोहम्मद जमान मिरजा, मोहम्मद सुलतान मिरजा, और उसके बेटे उलग मिरजाने सरकशी की। बादशाह इनके ऊपर चढ़ गये और गङ्गाके किनारेपर भोजपुरमें ठहर कर यादगार नासिर मिरजाको बहुतसा लशकर देकर भेजा। वह लड़ाईमें फतह पाकर मोहम्मद जमान मिरजा, सुलतान मिरजा और वलीखूब मिरजाको पकड़ लाया। बादशाहने मोहम्मद जमान मिरजाको तो कैद करके बयानेके किलेमें भेजदिया और उन दोनोंकी आंखोंमें सलाई फिरवा दी।

मोहम्मद जमान मिरजा एक जाली फरमान बनाकर कैदसे छूटा और सुलतान बहादुर गुजरातीके पास भाग गया।

मिरजा कामरां पञ्जाबमें।

मिरजा कामरांने बापका मरना सुनकर कन्धार तो मिरजा असकरीको सौंपा और आप काबुलसे पञ्जाबमें आया और एक रात फरेबसे शराबके नशेमें अपने अमीर कराचा बेगको बुराभला कहा, जिसपर वह भागकर लाहोरमें मीर यूनस अलीके पास चला आया जो बाबर बादशाहके वक्तसे लाहोरका हाकिम था। मीरने उसकी बहुत खातिर की और जब वह चाहता था अपने पास बुला लिया करता था। एक दिन उसने काबू पाकर मीरको पकड़ लिया और किलेके दरवाजोंपर अपने आदमी बैठाकर, मिरजाको खबर की। मिरजाने लाहोरमें आकर, अमल कर लिया और मीर यूनस अलीको कैदसे छोड़कर लाहोरमें हाकिम रहनेको कहा, मगर वह कबूल न करके बादशाहके पास चला आया।

मिरजाने सतलजतक, जो लुधियानेकी नदी कहलाती है, अपने आदमी पञ्जाबके परगनोंमें बैठाकर बादशाहसे पञ्जाब मांगनेको

लिये वकील भेजे। बादशाहने मेहरबानी और बापकी नसीहतसे, भाइयोंके साथ बिगाड़ करना मुनासिब न समझकर काबुल कन्धार और पञ्जाबका फरमान (पट्टा) मिरजा कामरांके नाम लिखा दिया।

मिरजाने खुश होकर एक गजल बादशाहकी तारीफमें कह भेजी, जिसके अखीर "शेर" (पद) का यह अर्थ था—

हे कामरां! जबतक कि दुनिया बाकी रहे,
दुनियाका बादशाह हुमायूं रहे।

बादशाहने इस गजलके इनाममें सरकार हिसार फीरोजा (हिसारका जिला) भी उसको देदिया।

सन् ९४१ हि०(संवत १५९१।९२)

बङ्गालपर चढ़ाई।

सन् ९४१ हि०में बादशाह बङ्गाल फतह करनेके इरादेसे पूरबको रवाना हुए। जब कसबे कनार जिले कालपीमें पहुंचे तो सुना कि सुलतान बहादुर गुजरातीने चित्तौड़के किलेको घेरकर बहुत सी फौज सुलतान अलावुद्दीनके (१) बेटे तातार खांके साथ की है, जिसका इरादा बादशाही मुल्कमें फिसाद करनेका है। इसपर बादशाह आगे जाना मुनासब न समझकर जमादिउलअव्वलके महीने (मगसर सुदी वा पोस बदी) में लौट आये।

सुलतान बहादुरका हाल।

जब मोहम्मद जमान मिरजा बयानेसे भागकर सुलतान बहादुर गुजरातीके पास गया था, तो बादशाहने सुलतानको लिखा था कि, जो लोग बागी होकर गुजरातमें गये हैं, उनको या तो पकड़ कर हमारे पास भेजो या अपने राजसे निकाल दो, क्योंकि दोस्तीकी रूसे ऐसा ही होना चाहिये।

इसका जवाब सुलतान बहादुरने यह दिया था कि, जब कोई

(१) यह दिल्लीके बादशाह सुलतान सिकन्दर लोदीका भाई था और रूठकर गुजरातमें सुलतान मुजफ्फरके पास चला आया था।

बड़ा आदमी हमारी शरणमें आवे और कुछ समाधान पावे तो दोस्ती नहीं टूट सकती। सुलतान सिकन्दर लोदी और सुलतान मुजफ्फरके आपसमें बहुत ही मेल था। उस वक्त सुलतान सिकंदरका भाई और कई शाहजादे आगरे और दिल्लीसे गुजरातमें आये और उनकी खातिर हुई; तोभी उन दोनोंकी दोस्तीमें कुछ फर्क नहीं पड़ा।

बादशाहने फिर लिखा कि, जो बात दोस्तोंकी सचाईमें खलल डाले वह कभी नहीं होनी चाहिये, कि जिससे दुश्मनी पैदा न हो। तुम हमारी नसीहत सुनो—मिरजाको यहां भेज दो, या उसकी तरफदारी छोड़ दो, नहीं तो किस दलीलसे तुम्हारी दोस्तीका भरोसा किया जा सके और जो तुमने इस मामलेकी मिसाल अलाउद्दीनके किस्सेसे दी है वह और बात थी और यह और बात है। शायद तुमको तवारीखके दफ्तरोंसे मालूम हुआ होगा कि, एलद्रुम बायजीदने दुश्मनी कर ली थी, तोभी हजरत साहिब किरां (अमीर तैमूर) रूमके ऊपर चढ़ाई करना नहीं चाहते थे; क्योंकि वह फरंगियोंसे लड़ रहा था। मगर जब करायूसुफ तुर्कमान और सुलतान अहमद जलायर भागकर उसके पास गये और हजरतने कई दफे नसीहतें लिखकर उसको उनकी तरफदारी करनेसे मना किया और उसने नहीं माना तब जो होना था सो हुआ। (१)

सुलतान बहादुरने कुछ न सुना और तातारखांकी बातोंमें आकर २० करोड़ पुराना रुपया गुजरातका (दिल्लीका ४० करोड़) रणथंभोरके किलेमें भेजा और लिख दिया कि, तातारखांकी सलाहसे नयी फौज रखनेमें खर्च किया जावे और तातारखांके बाप सुलतान अलाउद्दीनको (२) बहुत सी फौजसे कालिञ्जरकी तरफ

(१) लड़ाई हुई और एलद्रुम बायजीद पकड़ा गया।

(१) अलाउद्दीन सुलतान सिकन्दर लोदीका भाई सुलतान बहा-

रवाना किया। बुरहानुल मुल्कमुलतानी और बहुतसे गुजरातियोंको नागौर जाकर पंजाबपर चढ़ाई करनेका हुक्म दिया।

इस तरह अपने लशकरको बखेरनेसे बहादुरने जाना था कि, बादशाहके लशकरमें फतूर पड़ जायगा और हिन्दुस्थानकी बादशाहीका दावा लोदियोंको पहुंचता है। उनकी मदद करनेमें बादशाहसे कुछ बदअहदी नहीं है। यह सोचकर तातारखांको दिल्लीकी तरफ रवाना किया और आप चित्तौड़के ऊपर चढ़ा कि, वह किला भी फतह कर ले और काम पड़नेपर लोदियोंकी मदद भी करे।

तातारखांकी हार।

जब फौजें रवाना हुईं तब तातारखां खजाना खोलकर फौज भरती करने लगा। थोड़े ही दिनोंमें ४०००० पठान वगैरह उसके पास जमा हो गये और वह बयानेके ऊपर गया। हुमायूं बादशाहने कालपीसे आगरे आकर १०००० सवार मिरजा असकरी हिन्दाल और यादगार नासिर मिरजा वगैरहके साथ तातारखांके ऊपर भेजे जिन्होंने लड़कर उसको हरा दिया, यह सुनकर बाकीकी वे दो फौजें भी आपसे आप बिखर गयीं।

गुजरातपर चढ़ाई।

बादशाहका इरादा गुजरात लेनेका नहीं था। मगर जब सुल-

हीमका चचा था इसका नाम आलमखां था। सुलतान सिकन्दरके पीछे अलाउद्दीन नाम रखकर सुलतान इब्राहीमसे लड़ा और लड़ाईमें हारकर काबुल भाग गया। जब बाबर बादशाहने सुलतान इब्राहीमपर फतह पायी तो वह बादशाहके साथ था। मगर फिर बादशाहने इसका मतलब समझकर बदख़शांको भेज दिया और तातार खां गुजरातमें सुलतान बहादुरके पास चला गया। फिर अलाउद्दीन भी बदख़शांसे अफगानिस्तानमें भाग आया और वहांसे बलूचिस्तान होकर गुजरातमें जा पहुंचा।

तान बहादुरकी तरफसे यह हरकत हुई, तब बादशाह जमादिउल अव्वल सन् ९४१ हि०के शुरू (मगसर सुदी सं० १५९१)में आगरेसे गुजरात फतह करनेको रवाना हुए। जब रायसेनके पास पहुंचे, तब किलेवालोंने अरजी और भेंट भेजकर कहलाया कि, किला बादशाहका ही है और हम बादशाहके चाकर हैं। जब बहादुरका काम तमाम हो जायगा तो इस किलेसे क्या हो सकेगा।

बादशाह भी उस किलेके वास्ते वहां न ठहर कर मालवेको बढ़े। जब सारंगपुरमें डेरे हुए, तब सुलतान बहादुरको भी चित्तौड़में यह खबर लगी और उसने अपने नौकरोंसे सलाह पूछी तो बहुतोंने कहा कि, किलेकी मुहिम तो हर वक्त मयस्सर है और अभी किलेवालोंसे भी कोई नुकसान पहुंचनेवाला नहीं है। इस किलेका घेरा छोड़कर बादशाहपर चलें। मगर सदरखांने, जो बड़ा मौलवी था, कहा कि, पहिले किलेको फतह करें जो अब टूटनेपर है और जब हम काफिरोंपर आये हैं, तब मुसलमान बादशाह हमपर नहीं आयेगा और जो आयेगा तो काफरोंको छोड़कर उससे लड़ेंगे।

बहादुरने यह बात पसन्द करके वहीं पांव जमाया और ३ रमजान सन् ९४१ हि०(चैत सुदी ४ सं० १५९२)को चित्तौड़ तोड़-बादशाहकी तरफ कदम बढ़ाया।

बादशाह भी यह सुनकर उज्जैनसे बढ़े। मन्दसोरके लम्बे चौड़े तालाबके दोनों तरफ आकर दोनों लशकर ठहरे। फिर दोनों तरफके हिरावल (अगले लशकर) लड़े। बादशाहका हिरावल जीता और बहादुरका हारा, जिससे बहादुरका दिल टूट गया। तब ताजखां और सदरखांने कहा कि हमारा लशकर चित्तौड़ जीतकर आया है और अभी उसने बादशाही फौजकी लड़ाई देखी है। इसी लिये लड़ाईमें खूब जी लगायेगा; लड़नेमें देर नहीं करना चाहिये। तोपखानेके दरोगा रूमीखां और दूसरे कई लोगोंने सुलतानसे कहा कि, जब इतना बड़ा तोपखाना अपने साथ है, तब फिर तल-

वारोंसे क्यों कटें। तोपोंका किला बनाकर उसके आसपास खाई खोदें और पहले इन दूरके हथियारोंसे लड़ें। सो दुश्मनका लश्कर दिन दिन घटकर बिखर जावे। आखिर यही सलाह ठहरी और रोजमर्रा लड़ाई होने लगी।

एक दिन बादशाही लशकरके कुछ सिपाही शराब पीकर बहादुरीकी बातें कर रहे थे जिनसे, जोशमें आकर २०० आदमी हथियार बांधकर शत्रुकी छावनीपर गये और ४००० गुजरातियोंकी एक फौजको, जो चौकासी और रही थी, हराकर चले आये।

ईद रमजानके दिन (बैसाख सुदी २ संवत् १५९२ को) मोहम्मद जमान मिरजा ५।६ सौ आदमियोंसे लड़नेको आया और जलदीसे भागकर बादशाही फौजको अपने पीछे तोपखानेतक लगा ले गया। वहां बहुतसे मुगल मारे गये। इसपर भी बहादुरने २१ शव्वाल (जेठ बदी ८ संवत् १५९२) (१) इतवारको रातको सब तोपोंमें बारूद भराकर आग दिलवा दी। जिससे वे सब टूट फूट गयीं। फिर शाम होते ही बहादुर पास रहनेवाले ५।६ लोगोंके साथ डेरेसे निकलकर आगरेके रास्तेसे मंडूको रवाना हुआ। पीछेसे सदरखां वगैरह भी २००० सवारोंसे मंडूको चल दिये। मोहम्मद जमान मिरजा भी लाहोरको गया। उस दिन गुजरातियोंके लशकरमें बड़ी गड़बड़ मची हुई थी। बादशाह शामसे सुबहतक ३०००० सवारोंसे कमर बांधे खड़े रहे। जब पहर भर दिन चढ़ा, तब बहादुरका मंडूको भागना मालूम हुआ। तब बादशाही फौजने जाकर बहादुरका लशकर लूटा। बहुतसा धनमाल और हाथी घोड़े हाथ लगे। सुलतान मुजफ्फरका वजीर खुदावन्दखां पकड़ आया। बादशाहने उसपर बड़ी मिहरबानी की और यादगार नासिर मिरजा वगैरहको बहुतसी

(१) हिन्दुओंके हिसाबसे शनिकी रात।

फौजें देकर बहादुरके पीछे भेजा। फिर बादशाह भी मंडूसे कूच करके नालछेमें उतरे। यहां रूमीखां भी बहादुरके लश्करसे भागकर आ गया (१)।

मंडूकी फतह

१४ वें दिन सुलतान बहादुर इधर उधर चक्कर काटता हुआ चोलो महेसरकी तरफके दरवाजेसे मंडूके किलेमें पहुंचा और सुलहकी बातें करने लगा। इधरसे मोहम्मद मीरअली और उधरसे सदरखांने बैठकर यह बात ठहरायी कि; चित्तौड़ और गुजरात तो सुलतानके पास रहे और मंडू और उसके पासके इलाके बादशाह रखें; मगर इसी रातको किलेवाले तो थककर सो गये थे और बादशाही फौजके २०० सिपाही नसेनियां लगाकर किलेकी दीवारपर चढ़गये और नीचे कूदकर सामनेके दरवाजेपर आये और किवाड़ खोलकर बाहर निकले और अपने घोड़ोंपर बैठकर किलेमें फिर आये। उसके साथ दूसरे सिपाही भी अंदर आगये। मल्लूखां मंडूवाला (कादिरशाह) जो मोरचेका अफसर था यह हाल सुनकर सुलतान बहादुरके पास गया। सुलतान सोया हुआथा उसकी आवाज सुनकर उठा और ३।४ आदमियोंसे भाग निकला। रास्तेमें सलहदीका बेटा भोपतराय जो उसका मजलिसी था २० सवारोंसे आ मिला। सारे मैदानकी दर-

(१) इसका यह कारण था कि रूमीखांके कहनेसे ही बहादुर तोपखानेका किला बांधकर चारों तरफसे घिर गया था। मुगल तोपोंकी जदपर तो नहीं आते थे; दूरदूर रहकर रसद लूट लेते थे। गुजराती भूखों मरने और घोड़ोंको मारमार कर खाने लगे थे जो घास दाना नहीं मिलनेसे मरनेको थे। बहादुर इसी अलमसे तोपखाना उड़ाकर भाग निकला था और रूमीखांको पकड़कर मारना चाहता था।

बाजेपर २०० बादशाही सवार मिले। बहादुर उनको चीरता हुआ मल्लूखां और एक दूसरे नौकरके साथ निकल गया और सोननगरके किलेमें पहुंचा, जहां घोड़ोंको रस्सीसे बांधकर नीचे उतारा और आप भी बड़ी मुशकिलोंसे उतर कर गुजरातको भागा। चांपानेरके किलेमें पहुंचनेतक हजार पांच सौ सवार उससे आ मिले थे। उसने वहांके खजानोंमेंसे जितना कुछ पहुंच सका, बंदरदीपमें पहुंचा दिया।

इधर बादशाह दिल्ली दरवाजेसे मंडूके किलेमें दाखिल हुए। सदरखां उसी तरफ दरेखाना (ड्योढ़ी) पर खड़ा २ लड़रहा था। जखमी होगया था, तो भी अपनी जगह नहीं छोड़ता था। आखिर उसके आदमी बाग पकड़ कर उसको सोननगर ले गये। वहां उसके साथके बहुतसे आदमी भी जाकर बादशाही फौजसे घिरगये, जिसने ३ दिनतक किलेवालोंके घरोंको लूटा। फिर बादशाहने लूट की मनाही करदी और सदरखांको बुलाकर बहुत खातिर तसल्ली की।

गुजरातपर चढ़ाई।

फिर बादशाहने १०००० सवारोंसे गुजरातपर धावा करके लश्करको मंजिल दरमंजिल आनेका हुक्म दिया।

जब चांपानेरके पीपली दरवाजेके पास पहुंचे, तब इमादुल मुल्कके तालाबपर, जिसका घेरा ३ कोस था, खड़े होकर फौजका परा बांधने लगे। बहादुर यह सुनकर वहांसे भी खम्भातको भाग गया और शहरमें आग लगा गया। बादशाहने जाकर आग बुझवायी और हिन्दूबेग वगैरहको चांपानेरमें छोड़कर १००० सवारोंसे बहादुरका पीछा किया।

सन् ९४२ हि०

बहादुर खंभात पहुंचकर दीपको (१) चला गया और १०० जंगी जहाजोंको जो फरंगकी तरकीबसे बनाये गये थे, इस विचारसे कि कहीं बादशाही लोग इनपर चढ़कर पीछा न करें, जला गया।

(१) द्वारका।

इसी दिन शामको बादशाह खंभात पहुंचे और कुछ लोगोंको बहादुरके पीछे भेजकर आप वहीं ठहर गये।

मंडू और गुजरातकी फतह सन् ९४२ हि० (संवत् १५९२ सन १५३५) में हुई।

कंधारमें मिरजा कामरांकी फतह।

शाह ईरानके भाई साम मिरजाने बहुतसी फौज लाकर कंधारको घेरा था और वहांका हाकिम ख्वाजाकलांबेग ८ महीने-तक उससे लड़ता रहा था। आखिर एक शाबान ९४२ (माघ सुदी २ संवत् १५९२) को मिरजा कामरां एक बड़ा लशकर लेकर लाहोरसे कंधारको गया और साम मिरजापर लड़ाईमें फतह पाकर लाहोर आ गया।

मोहम्मद जमान मिरजाकी हार।

मोहम्मद जमान मिरजा जो गुजरातसे लाहोरको गया था, जब सिंधमें पहुंचा, तब वहांके मालिक शाह हुसैन, शाह अरगूंके बेटेने अपने यहां न ठहराकर लाहोर जानेको कहा कि, मिरजा कामरां तो कंधारको गया है और वह बड़ा मुल्क खाली पड़ा है उसको लेलो।

मिरजाने जाकर लाहोरको घेरा; मगर कामरांके ईरानियोंपर फतह पाकर लौट आनेसे ठहर न सका, सिंधको लौट गया।

मिरजा हैदर गोरगां।

इसी सालमें मिरजा हैदर गोरगां काशगरसे बदखशांका रास्ता निकालकर मिरजा कामरांके पास लाहोर आया।

कंधारमें शाह ईरान।

फिर शाह तुहमास्प खुद कंधारपर आये। ख्वाजाकलांबेगने सब कारखानोंको सजाकर किलेकी कुंजियां शाहके पास भेज दीं और कहलाया कि मेरे पास किलेदारी सामान नहीं है; न लड़नेकी ताकत है। न हाजिर होना नमकहलालीकी बात है, इसलिये सजा हुआ घर महमानको सौंपकर अलग होता हूं।

यह कचकार ठव्वे और उसके रस्तेसे लाहौर चला आया। मगर मिरजा कामरांने १ महीनेतक उसको सलाम करनेके लिये नहीं आने दिया और कहा कि क्यों मेरे आने तक न ठहरा।

मिरजा कामरांका कन्धार फतह करना।

मिरजा कामरां मिरजा हैदरको लाहोरमें छोड़कर कंधारको गया। शाह तुमास्प मिरजा बदागखां काचारको कंधारमें छोड़ गये थे। वह मिरजा कामरांके पहुंचने और किलेको घेरनेपर माफी मांगकर निकल गया और मिरजा कामरां कंधारके किलेको मजबूत करके लाहोर चला आया।

खम्भातको जलाना।

खंभातमें बादशाहके पास थोड़े आदमी देखकर मलिक अहमद लड़, और रुकुनदाऊदने, जो सुलतान बहादुरके अमीरोंमेंसे कोलीवाड़ेके पास रहतेथे, उधरके कोलियों और गंवारोंको छापा मारनेके वास्ते तैयार किया एक बुढ़ियाने आकर यह खबर बादशाहको दी। बादशाहने पूछा कि, यह खैरखाही तुझे कैसे सूझी। तो उसने कहा कि मेरा बेटा एक बादशाही नौकरके पास कैद है उसको इस इनाममें छुड़ाया चाहती हूं। बादशाहने उसके बेटेको तलाश करके दोनों मांबेटोंको पहरमें बैठा दिया और लशकरको तैयार करके आप अलग हो बैठे।

पिछली रातको ५।६ हजार भीलों और गंवारोंने आकर बादशाहके डेरेको लूट लिया। लूटमें बहुतसी उमदा किताबें भी गयीं जिनमें बढ़िया लिखावट और तसवीरोंका तैमूरनामा (१) था।

सुबह होते ही बादशाही सिपाहियोंने उनको तीरोंसे मारकर भगा दिया। बादशाहने बुढ़ियाके बेटेको तो छोड़ा, मगर गुस्सेके मारे खम्भातको जलाकर चांपानेरको कूच किया और ४ महीनेतक उसको घेरे रखा।

---

(१) यह तैमूरनामा फिर अकबर बादशाहको मिल गया था।

चांपानेरकी विजय।

चांपानेरमें नडियादका काजी अख्तियारखां किलेदार था। उसने किलेका खूब बन्दोबस्त कर रखा था। एक दिन जब बादशाह किलेके नीचे घूम रहे थे, उन्हें कई आदमी जंगलसे निकलते हुए मिले, जो चोररास्तेसे जाकर किलेवालोंको घी और अनाज बेचा करते थे।

बादशाहने उनको डरा धमकाकर सब भेद पूछ लिया और उनके साथ जाकर वह जगह भी देखी, जो साठ सत्तर गज खड़ी चढ़ाई की थी। फिर ७०।८० मेखें लोहेकी मंगवाकर पहाड़में एक एक गजकी छेटीसे दायें बायेंसे गड़वायीं और जंगी जवानोंको उनपर चढ़नेका हुक्म दिया। जब १८ जवान चढ़ चुके, तब बादशाहने चढ़ना चाहा; मगर बैरामखांने अर्ज की कि, इतना और ठहरिये कि, आदमी बीचमेंसे ऊपर चढ़ जावें, यह कहकर आप आगे हुआ और उसके पीछे बादशाह चढ़े। आप ४१ वें थे; आपने खड़े रहकर ३०० जवानोंको ऊपर ले लिया और हुक्म दिया कि, जो लश्कर मोरचोंमें है वह किलेके ऊपर हमला करे।

किलेवाले इस मामलेसे बेखबर थे और कंगूरोंसे सिर नीचे रखकर बाहरवालोंसे लड़ते थे कि, इधरसे ये १०० जवान उनपर तीर बरसाने लगे। इनसे घायल होकर उन्होंने जो बादशाहके चढ़ आनेकी खबर पायी तो, भाग गये; बादशाहकी विजय हो गयी। अख्तियारखां "मोलिया" नाम एक ऊंची टेकरीपर चढ़ गया। बादशाहने दूसरे दिन क्षमा देकर बुलाया और उसको सिपहगरी तथा अहलकारीके सिवाय ज्योतिषविद्या और कविताईमें भी गुणी देखकर मजलिसमें बैठनेका मान दिया।

चांपानेरका किला सफर सन् ८४१ हि०के पिछले सप्ताह जीता गया था।

इमादुलमुल्कका आना।

महेन्द्री नदीके इधर उधर तो बादशाहका अमल हो गया था

और उधर कोई न था। जब फसल पककर तैयार हो गयी, तब रैयतने सुलतान बहादुरके पास आदमी भेजकर तहसीलदार मांगा। बहादुर जिससे कहता था वही जानेपर राजी नहीं होता था। आखिर इमादुल मुल्क यह इख्तियार ले करके कि, मैं जो मुनासिब समझकर करूं, उसका जवाब न पूछा जावे, २०० सवारोंसे अहमदाबादको रवाना हुआ; रास्तेमें वह जिसको जो चाहता था, वही तनखाह और जागीर लिख देता था। इससे अहमदाबाद पहुंचनेतक १०००० सवार उसके पास जमा हो गये। जो जो घोड़े लाता था, उसको एक लाख गुजराती (१) दे देता था। इस तरहसे थोड़े ही दिनोंमें ३०००० हजार आदमी उसने इकट्ठे कर लिये और जूनागढ़का हाकिम मजाहदखां भी १०००० सवारोंसे आ मिला।

इधर बादशाह उन दिनों चांपानेर विजय होने और बहुतसा माल हाथ आ जानेसे तालाबके दोनों तरफ मजलिसें सजा कर मौज उड़ाया करते थे और छोटे दरजेके लोग, जो उनकी मजलिसमें दखल पा गये थे, अपने आपेमें नहीं रहे थे। एक दिन वे हालोलके बागोंमें शराब पीकर अमीर तैमूरका इतिहास जफरनामा पढ़ने लगे। इसमें लिखा था कि, शुरू शुरूमें अमीरके पास ४० ही आदमी थे। एक दिन उन्होंने हरेकसे दो दो तीर लेकर उनका गट्ठा बांधा और एक एकको देकर कहा कि तोड़ो मगर बहुतसा जोर करनेपर भी किसीसे नहीं टूटा। जब खोलकर हरेकको दो दो तीर दिये, तो हरेकने आसानीसे तोड़ डाले। तब अमीरने कहा कि, जो हम चालीसों आदमी इस गट्ठेकी तरह इकट्ठे रहेंगे, तो हर जगह विजय होगी। यही खयाल करके वे मुलकोंको जीतनेके लिये निकले थे।

यह पढ़कर उन बेवकूफोंने जो अपनेको गिना तो १० गुने

(१) न मालूम यह एक लाख गुजराती टंके हैं या क्या।

अर्थात् ४०० हुए और दक्खिन जीतनेको धुनमें वहांसे चल पड़े। दूसरे दिन जो ढूंढ़े न मिले, तो १००० आदमी उनके पकड़नेको भेजे गये जो थोड़े दिनोंमें सबको बांध लाये।

बादशाहने मंगलके दिन लाल कपड़े पहिने और बड़े गुस्सेसे इनसाफ करनेको बैठे और उन लोगोंसे पूछताछ करके कुछको हाथीके पांवोंतले डाला और बहुतोंके सिर हाथ पांव नाक और कान कटवाये। इस सजा देनेके पीछे जब शामको नमाजका वक्त आया और मुल्लाने अजां देकर नमाज पढ़ाते हुए नादानीसे अलमतरकैफ (१)की सूरत पढ़ी तो बादशाहने नमाज पढ़े पीछे उस मुल्लाको भी हाथीके पांवतले डाल देनेका हुक्म दिया कि, इसने जानबूझकर यह आयत हमारे इनसाफको जुल्म बताने के लिये पढ़ी थी। मौलाना मोहम्मद अलीने अर्ज की कि, यह मुल्ला कुरानका अर्थ नहीं जानता है, मगर बादशाहने गुस्सेमें नहीं सुना, और मौलानाको भी बुरा भला कहा।

बहुत देर पीछे जब मुल्लाकी नादानी जानी गयी और गुस्सा भी ठंढा हुआ तो अफसोस कर करके रात भर रोते रहे।

अहमदाबादकी कूच।

फिर बादशाह तरदी बेगको चांपानेरमें छोड़कर अहमदाबादको चले। इमादुलमुल्क भी अहमदाबादसे चलकर नड़ियाद और महमूदाबादके बीचमें मिरजा असकरीसे लड़ा, जो आगे आगे आता था। मिरजाकी हार हुई, मगर यादगार नासिर मिरजाने बादशाहका आना मशहूर करके वह लड़ाई जीत ली।

(१) "अलमतरकैफ" कुरानकी एक सूरत (सूक्ति) है, जिसका यह आशय है कि, यमन देशका बादशाह हाथियोंकी फौज लेकर मक्केको ढाने आया था, मगर खुदाके हुक्मसे पक्षियोंने कंकर मार मार कर उसके सब हाथी मार डाले थे।

इमादुलमुल्क भाग गया। २ हजारसे अधिक और ४ हजारसे कम उसके आदमी मारे गये।

बादशाह जब कांकरिया तालावके पास पहुंचे, तो मिरजा असकरीको आगेसे अहमदाबादके हरेक दरवाजेपर यसावल(चौकीदार) भेज दिये कि, मिरजा और उसके आदमियोंके सिवाय और किसीको शहरमें न जाने दें।

बादशाह दो दिन सरखेजमें रहकर तीसरे दिन अहमदाबाद गये। हिन्दूबेगको बहुतसे आदमियोंसे वहां रखा कि, जहां मददकी जरूरत हो पहुंच जावे। पट्टन यादगार नासिर मिरजाको दी; भड़ौंच नौसारी और सूरत कासिमहुसेन सुलतानको इनायत की। खंभात और बड़ोदा दोस्तबेग एशक आकाने पाया। महमूदबाद और बूचका बहादुरको मिला।

बंदर दीपको कूच।

गुजरातका बंदोबस्त करके बादशाह बंदर दीपको रवाना हुए। जब धुंधकेमें पहुंचे, जो अहमदाबादसे १० कोस पर है, तो आगरेसे वजीरोंकी अर्जियां आयीं कि, इधरके फसादियोंने सवारीको दूर देखकर बलवा मचादिया हैं। ऐसी ही खबर मालवेसे भी पहुंची कि, सिकन्दरखां और मल्लूखां बागी होकर हिंडियेके जागीरदार "महतर जम्बूरके" ऊपर गये और जंबूर अपना माल असबाब खोकर उज्जैनमें चलागया है और भी जो सिपाही उस सूबेमें जगह जगह रखे हुए थे, वे सब उज्जैनमें आकर जमा होगये हैं। बागियोंने उस शहरको घेर रखा है। दरवेश अली कितावदार, जो वहांका हाकिम था, बंदूककी गोलीसे मारा जा चुका है; बाकी किलेवाले क्षमा मांगकर विद्रोहियोंसे जा मिले हैं।

बादशाहने चाहा कि, लौटकर कुछ अरसेतक मंडूमें रहें जिससे मालवा भी विद्रोहियोंसे साफ हो जावे और गुजरात भी, जो नयी विजय हुई है, कबजेमें रहे। इस विचारसे वे गुजरात मिरजा अस-

करी और दूसरे अमीरोंको सौंपकर खंभातमें लौट आये। वहांसे बड़ोदे, भड़ौंच और सूरत होते हुए आसेरकी रस्तेसे बुरहानपुर आये और ७ दिन वहां रहकर आसेरके पाससे कूच करते हुए मांडू पहुंचे, तब तो बागी लोग भी बिखरकर कोनों कुचालोंमें छिप गये। बादशाहको मालवेकी हवा पसंद आगयी और वे अपने साथवालोंको वहां जागीरें देकर मजेसे रहने लगे।

मिरजा असकरीका गुजरात छोड़ना।

२ महीने पीछे खान जहांशीराजी और रूमीखां, जिसने सूरतका किला बनाया था, कासिमहुसेन खां उजबकके जमाई अब्दुल्लाखांसे नौकारी लेकर सूरतपर गये और सूरत लेकर खानजहां खुशकीके रस्तेसे, और रूमखां अंगी जहाजोंमें बैठकर समुद्रसे भड़ौंच पर आया। कासिमहुसेन खां घबराकर चांपानेरसे अहमदाबादमें मिरजा असकरी और हिन्दूबेगके पास मदद लेनेके लिये गये।

उधर सैयद इसहाकने, जिसे सुलतान बहादुरने शिताब खांका खिताब दिया था, खंभात भी ले लिया, इधर यादगार नासिर मिरजा भी पट्टनसे मिरजा असकरीके पास मददके लिये गयाथा। दरियाखां और मुहाफिजखांने, जो रायसेनसे निकलकर सुलतान बहादुरके पास जाते थे, पट्टनको खाली देखकर ले लिया। फूट यहांतक फैली कि, यादगार नासिर मिरजाका नौकर गजनफर ३०० सवारोंसे अलग होकर सुलतान बहादुरके पास चलागया और उसको लानेकी चेष्टा करने लगा। सुलतानके खेरख्वाहोंकी लिखावटें भी बराबर उसके पास पहुंचती थीं।

अन्तको सुलतान बहादुर अहमदाबादको रवाना होकर सरखेजके पास उतरा। इधरसे मिरजा असकरी, यादगार नासिर, हिन्दूबेग और कासिम हुसैन खां २०००० सवारोंसे उसके सामने गये और ३ दिन पीछे बिना लड़े ही बहुतसा नुकसान उठाकर चांपानेरको चल दिये। सुलतान बहादुरने जोरसे आकर पीछा किया। जब सुलतानका हिरावल सैयद मुबारक बुखारी बादशाही लशकरके पास

आ पहुंचा, तो यादगार नासिर मिरजा, जो चंदावल था, लौटकर उससे लड़ा, शिरावलके बहुत आदमी मारे गये। फिर सुलतान तो महमूदाबादमें ठहर गया और मिरजा अपने लशकरसे आमिला।

मिरजा असकरी यहांतक हिम्मत हार गया था कि, राजमहिंद्रीसे उतर गया और बहुतसे सिपाही डूब भी गये, सुलतान भी राजमहिंद्रीतक आगया।

मिरजाओंने चांपानेर पहुंचकर तरदीबेगखांसे खर्च मांगा और कहा कि, मंडूमें जहां बादशाह हैं, ६ दिनमें चिट्ठी पहुंचती है; अरजी भेजते हैं, तबतक यहीं ठहरेंगे। मगर तरदीबेगने यह बात न मानी, तब मिरजाओंने यह सलाह की, कि इसको पकड़कर किलेके खजानोंपर कबजा करलें और असकरीको बादशाह बनाकर आगरेको चलें; क्योंकि बादशाहको तो मालवेकी हवा पसन्द है और आगरा खाली पड़ा है।

तरदीबेग मिरजाओंसे मिलनेको आता था, मगर इनका यह इरादा सुनकर रास्तेसे लौटगया और इनसे चले जानेको कहलाया। जब नहीं गये, तो दूसरे दिन तोप चलायी, तब ये लोग घाट खरजीसे उतर कर आगरेको रवाना हो गये।

सन् ९४२ हि०

सुलतान बहादुरका आना और बादशाहका आगरे जाना।

सुलतान बहादुर मिरजाओंका जाना सुनकर महेन्द्री नदीसे उतरा, जो चांपानेरसे १५ कोस है और चांपानेरपर आया। किला मजबूत था और किलेदारीका सामान भी बहुत था, तोभी तरदीबेग किला छोड़कर मंडूमें बादशाहके पास गया और मिरजाओंके इरादोंका हाल अरज किया। बादशाह, यह सोचकर कि कहीं मिरजा आगरेमें पहिले न जा पहुंचे, धावा करके चित्तौड़के रास्तेसे आगरेको रवाना हुए। मगर जब चित्तौड़ पहुंचे, तो मिरजा भी वहां मिल गये और लाचार होकर खिदमतमें हाजिर हुए। बादशाहने भी उनके कसूर माफ कर दिये।

मोहम्मद सुलतान मिरजाका फिसाद।

इन्हीं दिनोंमें मोहम्मद सुलतान मिरजा और उसके बेटे उलग मिरजा, जो पूरे अधीन न हुए थे, बिलगरामको लूट कर कनौज गये। खुसरोको कलमाशके बेटोंने प्राण भिक्षा कर कनौज उनको सौंप दिया।

मिरजा हिंदाल यह खबर सुनकर आगरेसे उनके ऊपर गया। बिलगरामके पास गंगासे उतर कर दोनों लश्करोंका सामना हुआ। विद्रोहियोंकी हार हुई। बादशाही लश्करने पीछा किया तो उलग मिरजा और उसके बेटे सिमटकर फिर लड़े। इस अरसेमें बादशाहके गुजरातसे आगरे आ जानेकी खबर पहुंच गयी थी तो भी विद्रोही फिर लड़ाई और लड़े, और फिर हारे। मिरजा हिंदाल विजय पाकर बादशाहके पास आ गया।

मंडूका छूट जाना।

जब बादशाह आगरे पहुंच गये, तब बीजागढ़का हाकिम भोपालराय मंडूका किला खाली पाकर उसे दबा बैठा। पीछेसे कादिर शाह भी आया और मीरां मोहम्मद फारूकी भी बुरहानपुरसे पहुंच गया।

सुलतान बहादुरका मारा जाना।

सुलतान बहादुर चांपानेरमें दो सप्ताह रहकर फिर दीपमें चला गया था और वहांसे उसने कुछ तुहफे और नकीब भेजकर नजरी(१) फिरंगीको, जो बंदरोंका अमीरुल उमरा (गवरनर जनरल) था, अपनी मददके लिये बुलाया था। इतनेमें मिरजा अमकरी गुजरातको छोड़ गया और नजरी पांच सौ गिराब (जहाज) और आदमी लेकर दरियाके रास्तेसे बंदर दीपमें आया। उसने जो यह हाल सुना, तो खयाल किया कि, अब सुलतानको हमारी मददकी पर-

(१) यह पोर्त्तुगीज गवर्नर नूनो दा कुन्हा था जिसका हुआ नोरोनो नाम है।

वाह नहीं रही, शायद मिलनेके पीछे कुछ दगा करे। इसलिये उसने अपनेको बीमार बताकर सुलतानसे कहलाया कि मैं बुलाया हुआ आया हूं; आराम हो जावे तो खिदमतमें पहुंचूं।

सुलतान बैसमझीसे ३ रमजान सन् ९४३ (फागुन सुदी ४ सं० १५९३ ता० १२ फरवरी १५३७) को कुछ आदमियोंसे गिराबपर बैठकर वजरीकी मिजाजपुरसीको गया, मगर जाते ही उसका बहाना मालूम करके आनेसे पछताया और फौरन लौटा। फरंगियोंने सोचा कि, शिकार तो जालमें फंस गया है; जो कई बंदर इससे लेलें तो यह मौका है। इसपर वजरीने सामने आकर कहा कि जरा ठहरिये कि कुछ तुहफे नजर किये जावें। सुलतानने कहा कि, पीछेसे भेज देना और अपने गिराबको चला। काजी (१) फरंगने रास्ता रोककर जबरदस्तीसे ठहराना चाहा; सुलतानने तलवार निकालकर उसके दो टुकड़े कर दिये और उनके गिराबसे अपने गिराबमें कूदा। फिरंगियोंके गिराबोंने, जो दूर दूर खड़े थे, पास आकर सुलतानको घेर लिया, लड़ाई होने लगी। सुलतान और रूमीखां पानीमें कूदे। रूमीखांको तो उसके एक फिरंगी दोस्तने हाथ पकड़कर खींच लिया और सुलतान डूब गया; उसके साथी भी मारे गये।

सुलतानके नौकरोंपर शोक छा गया। मोहम्मद जमान मिरजाने सुलतानके मातममें काले कपड़े पहिने। गुजरातके खजाने कुछ तो मिरजाने हथिया लिये, कुछ फिरंगी ले गये और कुछ लुट गये। सुलतानकी मांका बेटा बनकर कभी तो मिरजा फिरंगियोंसे सुलतानके खूनका दावा करता था और कभी छिपकर उनके पास रुपया भेजकर अपने नामका खुतबा पढ़ाना चाहता था, जो कई दिनोंतक मसजिद सफामें पढ़ा भी गया और वह बहुत दिनोंतक चालाकीसे वहां रहा। अन्तको इमादुलमुल्कने चढ़ाई करके

(१) पादरी या किसी ऐसे ही मतावलम्बीसे आशय है।

उसे वहांसे भगाया, तो विचारा घबराया हुआ बादशाहके पास आया। यह हाल आगे लिखा जावेगा।

बादशाहका बङ्गालेपर जाना।

बादशाह आगरेकी तरफका बन्दोबस्त करके गुजरात जानेकी तयारी कर रहे थे कि, पूर्वसे शेरखांके फसाद करनेकी खबर पहुंची। इससे गुजरात जाना तो बन्द रहा; शेरखांका दबाना और बंगाला फतह करना मुख्य समझा गया।

शेरखांका हाल।

शेरखां सूर जातिका पठान था। उसका पुराना नाम फरीद था, वह हसनखांका बेटा, और इब्राहीमखां शेरखैलका पोता था। इब्राहीम हमेशा घोड़ोंकी सौदागरी करता रहा, पर सौदागरीमें उसको कोई गिनती नहीं थी। गांव शमले परगने नारनोलमें रहता था। उसका बेटा हसन सौदागरी छोड़कर सिपाही बना। बहुत दिनोंतक राय-साल दरबारीके दादा रायमलके पास नौकर रहा। वहांसे गांव जूने परगने सहसराममें सिकन्दर लोदीके अमीर नसीरखां लोहानीके पास जाकर नौकर हुआ और अच्छा काम करके अपने बराबरवालोंसे बढ़ गया। जब नसीरखां मरा, तब उसके भाई दौलतखांके पास रहा। वहांसे बब्बनकी नौकरीमें, जो एक बड़ा अमीर सुलतान सिकंदर लोदीका था, दाखिल हुआ। दरजा भी कुछ बढ़ा और काम भी उसकी सलाहसे होने लगा।

फरीद अपने बापको नाराज करके अलग हो गया। बहुत दिनों ताजखां लोदीकी नौकरीमें रहा, फिर कुछ दिनों अवधमें का-सिम हुसैनखां उजबककी नौकरी करके सुलतान जुनैद बरलासके पास नौकर हुआ। एक दिन सुलतान जुनैद उसको और दो दू-सरे पठानोंको किसी कामके लिये बाबर बादशाहके पास ले गया। बादशाहने देखते ही फरीदकी तरफ इशारा करके कहा

कि, जुनैद ! इस पठानकी आंखोंमें फसाद पाया जाता है; इसे कैद करना चाहिये और दूसरे पठानोंके ऊपर कृपा करो। फरीद बादशाहको नजर ताड़कर सुलतान जुनैदके कैद करनेसे पहले ही भाग गया।

इस बीचमें उसका बाप मर चुका था और वह उसके मालका मालिक होकर सहसामके पास जूनेके जंगलोंमें, जो एक परगना रहतासका था, लूट मार करने लगा, जिससे बड़ा सिपाही मशहूर हो गया। सुलतान बहादुर गुजरातीने सौदागरोंके हाथ खर्च भेजकर उसको बुलाया। उसने खर्च तो ले लिया मगर कोई बहाना करके गया नहीं और पहिलेसे अधिक गांव और कसबे लूटने लगा। थोड़े ही दिनोंमें बहुतसे आदमी उसके पास जमा हो गये। कुछ दिनों पीछे बिहारका हाकिम, जो लोहानी जातिका अमीर था, मर गया। उसके पीछे कोई प्रबन्ध करनेवाला नहीं रहा। इसलिये शेरखां जल्दीसे दौड़कर वहां गया और बहुत माल लूट कर लौट आया। फिर अचानक उलग मिरजाके ऊपर, जो "सरू" में था, जा टूटा और उसको हराकर बनारस भी लूट लिया। अब उसके पास माल भी बहुत हो गया था और लशकर बहुत था इसलिये पटनेमें जाकर उस मुल्कको दबा लिया और सूरजगढ़में (जो बंगालेके हाकिमकी सरहदका शहर था) जाकर वहांके लशकरसे लड़ा और विजय पाकर उस जिलेको भी अपने अधिकारमें कर लिया। फिर एक वर्षतक बंगालेके मालिक नसीबशाहसे लड़ाई की और बहुत दिनोंतक गोरखपुरको घेरे रखा।

विचित्र बात यह है कि शेर खांने एक बड़े ज्योतिषीको उड़ीसेके राजाके पाससे अपना अगला हाल पूछनेके लिये बुलाया। राजाने तो ज्योतिषीको नहीं दिया, मगर ज्योतिषीने लिख भेजा कि, अभी एक साल तकतो बंगाला तेरे हाथ आनेको, नहीं है; मगर फलाने दिन कि जब गंगा घड़ी भरके लिये पयार हो जायगी, तेरा दखल वहां हो जायगा। सो जैसा उसने लिखाया वैसाही हुआ।

जिन दिनोंमें बादशाह मालवा और गुजरातके फतह करनेमें लगे हुए थे शेर खांको अपने पांव फैलानेका खूब अवसर मिल-गया था।

बादशाहका पूरब जाना।

बादशाह दिल्लीमें मीर फकीर अलीको, आगरेमें मीर मोहम्मद बख्शीको, कालपीमें अपने चचा यादगार नासिर मिरजाको और कन्नौजमें अपने बहनोई नूरुद्दीन मोहम्मद मिरजाको छोड़कर बेगमों सहित नावोंमें बैठकर पूरबको रवाना हुए। मिरजा असकरी, मिरजा हिंदाल और कई बड़े बड़े अमीर साथ थे, बाकी लशकर खुशकीके रास्तेसे रवाने हुआ। जब चुनारगढ़के पास पहुंचे, तो बादशाहका दूसरा बहनोई मोहम्मद जमान मिरजा भी गुजरातसे आगया। बादशाहकी बहन मासूमा सुलतान बेगमने आगरेमें बादशाहसे कसूरकी माफीका परवाना लिखाकर भेज दिया था। बादशाहने एक दिन पहले मिरजा असकरी और मिरजा हिंदालको उसके लानेके लिये भेजा और कहा कि मुलाकातके वक्त मिरजा असकरी तो छाती तक और हिंदाल सिरतक हाथ उठाकर सलाम करें।

शेरखां उस वक्त चुनारमें था, उसने जब बादशाहका आना सुना तो किलेको मजबूत करके और अपने बेटे कुतुब खांको वहां छोड़-कर बंगालेपर गया और उस मुल्कको लड़कर लेलिया। वहां बहुत सा माल हाथ आया।

चुनारविजय।

बादशाहने चुनार पहुंचकर उस किलेको लेना चाहा, तो रूमी खांने (जो किलोंके विजय करनेमें सिद्धहस्त था और मंद-सोरको विजयमें सुलतान बहादुरके पाससे बादशाहकी सेवामें आकर मीर आतिश होगया था) नावोंके ऊपर तख्ते जोड़कर ऐसे मोरचे बनाये कि, जिनकी कारीगरीको देखकर बड़े बड़े बुद्धिमान भी अचम्भेमें आगये और किलेकी दीवारमें ऐसी सुरंगें लगायीं कि, जिनमें आग देनेसे जमीन और आसमान हिलगये। कुतुब खां भाग-

गया। और किलेवाले सब क्षमा मांगकर निकल आये, जो प्रायः २०००थे। बादशाह तो रूमीखांके कहनेसे उन्हें रूमीखांको दे चुके थे, पर मुवैयद बेग दोलदीने जो बादशाहका मुसाहिब था, यहकर कि, "बादशाहका हुक्म है" उनके हाथ कटवा डाले। इस पर बादशाहने उसको बहुत लानत मलामत की और रूमीखांकी सेवासे प्रसन्न होकर यह किला उसको दे दिया, जिससे लोग उसके दुश्मन होगये और वह थोड़े ही दिनोंमें जहरसे मारा गया।

बंगाले जाना।

बादशाह चुनार विजय करके बंगाले जानेका विचार करही रहे थे कि, बंगलेका सुल्तान नसीबशाह घायल होकर आया और शेरखांकी नालिश करने लगा। बादशाहने उसकी खातिर तसल्ली करके मोर हिन्दूबेगको जौनपुर और "बेगमीर" को चुनार दिया। फिर आप उसी तरह तरी और खुश्की के दोनों रास्तोंसे बंगालेको चले। जब पटने पहुंचे, तो अमीरोंने अर्ज की कि बरसात आगयी है और बंगालेमें सवारोंका चलना फिरना इस मौसममें मुश्किलसे होता है। इस लिये अभी यह चढ़ाई बन्द रखना चाहिये। पर नसीब शाहने अपने मतलबके लिये कहा कि, अभी शेरखांके पांव नहीं जमे हैं, जलदी चलनेसे सहजमें उसका पाप कट जावेगा। बादशाहने उसका कहना मानकर कूच करदिया और भागलपुरमें पहुंच कर मिरजा हिंदालको हुक्म दिया कि ५।६ हजार सवारोंके साथ नदी उतर कर उधरसे चढ़ाई करें।

मुंगेर पहुंचने पर खबर आयी कि, शेरखांका बेटा जलालखां (१) १५००० सवारोंसे गढ़ीको, जो बंगालेका दरवाजा है, मजबूत करके लड़नेके इरादेमें है।

शेरखांका इरादा बादशाहसे लड़नेका नहीं था, वह उनका

(१) यही बापके पीछे तख्त बैठकर सलीमशाह कहलाया था

आना सुनकर भाड़खण्डमें चला गया था कि, जब बादशाह बंगालमें आवें तो इस रास्तेसे बिहारमें जाकर बलवा करे और बंगालके मालको भी किसी सुरक्षित स्थानमें रखे। जलालखांको कुछ फौजसे गढ़ीके पास छोड़कर कहदिया था कि, जब बादशाह तुम्हारे पास आवें और मैं शेरपुरमें पहुंच जाऊं तो तुम भी जलदीसे मेरे पास आजाना।

बादशाहने भागलपुरसे इब्राहीम बेग आदि अमीरोंको ५।६ हजार आदमियोंसे गढ़ीके ऊपर भेजा था। जब यह लशकर वहां पहुंचा तो जलालखां बापके कहनेसे बाहर होकर लड़नेको आया और जीत गया। बैरामखां कई बार लौटलौटकर लड़ा, मगर मदद न पहुंचनेसे कुछ न कर सका। अलीखां आदि कई अमीर मारे गये। बादशाह यह सुनकर जल्दीसे रवाना हुए। उनकी सवारीकी नाव कहलगांवमें डूब गयी थी, तो भी पठानोंपर जा पहुंचे। पर पठान ठहरे नहीं, भाग गये। तब बादशाहने मिरजा हिंदालको उसके कहनेसे तिरहुत और पुरनियामें जो उसको दिये गये थे, भेजकर कहा कि, लड़ाईकी पूरी तैयारी करके उधरसे बंगालपर आवे और आप कूच दर कूच बंगालको गये। सन् ९४५ हि० (संवत् १५९५) में बंगाल विजय हो गया।

शेरखां सब पठानों और बंगालके खजानेको लेकर भाड़खण्डके रास्तेसे रोहतास पहुंचा और धोखेसे उसने उस किलेको ले लिया।

शेरखांका रोहतास लेना।

शेरखांने रोहतासके राजा ब्राह्मण चिंतामणिके पास आदमी भेजा और उसके पिछले अहसान याद दिलाकर कहलाया कि, आज मुझे काम पड़ा है। मेरे बालबच्चोंको किलेमें रखकर मुझपर और अहसान करो। मूर्ख राजाने स्वीकार कर लिया। शेरखांने ६०० डोलियोंमें दोदो हथियारबन्द जवान बैठाये और लौंडियोंको आसपास रखकर किलेमें भेजा और इस बहानेसे वह

किला लेकर अपने कबीलोंको उसमें रखा और बंगालका रास्ता बन्द कर दिया।

बादशाह बंगालकी हवा पसन्द करके ऐश आराममें पड़ गये। उनके साथी भी ऐसा बड़ा मुल्क पाकर बेपरवा हो बैठे। मिरजा हिंदाल लोगोंके बहकानेसे भरी बरसातमें आगरेको चल दिया। बादशाहने बहुत ही उपदेश लिख लिखकर भेजे, पर वह न माना और आगरेमें पहुंचकर बादशाह बननेकी तोड़-जोड़ करने लगा।

शेरखांका बनारस लेना।

शेरखांने मिरजाका जाना सुनकर बनारसको जा घेरा और वहांके हाकिम मीर फजल अलीको मारकर वह किला ले लिया। वहांसे जौनपुर गया। हिन्दूबेगके मरे पीछे बादशाहने शाहमखांके बाप बाबबेग जलायरको जौनपुर दिया था। वह लड़नेको तैयार हुआ। इब्राहीम बेग चाबूकका बेटा यूसुफ बेग भी, जो अवधसे बंगालको जाता था उससे आ मिला और गिरदावरी करने लगा। जलालखां २।३ हजार फौजसे उसपर दौड़ा और वह उससे लड़कर जौनपुरके पास काम आया। दूसरे दिन पठानोंने जौनपुरको घेरा। बाबबेगने बादशाहको अर्जियां भेजीं और अमीरों और मिरजाओंको भी हाल लिखा।

मीर फकीर अलीने दिल्लीसे आगरे जाकर मिरजा हिंदालको समझाया और जमुनासे उतार कर मोहम्मद बख्शीसे कहा कि, जितनी कुछ हो सके मिरजाको मदद दो जिससे वह जलदीसे जौनपुर पहुंच जावे।

फकीर अली फिर कालपी गया कि, यादगार नासिर मिरजाको भी तैयार करे और मिरजा लोग आगरेके पास मिलकर आगे रवाने हो जावें। इतनेमें ही खुसरोबेग, कोकलताश, हाजी मुहम्मद बाबाकशका, जाहिदबेग और मिरजा नजर आदि बंगालसे आकर कन्नौजमें मिरजा नरुद्दीनके पास पहुंचे। उ-

सने मिरजा हिंदालको खबर दी; हिंदालने उनको खातरीके खत अपने नौकर महम्मदगाजीके हाथ भेजकर यादगार नासिर मिरजा और मीर फकीर अलीको भी उनके आनेका हाल लिखा। बागी अमीर मिरजाके पत्र पहुंचनेसे पहिले ही कोलमें आ गये और वहां महम्मदगाजीसे मिलकर मिरजा हिंदालसे कहलाया कि, हम तो अब बादशाहकी नौकरी नहीं करेंगे। अगर तुम, जैसा कि, इरादा कर रहे हो, अपने नामका खुतबा पढ़वाओ तो तुम्हारे पास रहेंगे, नहीं तो मिरजा कामरांके पास चले जावेंगे।

महम्मदगाजीने यह पैगाम मिरजा हिंदालसे कहकर कहा कि, अब दो कामोंमेंसे एक तो जरूर ही करना होगा—या तो अपने नामका खुतबा पढ़वाकर इन अमीरोंको छातीसे लगा लो या किसी बहानेसे इनको पकड़कर कैद करो। मिरजाका तो सिर पहिलेहीसे फिरा हुआ था। अब उसने इन अमीरोंका आना गनीमत समझकर सबको अपने पास बुला लिया।

जब बादशाहको बनारस जौनपुरके फिसाद और मिरजा हिंदालके बुरे इरादोंका हाल मालूम हुआ तब उन्होंने शेख बहलोलको बंगालसे मिरजाके समझानेके लिये भेजा। जब शेख आगरे पहुंचा तो मिरजा पेशवाई करके अपने मकानपर ले गया। शेखने मिरजाको पठानोंपर जानेके लिये राजी करके महम्मद बख्शीसे रुपया और लशकरका सामान तैयार कर देनेको कहा। बख्शीने कहा कि, रुपया तो नहीं है और सामान सब दे सकता हूं।

इस बातको ४।५ दिन भी नहीं हुए थे कि, मिरजा नूरुद्दीन महम्मद कनौजसे दौड़ा हुआ आया। वह बागी अमीरोंसे मिला हुआ था। महम्मदगाजी फिर उन अमीरोंके पास भेजा गया। उन्होंने कहा कि, हमारी बात माननेकी तो यही निशानी है कि, शेख बहलोल, जो बादशाहका भेजा हुआ आया है और

हमारी बातको बिगाड़ता है, उसको मरवा डालो, तो सबको निश्चय हो जावे कि, आप बादशाहसे अलग हो गये हैं।

मिरजा हिंदालने नूरुद्दीन मिरजासे कहा। उसने शेखको जमनासे उधर ले जाकर मरवा डाला। तब वे अमीर आकर मिरजा हिंदालसे मिले और मिरजाके नामका खुतबा पढ़ाकर आगे बढ़े।

मिरजाको मा दिलदार आगाचा बेगम और दूसरी बेगमोंने मिरजाको बहुत ही समझाया। पर वह नहीं माना और जब वह अपने नामका खुतबा पढ़ाकर माके पास गया तब उसे काले कपड़े पहिने देखकर कहा कि, इस हर्षके समय आपने ऐसे कपड़े क्यों पहने हैं। बेगमने कहा कि, क्या तू नहीं देखता है कि, मैं तेरा मातम कर रही हूं। तू कमउमर है और फसादी लोगोंके कहनेमें आकर अपनी मौतका सामान आप कर रहा है।

फिर मुहम्मद बखशीने आकर कहा कि, शेखको तो आपने मरवा ही डाला है, मेरे वास्ते क्या हुक्म है? मिरजाने उसको ढाढ़स देकर अपने साथ ले लिया।

यादगार नासिर मिरजा और मीर फकीर अली यह हाल सुनकर कालपीसे गवालियर होते हुए जल्दीसे दिल्ली पहुंच गये और वहांका बन्दोबस्त करने लगे। मिरजा हिंदाल फीरोजाबादके पास हमीदपुर पहुंचा था कि, वहां उसने यादगार नासिर मिरजा और फकीर अलीके दिल्ली पहुंचनेकी खबर सुनकर दिल्लीको जा घेरा। रास्तेमें और कई छोटे छोटे अमीर उसको आ मिले थे।

यादगार नासिर मिरजा और फकीर अलीने दिल्लीका किला मजबूत करके मिरजा कामरांको लाहोरसे बुलाया। जब वह नपत पहुंचा तब मिरजा हिंदाल आगरे लौट गया।

मिरजा कामरां जब दिल्लीके पास आया, तब यादगार नासिर

मिरजा तो वैसे ही किलेके बन्दोबस्तपर रहा और फकीर अलीने मिरजा कामरांसे मिलकर उसको आगरेकी तरफ रवाना किया।

मिरजा हिंदाल तो आगरेसे अलवर चला गया और मिरजा कामरांने आगरे पहुंचकर दिलदार आगाचा बेगमसे मिरजा हिंदालको ढाढ़स देकर बुला लेनेके लिये निवेदन किया।

बेगम अलवरसे मिरजा हिंदालको लायी और गर्दनमें रूमाल डालकर मिरजा कामरांके पास ले गयी। मिरजा कामरां उससे अच्छी तरह मिला और दूसरे दिन बागी अमीरोंका भी सलाम लेकर उसने सबके अपराध क्षमा कर दिये।

फिर सब मिरजा मिलकर शेरखांको दबानेके लिये जमुनासे उतरे। उधर बादशाह और अमीर वजीर सब बङ्गाल जैसा अच्छा देश पाकर विलासितामें पड़े हुए थे; उनको इधरकी कुछ खबर नहीं थी और जो कोई सुनता भी था तो हुजूरमें अर्ज नहीं कर सकता था। क्योंकि बादशाहने हुक्म दे रखा था कि, कोई बुरी बात नहीं सुनाई जावे।

आखिर जब कई सच्चे शुभचिन्तकोंसे बादशाहको असल हाल मालूम हुआ तब बंगालका शासन जहांगीर कुली बेगको (१) सौंपकर भरी बरसातमें आगरेको लौटे।

---

(१) "तजकरेतुल वाकेआत"से जाना जाता है कि, बादशाहने पहले जाहिद बेगको बंगाल सौंपना चाहा था; पर उसने कहा कि, क्या बङ्गालके सिवाय मेरे मारनेके लिये कोई जगह नहीं थी। बादशाहने खफा होकर उसके मारनेका हुक्म दिया तो वह दरबारसे उठकर चला गया। उसकी बीबी बादशाहकी प्यारी बीबी बीगा बेगमकी बहन थी। इसलिये बेगमने उसका अपराध क्षमा कर देनेके लिये बादशाहके हाथ जोड़े, हाहा खायी; परन्तु बादशाहने नहीं माना। तब जाहिदबेग भागकर मिरजा हिंदालके पास चला गया और

इधरसे मिरज़ाओंका और उधरसे बादशाहका रवाना होना सुनकर शेरखांने जौनपुरसे रोहतासको कूच किया। उसका यह विचार था कि, जो बादशाह उसके ऊपर आवें तो भाड़खण्डके रास्तेसे बंगालको चला जावे और जो आगरेको जावें, तो पीछा (१) करे।

उसको बादशाहकी ओरसे बहकाने लगा। बादशाहने बंगाल जहांगीर कुलीको दे दिया।

(१) बादशाहने, छोटी खानखानाको मुंगेरमें पहिलेसे भेज दिया था, परन्तु शेरखांका सेनापति खवासखां धावा करके उसको पकड़ ले गया। यह सुनकर बादशाहको बड़ी चिन्ता हुई। बंगाल और बिहारकी नदियां चढ़ी हुई थीं, कीचड़ और पानीमें चलना पड़ता था, असबाब बहुत साथ था; घोड़े मरे जाते थे, सिपाहियोंमें बीमारी फैली हुई थी, सारे लश्करमें मिरजा असकरीकी फौज मारतेखां समझी जाती थी। बादशाहने उससे कहा कि, जो तू मुझे इन बलाओंसे छुड़ावेगा तो मैं तुझे चार चीजें दूंगा जो तू मांगेगा।

अमीरोंने मिरजासे पूछा कि, आप बादशाहसे कौन कौन चीजें मांगेंगे, उसने कहा कि, रुपये, बङ्गालके कपड़े, कई पातरें और कई नाजिर खोजे मांगना चाहता हूं। यह सुनकर उनको बड़ा अचम्भा हुआ। तब मिरजाने कहा, अब तुम बताओ, क्या मांगूं? उन्होंने कहा कि, यह समय शेरखांसे लड़ने और बहादुरी दिखानेका है। बादशाहसे बहादुर सिपाही मांगो, कामके आदमी मांगो, सिपाहियोंके वास्ते इजाफे मांगो, सरदारोंके लिये दरजे मांगो। मिरजाने यही मांगा तो, बादशाहने उसे बहुतसा रुपया दिया। कई नामी अमीर दिये और कहा कि, आगे बढ़कर खलगांवमें ठहरो और शेरखांकी जो खबर सुनो, वह मेरे पास भेजो।

असकरी जब खासग्राममें पहुंचा तो उसे मालूम हुआ कि, शेरखांने जौनपुर और चुनारको घेर रखा है। कन्नौजतक मुल्क ले लिया है। शेरखांसे शेरशाह बन गया है और रोहतासमें फौज जमा कर रखी है। फिर महम्मद जमान मिरजाने खबर भेजी कि, शेरखां दूर नहीं है। उसको बादशाही लश्करकी जरा जरासी खबर लगती रहती है।

जब बादशाह तिहूंतमें पहुंचे, तो शेरखां लश्करकी कमी और बेसामानी जानकर शेर हो गया और बहुतसी फौजसे बादशाही लश्करके आसपास घातमें रहने लगा और किसीको ऐसा मौका नहीं देता था कि, उसके हालचालको जान सके। अन्तको हुसेन खां किरावलबेगी जाकर ठीक खबर लाया, जो महम्मद जमान मिरजाकी मारफत बादशाहके कानोंमें पहुंची।

बादशाही लश्कर गङ्गासे उतरकर आगरेको जा रहा था कि बादशाह शेरखांका बहुत पास आ जाना सुनकर ऐसे भड़के कि, लौटकर फिर गङ्गासे उतरे और मुसाहिबोंके मने करते करते शेरखांके ऊपर चल दिये और भोजपुरके पास गांव चौसामें उसके सामने जा पहुंचे। कर्मनाशा नाम नदी दोनों लश्करोंके बीचमें थी।

बादशाही लश्कर पुल बांधकर नदीसे उतरा। आदमी थोड़े थे और सामान नहीं था, तो भी बादशाही किरावल शेरखांके किरावलोंसे लड़कर जीत आया करते थे (१)।

(१) अकबर नामेमें यहांपर बहुतसा हाल छोड़ दिया गया है, जो दूसरी तवारीखोंसे इस तौरपर जाना जाता है कि, चौसा नदीपर बादशाह २।२॥ महीने पड़े रहे। क्योंकि उसकी दूसरी ओर शेरशाहने भी अपना लश्कर डाल रखा था। बादशाहके पास फौज थोड़ी थी। बीमारीके कारण और रसद न होनेसे तकलीफ थी। लोग

बादशाहने अपने भाइयोंको लगातार फरमान लिख लिखकर मददकेवास्ते बुलाया, पर कोई न आया और वहां पड़े पड़े

लदनेवाले जानवर और घोड़े मर गये थे। सवार पैदल हो गये थे। शेरखांने तोपें लगाकर रास्ते घेर रखे थे। रोज लड़ाइयां होती थीं। पठान गङ्गाके पार कन्नौजतक लूट मार करते थे। बादशाहके भाई जो हरतरहसे मदद दे सकते थे, आप ही बादशाह बन जानेकी फिकरमें थे।

मोहर्रम सन् ९४६ हि० (जेठ-आषाढ़ सं० १५९६,—मई जून सन् १५३९) में मेह बहुत बरसा, जिससे और भी बुरा हुआ। रसद और मददका रास्ता बन्द हो गया। बादशाहने हार मानकर मुल्ला मुहम्मद परगेजको, जिसकी शेरखांसे जान पहचान थी, शेरखांके पास सुलहकी बातचीत करनेके लिये भेजा। मुल्लाने जाकर देखा कि, शेरखां बादशाह बनकर भी कुदाल हाथमें लिये हुए अपने सिपाहियोंके साथ खंदक खोद रहा है। उसने मुल्लाको देखकर हाथ धोये और जमीनपर बैठकर बातें कीं और बादशाहका संदेशा सुनकर कहा कि, हुमायूंसे कहो कि, वह तो लड़ना चाहता है, पर उसका लशकर लड़ना नहीं चाहता और मैं लड़ना नहीं चाहता हूं और मेरा लशकर लड़ना चाहता है। पर फिर भी उसने शेख खलीलको सुलहकी शर्तें तय करनेके वास्ते भेजा।

अब दोनों लशकरोंमें लोग आने जाने लगे और सुलहकी शर्तें ठहरने लगीं। शेरखांने खवासखांको कई हजार सवार देकर सुपहैये राजा महरठके पास भेजा, जिसने बादशाहकी मदद सवारों और पदलोंसे कीथी और शेरखांकी रसद लूटी थी और यह धमकी दी कि, जो तू किसी तरफ नहीं बोलेगा, तो तुझे इनाम दिया जायगा। जो बादशाहकी तर्फ बोलेगा तो बदला लिया जावेगा।

बहुत दिन हो गये। शेरखां कभी वकील भेजकर (१) सुलहकी बात छेड़ता था और कभी लड़ाईका इरादा करता था। अन्तको कुछ सिपाही और तोपखाना बादशाही लश्करके सामने छोड़कर एक दो मन्जिल पीछे हट गया और मुहम्मद जमान मिरजाके मोरचेमें गफलत देखकर एक रातको बादशाही लश्करके पीछेसे घुस आया। उसने अपनी फौजकी ३ टुकड़ियां की थी, एकमें आप, दूसरीमें जलाल खां और तीसरीमें खवासखां था।

राजाने खवासखांका सामना किया मगर लड़ाईमें हारा और खवासखांने उसका सिर काटकर शेरशाहके पास भेज दिया।

(१) सुलहकी बात भी पूरी अबुलफजलने नहीं लिखी और दूसरे इतिहासवेत्ताओंने जो लिखी है उसमें भी फेरफार बहुत है, पर सारांश यह है कि सुलह इन शर्तोंपर हुई कि, बङ्गाल और बिहार शेरखांको दिये जावें और वह हुमायूंको अपना बादशाह माने और उनके नामका खुतबा अपने मुल्कमें पढ़ावे। शेरखांने सुनारके वास्ते बहुत हठ किया। बादशाहको मंजूर तो नहीं था, परन्तु उसने दे दिया और शेरखांने कुछ कर देना भी स्वीकार किया।

सुलहके पीछे शेरखांने कर्मनाशापर पुल बनाकर अपनी कुछ फौज बङ्गालकी तरफ भेज दी। परन्तु बादशाहने अपने सब मोरचे तोड़ दिये। चौकी पहरे उठा दिये और आगरे जानेके लिये गङ्गापर नावोंका पुल बांधा।

शेरखांने यह हाल देखकर सुलह तोड़ दी और चुपकेसे बादशाहकी फौजपर धावा बोल दिया।

बादशाही लश्करको काठी कसने और हथियार बांधनेकी भी फुरसत न मिली। बादशाहने बाबा जलायर तरदीबेग और रुस्तमबेगको हुक्म दिया कि, जाकर जल्दीसे हाजी बेगमको ले

आयें, पर वहां वे सब और और पहलवान बदख्शी आदि बहुतसे आदमी मारे गये और बेगम बाहर न निकल (१) सकी।

बादशाह जब पुलके ऊपर (२) पहुंचे, तो पुल टूटा हुआ था। उन्होंने नदीमें घोड़ा डाल दिया और घोड़ेपरसे पानीमें गिरकर डूबने लगे। एक भिश्तीने उनको तिराकर निकाला। बादशाहने उसका नाम पूछा तो उसने निजाम बताया; बादशाहने फरमाया कि, हम जब तख्तपर बैठेंगे, तो तुझे आधे दिनकी बादशाही देंगे।

यह घटना ९ सफर सन् ९४६ हि० (आषाढ़ सुदी १० सं० १५९६—२४ जून १५३९) को गङ्गाके किनारे चौसाके घाटपर

---

(१) शेरखांने अपने नाजिरों और सिपाहियोंको हुक्म दिया कि बेगमके डेरेपर पहरा दें और किसीको हरमसराके पास न फटकने दें। अफसरों और मुरदा सिपाहियोंकी बीबियां भी इसी जगह चली आवें।

(२) पुलपर पहुंचनेसे पहिले जब बादशाह अपने आदमियोंको लड़नेके वास्ते इकट्ठे कर रहे थे, तो कुछ पठानोंने एक हाथी उनपर हूला। उन्होंने एक नौकरके हाथसे भाला लेकर हाथीके मस्तकमें ऐसा मारा कि, अन्दरतक घुस गया और फिर खेंचनेसे नहीं निकला, तब बादशाहने उसको छोड़ दिया। उस समय एक तीरन्दाजने भी हाथीपरसे तीर मारकर बादशाहकी बांह घायल कर दी, तो भी बादशाहने अपने पासवालोंको पुकार कर हा कि, आओ धावा करें। उन्होंने कहा कि, दस्तरख्वां सो उठ गया, फिर खानेका क्यों रास्ता देखना चाहिये। अब ढील करनेका समय नहीं है। बादशाहने तोभी लड़ने और मरनेका इरादा किया; परन्तु अमीर उनके घोड़ेकी बाग मोड़कर उनको गङ्गातक खेंच ले गये।

हुई। मोहम्मद जमान मिरजा मोजाना कासिम आदि बहुतसे अमीर और मौलवी वहीं (१) डूब गये।

---

(१) बादशाहके निकलते ही लश्कर तितर बितर होगया। आठ हजार सिपाही बड़े बड़े अफसरोंके साथ गङ्गामें डूब मरे या मारे गये। क्योंकि शेरशाहने पुल तोड़ दिया था और अपने सिपाहियोंको नावोंमें बैठाकर इधर उधर भेज दिया था; जो बादशाही आदमियोंको गङ्गाकी तरफ आते हुए देखकर तीरों और बन्दूकोंसे मार डालते थे और लश्करमें जो डेरे तोपखाने अनाजके ढेर और माल असबाब थे, वे सब शेरशाहके हाथ आ गये और उसने अपने डेरेमें जाकर खुदाका शुक्र किया और हाजी बेगमसे कहलाया कि, जब हुमायूं आगरे पहुंच जायंगे तो मैं आपको राजी खुशी वहां पहुंचा दूंगा और उसने अपने इस इक़रारको पूरा भी किया। और यह भी कहा कि बेगमों और मरे हुए तथा भागे हुए सिपाहियोंके जोरू बच्चोंको भी वैसी गुजारे मिलेंगे जो पहिले मिलते थे और वे कैदी नहीं समझे जावेंगे और जो उनकी मरजी हो तो अपने घर चले जावें।

बादशाह मिरजा असकरी और थोड़ेसे आदमियोंसे धावा करके आगरेमें पहुंचे। मिरजा कामरांने आकर चौखट चूमी। कुछ दिनों पीछे मिरजा हिन्दाल भी मिरजा कामरां और अपनी माके साथ घरमाया हुआ आया। बादशाह बड़ी महरबानीसे पेश आये और उसके कसूरोंको मुंहपर नहीं लाये।

(१) आगरे पहुंचनेसे पहिले रास्तेमें उनको खबर लगी कि, मीरफरीद अफगान तो पीछेसे चला आता है और शाह मुहम्मद अफगान आगेका रास्ता रोके हुए है। यह सुनकर बादशाह बहुत घबराये इस बुरे समयमें वीरभान नाम एक राजपूत राजा अपने सिपाहियोंके साथ बादशाहकी मददको खड़ा होगया और बोला कि, मीर फरीद जो पीछेसे आता है उसे मैं रोकता हूं

और हुजूर अपनी सारी फौजसे शाहमहम्मदपर जो रास्ता रोके खड़ा है, धावा करके निकल आइये। बादशाहने ऐसाही किया और कालपीके रास्तेसे आगरे पहुंच गये।

इतनेमें निजाम सक्का भी आ पहुंचा। बादशाहने दूरसे देखकर उसके वास्ते तखत खाली करदिया और उसको आधे दिनकी बादशाही देकर सिवाय कई हुक्मोंके जो उसके हौसलेसे बढ़कर थे और सब बातोंका अख्तियार देदिया।

उस भिश्तीने तख्त पर बैठकर जो हुक्म दिया वह जारी हो गया। मिरजा कामरांने इस बातसे नाराज होकर बहुत गिला किया।

शेरखां बंगाल जानेका विचार करके बिहारतक गया और वहांसे जलालखांको बंगाल भेजा। जहांगीर कुली जलालखांसे लड़ा और मदद न मिलनेसे भागकर जमीदारोंकी शरणमें चला गया और झूठी प्रतिज्ञा और शपथपर पठानोंके पास जाकर बहुतसे आदमियों समेत मारा गया।

शेरखां बंगालकी तर्फसे बेफिकर होकर जौनपुर आया और उस मुल्कको लेकर आगे बढ़ा। उसका छोटा बेटा कुतुबखां बहुत सी फौजसे कालपी और इटावेतक आकर लूट मार करने लगा।

बादशाहने यह सुनकर यादगार नासिर मिरजा कासिमहुसेनखां उजबक, और इस कदर सुलतानको जो उस तर्फके जागीरदार थे, कुतुबखांके ऊपर भेजा। इन्होंने जाकर खूब लड़ाई लड़ करके विजय पाई। कुतुबखां मारा गया।

बादशाह बहुत दिनोंतक आगरेमें रहकर फौजकी भरती करते रहे। उन्होंने मिरजा कामरांको राजी करनेमें कोई बात उठा नहीं रखी, जिसके पास २५००० फौज और उत्तरमें काबुलसे जमीन दावर और दक्षिणमें समानेतक मुल्क था। परन्तु वह राजी न हुआ और बीमारीका बहाना करके लाहोरको

चल दिया। लेकिन मिरजा हैदर (१) मोहम्मदहुसेन गोरगांका बेटा, जो बाबर बादशाहकी मौसीसे पैदा हुआ था और मिरजा कामरांके साथ आया था, बादशाहके समझानेसे रह गया। मिरजा कामरां अपनी फौजमेंसे ३००० हजार आदमी मिरजा अबदुल्लाह मुगलकी अफसरीमें उसके पास छोड़ गया।

बादशाह भाइयोंकी फूटसे थोड़ेसे लशकरके साथ ही शेर खांके ऊपर गये। जब भोजपुर पहुंचे तो शेरखां भी बहुत सी फौजसे नदीके उस तरफ आ जमा।

बादशाहने नदीसे उतरनेके लिये पुल बंधवाया और १५० आदमी घोड़ोंकी नंगी पीठपर पानीमें तैरकर पठानोंके ऊपर गये और लड़ भिड़कर वापस आने लगे। तब पठानोंने गर्द-बाज नाम हाथीको जो जौसाकी लड़ाईमें उनके हाथ आ गया था। पुल तोड़नेके वास्ते छोड़ दिया। जब वह पुल तोड़ रहा था तो इधरसे वह तोपोंकी मारसे उड़ा दिया गया। जो पठान साथ थे वे भी भाग गये और बहादुर मुगल कुशल पूर्वक चले आये।

फिर कनौजको लौट चलनेकी सलाह होकर बादशाहके कि-नारे किनारे कूच करते हुए चले आये। पठान भी नावोंमें चढ़कर लड़ते आते थे मगर तोपोंकी मारसे नुकसान उठाते रहे।

कनौज पहुंचकर दोनों लशकर आकी इधर उधर आमने-सामने पड़े रहे। मोहम्मद सुलतान मिरजा, उलग मिरजा और शाह मिरजा जो पहले बादशाहसे बदलकर चले गये थे और बीचमें वापस आ गये थे, अब फिर भाग गये और भी बहुतसे आदमियोंको अपने साथ भगा ले गये।

---

(१) मिरजा हैदरने अपने इतिहासमें लिखा है कि जब दर-बार जुड़ा तो यह सलाह होने लगी कि, क्या करना चाहिये।

बातें तो बहुत लम्बी चौड़ी हुईं परन्तु एक भी ऐसी न थी, जो कामकी होती। मिरजा कामरांको लौट जानेकी धुन लगी हुई थी। बादशाह उसकी सब बातें तो मान लेते थे, परन्तु जानेकी परवानगी नहीं देते थे। सात महीने इसी झमेलेमें निकल गये। शेरखां लड़नेके वास्ते गंगाके किनारे तक चला आया।

मिरजा कामरांको हिन्दुस्थानका पानी अनुकूल नहीं हुआ। कई रोग लग गये; दो तीन महीनेमें बुरा हाल हो गया। निदान हकीम अबुलबकाके इलाजसे आराम हुआ, तो उसने लाहोर जाना चाहा। उसका जाना मानो शेरखांका सौभाग्य और बादशाहका अभाग्य था। बादशाहने बहुत ज़ोर मारा कि, मिरजा अपने आदमी सहायताके लिये छोड़ जावे, परन्तु मिरजा आगरेके सब आदमियोंको ही ले जाना चाहता था, अपने आदमियोंको छोड़ना कैसा। औरख्वाजा कलां भी, जिसकी अकलसे मिरजा काम करता था, जानेकी बहुत जल्दी मचाता था। मिरजाने उसको पहले विदा किया। पीछेसे आप भी चल दिया। इतनेमें शेरखां गंगापर आ पहुंचा। उसका लशकर गंगा पार हुआ और उसका बेटा कुतबखां इटावे और कालपीतक चला गया। ये परगने उजबक सुलतान कासिम हुसैन और यादगार कासिम मिरजाकी जागीरमें थे, जो बाबर बादशाहके भाई नासिर मिरजाका बेटा था। कालपीका एक भाग मिरजा कामरांके पास भी था, जिसके बन्दोबस्तके लिये उसने सिकन्दर सुलतानको भेजा था। ये सब मिलकर कुतबखांसे लड़ने गये और उसको मार डाला। बादशाहने शेर खांसे लड़नेको गङ्गाकी तरफ कूच किया। मिरजा कामरांने अपने सारे काम मुझको सौंपे और कहा कि, तू मेरे साथ लाहोर

विचारसे गङ्गापर पुल बंधवाया और पार उतरकर लशकरको

चल। तू अपने भाईबन्दोंको अनबनसे काशगर छोड़कर आया जहां तूने उमर भर चाकरी की और क्या फल पाया। मैंने तुझे अपने भाईसे अच्छा समझा और सारे काम सौंप दिये। इसपर भी मुझसे यदि कोई अपराध हुआ हो, तो तू कह दे; मैं उसका बदला भर दूं और तू इस हालतमें कि मत्, बल पा गया है और मैं बीमार हूं मुझपर भाइयोंकीसी कृपा कर और मुझे इन दोनों बलाओंसे छुड़ाकर लाहौर पहुंचा दे। उसने चिट्ठीमें मुझे चुना हुआ दोस्त और भाईसे अच्छा लिखा और ऐसा अलकाब उसने किसीको भी नहीं लिखा था।

अब बादशाह मुझे यह समझाता था कि, मिरजा कामरां जो बीमारीके बढ़ जानेसे तुझे साथ ले जाना चाहता है, तू तो कोई हकीम नहीं है जो उसके रोगकी दवा करेगा और जिससे तेरा जाना जरूरी हो और जो नातेसे जाता हो, त तेरा नाता मुझसे और कामरांके समान ही है। मैं जो कहता हूं तू उसको न्यायसे देख कि बाबर बादशाहके सब बेटोंक और सारे हिन्दुस्तानका काम इस लड़ाईपर खड़ा हुआ है जो मुझसे और शेरखांसे होती है। तेरा कामरांके साथ लाहौरको जाना दो बातोंसे खाली न होगा, एक तो यह कि तू कामरांके बहानेसे अपनी जान लेकर भागा। दूसरी यह कि तू बाबर बादशाहकी मौसीका बेटा है और सबके साथ तेरा नाता बराबरीका है; इसलिये भी लोग कहेंगे कि, तू ऐसी दुःखोंमें किसीके काम नहीं आया और बचकर लाहौर पहुंचा और वहांसे किसी और अमनचैनकी जगहमें चला गया। क्या यह बात दोस्ती और अपनायतकी है कि, जो तू मुझे इस लड़ाईमें अकेला छोड़ता है? बाबरके घरानेकी खैरख्वाही इस लड़ाईमें तुझपर वाजिब है। मिरजा कामरांको बीमारी वा तो एक बहाना है।

चारों तरफ खाई खुदवायी और तोपें लगायीं। शेरखां भी खाई खोदकर सामने आ बैठा।

जो कभी इस लड़ाईमें हार हुई, तो लाहौर सबसे पहले उजड़ेगा और शेरखांकी तलवारके तले होगा।

मैंने यही ठीक समझा कि, मिरजा कामरांकी परवानगीके बिना ही बादशाहके पास रह जाऊं। मिरजाने सिकन्दर खांको प्राय: १००० आदमियोंके साथ मददके लिये छोड़ा और जितने आदमी वह यहांसे ले जा सका अपने साथ लेकर लाहोरको चल पड़ा, जिससे उसने अपने दुश्मनको जिताया और दोस्तोंको हराया।

अब बादशाही लशकर गङ्गाके किनारेपर पहुंचा। एक महीने तक इधर यह और उधर, शेरखांका लशकर दोनो आमने सामने पड़े रहे। दोनों लशकरोंमें दो लाखसे ऊपर आदमी होंगे।

खुरासानके अगले बादशाह सुलतानहुसैन मिरजाका नाती मोहम्मद सुलतान मिरजा हिन्दुस्तानमें बाबरके पास आया था और बाबरने उसपर बादशाहोंकीसी मेहरबानियां की थीं। वह हुमायूं बादशाहसे कई बार बदल गया, जिससे उसका काम तो कुछ न बना और बादशाहके पास आ आकर कसूर माफ कराये।

अचरज यह है कि, ऐसे मूर्ख जो भागते थे, शेरखांके पास भी नहीं जाते थे, जो उससे कुछ मेहरबानीकी उम्मेद तो रखते। वे तो यही कहते थे कि, लशकरमें हवा गर्म है। हमको जाने और अपने स्थानोंमें आराम करने दो। मिरजा कामरांका लशकर जो मददके वास्ते रहा था, उससे बहुतसे आदमी लाहोरको भाग गये।

इतनेमें बरसात आगयी और बादशाहके लशकरमें पानी भर गया।

अब बादशाहके पास जो असबाब रहा था, वह ७०० गाड़ियोंमें था, जिनको बैलोंकी ४।४ जोड़ियां खींचती थीं और एक एक गाड़ीमें एक दो 'जरबजन' (छोटी तोप या गुबारा) थी जिससे ५०० मिसकाल (प्रायः १२५ तोले) का गोला छूटता था। इन दिनोंमें बहुत बार मैंने देखा कि, जो सवार उंचाईपरसे थोड़े थोड़े दिखते जाते थे, उनपर ये गोले सीधे जाकर लगते थे।

२१ गाड़ियां ऐसी भी थीं कि, ८।८ जोड़ियोंसे खिंचती थीं। इनपरसे पत्थरोंके गोले नहीं मारे जाते थे, किन्तु अष्टधातका गोला छोड़ा जाता था, जो तौलमें २०० मिसकाल (प्रायः १५०० तोले वा १७ सेर) और मोलमें २०० मिसकाल (प्रायः ६०० माशे वा ७५ तोले) चांदीका होता था। उसको उस चीजपर ताककर मारते थे, जो एक फरसख (१-१॥ मील) पर दिखायी देती थी।

जब लशकरी भागने लगे, तो यह खटका हुआ कि, कहीं लड़ाईके बिना ही लशकर उजड़ न जावे। इसलिये यह सलाह हुई कि, एक बार लड़ लेवें, जो हार भी जायेंगे, तो कोई यह नहीं कहेगा कि, हिन्दुस्थान जैसा मुल्क बिना हाथ हिलाये ही खो दिया और यह फायदा भी समझा गया कि, जो गङ्गापार चले जावेंगे, तो फौज भाग नहीं सकेगी।

ये बातें सोचकर लशकर गङ्गापार उतारा गया और दोनों लशकरोंने अपने आसपास खाइयां खोद लीं। रोज दोनों तरफके लुच्चे और बेफिकरे आदमियोंमें लड़ाइयां हुआ करती थीं। इतनेमें बरसात आ गयी और मेह भी इतना बरसा कि, बादशाहकी सब छावनी पानीमें डूब गयी। इसलिये वहांसे भी कूच करना ठहरा। क्योंकि खानेलोग चाहते थे कि, जो ऐसा ही एक और मेह बरसा, तो सारा लशकर बह जावेगा। इसलिये

यह सलाह हुई कि, यहांसे लशकर उठाकर किसी ऊंची जगह पर लगाया जावे जहां बरसातका रेला भी न आवे और शत्रुसे लड़ाई भी अच्छी तरह हो सके।

मैं ऐसी जगह ढूंढ़ने गया और एक जगह इस कामके वास्ते तजवीज कर आया और बादशाहसे अर्ज की कि, कूच करते समय लड़ना नहीं चाहिये। बल्कि शत्रुका ध्यान बंटाकर उसकी यों परीक्षा करनी चाहिये कि, कल आशूरा (ताबूतों) का दिन है; हम अपने लशकरको खूब सजावें और जमावें, पर आगे न बढ़े और दुशमनोंको देखें। अगर वे खाईसे बाहर आवें और लड़नेको बढ़ने लगे तो आखिर हममें और उनमें लड़ाई होगी। ठीक उपाय यह है कि, हम देगों (तोपों) और जरबजनोंको आगे रखें और बन्दूकचियोंको, जो ५०० हैं, तोपोंपर खड़े करें। अगर दुशमन हमपर धावा करनेको बाहर निकले, तो कोई मौका और वक्त इससे अच्छा और बढ़िया लड़नेके वास्ते न होगा और जो वह खाईसे बाहर न आया, तो हम दोपहरतक ठहरे रहें और फिर अपने डेरोंमें आ जावें। दूसरे दिन भी वही काम करें, जो पहले दिन किया था। यों नयी जगहमें अपना लड़ाईका सामान पहुंचावें और पीछे हम भी कूच करके वहां चले जावें, यह बात सबको पसन्द आ गयी।

१० मोहर्रम सन् ९४७ (जेठ सुदी १२ सं० १५९७) को उसी विचारसे हम सवार हुए और जमाकर खड़े रहे। परन्तु, वे (लाम) उन लोगोंके दिलोंकी तरहसे बिखरे हुए और टेढ़े थे। बात यह ठहरी थी कि, गाड़ियां, तोपें और बन्दूकची बीचमें रहे। तोपोंका काम मोहम्मदखां रूमी, उस्ताद अलीकुलीके बेटे उस्ताद अहमद रूमी और हसन खलीफाको सौंपा गया। उन्होंने गाड़ियों और जरबजनोंको ठीक स्थानोंपर खड़ा किया

सुदी १२ सं० १५८७, १५ मई सन १५४०)को फौज सजकर सवार

और कायदेसे उनमें जंजीरा खैंचा वाकी फौजमें जो अमीर थे वे इस बेसुसम्मा थे अर्थात् नामके तो अमीर थे पर उनमें अमीरोंकेसे गुण नहीं थे। उनके पास बड़े बड़े परगने और खजाने तो थे, पर उनमें बुद्धि, रूप, साहस, लज्जा और बहादुरी कुछ भी नहीं थी। सच्चा अमीर वही होता है जिसमें ये गुण हों।

बादशाहने मुझे अपनी अनीके बायें कोनेकी तरफ इस-तरहसे ठहराया था कि, मेरी अनीका दहना कोना बादशाहकी बांयी अनीके कोनेसे मिला हुआ था। यहां मैंने अपनी चुनी हुई फौज खड़ी की। बांयीं तरफ मेरे सब नौकर खड़े थे। मैंने ४०० सिपाही चुन लिये थे; वे सब लड़ाई देखे हुए और लड़ाइयोंमें ही पले हुए थे। सब तपचाक घोड़ोंपर सवार थे और बकतर पहने थे। मेरे और नदीके बीचमें २७ अमीर थे, जिनके पास अलम और तोग थे। ऐसे ही दहनी तरफ भी समझ लेना चाहिये। जब शेरखां अपनी फौजको सजाकर लाया तो उन २७ बड़े अमीरोंने अपने तोगोंको इस बहमसे छिपा दिया कि, उनको देखकर दुशमन कहीं हमपर ही न दौड़ पड़ें। बस उनकी इस हरकतसे उनकी बहादुरीका अनुमान कर लेना चाहिये।

शेरखांने इस फौजके पांच तुंगे किये थे एक एक तुंगेमें एक एक हजार आदमी थे। ३००० आदमी उसके आगे बढ़े थे। मेरी अटकलसे शेरखांके सिपाही १५००० कम थे और अगलाई लशकरमें ४०००० आदमी होंगे। बादशाही लशकरमें सब लोग तपचाक घोड़ोंपर सवार और बकतर पहिने हुए थे। वे समुद्रके समान उमड़ रहे थे, परन्तु, उनके अमीरोंका वही हाल था जो मैंने ऊपर कहा है।

हुए। मुहम्मदखां रूमी उस्ताद अलीकुलीके बेटों, उस्ताद अहमद

जब शेरखांकी फौज खाईसे बाहर निकली, तो उसके दो तुम्न जो और सब तुम्नोंसे बड़े थे, खाईके आगे खड़े हो गये और तीन तुम्न बादशाही लश्करकी तरफ आये, तब मैं भी बादशाहकी तरफसे क़ोल (बीचके लश्कर) को चलाकर उस जगहपर ले गया, जो लड़ने करनेके लिये पसन्द की गयी थी। परन्तु जब हम वहां पहुंचे, तो ठहर न सके। क्योंकि चगताई लश्करमें अमीरों, वजीरोंके पास धनीसे लेकर गरीब आदमीतक गुलाम ही गुलाम थे। जिन अमीरोंके लक्षण पहले लिखे गये हैं, उनमेंसे जिस अमीरके पास १०० नौकर थे, तो उसके नौकरोंके पास ५०० गुलाम होंगे। ये गुलाम लड़ाईके दिन न तो अपने मालिककी कुछ मदद करते हैं और न अपने आपेमें रहते हैं। जहां लड़ाई थी वहां इन गुलामोंपर उनके मालिकोंका कुछ बस नहीं चलता था। जब उनके सिरपर उनका मालिक नहीं रहता, तो वे नकेल टूटे हुए ऊंट बन जाते हैं या उस शिकारी पक्षीके समान हो जाते हैं कि, जिसके माथेपरसे टोपी उठ जाय और वह जिधर चाहे उड़ जाय। इसीतरह वे गुलाम भी मारे डरके जिधर चाहते थे, उधर ही भागनेके लिये धकाधूम मचाते थे जिससे हमको अपनी जगहपर जमा रहना दुस्तर हो गया था।

दुश्मनने क़ोल (बीचकी अनी) को पीछेसे दबाकर दोनों जंजीरोंके बाहर कर दिया। फिर तो यह हाल हुआ कि, यह उसपर और वह इसपर गिरने लगा। ऐसे ही गुलाम भी जो आदमियोंके पीछे थे, अपने आदमियोंको आगे धकाते थे, जंजीरा कई जगहसे टूट गया और जो आदमी जंजीरके पास थे, वे उसके बाहर निकल गये और जो नहीं निकल सके, वे अंदर ही रुक गये। सब परे (लाम) तितर बितर हो गये यह तो उस लश्करका हाल हुआ, जो बीचमें था।

दहनी अनीकी तरफ शेरखां चढ़कर आया। वह जिस परेके पास जाता था वहीं एक तीर छोड़े बिना ही तीरोंके आगेसे ऐसे जाता था, जैसे आंधीमें घास उड़ जाती है। यों वे सब अपने परे तोड़कर कोलमें पहुंचे। जिन गुलामोंको उनके सरदारोंने पीछेसे बुलाकर आगे बढ़ाना चाहा था, वे जो पीछेसे भागे तो गाड़ियोंके पास पहुंचे और कुछ गाड़ियोंसे भी आगे निकल गये कुछ पीछे रहे। सफें सब ऐसी चलविचल हो गयीं कि अमीर नौकरसे और नौकर अमीरसे बिछड़ गये और ऐसेमें बायीं अनीकी फौज भी कोलमें भाग आयी और कोलकी फौज भी शत्रु पर एक तीर चलाये बिना ही बिखर गयी। फिर तो एक साथ ही भागड़ पड़ गयी। चगताई लशकर, जिसको मैंने अनुमानसे ४० हजार कहा था, शेरखांकी २५ हजार फौजसे भाग गया। दोस्त और दुश्मनमेंसे एक भी घायल नहीं हुआ। शेरखांकी जीत और चगताइयोंकी हार हुई। एक भी देग (तोप) से न कोई गोला चला न किसी जरबजनमें बत्ती लगी और सारी गाड़ियां निकम्मी हो गयीं।

चगताई जहांसे भागे हैं वहांसे गङ्गा एक फरसख दूर थी। सब अमीर और बहादुर लोग, जिनमेंसे कोई भी जखमी नहीं हुआ था, प्राण बचानेके लिये गङ्गाकी तरफ भागे। दुशमनोंने पीछा किया और चगताइयोंको जिरह बकतर और हथियार उतारनेका भी अवसर नहीं दिया। वे वैसे ही गङ्गामें जा कूदे और अपनेही बकतरों और हथियारोंके बोझसे डूब गये। नदीका पाट पांच तीरोंके पल्लेका होगा। उसमें बड़े बड़े अमीर और बहादुर सरदार डूब मरे और जो बचे जिधर उनका मुंह हुआ उधर चल दिये। जब हम दरियासे निकले हैं तो वह बादशाह, जिसके कारखानोंमें दो प्रहर पहले १७ हजार शागिर्दपेशेके लोग काम करते थे नंगे सर है

मुवाफिक तोपें भरकर जंजीरें लगा दीं। बादशाह बीचमें थे, मिरजा हिंदाल आगे था, मिरजा असकरी और यादगार नासिर मिरजा दायें बायें फौजोंमें थे। मिरजा हैदरने अपनी तवारीखमें लिखा है कि "हजरतने उस दिन मुझे अपने बायीं तरफ जगह दी थी और मुझसे कोल यानी बीचके लशकरकी बायीं हद तक २७ तोकदार (१) अमीर थे।" शेरखां भी अपने लशकरकी ५ फौजें बनाकर निकला, जिनमेंसे दो खाईके बाहर ही खड़ी रहीं और तीन बादशाहीलशकर पर आयीजलालखां, सरमस्तखां और नियाजी जातिके पठान तो मिरजा हिंदालके ऊपर आये, मुबारजखां बहादुरखां राय हुसेन जलवानी और कारानी जातिके पठान, यादगार नासिर मिरजा और कासिमहुसेन पर गये। खवासखां बरमजीद और दूसरे लोग मिरजा असकरीके सामने हुए।

पहले लड़ाई जलालखां और मिरजा असकरीसे छिड़ी। खूब दौभाड़ें हुईं। जलालखां घोड़ेसे गिर पड़ा और बादशाही जुरनगार (बायें हाथका लशकर) अपने दुशमनोंको हटाकर उनके गोल (बीचके लशकर) पर जा पड़ा। शेरखां यह देखकर बहुतसी भीड़ भाड़से बढ़ा खवासखां और उसके बहुतसे आदमी भी मिरजा असकरी पर चढ़ आये, जिनसे लड़े बिना ही अकसर अमीर मुंह मोड़ गये। बादशाहने दो दफे दौड़ दौड़ कर पठानों पर हमला किया और दो बरछे उनके हाथसे टूटकर रह गये। मगर भाइयोंसे

६ और नंगे पांव एक घोड़े पर सवार था और वह भी उसको तरदी बेगने दिया था। बादशाहके ७ हजार आदमी थे जिनमें से ६०ही नदीमेंसे जीते निकले थे, बाकी सब डूब गये थे। इससे सब आदमियोंकी जानोंका अनुमान करलो। (मिरजा हैदरने यह अपनी आंखों देखा हाल तारीख रशीदीमें लिखा है।)

(१) तोक एक किसमका तमगा था, जो अमीरोंको मिलता था।

कुछ मदद नहीं मिली और न अमीरोंसे सेवा बन आयी थी बादशाहका इरादा ऐसी हालतमें लड़कर मर जानेका था, मगर खैरख्वाह लोग बहुतसा वाह सुन कर वहांसे निकाल लेगये।

जो अमीर मदान छोड़कर भागेथे। गङ्गामें (ज। ए॥ कोसके क़रीब थो) गिर कर डूब गये। बादशाह (१) हाथीपर सवार होकर गङ्गासे तो उतर आये, मगर आगे कराड़ा बहुत ऊंचा था। इसलिये हाथीसे उतरकर उस पर चढ़नेका रस्ता ढूंढ रहेथे कि एक सिपाहीने पहुंचकर उनका हाथ पकड़ा और ऊपरको खेंच लिया। बादशाहने उसका नाम धाम पूछा तो शमसुद्दीन और गजनीन बताया और कहा कि मिरजा कामरांके पास नौकर हूं। इतनेमें मिरजा कामरांके एक अमीरने, जिसका नाम मुकद्दम बेग था, बादशाहको पहचानकर अपना घोड़ा नजर किया। बादशाह उसपर सवार होकर आगरेको रवाना हुए; रास्तेमें मिरजा लोग भी आ मिले।

---

(१) बादशाह गङ्गाके किनारेपर खड़े हुए सोच रहे थे कि अब क्या करना चाहिये। इतनेहीमें उनकी नजर एक बूढ़े हाथीपर पड़ी। बादशाहने महावतसे कहा कि हाथी ला। वह लाया और बादशाह हाथीपर बैठ गये और महावतसे कहा कि हाथीको पानीमें डाल। वह बोला कि हाथी डूब जायगा तब काफूर नाम एक ख्वाजा सरा (खोजे) ने चुपकेसे कानमें कहा कि, यह नमकहराम कहीं हुजूरको दुशमनोंमें लेजाकर न फंसादे आप इसका सिर उड़ा दीजिये। मैं हाथी हांक जानता हूं, हांक लूंगा।

बादशाहने महावतका सिर काटकर नीचे फेंक दिया, खोजा महावत बना और बादशाहको पानीसे निकालकर किनारेपर उतार दिया; परन्तु वह कराड़ा बहुत ऊंचा था बादशाहसे ऊपर चढ़ा न गया। ऊपर कई मुगल बैठे थे। उन्होंने पगड़ियां बटकर उनका एक सिरा बादशाहके हाथमें पकड़ाया और उनको ऊपर खेंच लिया।

जब भौगांवमें पहुंचे तो वहांवाले बादशाही लोगोंको सौदा सुलफके लिये अपने कसबेमें आनेको रोक टोक करके लड़ने लगे। जो ३००००के करीब पैदल और सवार थे बादशाहने मिरजा असकरी यादगार नासिर मिरजा और मिरजा हिन्दालको उन्हें सजा देनेका हुक्म दिया। मिर्जा असकरी तो नहीं गया। यादगार नासिर मिरजा और हिन्दाल गये। बड़ी लड़ाई हुई और बहुतसे गंवार मारे गये। मिरजा उनको सजा देकर लौट (१) आये।

बादशाह वहांसे धावा करके आगरे पहुंचे और दूसरे दिन मिरजा कामरांसे मदद लेनेके लिये पञ्जाबको (२) रवाना हो गये। मिरजा असकरी संभलको और मिरजा हिन्दाल अलवरको चला गया।

---

(१) जब मिरजा असकरी नहीं गया तो यादगार नासिर मिरजा ने उसको २।४ कमचियां लगाकर कहा कि तुम्हारी फूटसे ही तो यह दशा हुई है और फिर नहीं समझते हो।

जोहरने अपनी तवारीखमें इस कमची मारनेकी बात यों लिखी है कि, यादगार नासिर मिरजाको तीर लगा था तो उसने असकरीसे कहा कि आप इन गंवारोंपर जाओ मैं जरा अपना जख्म बांधलूं। उसके इस कहनेसे असकरीने इतना बुरा माना कि, उसको गाली दी उसने भी दी तो गुस्सेमें भरकर उसके २ कमचियां मारदीं। उसने असकरीके पांवमें कई कमचियां मारीं। जब बादशाहने इस कमचीबाजीकी बात सुनी तो कहा जो ये ही कमचियां आपसमें मारनेके बदले चोरोंको मारते तो कितना अच्छा होता।

(२) चलते वक्त बादशाहने मिरजा हिन्दालसे कहा कि किलेमें जाकर बेगमों खजानों और जवाहरातको जितना कुछ ला सको ले आओ। और वह सीकरीके रास्ते में बादशाहसे आ मिला। सीकरीमें बाबर बादशाहका बाग था, वहां पहाड़की तरफसे एक तीर आकर बादशाहकी बगलमें लगा। मिरजा हैदर मारनेवा-

१८ मोहर्रम (आषाढ़ वदी ५ संवत् १५९७। २२ मई सन् १५४०) को बादशाह दिल्ली पहुंचे वहां कासिम. हुसेन सुलतान और बेगमीरक वगैरा बहुतसे आदमी साथ हो गये।

लेको ढूंढ़ने गया, तो वह भी जखमी होकर लौटा। बादशाहने जाना कि, यहां कुछ हालमें काला है इसलिये तुरन्त वहांसे दिल्लीको चल दिये। परन्तु, हाल बहुत बिगड़ा हुआ था; कई अमीर साथ थे। इनमें एक फकीर अली नाम था जो बादशाहकी आगेसे जाने लगा। बादशाहने गुस्सा होकर उसको बुलाया और कहा कि मैं तेरे ही कहनेसे गङ्गाके पार उतरा था जो तू वहीं मर जाता तो अच्छा होता कि, आज हमसे फटकार तो न चलता। फकीरअली यह सुनकर लौट आया और रास्तेहीमें मर गया।

बादशाह पहली मंजिलकी 'बजूने'में पहुंचे ही थे कि, मिरजा असकरीने अर्ज की, सुना है कि, शेरशाहका भेजा हुआ अमीर फरीदगौर बहुत पास आ गया है। आप हलकी सवारीसे अभी निकल जाइये और लोग पीछेसे आते रहेंगे। बादशाह घोड़ेपर सवार हुए। लशकरमें बड़ी खलबली मची। सब आदमी घबरा गये कि, अब क्या करें। कोई किसीके साथ नहीं हुआ। बेटा बापको और बाप बेटेको सुध नहीं लेता था। जिसके पास जो कीमती माल था, वही उसको छिपाकर चंपत होता। इतनेहीमें मेह ऐसा बरसा कि, तकलीफमें और तकलीफ हो गयी। बादशाहने अपने आदमियोंको बेकल देखकर घोड़ा रोका और कहा कि रूम, शाम, ईरान और हर तरफके आदमी जो हमारे साथ थे, उनमेंसे कुछ तो जोसाकी और कुछ कनौजकी लड़ाईमें मारे गये और जो बाकी हैं वे यों मरते हैं। मैं मरनेको राजी हूं; परन्तु, मुझसे आदमियोंका दुःख नहीं देखा जाता। इस तरहसे घबराना नहीं चाहिये और धीरजसे एक साथ चलना चाहिये।

२० (आषाढ़ बदी ७—२५ मई) को बादशाह दिल्लीसे कूंच करके २२ (आषाढ़ बदी ८) को कहतक पहुंचे। वहां मिरजा हिंदाल और मिरजा हैदर भी आ मिले; मगर किलेवालोंने शहरके दरवाजे बन्द कर रखे थे, इसलिये बादशाह थोड़े ही दिनोंमें उनको सजा देकर १७ सफर (सावन बदी ४।२० जून) को (१) सरहिन्द पहुंचे २१ (सावन बदी ८—२४ जून) को मीर फकीरअली वहांमें मर गया।

जब बादशाह लाहौरके पास दौलतखांकी सरायमें पहुंचे, तो मिरजा कामरां पेशवाई करके ले गया। बादशाह ख्वाजा दोस्त मुनशीके बागमें उतरे और मिरजा हिंदाल कामरां मिरजाके दीवान ख्वाजगाजीके बागमें ठहरा। पीछेसे मिरजा असकरी भी संभलसे आ गया और अमीर वलीबेगके घरमें ठहर गया।

फिर शमसुद्दीन भी आ गया जिसने बादशाहको गङ्गामें हाथका सहारा दिया था। बादशाहने उसपर बहुत मिहरबानी की।

यह बाहकर उन्होंने फौजके तीन हिस्से किये दहनी फौजकी सरदारी मिरजा हिंदालको, बायींकी यादगार नासिर मिरजाको और पीछेकी दूसरे अमीरोंको दी और यह हुक्म सुना दिया कि, जो हमारे आगे जायगा, सजा पावेगा और उसका घर लुट जायगा।

जोईला बहादुरने एक मुगलका घोड़ा छीन लिया था, बादशाहने लौटा देनेका हुक्म दिया, नहीं माना तो उसका सिर उड़ा दिया। इस ढंगसे आगेको इंतजाम हो गया।

(१) बादशाह मिरजा हिंदालको तो जो राहमें आ मिला था सरहिन्दमें छोड़कर आप सतलजके किनारेपर माछीवाड़ेमें पहुंचे। नदी चढ़ी हुई थी, परन्तु वे उसके पार उतर गये। शेर शाह दिल्लीमें आ गया था। दोनों बादशाहोंमें ५० कोसका बीच था।

१ रबीउलअव्वल (सावन सुदी २ ता० ४ जुलाई) को भाइयों अमीरों और नौकरों चाकरोंने मिलकर आपसमें मेल मिलाप रखने का महज़रनामा बड़े बड़े आदमियोंकी गवाहीसे लिखा और सलाह करनी शुरू की। बादशाहने सब तरहकी नसीहत करके कहा कि, खुरासानमें सुलतान हुसैन मिरज़ाने १८ लायक बेटे छोड़े थे, जमा हुआ राज था और बहुतसा सामान था, मगर भाइयोंकी फूट और आपधापीसे थोड़े ही दिनों पीछे मुल्कमें शाही (१) बेगका अमल हो गया और तमाम बेटोंमें सिवाय उलग मिरज़ाके, जो रूमको चला गया, कोई नहीं रहा और दुनियामें सब लड़के बदनाम हुए और बड़े हजरतने हिन्दुस्थानका ऐसा बड़ा मुल्क कितनी मिहनतसे लिया है, अगर वह तुम्हारी फूटसे ऐसे नालायकोंके हाथमें पड़ जायगा, तो दाना लोग तुमको क्या कहेंगे? सो अब इस मामलेमें समझ और गैरतसे काम करना चाहिये जिससे जगतमें उजला मुंह रहे।

इसके जवाबमें मिरज़ा कामरांने कहा कि, बादशाह और सब मिरज़ा लोग कुछ दिनों पहाड़ोंमें छड़े रहें और सबके अ-हलोंको उठाकर मैं काबुलमें ले जाऊं और वहां किसी अमनकी जगहमें छोड़कर आ मिलूं।

मिरज़ा हिन्दाल और यादगार नासिर मिरज़ाने कहा कि, अभी तो हमारा लड़ना पठानोंसे नहीं हो सकता; मुनासब यह है कि, भक्करमें जाकर उस विलायतको लेलें फिर उसकी कुव्वतसे गुजरात-को फतह करें। जब ये दोनों मुल्क हाथ आ जावें और काम सुधर जावे तो फिर इस मुल्कका छुड़ा लेना अच्छी तरहसे हो सकेगा।

(१) वही शैरखां या मोहम्मदखां शैबानी जिसका नाम बाबर-नामेमें बार बार आया है और जिसने बाबरको भी तूरानसे निकाल दिया था।

मिरजा हैदरने कहा कि, बेहतर यह है कि, सब मिरजा लोग बदख्शांके पहाड़से रावलके पहाड़तक घाटियोंको मजबूत करके बैठ जावें और मैं जिम्मा करता हूं कि, थोड़ीसी मददसे दो महीनेमें काशमीरको छीन लूंगा। जब काशमीर के लेनेकी खबर पहुंचे तो सब कोई अपने कबीलोंको वहां भेज दें कि, उससे बढ़कर कोई बचावका मकाम नहीं है। शेरखांके पहुंचनेको चार महीने चाहियें। वह गाड़ियों और तोपोंके साथ जिनपर उसकी लड़ाईका मदार है पहाड़ोंमें नहीं पहुंच सकेगा और थोड़े ही दिनोंमें पठानोंका लश्कर उजड़ जायगा।

दिल और जबान एक नहीं होनेसे कोई बात नहीं ठहरी और कचहरी उठ गयी। बादशाह तो यह चाहते थे कि, मिरजा कामरां मदद करे और मिरजाकी यह नीयत थी कि, काबुलमें आरामसे जा बैठे जबानसे तो यही कहे जाता था कि, मैं फलाने मुहूर्तमें निकलूंगा और आपके साथ चलकर दुश्मनोंसे लड़ूंगा, मगर दिलमें इरादा और था। निदान उसने अपने सदर (१) काजी अबदुल्लाहको शेरखांके पास सुलहकी बातचीतके लिये भेजा और खतमें लिखा कि, जो पंजाब मेरे पास रहने दो तो मैं अच्छे अच्छे काम कर सकूंगा।

शेरखां दिल्लीसे आगे पांव नहीं रखता था और अपनी उतनी फतह होनेको एक इत्तफाकसे समझता था। उसको आगे बढ़नेमें यह डर था कि, कहीं पीछे हटना न पड़े, क्योंकि लाहोरमें फौजोंका जमाव सुनकर दिलमें बहुत डरता था। मगर सदरके पहुंचनेसे फूटका हाल मालूम होकर उसका दिल बांसों बढ़ गया। उसने सदरकी बड़ी खातिर की और खतका जवाब भी मिरजाकी मुरादके मुवाफिक लिखा। मगर जब उससे आगे बढ़नेको कहा

(१) पुरोहित दानाध्यक्ष।

गया तो उसने असल हाल जाननेके लिये अपने एक चाचाके वकी-लको उसके साथ कर दिया।

मिरजा कामरां शेरखांके वकीलसे लाहोरके बागमें मिला। उस दिन उसने बड़ी मजलिस जोड़कर बादशाहको भी बुलाया था और फिर उसी सदरको शेरखांको लानेके लिये भेजा। वह सुलतानपुरकी नदीपर शेरखांसे मिला और उसको नदीसे उतरने-पर तैयार किया।

बादशाहने मुजफ्फर तुर्कमानको उस नदीपर गिरदावरीके लिये छोड़ा था। उसने आकर अरज की कि, लशकर तो नदीसे उतर आया और मेरा भतीजा जुनैदबेग मारा गया है।

जमादि उलसानीके आखीर (प्रथम आ।ोजबदी आखीर सितम्बर) में बादशाह और मिरजा लोग लाहोरकी नदीसे जो उस वक्त पगार थी, उतरकर कूच दरकूच चिनाव नदीपर पहुंचे। बादशाहका इरादा काश्मीर जानेका पक्का हो गया था। इसलिये उन्होंने कुछ फौज मिरजा हैदरके साथ पहलेसे काश्मीरको भेज दी। क्योंकि जब मिरजा कामरां मिरजा हैदरको लाहोरमें छोड़कर सामम-रजासे लड़नेके लिये कन्धारपर गया था, तब ख्वाजा हाजी अब-दाल माकरी और रमकीचक वगैरा काश्मीरके अमीर वहांके हाकिमसे नाराज होकर मिरजा हैदरके पास मदद मांगनेको आये थे और मिरजाने बहुत चाहा था कि, कुछ फौज उनके साथ काश्मीर फतह करनेको भेजी जावे, मगर ऐसा न हो सका था, और वे लोग नौशहरा और राजोरीके पहाड़ोंमें पड़े हुए रास्ता देख रहे थे। अब मिरजा हैदरने बादशाहको काश्मीर के लेनेका लालच दिखाया और बादशाहने उसको यह कहकर भेजा कि, नौशहरेमें काश्मीरके अमीरोंसे मिलो और जो वे साथ होकर घाटी-तक ले जावें तो फिर हमको खबर दे देना तो हम भी आ जावेंगे।

फिर बादशाह तो चिनाव नदीपर ही पड़े रहे। मिरजा

कामरां (१)* और मिरजा असकरी काबुलको चल दिये। मोहम्मद सुलतान मिरजा शाह मिरजा और उलग मिरजा भी उसके साथ हो गये।

बादशाह १ रजब (२) सन् ९४७ (कातिक सुदी ३ संवत १५९७ ता० ३० अकतूबर १५४०) को काश्मीर जानेका इरादा कर रहे थे, मगर मिरजा हिन्दाल यादगार नासिर मिरजा और

(१) जब मिरजाओंकी फूटसे कोई बात नहीं बनी थी तो कई सलाहकारों (मन्त्रियों) ने बादशाहको सलाह दी थी कि, अब कामके एक करनेका इससे अच्छा और कोई उपाय नहीं है कि, मिरजा कामरांका काम तमाम कर दिया जावे क्योंकि बादशाहको तख्तसे उतारनेके लिये वह कई षड्यन्त्र रच रहा है। बादशाहने कहा कि, मैं इस असार संसारके लिये कभी अपने भाईकी जान नहीं लूंगा। मेरे बापने मरते हुए जो मुझसे कहा था कि, "हुमायूं हरगिज २ अपने भाइयोंसे खेंचतान् मत करना और निर्दयी न होना" वह शिलापर लकीरकी समान जमा हुआ है और किसीके मिटाये नहीं मिट सकता।

(२) बादशाह कूच दरकूच चलते हुए १ रजबको हजारेमें पहुंचे। यहां अर्ज हुई कि, मिरजा कामरां बहुतसा लावलश्कर लिये आ रहा है। बादशाहके नौकरोंने कहा कि, हुक्म हो तो हम भी हथियार बांधकर तैयार हो जावें। बादशाहने कहा कुछ जरूर नहीं। मिरजा कामरां आया बादशाहके पास बैठा और कहने लगा कि, जबसे मैं काबुल छोड़कर आया हूं, काम बहुत रहा जिससे कभी आराम न कर सका, इसलिये थक गया हूं और यही हाल मेरे नौकरोंका भी हो रहा है। अब काबुल जानेका हुक्म मांगता हूं, सो वहांसे नयी फौज और नया सामान तैयार करके हाजिर हो जाऊं। बादशाहने फातिहा ([illegible]) पढ़ा और भाईको बिदा किया।

कासिम सुलतान कठ करके सिन्धकी तरफ (१) चले गये और कई दिनों बाद ही साथ छोड़कर अलग चलने लगे। इतनेमें मिरजा हिन्दालके खिदमतगार, काजी अबदुल्लाह सदरको पकड़ लाये जो कुछ पठानोंको लेकर आता था। पठान तो मारे गये, मगर सदर मीर बाबा दोस्तकी सिफारिशसे बच गया।

(१) "वाकेआत हुमायूनी"में लिखा है कि, इस वक्त ख्वाजाकलां बेग बहीरेमें हाकिम था, उसने बादशाहको अर्जी भेजी कि, जो हजूर पधार जावें, तो मैं चाकरी करनेको हाजिर हूं। और ऐसी ही अरजी उसने मिरजा कामरांको भेजी थी। फिर जब सुना कि, पठान लाहोरसे ३० कोसपर आ गये हैं, बादशाह और कामरां बहीरेकी तरफ भागे आते हैं तो स्यालकोटमें जहां वह था, बहीरेमें आ गया। बादशाहको ख्वाजाकलांसे मिलनेका बड़ा चाव था इसलिये बहीरे जानेका विचार करके दो पहर पीछे झेलम नदीपर पहुंचे। नदी बड़े जोरसे चढ़ी हुई थी। बादशाहने तरदीबेगको कहा कि, "घोड़ा नदीमें डाल और आगे चल" घोड़ा तिरा तो सही, परन्तु इधर उधर चक्कर खाने लगा। तब बादशाहने एक हाथीको नदीमें चलाया और उसके पीछे आप भी घोड़ेपर चलने लगे सांझ पड़ते पड़ते चालीस आदमियों सहित नदीसे उतरे और रातभर चलकर तड़के ही बहीरेमें पहुंचे। लेकिन मिरजा कामरां पहले ही पहुंचकर ख्वाजाकलांको अपने साथ ले गया था।

अक्बार औरचीने अर्ज की, जो हुक्म हो तो मिरजा कामरांपर जाऊं। बादशाहने फरमाया कि, पहले जब लाहोरमें मिरजा हिन्दालने कहा था कि, मैं इसे मार डालूं और मैं राजी नहीं हुआ था तो अब फिर कैसे राजी हो सकता हूं। यह ठीक होगा कि, खुशाबमें जाकर हुसैन तैमूर सुलतान और उसके बेटोंसे मिलूं। बादशाह यह कहकर बहीरेसे चल दिये और दोपहर

मिरजा २० दिनतक जङ्गलमें घूमते रहे नहीं जानते थे किधर जायें और क्या (१) करें।

बादशाह जङ्गलके रस्तोंसे भक्करको जा रहे थे जहां न पानी था न दाना, खुदा तवक्कुल (राम भरोसे) चले जाते थे। एक दिन नक्कारेकी आवाज सुनकर खबर मंगायी तो मालूम हुआ कि, दो तीन कोसपर मिरजा हिन्दाल और यादगार नासिर मिरजा आ रहे हैं। बादशाहने उनको अपने पास बुला लिया और सब मिलकर भक्करको चले। खवासखां और पठानोंका लशकर भी पीछे पीछे चला आता था।

पीछे खुशाब पहुंचे। सुलतान तेमूरने बेटों सहित आकर रकाब चूमी। बादशाहने उसकी खातिर की और पूछा कि, जो अभी मिरजा कामरां आ जाय तो तू क्या करे? वह बोला, मैं बादशाहका गुलाम हूं, लड़ाईमें जान देनेको हाजिर हूं। बादशाहने कहा कि, तू तैयारी कर और हमारे लशकरके साथ चल। उसने हुक्म मान लिया और साथ हो गया।

बादशाह तैमूर सुलतानके साथ ६ कोस चले थे कि, आगे एक ऐसा घाटा आया कि, जिसमेंसे एक रस्ता तो मुलतानको जाता था और दूसरा काबुलको। अब यहां कामरांका भी लशकर आ पहुंचा और यह घाटा ऐसा तङ्ग था कि, दोनों लशकर साथ साथ नहीं चल सकते थे और दोनोंको ही जानेकी जल्दी थी। बादशाह कहते थे, पहले मैं जाऊं, कामरां कहता था, मैं जाऊं। इसपर तकरार होने लगी तो मीर अबुलबकाने जो कामरांके लशकरमें एक स्याना आदमी था, कामरांको समझाकर बादशाहको आगे निकल जाने दिया।

(१) इन मिरजाओंको बलोचोंसे बहुत तकलीफ पहुंची थी जिन्होंने मुलतानकी तरफका रस्ता घेर लिया था और खाना पीना बन्द कर दिया था और जिससे उनको लौट जाना पड़ा।

[illegible] पहुंचना।

बादशाह शाबानके अखीर (माघ (१) बदी) में उच्च पहुंचे। वहांसे आगे जब बख्शूलंगाके वतनके पास डेरे हुए, जो उस तरफके बड़े जमींदारोंमेंसे था, तो बादशाहने नक्कारा, निशान और खानजहांका खिताब उसके वास्ते भेजकर लशकरमें अनाज मंगाया।

बख्शूने फरमानकी पेशवाई करके एक अच्छी भेंट बादशाहके वास्ते भेजी और व्योपारियोंको भी कहा जो लशकरमें आकर सब चीजें बेंच गये और नावोंका भी बन्दोबस्त कर दिया जिनमें बैठकर बादशाह (२) भक्करको रवाना हुए। यादगार नासिर मिरजा आगे आगे हिरावली करता जाता था।

२८ रमजान ९४७ (फागुन बदी १४, २४ जनवरी सन १५४१) को बादशाह भक्करके सामने (३) लुहड़ीमें उतरे और एक उमदा बागमें ठहरे बाकी बाग अपने साथियोंको बांट दिये।

भक्करके सुलतान महमूदने, जो मिरजा शाहहुसेन बेग अरगूंका तावेदार था, भक्करकी बस्तीको उजाड़कर किला ले लिया और नावोंको भी इधर लाकर किलेके नीचे लंगर किया। भक्कर और लुहड़ीके बीचमें सिन्धु नदी बहती थी।

---

(१) ऊपर एक रज्जब तारीख सुदी १ को लिख आये हैं उस हिसाबसे तो अखीर शाबान पौस बदीमें होना चाहिये, परन्तु उस वर्ष अर्थात् संवत १५९७ में पौसका महीना टूट गया था इसलिये शाबानका महीना माघ बदीमें पूरा हुआ लिखा है।

(२) बादशाह गारा नदीपर ठहरे हुए थे और उसीसे उतरकर भक्करमें पहुंचे थे सतलज और व्यास नदियां जहां मिलती हैं वहांसे आगे उनको गारा कहते हैं।

(३) लुहड़ीको अब रोड़ी कहते हैं।

यह शाहहुसेन बेग शाहबेग अरगूंका बेटा था। जब बाबर बादशाहने कन्धार उससे छीना था, तो वह ठट्ठे और भक्करमें आकर इस तमाम मुल्कको दबा बैठा था।

बादशाहने लुहड़ी पहुंचकर सुलतान महमूदको हाजिर होने और किला सौंप देनेका हुक्म लिखा। उसने अरज करायी कि, मैं तो मिरजा शाहहुसेनका नौकर हूं। जबतक वह खिदमतमें हाजिर न हो, मेरा आना बेफायदा है और किला भी बगैर उसकी इजाजतके नहीं सौंप सकता हूं।

बादशाहने अमीर ताहरसदर और मीर समंदको ठट्टेमें मिरजा शाहहुसेनके पास भेजा। उसने अपने वकीलोंके हाथ नजर निछावर और अरजी भेजकर कहलाया कि, भक्करकी विलायतमें तो आमद कम है और (१) जाजगानमें आबादी और आमदनी बहुत है, उधर तशरीफ ले जावें और उसको अपने कबजेमें कर लें। वहां सिपाहको भी आराम रहेगा और मैं भी खिदमतमें हाजिर हो जाऊंगा और मेरे आते ही गुजरात भी फतह हो जायगी और फिर सब हिन्दुस्तान भी हाथ आ जायगा।

गरज वह ऐसी झूठी सच्ची बातें बनाकर टाल गया। बादशाह मिरजा हिन्दालको पातरकी तरफ भेजकर ५।६ महीने लुहड़ीमें ठट्ठेवालोंको सीधे रस्ते पर लानेके लिये ठहरे (२) रहे, फिर पात-

(१) जाजगान वा चाचगान सिन्ध नदीके पूर्वमें एक इलाका है जहांके लोग बड़े बहादुर थे और शाहहुसेन भी उनको नहीं जीत सकता था। वह बादशाहको उनसे लड़ाना चाहता था।

(२) इन ५।६ महीनोंमें नाज बहुत महंगा हो गया था; लश्करमें बहुत आदमी इधर उधरसे आकर भर गये थे; एक रोटी ४॥ माशे चांदीको आती थी। बादशाहने अपना खजाना खोलकर सिपाहियोंको रुपया दिया, तो भी बहुत महंगी होनेसे लोग भूखोंके मारे मरने लगे थे।

रमें (१) मिरजा हिन्दालके डेरेपर चले गये और वहां सन ९४८ (संवत १५९८) में मरयम (२) मकानीसे निकाह करके अपने लशकरमें आ गये।

फिर मिरजा हिन्दाल (३) भी मिरजा कामरांके बुलानेसे कन्धार चला गया। उसने यादगार नासिर मिरजाको भी आदमी भेजकर बुलाया।

---

(१) सिन्ध नदीसे २० कोस था।

(२) मरयम मकानीका नाम हमीदाबेगम था। यह हिन्दालके उस्ताद अली अकबर जामीकी बेटी थी और उस वक्त १४ वर्षकी थी। जब बादशाह पातरमें गये और उनकी दावतें हुईं, तो एक दिन मिरजा हिन्दालकी मां दिलदार आगा बेगमने भी बादशाहको न्योता दिया और सब बेगमोंको बुलाया। उनमें हमीदा बेगम भी थी। बादशाह उसको देखकर रीझ गये, उसकी मंगनी तो हो गयी थी, निकाह नहीं हुआ था। बादशाहने कहा कि, मैं इससे निकाह करूंगा। यह सुनकर मिरजा बहुत चिढ़ा और कहा कि, मैंने तो जाना था कि, बादशाह मेरी इज्जत बढ़ानेके लिये आया है, मगर नहीं, वह तो एक जवान लड़कीके वास्ते आया था। जो वह यह अनुचित काम करेगा तो मैं उससे अलग हो जाऊंगा। बेगमने यह बातें सुनकर बेटेको बहुत फटकारा और कहा कि बादशाहसे माफी मांग। परन्तु उसने नहीं माना, तब तो बादशाह भी खफा होकर नावमें जा बैठे, लेकिन दिलदार बेगम उनको मनाकर अपने घर ले आयी और उसने बेटेको भी राजी कर लिया। निकाह हो गया। कई दिन पीछे ही मिरजा हिन्दालके लशकरमें बीमारी फैली और आदमी मरने लगे, तब बादशाह हमीदाबेगमको लेकर नावमें बैठे और अपने लशकरमें आ गये।

(३) किराचाखां मिरजा कामरांकी तरफसे कन्धारमें हाकिम

बादशाहने जब यह सुना तो १८ जमादिउल अव्वल मङ्गलवार सन ९४८ (आसोज बदी ४।६ सितम्बर) को मीर अबुलबका के डेरेपर जाकर उसको मिरजाके पास भेजा। उसने जाकर मिरजाको समझाया और यह बात ठहरायी कि, मिरजा नदीसे उतर कर बादशाहके पास आ जावे और फिर हमेशा साथ रहे। जब हिन्दुस्थान फतह हो जावे तो तीसरा हिस्सा उसको मिले और जो बादशाह काबुलमें जावें तो गजनीन, चर्ख और लोहगढ़ मिरजाको दे दें, जो बाबर बादशाहने उसकी मांको दिये थे।

बुधके दिन मीर अपनी वकालत पूरी करके लौटा। भक्करके किलेवालोंने मीरके जानेकी खबर पाकर कुछ आदमी उसकी नावके ऊपर भेजकर तीर बरसाये। मीरके कई जखम लगे जिनसे यह दूसरे दिन मर गया। बादशाहको बहुत रञ्ज हुआ और उन्होंने रोकर कहा कि, अबतक जो तकलीफें हुई हैं मीरका दुःख उनसे कुछ बढ़कर हो है।

५।६ दिन पीछे यादगार नासिर मिरजा आ गया और बादशाहने ठट्ठेके वकील शेख मीरकको बिदा करके शाहबेगके नाम हुक्म लिखा कि, उसने जो कुछ अर्ज की थी वह मञ्जूर है पर उसको आना चाहिये। वह आऊं आऊं तो करता रहा मगर नहीं आया, तब बादशाह भक्कर और उसका इलाका यादगार नासिर मिरजाको देकर १ जमादि उलसानी सन ९४८ (आसोज सुदी २ १९ सितम्बर) को ठट्ठेकी तरफ कूच कर गये। सहवानके किलेसे कुछ आदमी निकले और मुनअमखांके भाई फजीलबेग और शाहमखांके भाई तुरशबेग वगैरा २० आदमियोंपर जो नावमें बैठे

था उसने मिरजा हिन्दालको लिखा कि, यहां आओ और बादशाही करो। यादगार नासिर मिरजा भी बादशाहसे दिलमें राजी नहीं था। उसने भी मिरजा हिन्दालको बहकाया था, जिससे वह अपने लाव-लशकर सहित कन्धारको चल दिया।

जा रहे थे, चढ़ आये। ये नावसे उतरकर उनपर दौड़े और उनको भगाकर उनके पीछे पीछे किलेमें भी घुस गये, मगर मदद न पहुंचनेसे लौट आये।

१७ रजब (मगसर बदी ४। ४ नवम्बर) को बादशाहने (१) सहवान पहुंचकर किलेको घेरा। किलेवालोंने पहले ही बाहरके मकानों और बागोंको उजाड़ दिया था। ठट्टे के हाकिमने आकर रसद रोक दी। अन्नालकी तकलीफ होनेसे कई छोटे बड़े आदमी (२) भागकर यादगार नासिर मिरजाके पास चले गये। बादशाहने सावधान होकर मुनअमखांको कैद कर लिया, जो उन लोगोंका सरदार था।

यादगार नासिर मिरजाको बादशाह भकरमें छोड़ आये थे और वह लुहड़ीमें रहता था। उसपर १।२ बार तो किलेवालोंने गफलतमें धावा किया और तीसरी बार नावसे उतरकर खुश्कीमें लड़े। मिरजाने मुकाबला करके तीन चार सौको मार डाला, बाकी ऐसे हिम्मत हारे कि, फिर इधर नहीं आये और मिरजा शाहहुसेनने फरेबसे यादगार नासिर मिरजाको कहलाया कि, मैं बूढ़ा हो गया हूं, मेरे एक लड़की है। वह और सब खजाने तुझको देता हूं और अपने एक हो जानेसे गुजरात भी हाथ आ जायगा। मिरजा बेवकूफीसे उसकी बातोंमें आ गया। बादशाहने जो ठट्टेके हाकिम रसद रोकनेसे मिरजाको मददके लिये बुलाया था

(१) यह किला सिन्ध नदीके पश्चिममें ऊंची जमीनपर ६० फुट ऊंचा पक्की ईंटोंका बहुत मजबूत बना था।

(२) इस समय बादशाहके लशकरमें नाजका बड़ा टोटा था। सिपाही बोझा लादनेके जानवरोंको मार मार खाते थे। बारूद भी कम हो गयी थी, जिससे तोप बन्दूक कम चलती थी और किला नहीं टूटता था। नदीके चढ़ आनेसे पानी सब जगह बहुत फै[ल] गया था, जिससे बीमारी भी फूट निकली थी।

तो उसने डेरा तो बाहर कर दिया, मगर वहांसेवालोंसे कूच नहीं किया।

बादशाहने शेख अबदुल गफूरको उसके लानेके लिये भेजा तो उसने वह डेरा भी लौटा लिया और आनेमें भी बहाना (१) कर दिया।

बादशाह इस तरह जमानेको पलटा हुआ देखकर रसदकी तङ्गीसे १७ जीकाद (चैत बदी २। २ मार्च सन १५४२) को भक्करकी तरफ लौटे। (२)

(१) इसके सिवाय उसने यह कमीनेपनकी बात भी की कि, नाजकी भरी हुई एक नाव जो बादशाहके लशकरमें जाती थी, पकड़कर शाहहुसेनके पास भेज दी। उसने नाववालोंको, जो बादशाहका भला चाहते थे और उनके लशकरमें नाज पहुंचाते थे, निर्दयतासे मार डाला।

(२) शाहहुसेन यादगार नासिर मिरजाकी तरफसे तो बेखटके ही था। अब नावोंका बेड़ा लेकर बादशाहके पीछे चला। बादशाहकी नावोंमें जो औरतें थीं डरके मारे नङ्गे पांव भागकर छावनीमें चली आयीं और इसके साथ ही यह भी खबर उड़ी कि, बादशाह घोड़ेसे गिरे और उनकी टांग टूट गयी। यह सुनते ही लशकरवाले ऐसे घबराये कि, सहवानका घेरा छोड़ भागे। बादशाहने मुनअमबेगसे कहा कि, शाहहुसेनके पास जाकर उसके वकीलके मारे जानेकी (जो पहले मारा गया था) माफी मांगे और कहे कि, इस तकलीफमें अपने बादशाहपर मेहरबानी करे और उसका पीछा छोड़ दे। जब वह वकील गया, तो शाहहुसेन गुस्सेमें भरा बैठा था। उसने वकीलको अपने पास तक भी नहीं आने दिया और जवाबमें यह कहला भेजा कि, बादशाहने मुझपर या मेरे घरानेपर ऐसी क्या महरबानी की है, जो मैं उसकी तकलीफोंका लिहाज करूं।

यादगार नासिर मिरजाने ठट्ठेके हाकिमके बहकानेसे, दो जमींदारोंको जो बादशाहके वास्ते नावें पहुंचा दिया करते थे, पकड़कर उसके पास पहुँचा दिया और उसने उनको मरवा डाला। बादशाह सुनकर चुप (१) हो रहे।

---

(१) बादशाहके पास सिन्ध नदीसे उतरनेको नावें नहीं थीं। इसलिये उनके साथियोंने अरज की कि, अब कन्धारको चलना ठीक होगा। बादशाहने कहा कि, जब मुझपर कोई बड़ी ही आफत पड़ेगी, तो मैं नामहरबान भाइयोंके मुल्कमें जाकर शरण लूंगा और रोशनबेगको हुक्म दिया कि, कुछ आदमियोंको लेकर जाये और १०।१२ कोसतककी गायें भैंसें पकड़ लाये, जिनकी खालोंकी मशकें बनाकर उनसे नदीको उतर जायें। जब इस-तरह उन खालोंकी मशकें बनने लगीं, तो जमींदारोंने दो डूबी हुई नावें भी बतला दीं। अब शाहहुसैन दो कोसतक आ पहुँचा था, परन्तु नदीके चढ़ावसे आगे नहीं बढ़ सकता था और बादशाही आदमियोंको पकड़ लेता था। ऐसी गड़बड़में तर्दी-बेगने एक नाव ली और उसमें अपने खास बच्चोंको नदीसे उतार देनेके लिये बैठाना चाहा, परन्तु मीर अलाहने कहा कि, पहले बादशाहके कबीले उतरेंगे। इसपर उनमें तकरार हो पड़ी और तर्दीने मीरके चाबुक मार दी। मीरने भी तलवार मारी। तर्दीके तो नहीं लगी, घोड़ेकी जीन कट गयी। लोगोंने भी बीच बचाव कर दिया। बादशाहने जब यह खबर सुनी, तो तर्दीबेगके दरजेका खयाल करके कहा कि, मीरके हाथ कमालसे बांधकर तर्दीके पास ले जायं। तर्दीने तुरन्त उसके हाथ खुलवा दिये और कसूर माफ़ करके अपने पास बैठाया और घोड़ा जोड़ा देकर बिदा किया। फिर बादशाह सिन्धसे पार उतर गये। यादगार मिरजा सुनकर घबराया और खैरख्वाही जतानेके लिये शाहहुसैनके बहुतसे आदमियोंको कैद और कतल करके बादशाहके

जब बादशाह लुहड़ीमें पहुंचे, तो यादगार मिरजा आकमेको आया, मगर उसका एक भला आदमी जिसका नाम हाशमबेग था बुरा भला कहकर उसको गुड़की खाटा ले गया।

पैरोंमें जा पड़ा। बादशाहने फिर उसके कसूर माफ कर दिये, तो भी वह छिप छिपकर शाहहुसैनसे लिखापढ़ी करता रहता था। शाहहुसैनने उससे उन उन जमीदारोंको मांगा जिन्होंने बादशाहको नावें बता दी थीं। वे भागकर बादशाहकी छावनीमें आ गये। मिरजाने बादशाहसे अरज करायी कि, हजरतने जो भक्करको विलायत मुझे जागीरमें दी है उसीके इन जमीदारोंसे कुछ काम है सो इनको मेरे पास भिजवा दीजिये। बादशाहने अपने कुछ आदमियोंके साथ उनको भेजा और कह दिया कि, जब काम हो चुके, तो अपने साथ यहां ले आवें; परन्तु मिरजाने उनको बादशाही आदमियोंसे छीनकर शाहहुसैनके पास भेज दिया। इधर बादशाहके लशकरमें नाजकी बड़ी तङ्गी थी। यादगार मिरजाने थोड़ासा नाज बड़ी मुशकिलसे दिया था, वह जब खा लिया गया, तो बादशाहने तरदीबेग वगैरा अमीरोंको भक्करके किलेदार महमूदके पास भेजा। उसने बड़ी खातिर की। रुपया भी दिया और नाजकी ३०० गोनें भी बादशाहके लश-करमें भेज दीं। जब यह हो चुका, तो लोग भूखोंके मारे भागने लगे और बड़े बड़े आदमी बादशाहको छोड़कर यादगार नासिर-के पास पहुंचे। उसने बाकी आदमियोंको भी यह लिख भेजा कि, जो वे तड़केतक बादशाहके पाससे न भाग आवेंगे तो उनका खून उन्हींकी गरदनपर होगा।

फजायिलबेग, जो अगले दिन भाग गया था, अपने भाई मुन-इमखांको भी भगाना चाहता था और उसके साथ तरदीबेग भी भागनेवाला था। बादशाह यह सुनकर रातभर दोनोंकी चौकी-दारीमें जागते रहे। तड़के ही पाखानेको जाते हुए उनसे कह

बादशाहने अपने ही घरवालोंकी ये बातें देखकर फकीर हो जाने और एक कोनेमें बैठ रहनेका इरादा किया; मगर सब खैरख्वाहोंने बड़ी मुशकिलोंसे इस बातका ख़याल छुड़ाकर अरज की कि, अब यह मसलिहत है कि, मालदेवकी विलायतमें चलकर कुछ सुस्तावें जो अकसर अरजियां भेजकर बन्दगी करनेकी शेखी मार चुका है। उसके पास लशकर और सामान भी है। शायद वह वक्तको गनीमत समझे और साथ रहकर कुछ बन्दगी करे।

बादशाहने उनके कहनेसे उधरका इरादा करके यादगार नासिर मिरजाको फिर खत भेजे (१) और अपने पास आनेके लिये लिखा, मगर वह तो नहीं आया।

गये कि, तुम यहीं रहना, मैं आता हूं, इसपर भी वे अपने घोड़ोंकी तरफ चले और रोशनबेगने जाकर बादशाहको खबर दी कि, दोनों भागनेकी तैयारी कर रहे हैं। बादशाहने उनको बुलाया और जब नहीं आये, तो बादशाह आप जाकर उनको ले आये और मुनअमखांको पहरेमें रख दिया; तब तरदीबेगको भी रहना पड़ा।

ऐसे ऐसे दुःख पड़नेपर भी यादगार नासिर मिरजाकी तरफसे खटका बढ़ता जाता था। बादशाह तो यह देखते थे कि, उसकी फौजके बिना और कोई सहायता नहीं है और वह बादशाहका ही पाप काटा चाहता था, बल्कि एक दिन इसी लिये रोड़ीसे चढ़कर आया। इधरसे बादशाह भी उससे लड़नेको चढ़े, परन्तु मिरजाका भला आदमी हाशमबेग खबर पाकर दौड़ा आया और मिरजाको बुरा भला कहकर लौटा ले गया।

(१) सबसे पिछले खतमें यहांतक लिख दिया था कि, मैं तो तेरे मुंहकी तरफ देखता हूं और तू दूसरोंको अपना मुंह दिखा रहा है।

बादशाह २१ मोहर्रम सन ९४९ (जेठ बदी ८ संवत् १५९९ ता० ६ मई १५४२) को (२) उधरको लौटे और वहांसे १२ रबीउल अव्वल (आषाढ़ सुदी १४।२५ जून) को मालदेवकी

---

(१) उधरके रस्तेसे जानेमें बहुत चक्कर पड़ता था, और भक्करसे मारवाड़को सीधा रस्ता भी था, परन्तु कठिन बहुत था, इसलिये बादशाह उसको छोड़कर उधरके रस्तेसे चले और माऊ नाम एक गांवमें पहुंचे, वहां एक बालद पड़ी थी, जो जैसलमेरकी तरफसे नाज और दूसरा माल लादकर लायी थी। परन्तु बादशाहके लश्करकी भूखका हाल सुनकर झट अपने ऊंट लादकर जङ्गलको चल खड़ी हुई और कुछ नाज छोड़ भी गयी; जिसको देखकर बादशाही आदमी वहीं ठहर गये और खूब खा पीकर तीसरे पहरको आगे चले और भूखे प्यासे मञ्जिलें काटते हुए मऊ नाम गांवमें पहुंचे, जो भक्करकी सीमापर था। वहांसे आगे एक ऐसा स्थान आया जहां बहुतसा ढूंढ़नेपर भी पानी नहीं मिला। जब बादशाहकी भारझारी खाली हो गयी तो अपने आफताबची (जलधारी) से पूछा कि, तेरे पास पानी है? उसने कहा, है। बादशाहने कहा कि, मेरी भारझारीमें डाल दे, जब डाला तो लोटा खाली हो गया। जौहरने कहा कि, पानी नहीं मिलता है और कूच रातको होता है, जो मैं हुजूरसे दूर हो गया, तो प्यासा मर जाऊंगा। बादशाहने थोड़ासा पानी उसके लोटेमें उंडेल दिया और कहा कि, इतने पानीसे तेरा काम चल जायगा।

फिर एक तालाबपर पहुंचे। एक हिरन लश्करमें कहींसे चला आया। लोग उसके मारनेको दौड़े, परन्तु जीता निकल गया। बादशाहने एक आदमीको पुकारकर हिरनको लौटा लानेके लिये कहा, उसने घेरकर तालाबमें मार दिया। बादशाहने जौहरको पकड़नेका हुक्म दिया, वह बोला कि, इसमें एक चौथाई

तरफ चले। १४ (आषाढ़ सुदी १५। २६ जून) को देरावरके (१) किलेमें और २० (सावन बदी ६ ता० २ जोलाई) को बीसलपुर (बरसलपुर) में पहुँचे। १७ रबीउससानी (भादों बदी ४ ता० २८ जुलाई) को बीकानेरसे १२ कोसपर डेरे हुए। कुछ समझदार लोग मालदेवके कपटकी भी बातें कहा करते थे, इस लिये मीर समंदर मालदेवके पास गया और यह भेद लगाकर आया कि, वह बातें तो दोस्तीकी करता है, मगर सच्ची नहीं है।

मेरी है। बादशाहने कहा खैर, मेरी तीन चौथाई सही; फिर पक्का आया और मारा गया। उसकी एक चौथाई जौहरको मिली दो बादशाही अबरचीखानेमें और चौथी हमीदा बेगमके पास गयी।

जब बादशाह खाने पीनेकी बहुतसी तकलीफ उठाकर उच्च पहुंचे, तो वहांके हाकिम बखशूलंगाको खानजहांकी पदवी भेजकर कहलाया कि, आप आयें या नाज भेजें। परन्तु, उसने कुछ नहीं दिया; बल्कि लशकरवाले जो नाज मोल लाते थे, वह भी छिनवा लेता था। यहां डेढ़ महीनेतक रहना पड़ा। नाज तो मिलता नहीं था, लोग झरबेरीके बेरों और सांगरियोंको खाखाकर जीते थे।

(१) जब सांगरी और बेर भी हो चुके, तो एक फकीरने जो फिरा करता था; मालदेवके राज्यमें जेसलमेरकी सीमापर देरावर नाम एक किला देखकर बादशाहको खबर दी। बादशाह वहां जाकर उतरे। नाज और पानी हाथ आया। तीन दिन वहां रहे। शेख अलीबेगने कहा कि, क्यों हजरत ? मैं यह किला ले लूं। बादशाहने फरमाया कि, इस किलेके हाथ आ जानेसे मैं दुनियांका बादशाह नहीं हो जाऊंगा। मालदेव दिलमें दुखी होगा।

जब पहरभर दिन रहा, तो फिर उस किलेसे कूच हुआ। दोपहर दिन ४ पहर रात और १ पहर दिन फिर चले, मगर कहीं

जब बादशाह मालदेवकी वलायतके पास पहुंचे, तो सांगा नागोरी व्योपारियोंका भेस किये हुए लश्करमें आये और मोल लेनेके वास्ते अच्छे अच्छे हीरे ढूंढने लगे। बादशाहने उनको जासूस समझकर फरमाया कि, उस अनोखे खरीदारसे कह दो कि, ऐसी नग मोल नहीं बिकते हैं या तो तलवारसे मिलते हैं या बादशाहोंकी इनायतसे।

पानीपर नहीं पहुंचे, आदमी मरनेके करीब हो गये थे। दिन एक पहर आ रहा था, पानी ढूँढ रहे थे, अगली और पिछली मजलके बीच (पिछले दिन) का वक्त था कि, खुदाने अपनी महरबानीसे पानीका भरा हुआ तालाब दिखाया। बादशाह उतरे, खुदाका शुक्र किया और वहीं डेरा कर दिया। पानीकी मशकें भर भरकर अपने घोड़ोंपर बांधीं और कहा कि, जो प्यासा पड़ा होगा, उसको पानी पिलाऊंगा और लश्करमें पहुंचाऊंगा। जब लौटकर आते थे, तो एक मुगल, जिसका करज़ा बादशाहपर आता था, पानी न मिलनेसे रस्तेमें पड़ा था, मरनेके करीब हो गया था, उसका बेटा उसके सिरहाने बैठा था। बादशाहने पास पहुंचकर फरमाया कि, मुझपर जो तेरा करजा है उसको एक दीवड़ीमें छोड़ दे, तो मैं तुझको पानी पिला दूं। उस मुगलने कहा कि, मैंने अपना करजा एक दीवड़ी पानीमें छोड़ा, क्योंकि मैं जी जाऊंगा, एक गवाह मुनअमबेग, दूसरा मुज़फ़्फ़रबेग तुर्कमान, तीसरा रोशनकोका है। जब ये तीन गवाह हो गये, तो बादशाहने पानी दिया। मुगलने खूब पिया; बादशाहने उसको लश्करकी तरफ रवाने कर दिया और जो कोई पानी न मिलनेसे मर गया था, उसको गाड़ा और जो जीता था, उसको पानी पिलाया और उर्दूमें (छावनीमें) पहुँचाया। फिर वहांसे कूच करके फलोदीमें उतरे। आदमियोंको नाज पेट भरकर मिला। यहां मालदेवको फरमान भेजा। वह उजरख़्वाही करने लगा। उसने

बादशाहने रागाके आनेसे चौकन्ने होकर मीर समंदरको म-मझ बूझके बखान किये और रायमल सोनीसे फरमाया कि, जल्दीसे वहां जाकर जैसा कुछ हाल देखे उसको खबर पहुंचावे। जो लिखनेकी फुरसत न हो, तो इशारेसे समझा दे। मालदेवके दोस्त होनेका यही इशारा है कि, जिसको भेजे वह आकर पांचों उंगलियां एक साथ पकड़ ले, नहीं तो अकेली छोटी उंगली पकड़े। ज्योंही बादशाहकी सवारी फलोदीसे, जो मालदेवकी जन्मभूमि जोधपुरसे ३० कोसपर है, २।३ मञ्जिल आगे बढ़कर जोगी तालावपर उतरी। रायमलके कासिदने आकर छोटी उंगली पकड़ी। इस इशारेसे असल बात मालूम हो गयी और फिर खबर भी आ गयी कि, मालदेवकी खोटी मनशा (१) है और उसने कुछ फौज

कुछ मिला तो भेजा मगर कुछ निशान खैरख्वाहीका जाहिर न हुआ।

राजू नाम बादशाहका एक दरबान था। वह भागकर मालदेवके पास चला गया। उस नमकहरामने मालदेवसे कहा कि, बादशाहके पास लाल बहुत हैं, मांगो। उस दिन खान मोहम्मद भी भागकर मालदेवके पास गया और उसके दिलमें यह बात जमा दी कि, बादशाहसे लाल मांगने चाहियें। मालदेवने भी अपने जीमें ठान ली कि, बादशाहसे लाल मांगूं या तो देंगे या हमारी विलायत छोड़कर दूसरी जगह चले जायेंगे।

(१) बादशाहका एक किताबदार किसी पहलेकी बारमें मालदेवके पास चला गया था और नौकर हो गया था। उसने अरजी भेजकर लिखा कि, आप खुदाके वास्ते जहांतक हो सके जलदी यहांसे चले जावें, क्योंकि मालदेवकी ऐसी खोटी मनशा है कि, आपको पकड़कर शेरखांके पास भेज दे।

बादशाहका वकील शमसुद्दीन मालदेवके पास गया हुआ था, लेकिन मालदेवने उसको ऐसी नजरबन्दमें रख छोड़ा था कि, किसी

भी भेजी है। बादशाह यह सुनते ही फलोदीको लौटे। बहुत लोग यह कहते थे कि, मालदेव पहले तो खैरख्वाहीमें था, परन्तु, लश्करकी कमी और बेसामानीका हाल सुनकर बदल गया। शेरखांके झूठे इकरारों और उसकी जीतपर जीत होनेसे दुबधामें पड़ गया, जिससे उसने मदद नहीं की और कोई यों कहते थे कि, आदिसे अन्ततक उसका अरजियां भेजना और बन्दगीका दम भरना निरा कपट (१) था।

बादशाहने (दुश्मनोंका आना सुनकर) तरदीबेग और मुनअमखांको (२) हुक्म दिया कि, आगे जाकर इन लोगोंका रस्ता

तरहसे भी बादशाहको अरजी पत्री नहीं भेज सकता था। परन्तु जब उसने मालदेवकी मति फिरी हुई देखी, तो छिपकर बादशाहके पास आ गया और उन्हांका सब हाल कह सुनाया।

(१) तवारीख तबकात अकबरीमें लिखा है कि, जब बादशाह हिन्दुस्थानसे चल दिये और शेरखांकी जीतका डङ्का चारों तरफ बजा, तो पठानों और राजपूतोंमें मुठभेड़ होने लगी, तब मालदेवने बादशाहको यह विचार करके बुलाया कि, इनका सहारा लेकर शेरखांसे लड़ूं। परन्तु जब बादशाह उसके देशमें पहुंचे और उसने देखा कि, बादशाहके पास फौज बहुत कम है और टूटी फूटी है, मदद देनेके लायक नहीं है और शेरखांकी फौज नागोरके परगनेमें आ धमकी है, जो उसके राज्यकी सरहदपर है और शेरखांने एलची भेजकर बहुतसे इकरार मदार किये, तो उसने बड़ी बेमुरव्वतीसे यह ठान ली कि, बादशाहको जैसे हो सके वैसे पकड़कर शेरखांको सौंप दे।

(२) जब बादशाही लश्कर लौटा और बादशाहने जैसलमेरके रस्तेसे उमरकोट जाना चाहा, तो रोशनबेग और शमशुद्दीनको उस इलाकेका 'अगुआ' लानेके लिये भेजा। वे दो आदमियोंको ऊंटों समेत पकड़ लाये। बादशाहने फरमाया कि, ऊंट लश्करमें

रोक लो, सो उर्द में पांव रखकर हाथ डालने न पावें और इसी तरह देख भाल करते हुए आया करो और जो काबू देखो तो लड़ो भी; बादशाह यह कहकर बेगमों समेत रवाने हो गये। उस वक्त सिपाही तो २० ही साथ थे, परन्तु गुलाम शागर्द पेशा, मक्का ताबुईंम, मौलाना चांद ज्योतिषी वगैरा और लोग भी थे।

बंधे और आदमियोंकी तलवारें पहरेमें रखें, और काजी महदी अली जो इनकी बोली जानता है, इनको समझा दे कि, जो अच्छी तरहसे रस्ता बताओगे तो इनाम और नौकरी भी पाओगे। उन्होंने कहा कि, हम गंवार हैं; अमरकोटका रस्ता क्या जानें। इसपर वे कैद किये गये और धमकाये गये कि, तुम जासूस हो। अमरकोटका रस्ता जानते हो, पर ढिठाईसे नहीं बताते हो, सो तुम्हारे सिर काटे जावेंगे। उन्होंने जब देखा कि, कैदसे छूटनेकी उम्मेद नहीं है और जान जानेकी जगह है, तो पहरेवालोंका कटार और छुरा छीन लिया और एकादमसे धावा बोल दिया। पहले तरसम बेगको मारा जिसके पहरेमें बैठाये गये थे, फिर तबेलेमें जाकर बादशाहके देखते देखते अपने ऊंटोंके छुरे मारे और दूसरे जानवरोंको भी घायल किया, जिनमें बादशाहका खासा घोड़ा और खच्चर भी था। निदान बादशाही आदमियोंने उनको भी मार डाला, तबतक वे बहुतसे आदमियों, औरतों और जानवरोंको मार या घायल कर चुके थे।

तबकात अकबरीमें यों लिखा है कि, हिन्दुओंमें दो आदमी खबर लेनेके लिये आये थे, जो पकड़े गये और बादशाहके सामने लाये गये। जब पूछताछ करनेसे कुछ पता न लगा, तो एकको मार डालनेका हुक्म हुआ कि, जिससे डरकर दूसरा सच सच कह दे। परन्तु, उन्होंने दो सिपाहियोंके कटार और छुरे छीन लिये, जो उनके पास खड़े थे और १७ आदमियोंको घायल करके या मारकर आप भी मारे गये।

जब बादशाहका लशकर फलोदी होकरी सातलमेरमें पहुँचा, तो मालदेवके कुछ आदमी दिखायी दिये। इन्हींके रोकनेको जो अमीर भेजे गये थे, वे रस्ता भूलकर दूसरी तरफ जा निकले थे और इधर चले आये थे। बादशाहने बेगमोंको पैदल करके घोड़े

इस वारदातसे लशकरके सब लोग घबरा गये और भागने लगे। तब बादशाहने उनको समझाकर कहा कि, तुम मुझको छोड़कर कहां जाओगे दूसरा ठिकाना तो तुम्हारे बचनेके बचनेके लिये नहीं है। यह सुनकर भी ख्वाजा कबीर ख्वाजा अंबीर और मह्तर रमजान, जिनका बादशाहको बहुत भरोसा था, भागकर मालदेवके पास चले गये।

अब यह बात ठहरी कि, पश्चिमकी तरफ चलें। अमीर आगे हो जावें, बादशाह पीछे रहें। बादशाहका खासा घोड़ा तो मारा गया था और तबेलेमें दो घोड़े और खच्चर ही रह गये थे, इसलिये बादशाहके नौकरोंने तर्दीबेगसे घोड़ा देनेके लिये बहुतसा कहा, परन्तु उसने बेमुरव्वती करके कोई जानवर नहीं दिया। तब बादशाह लाचारीसे ऊंटपर सवार हुए। नदीमकोका आप तो पैदल चलता था और अपनी माको घोड़ेपर चढ़ाया था। जब उसने यह हाल देखा, तो वह घोड़ा बादशाहके नजर कर दिया और माको उस ऊंटपर बैठाया, जो बादशाहकी सवारीमें था। इस तौरसे जाते जाते तड़का हो गया, तब सवारोंकी तीन फौजें नजर आयीं; जो पीछेसे आती थीं और ५।५ सौ सवारोंकी होंगी। बादशाहने पूछा कि, जो अमीर पीछे गये थे, वे कहां हैं? अरज हुई कि, अंधेरी रात थी, रस्ता भूल गये। तब हुक्म दिया कि, देखो, ये दुशमनकी फौजें हैं या दोस्तकी। जब यह निश्चय हो गया कि, दुशमनकी फौजें हैं तो फरमाया कि, घोड़ोंपर जो असबाब लदा है वह तो उतारकर ऊंटोंपर लाद दिया जावे और जो सिपाही पैदल चल रहे हैं, इन घोड़ोंपर सवार हो जावें। इस तरकीबसे कुल १६

सिपाहियोंको दिये और उनके तीन तुङ्ग बनाकर दुश्मनोंपर कूच किया। और अलीबेग ३।४ आदमियोंसे आ गया था, ज्योंही एक तङ्ग जगहमें आये त्योंही उनपर धावा हुआ। धावा होते ही भाग निकले और बहुतसे उनमेंसे मारे भी गये। बादशाहने फतह पाकर जेसलमेरका रस्ता लिया। एक जमादिउल अव्वल (आसोज सुदी २ ता० १२ अगस्त) को बादशाहकी सवारी जेसलमेरके पास पहुँची, वहां वे बिछुड़े हुए अमीर भी बुरी बुरी खबरें सुनते सुनाते आ मिले।

सवारोंका लशकर तैयार हुआ। बादशाहने शेखअलीसे पूछा कि, क्या करना चाहिये? उसने कहा, यह वक्त वह है, जो इमामहुसैनपर आया था, कोशिश करना चाहिये। हद यह है कि, शहीद हो जायेंगे और अरज की कि, हजरत नमकका हक माफ फरमा दें और खिदमतका हक मैंने माफ किया। कुछ सवार मेरे साथ दें, तो जाकर खबर लूँ कि, ये कौन आदमी हैं। बादशाहने ७ सवार उसके साथ किये, नमकका हक बखश दिया। उसकी सलामतीकी दुआ मांगी और बिदा किया। शेखअलीबेगने अपने साथियोंसे कहा कि, हम थोड़े से आदमी हैं और वे बहुत हैं, दौड़कर चलो। जब पास पहुंचो, तीर मारो, फतह आसमानी है, देखें क्या होता है। उन लोगोंने भी ऐसा ही किया। जब उस फौजके पास पहुंचे, तो तीर मारे। खुदाकी मरजीसे बागियोंके दो सवारोंको तीर लगे, वे घोड़ोंपरसे गिरे। उनके गिरते ही तमाम लशकर उनका भाग गया। शेखअलीबेगने महबूद चोबदारसे कहा कि, जाकर हजरतको मुबारकबाद दे और यह हाल भी अरज कर। महबूदने उन दोनोंके सिर काटकर अपने घोड़ोंसे बांध लिये और चल दिया। हजरतकी नजर इस सवारपर पड़ी, तो पूछा कि, यह कौन सवार है, जो आता है। लोगोंने अटकलसे कहा कि, महबूद चोबदार होगा। हजरतने अच्छे शकुन लेकर

जैसलमेरके राय लूणकरणने तालाबोंपर पहरे बैठा रखे थे, मगर बादशाही बन्दोंने धावा करके उनको वहांसे उठा दिया और उमरकोटको कूच किया। १० जमादिउल अव्वल (भादों सुदी १२ ता० २१ अगस्त) को नाजपानीको तकलीफोंसे छूटकर उमरकोटके किलेमें पहुंचे। वहांके हाकिम राना परसादने अपनी इज्जत समझकर खूब खिदमत की।

फरमाया कि, जो अल्लाहतआलाने चाहा तो बहबूद (अच्छा) होगा। इतनेमें बहबूद आ गया और उसने दुश्मनोंके सिर हजरतके आगे फेंककर मुबारकबाद अरज की।

अमीर, जो हजरतसे बिछुड़कर रस्ता भूल गये थे, जैसलमेरकी विलायतमें दौड़कर गायें भैंसे पकड़ लाये और एक तालाबपर उतर कर मौज उड़ा रहे थे कि, हजरत भी पहुंच गये। सारे अमीर दौड़ आये बादशाह भी उतर पड़े। जो हाल गुजरा था, कहा। सबने अपने कसूरोंकी माफी मांगी और अफसोस किया कि, ऐसी जगह खिदमतसे दूर रहे और हाथ उठाकर दुआ मांगी कि, बादशाहके छत्रकी छाया हमपर बनी रहे।

जैसलमेरके राजाके दो वकील आकर अरज करने लगे कि, राजा मालदेवने तुमको बुलाया था; उसकी वलायतमें तो गायें नहीं मारीं और हमारी वलायतमें आकर मारीं यह बात तुमसे अच्छी नहीं हुई, अब हम तुम्हारे रस्तेपर हैं, कहां जाओगे? हजरतने अमीरोंसे पूछा कि, इन वकीलोंको क्या जवाब दें। उन्होंने अरज की कि, नरमी काम नहीं आती है, तलवारके हाथसे हुक्म फरमावें; वकीलोंको कैद कर दें और यहांसे चलकर निकल जावें।

जसलमेरमें पहुंचे ही थे कि, एक गंवार निकलकर लड़ने लगा; पीरमोहम्मदको बरछा मारा, जो नाभिके पार हो गया। शेख अलीबेग पीरमोहम्मदकी तरफ दौड़ा। उस गंवारको मारा

बादशाहने राय उमरकोटकी मददसे तरदीबेगखां वगैराको पकड़वाया, जिनके पास बहुतसा माल था और वे उस तकलीफमें

और पीरमोहम्मदको छुड़ाया। दूसरीको तलवार रोशनबेग तोशक बेगीके दहने हाथमें लगी, जिससे उसका वह हाथ बेकार हो गया। उसकी तरफ तरशनबेग दौड़ा और उसको बचाया। गंवारने दूसरी तलवार मारी, वह तरशनबेगके हाथमें लगी। उसकी बीचकी उंगली कट गयी। यह लड़ाई जुहरको नमाजके वक्त (तीसरे पहर) से होने लगी थी। असिरकी नमाजके वक्त (पिछले दिनको) गंवार अपने किलेमें चले गये।

जेसलमेरसे ५ कोसपर एक गांव था। हजरत वहां जाकर उतरे। उस गांवमें नाज और पानी बहुत था, लेकिन आदमी नहीं थे। जेसलमेरके राजाने अपने बेटेको, जिसका नाम मालदेव था, हुक्म दिया कि, तू आगे जाकर जहां कहीं कुआं हो, उसको रेतसे पाट दे, जिससे बादशाहका लश्कर पानी न मिलनेसे थक जावे।

मालदेवने ऐसा ही किया, कुओंमें रेत भर दी। बादशाह वहांसे चलकर दोपहरको एक कुएंपर पहुंचे, तो उसमें और फिर जिस कुएंमें डोल डाला, पानी नहीं निकला। इस बातसे जान लिया कि, कुओंको रेतसे भर दिया है।

फिर वहांसे भी चल दिये। जुहर और असिरकी नमाजोंके बीचमें (तीसरे पहरको) एक और कुएंपर पहुंचे और रातको गश्त फिरनेके लिये आदमी लगाये, जिनके साथ आप भी फिरने लगे। शेखअली यह सुनकर दौड़ा आया और बादशाहको सोनेके लिये भेजकर आप गश्त करने लगा।

जब बादशाह अपने डेरेमें पहुंचकर सो गये, तो शेरखांका भेजा हुआ एक चोर भीतर घुस आया और बादशाहकी बगलसे तलवार खींचने लगा। मगर फिर पकड़े जानेके डरसे छोड़ भागा। सवेरा होते बादशाहने देखा कि, तलवार म्यानसे निकली हुई है

मांगनेपर भी बादशाहको नहीं देते थे। बादशाहने उस मालमेंसे

...र गिकालनेवालेका पता न लगा। जब आगे चले तो ४ कुएं मिले। एक तो सूखा था, उसको छोड़कर बादशाहने दूसरा अपने लिये रखा, तीसरा तरदीबेग और चौथा खालिदबेगको दिया। पानी बहुत गहरा था, रस्सा लम्बा लगता था, डोलके निकलनेपर ढोल बजाते थे, जिसको सुनकर ऊंटवाला, जो डोल खींचता हुआ दूर निकल जाता था, ठहर जाता था। इस तरह जब पहला डोल निकला, तो प्यासे मरते हुए लोग उसपर आ गिरे, जिससे रस्सा टूट गया और डोल भी डूब गया, कुछ लोग भी उसके साथ डूबकर मर गये। पहले तो डोल निकलना ही मुश्किल था, फिर उसपर इतना झगड़ा होता था कि, किसीको पानी आसानीसे नहीं मिलता था। बादशाहसे शागिर्द पेशेवालोंने पुकार की कि, तरदीबेग अपने ऊंट घोड़ोंको पानी पिलाता है, हमको नहीं पीने देता। हम उससे लड़ेंगे। मारे तो जायंगे ही; यों भी प्यासके मारे जीते नहीं बचेंगे। आप उससे फरमा दें। बादशाहने तुरकीमें तरदीबेगसे कहा कि, तुम घड़ी भर अपने वास्ते पानी न निकालो। वह भी मान गया। तब शागिर्दपेशेको पानी मिला। फिर जेसलमेरके रायका बेटा आकर सामने खड़ा हो गया। उसके हाथमें सफेद झण्डा था। उसने नरमीसे अपना आदमी बादशाहकी दरगाहमें भेजकर अरज करायी कि, राव मालदेवने तुमको बुलाया था, तुमने उसकी वलायतमें गायें नहीं मारीं और वहां कुछ दूसरी भी जियादती नहीं हुई, उस बेदौलत (कुपात्र) ने बेवफाई की, यह उसकी नालायकी थी। खूब हुआ कि, आप उस जगहसे निकल आये। जब इस तरफको आते थे, तो मुनासिब था कि, अपनी खबर करते, मैं अपनी खिदमत बजा लाता। ऐसा कि, जमींदारोंका कायदा होता है, तुमने तो आकर हमारी वलायतमें गायें मारीं, इस बातका हिन्दुओंमें बड़ा ऐब (दोष) है।

कुछ तो अपने नौकरोंको खर्चके वास्ते बांटा और बाकी उन्हींको लौटा दिया। मरयम मकानी बेगम पूरे दिनोंसे थीं, इसलिये

जो यहां मुकाम करो, तो बैल और डोल मंगाऊं और पानी निकलवाकर हौज भरा दूं, जिससे तुम्हारे आदमी और जानवर पेटभर कर पानी पीयें और इस बन्देके ये आदमी, जो पकड़े हुए हैं, बेगुनाह हैं; इनका कुछ गुनाह नहीं है, इनको छोड़ देवें। तरदीबेगने आकर अरज की और उन वकीलोंको छुड़ाकर बिदा किया। हजरतने जाना कि, ये आदमी अच्छे हैं और फरमाया कि, अगली मञ्जिलमें एक ही कुआं है, आदमी पानीके वास्ते तकलीफ पावेंगे; इसलिये ३ तुम होकर बारी बारीसे चलें, जिससे सबको पानी मिल जावे।

पहले तो बादशाह तरदीबेग, तैमूर सुलतान खालिदबेग और रोशनबेग वगैरा चले। उनके पीछे मुनअमबेग नदीमकोका साथ और कुछ आदमी गये। फिर शेख अलीबेग और दूसरे लोग निकले, इसतरहसे चलनेपर भी अकसर आदमी प्याससे मर गये। इन तीनोंमेंसे एकसे तुमवाले एक दिन तालाबपर पहुंचे, घोड़े और ऊंट कई दिनके प्यासे थे। पानीको देखकर रोकते रोकते एकदमसे तालाबमें गिर पड़े और इतना पानी पी गये कि, तन तनकर पेट फट गये।

तब यों चलते चलते उमरकोटसे १० कोसतक पहुंच गये, तो यहांके रानाका पेशवाईमें आना न आना ठीक मालूम न था, क्योंकि तकलीफोंके मारे बादशाही अमीरोंने भी अदब आदाब छोड़ दिया था। रोशनबेगने अपना घोड़ा मरयम मकानीबेगमको मंगा दिया था। अब जो उसका घोड़ा थक गया, तो बेगमके पास जाकर अपना घोड़ा ले आया। जब बादशाहने यह हाल सुना, तो अपना घोड़ा बेगमके पास भिजवा दिया और आप पैदल चलने लगे। फिर बरतन लादनेका ऊंट मंगाकर उसपर सवार हुए और यों

बादशाह उनको कुछ आदमियोंके साथ उमरकोटके किलेमें

ज्यों त्यों कर एक कोस चले, तब खालिदबेगने खबर पाकर अपना घोड़ा बादशाहको दिया। बादशाह उमरकोट पहुंचे। उस वक्त उनके साथ ७ सवार थे, बाकी एक एक दो दो तीन तीन करके सब मर गये थे।

उमरकोटके राना परसाको जब बादशाहके आनेकी खबर पहुंची, तो अपने भाइयोंको बादशाहकी खिदमतमें भेजा। उन्होंने आकर रकाब चूमी और यह अरज की कि, आज महूर्त अच्छा नहीं था, इसलिये राना नहीं आया, कल तड़के ही कदमोंमें हाजिर होगा। फिर बादशाहका लशकर भी आ गया।

दूसरे दिन राना परसाने आकर सलाम किया और कहा, हजरतका आना मुबारक हुआ, मेरी वलायत छोटी है और अब्तर है, तो भी २००० सवार मेरी कौमके जो सोढ़ा हैं, मेरे पास हाजिर हैं और ५००० सवार कौम सांखलाके हैं। हम और वे एक दादाके पोते हैं। मैं उनको भी बुला सकता हूं, यह ७००० सवार मिलकर हजूरकी बन्दगी जी जानसे करेंगे। ठट्ठा और भक्करका सारा देश हजूरको फतह कर देंगे। बादशाहने रानाकी खैरख्वाही की तारीफ करके कहा कि, इस तङ्गीमें मेरे पास रुपया नहीं है, जो तुम्हारे भाई बन्दोंको बुलाकर दूं, लेकिन उम्मेद है कि, लशकरके लिये जल्द रुपयोंका बन्दोबस्त कर लूंगा।

बादशाह एक दिन अपने डेरेमें नहानेके कपड़े पहने बैठे थे। एक पखेरू वहां उड़ता हुआ आ गया। बादशाहने उसको पकड़ा, कतरनीसे उसके पर कतरे और चितेरेसे तसवीर खिंचवाकर छोड़ दिया। शाह मोहम्मद खुरासानीने बादशाहके पास रुपया नहीं होनेकी बात सुनकर अरज की कि, अमीरोंके रुपया है, और उन्होंने जहां जहां रुपया छिपा रखा है, मुझे मालूम है। बादशाहने अमीरोंको बुलाया और शाह मोहम्मदको अपने नौकरोंके साथ

छोड़कर ता० १ रज्जब ९४९ (कातिक सुदी २ ता० १० अकतूबर) को ठट्ठे की तरफ कूच कर गये।

उनके डेरेमें यह कहकर भेजा कि, सारा कीमती सामान और रुपया ढूंढ़कर मेरे पास ले आओ। खाने पकानेके बरतन वहीं छोड़ दो। वह गया और अमीरोंके धन माल और कपड़ोंके सन्दूक ढूंढ ढांढकर ले आया। एक बुढ़ियाने अपना सन्दूकचा बचानेके लिये हुसेन बबरचीको दे दिया था। वह भी पकड़ आया और खोला गया, तो तीन ईंटें सोनेकी और ४२ मोहरें और जड़ाऊ गहने निकले। बादशाहने काफूरको हुसेनके कानोंकी लोलें काटनेका हुक्म दिया। उसने सारे ही कान कतर कर हुसेन बबरचीको बूचा ही कर दिया। अमीरोंके रुपये और असबाबमेंसे आधा तो अपने नौकरोंको बांटा और आधा उन्हींको लौटा दिया, कपड़े दो तिहाई तो उनको वापस किये और एक तिहाई महलमें भेज दिये। कुछ जड़ाऊ गहना और रुपया राणाको दिया।

बादशाह पौने दो महीने उमरकोटमें रहकर सिन्धका हाल लोगोंसे पूछते रहे। यादगार नासिर मिरजा, जिसे शाहहुसेनने फसाद बनाकर अपने राज्य देनेका कुल दिया था, निरास होकर कन्धारमें मिरजा कामरांके पास चला गया था। जाते वक्त शाह हुसेनने उससे एक आदमी पीछे एक एक अशरफी और एक एक घोड़े पीछे ५।५ अशरफी और एक एक ऊंट पीछे ७।७ अशरफी पहले धरा ली थीं। फिर उसको निकलने दिया था। उसके पहुंचनेपर मिरजा कामरांने शाहहुसेनको लिखा कि, शहर बानूबेगम और उसके बेटे सन्जर मिरजाको भेज दो, जो यादगार नासिर मिरजासे बिछड़कर भक्करके इलाकेमें रह गये हैं। उसने बेगमको उन कई हजार आदमियोंके साथ, जो बादशाहके लशकरसे रह गये थे और सिन्धमें मारे मारे फिरते थे, जङ्गलके रस्तेसे काबुल भेज दिया। मगर नाज और घासके न मिलनेसे और

शाहजादे अकबरका जन्म।

८ आबान सन ४६४ जलाली १८ असफन्दार सन ८११ कदीमी ५ रज्जब सन ८४८ हिजरी ६ कातिक संवत् १५८८ और १६ तमरीनउल अव्वल सन १८५४ रूमीको जब ८ घण्टे २० मिनट रात गयी और ४ घण्टे २२ मिनट रात रही थी, उमरकोटमें, जो दूसरी अकालीमसे है और जिसकी चौड़ाई मध्यरेखासे २५ और लम्बाई खालदात टापूसे १२५ अंश है, मरयम मकानीबेगमसे शुभ घड़ी शुभ मुहूर्तमें शाहजादेका जन्म हुआ। जन्म होनेसे कुछ पहले बहुत पीड़ा होने लगी थी, तो मौलाना चांद ज्योतिषीने, जो बादशाहकी हुक्मसे जन्मकाल जांचनेके लिये जनानी ड्योढ़ीपर बैठा था, घबराकर कहा कि, अभी तो वक्त अच्छा नहीं है, जो अभी जन्म न हो और कुछ देर पीछे हो, जब कि बहुत अच्छा वक्त आनेवाला है, तो क्या ही अच्छी बात है। लोगोंने उसकी हंसी करके

बीमारीके फैलनेसे बहुतसे आदमी बेगम समेत रस्तेमें मर गये थे।

बादशाहको यह भी मालूम हुआ कि, राना परसाका अमल अपने राज्यमें पूरा पूरा नहीं है। जानी बेगमने उसे निकाल दिया है, शाहहुसेनने उसके बापको मार डाला है, इसीलिये वह उससे अपना बदला लेनेके लिये बादशाहके पास आया है और फौज इकट्ठी करके बादशाहको यह सलाह देता है कि, ठट्ठेपर चलिये, जो उमरकोटसे ५० कोस है। पहले जूनको लीजिये। यहांके लोग शाहहुसेन और उसकी जातिके अरगूं लोगोंसे नाराज हैं; वे बादशाहसे आ मिलेंगे। बादशाह भी उमरकोटमें रहना मुनासब नहीं समझते थे, क्योंकि वह एक छोटासा इलाका थोड़ीसी आमदनीका था, इसलिये जूनकी तरफ कूच कर गये। राजाने भी १ रज्जबको अपना लश्कर उमरकोटसे निकाला। बादशाहने हमीदा बेगम और उनके भाईको उमरकोटमें छोड़ दिया था।

कहा कि, ऐसी बातें भी किसीके बसमें हैं; परन्तु उस वक्त जन्म होते होते रह गया और आखिरी सबब इसका यह हुआ कि, दाई जो उस देशकी लायी गयी थी बहुत ही बदसूरत थी, जिसको देखते ही बेगमको नफरत हो गयी और तबीयत जन्नेके खयालसे हट गयी।

फिर जब अच्छा वक्त आया तो मुल्लाचांदको बहुत बेचैनी हुई कि, कहीं यह वक्त भी न टल जावे; मगर अन्दरवालियोंने कहा कि, महदउलिया (बेगम साहब) को बहुत तकलीफ होनेसे ऊंघ आ गयी है, जगाना सलाह नहीं है, जो तकदीरमें लिखा है होगा।

इतनेमें ही तो फिर दर्द हुआ, बेगम जाग उठीं और शाहजादा पैदा हो गया। बस, फिर क्या था, खुशीकी धूम मच गयी। लोग बादशाहको खबर देनेके लिये दौड़े।

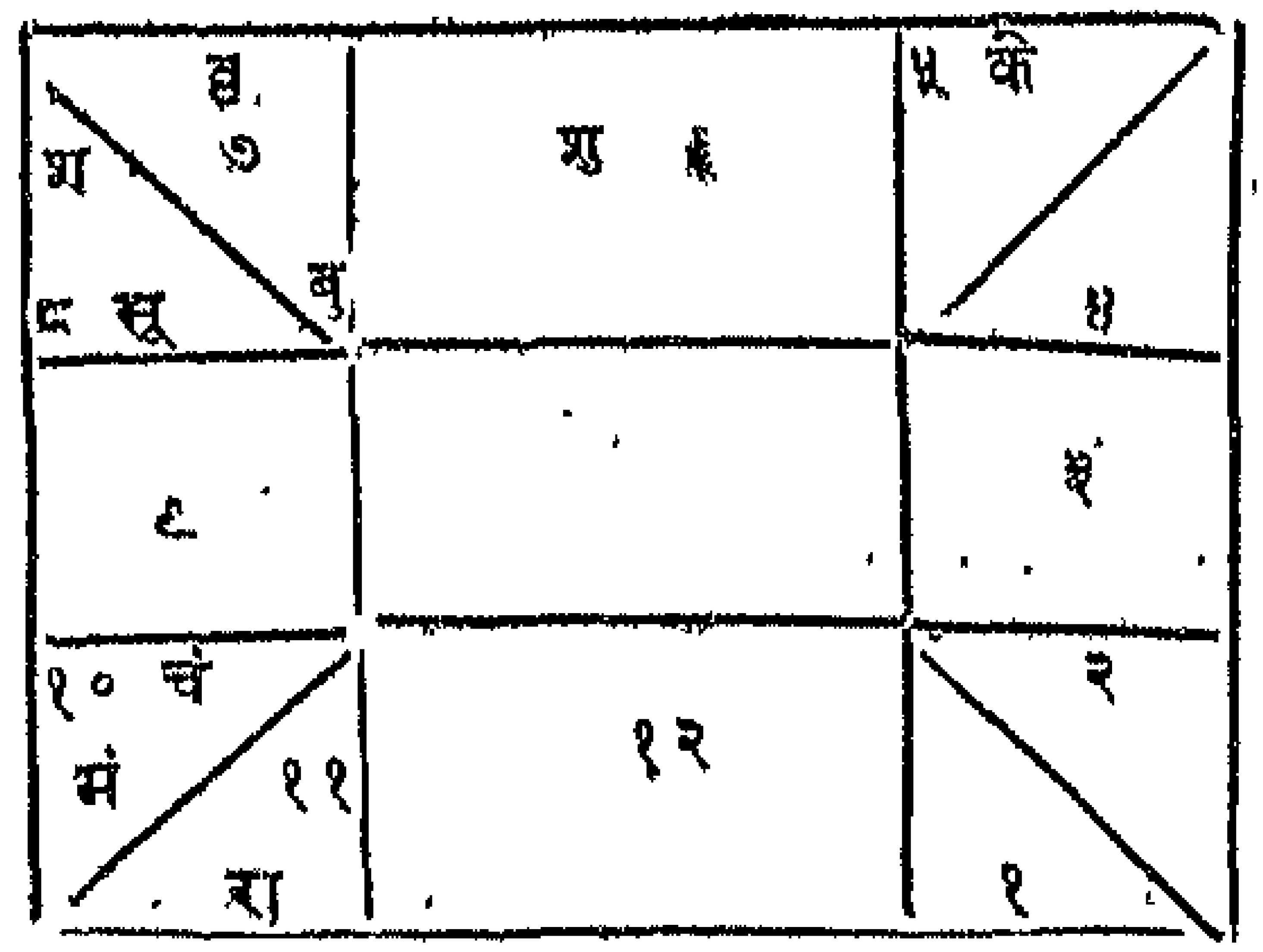
बादशाह ४ कोसपर हरे झाड़ोंकी छायामें तकिया लगाये बैठे थे कि, महतर संबुल गुलामने पीछेसे एक सवार आता हुआ देख कर बादशाहको दिखाया। बादशाहने फरमाया कि, जो यह शाहजादेके पैदा होनेकी खबर लाया होगा, तो मैं इसको अमीर हजारा (हजार जवानोंका अफसर) बनाऊंगा। फिर तो इधरसे भी सवार दौड़ा। शाहजादेके पैदा होनेकी धूम मच (१) गयी।

---

(१) जौहर अकबर यों लिखता है कि, बादशाह उमरकोटसे १२ कोसपर एक तालाबपर ठहरे हुए थे कि, तड़के ही एक कासिद शाहजादेके पैदा होनेकी मुबारकबादी लाया। हजरत बादशाह खुश हुए। शाहजादा १४ शाबान शनिवरकी रातको पैदा हुआ था और १४ तारीखके चांदको बद्र (पूर्णचन्द्र) कहते हैं, बद्र और जलालका एक ही अर्थ है, इसलिये शाहजादेका नाम बद्रुद्दीन तजवीज होकर जलालुद्दीन रखा गया।

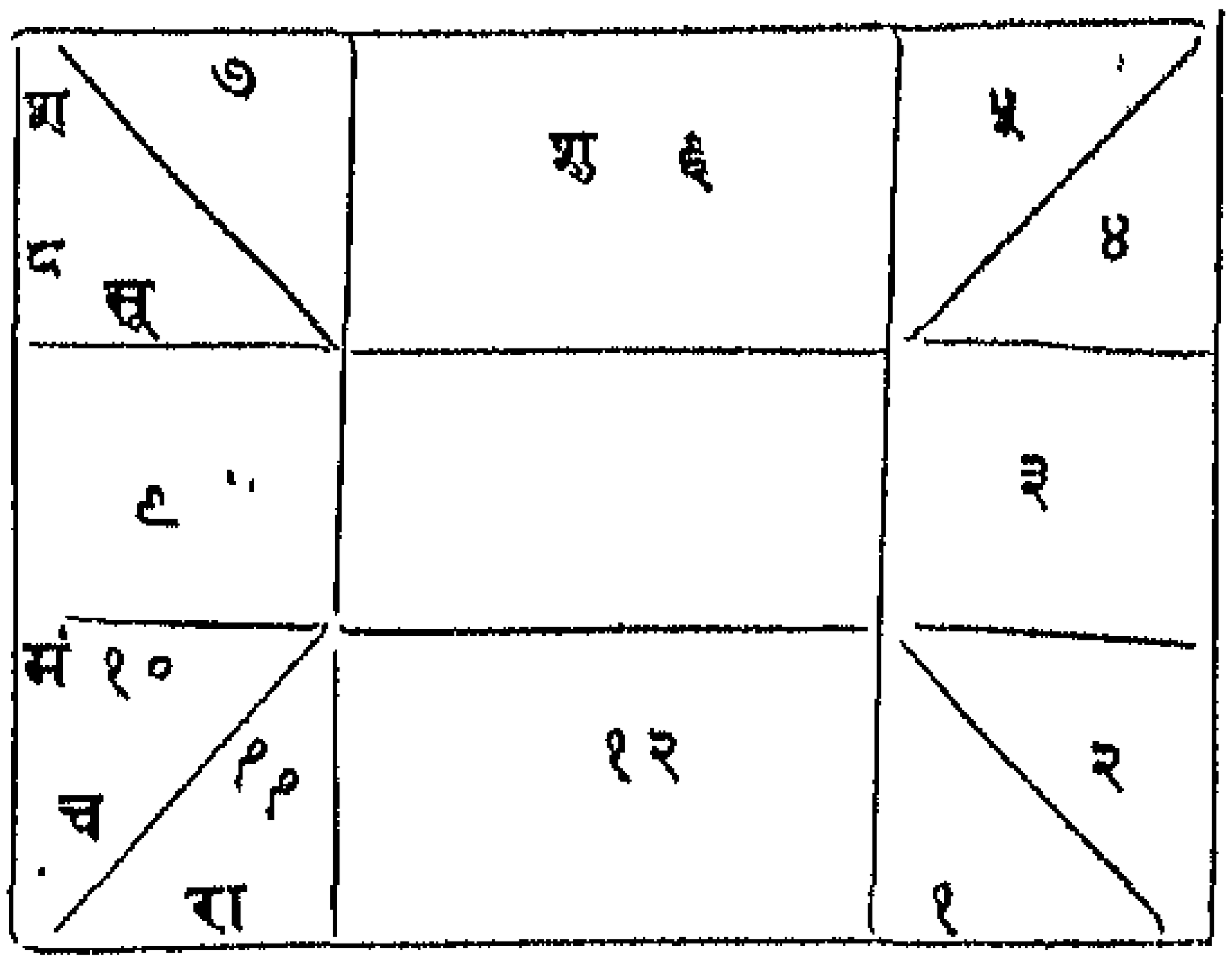
जब बादशाह शुकरानेकी नमाज पढ़ चुके तो मुझसे पूछा कि, अमीरोंने आकर जो अमानत सौंपी थी, वह क्या थी? मैंने अर्ज,

मौलाना चांद ज्योतिषीने उमरकोटसे यह जन्म कुण्डली शाहजादेकी बनाकर बादशाहके पास भेजी।



कि, २०० शाहरुखी चांदीके दो दस्ताने और एक मुश्कनाफा था। शाहरुखी और दस्ताने तो खुदावन्दखांको दिये। फरमाया कि, वे तो तुमको इनायत किये थे, क्यों दे दिये ? अरज की कि, हजरतके हुक्मसे दिये। फरमाया अच्छा मुश्कनाफा ले आ, मैंने लाकर आगे रख दिया। हजरतने एक चीनीकी रकाबी मंगाकर उसमें मुश्कनाफेको तोड़ा। कस्तूरी जो निकली, वह सरदारोंको बुलाकर बांट दी और फरमाया कि, यह हमारे लड़का पैदा होनेकी निशानी है। सबने दुआ की और मुबारकबाद दी और बच्चे तो जन्मते ही रोते हैं, पर यह शाहजादा हंसा था। बादशाहने शमसुद्दीन गजनवीकी बीबीको धाय बनानेके लिये पहलेसे ही फरमा रखा था, क्योंकि वह भी पेटसे थी। इसलिये मरयम मकानी बेगमने उसे बुलाकर शाहजादेको उसकी गोदमें दे दिया, मगर अभी उसके बच्चा नहीं हुआ था, इसलिये अपनी खास टहलनी बख्तावलका दूध पिलाया था। फिर नदीमकोकीकी बीबी फखरुल-निसाने, उसके पीछे बाझावल अंगाने, इसीतरह खुवाजा गाजीकी

मौलाना इलयास बादशाहके पास था, उसने यह जन्मपत्री बनाकर दी।



(इसमें बुध और केतु नहीं लिखे हैं)

बादशाहने, जो आप भी बड़े ज्योतिषी थे, ग्रहोंके फल जांचे और खुश होकर शाहजादेका नाम अकबर रखा। वे जन्मपत्रियोंसे (१) अपने बेटेका भविष्य जानकर मारे खुशीके फूले नहीं समाते थे और फरमाया करते थे कि, अमीर तैमूर साहब किरान तो आलीशान बादशाह हुए ही हैं, पर इसकी जन्मपत्री भी कई बातोंमें उनकी जन्मपत्रीसे बढ़कर है और कभी कभी जब अकेले होते थे, तो किवाड़ बन्द कर लेते थे और ग्रहोंके शुभ फलोंको देखकर मारे खुशीके नाचने लगते थे।

बीबीने, बीबीरूपाने, खालदर अग्गास आदत थार कोकाकी माने और अखोमें बीचा जान, जैनखां कोकाकी माने दूध पिलाया था।

(१) अकबर बादशाहके दरबारमें जब अच्छे अच्छे ज्योतिषी दूर दूरसे आकर नौकर हुए थे, तो उनकी और भी जन्मपत्रियां बनायी गयी थीं, जिनमें जीतकराय और मौलाना फतह उल्लाह

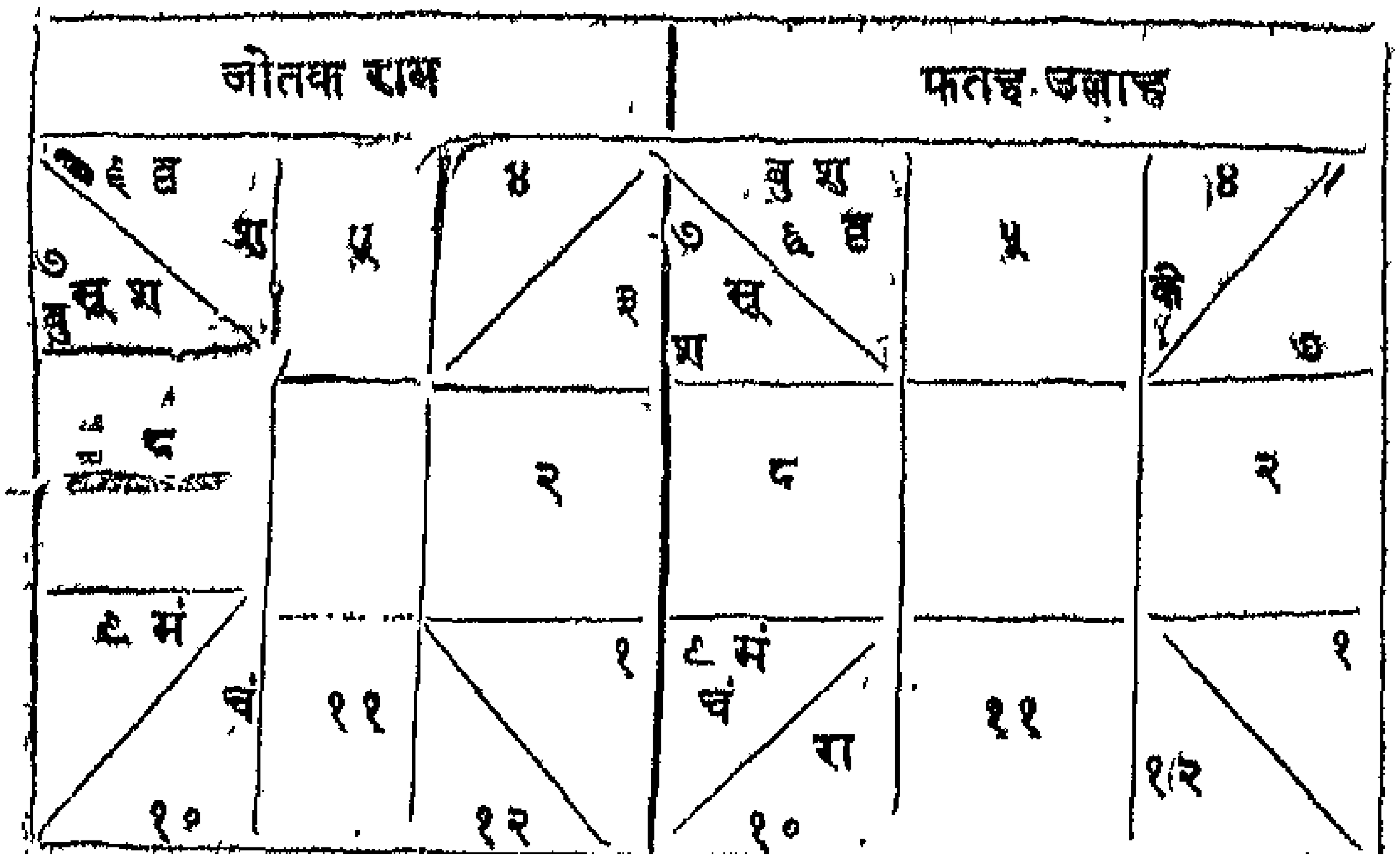
शाहजादेके जन्म लेनेसे पहलेके शुभ लक्षण।

बादशाह हमेशा भगवानसे एक बड़ी उमरवाला बेटा मांगा करता थे। ४ रबीउल अव्वल सन ९४७ (आषाढ़ सुदी ता० १६ जून) को उन्हें यह सपना आया कि, खुदाने उनको एक होनहार बेटा दिया है और फरिश्तोंने उनका सब हाल बताकर जलालुद्दीन अकबर नाम रखा है।

बादशाहको जब आंख खुली, तो उन्होंने यह बधाई अपने पास रहनेवालोंको भी सुनायी।

शमसुद्दीन मोहम्मदखांका भाई शरीफखां कहता था कि, शमसुद्दीनखांने २२ वर्षकी उमरमें गजनीमें यह सपना देखा था कि, चांद उसकी बगलमें आ गया है।

शीराजीकी बनायी हुई जन्मकुण्डलियां भी अकबरनामेमें ऊपर लिखी जन्मपत्रियोंके साथ लिखी हैं, मगर हम उनको नीचे लिखते हैं।



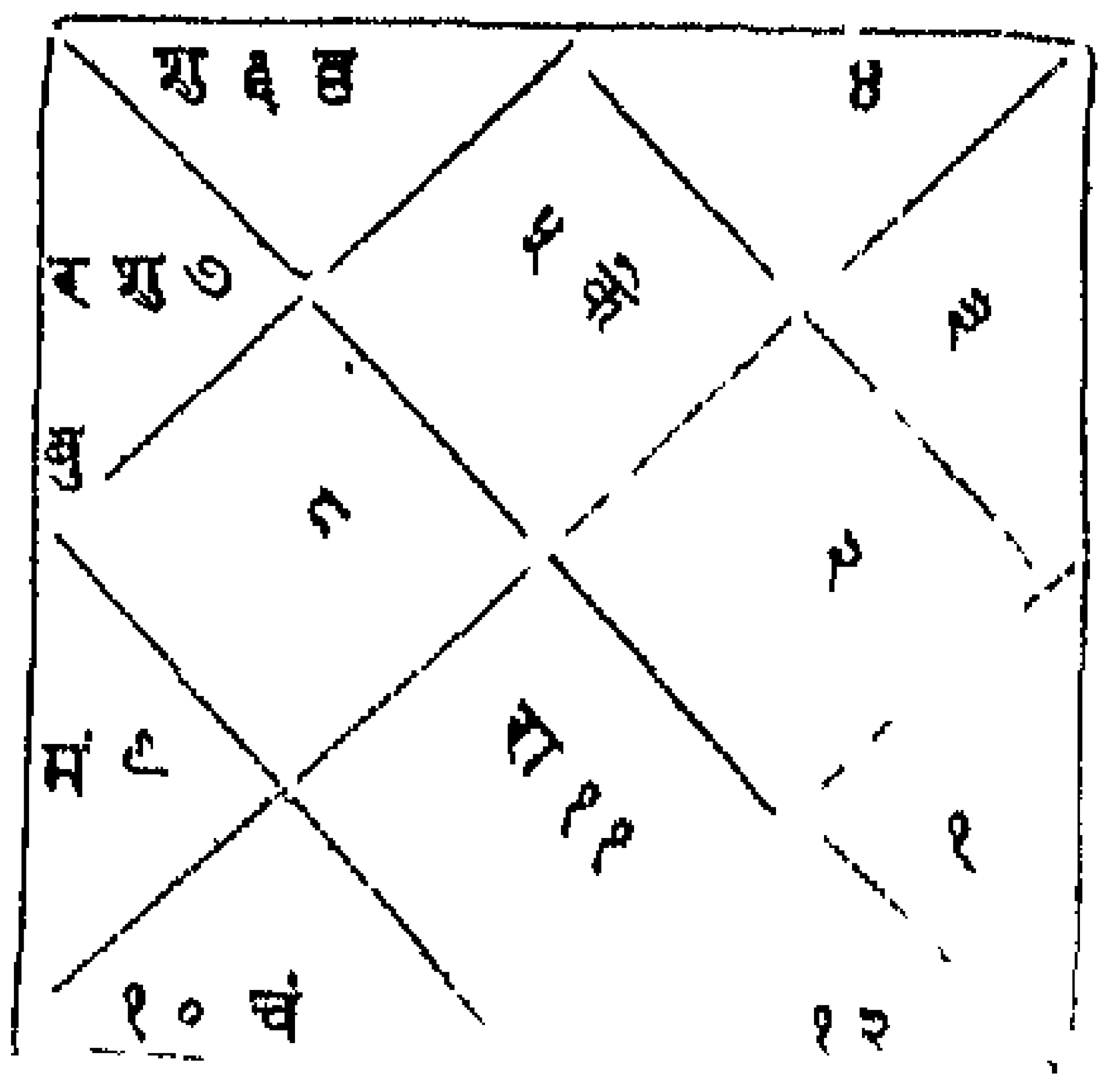
उसने अपने बाप मीर यार मोहम्मद गजनवीसे यह हाल कहा, तो वह बोला खुदा तुझको कोई बड़ी दौलत देगा, जिससे हमारे घरानेकी इज्जत बढ़ेगी, सो ऐसा ही हुआ।

जब मरयम मकानी पेटसे थीं, तो उनका ललाट कांचकी तरह चमकता था और देखनेवालोंको यह धोखा होता था कि, इन्होंने भी माथेमें कांच बांध लिया है, जैसा कि, बड़े घरोंकी बेगमें बांधा करती हैं।

बालक जन्मसे कुछ दिन पहले वे डोलीमें बैठी जाती थीं। रस्तेमें आमोंका बाग देखकर अपने भाई ख्वाजामोअज्जमसे कहा कि, जाकर कुछ आम ले आ। वह आम ला लाकर देता था, उस वक्त जो उसकी नजर उनके सिरकी पेशानीपर पड़ी, तो पूछने लगा, क्या तुमने पेशानीपर आइना बांधा है। बेगमने कहा

जोधपुरके चण्डवाणी ज्योतिषियोंके दफ्तरमें भी एक जन्मपत्री अकबर बादशाहकी लिखी है, उसकी भी नकल हम यहां लिख देते हैं।

संवत् १५९९ कातिक सुदी ६ शनौ रात्रि गत घटी २१ पल ९ इ० ६।१३।५७।२९ समय पातसाह श्रीअकबर जन्म।



नहीं तो, तुम यह कैसे कहते हो। तब वह अच्छी तरहसे उस चमक दमकको देखकर हैरान रह गया।

खान आजम मिरजा अजीज कोकलताशकी मा (जीजीअनगा) कहती थी कि, धाय होनेसे पहले एक दिन तड़के ही मैंने देखा कि, एकाएकी एक नूर मेरी तरफ दौड़कर आ गया। मैंने जाना सूरज मेरी गोदमें आ पड़ा, मेरी अजब हालत हो गयी और वह मजा अबतक मेरे बाल बालमें रम रहा है। मैं उस दिनसे देख रही थी कि, उस अनोखी बातका क्या फल होगा। आखिर यह बड़ी दौलत (शाहजादेको पालने और दूध पिलानेकी) मुझे मिली।

नूरउद्दीनतरखां और दूसरे लोगोंसे जो बादशाहके पास रहा करते थे, सुना गया कि, शाहजादेके पैदा होनेसे कुछ पहले बादशाह एक मकानमें बैठे थे और यही जिक्र हो रहा था कि, अकस्मात खिड़कियोंमेंसे रोशनी चमकने लगी, जिसको देखकर कुछ लोगोंने, जो बादशाहसे बात कर सकते थे, इसका सबब पूछा, तो फरमाया कि, थोड़े ही दिनोंमें एक सितारा चमकनेवाला है, जिसकी रोशनीसे इस घरानेका नाम दुनियामें रोशन हो जावेगा।

मीर अब्दुलहईबदर कहता था कि, एक दिन तड़के ही बादशाह ध्यान कर रहे थे। ऐसा जाना जाता था कि, आंख लग गयी है, कुछ देर पीछे बादशाहने सिर उठाया और खुदाका शुक्र करके कहा कि, हमारे घरानेकी सलतनतका चिराग नये सिरसे रोशन हुआ। मैंने इसका भेद पूछा तो कहा कि, इस सोते और जागतेमें मुझे ऐसा दिखाया गया कि, एक तारा फलाणी तरफ (उस बस्ती-का कि, जहां शाहजादेका जन्म हुआ इशारा करके) से उगा उसकी रोशनी घड़ी घड़ी बढ़ती जाती थी। ऊंचा होनेमें उसका तेज भी बढ़ता था और शरीर भी। यहांतक कि, अकसर दुनियाको उसने घेर लिया। मैं एक फरिश्तेसे पूछता हूं कि, यह कौन तारा है, तो वह कहता है कि, यह तेरे लड़केका शरीर है, जितनी दुनिया-

में इसका नूर फैला है, वह इसके कबजेमें आ जायगी और इसके इनसाफकी रोशनीसे रोशन हो जायगी। एक दिन पीछे ही शाह-जादेके पैदा होनेकी खबर आयी, वह सपना और जन्म एक ही वक्तमें हुआ था।

जफ़रनामेमें मौलाना शर्फुद्दीनने लिखा है कि, तोमनाखांके बेटे काचूली बहादुरने यह सपना देखा था कि, ७ बेर ७ सितारे उस-की गोदमेंसे निकले, सो तो जलदी जलदी डूब गये और आठवीं बेर आठवां सितारा निकला, जिसकी रोशनी तमाम जहानमें फैल गयी। खांने इसका यह फल बताया था कि, तेरे वंशमें सात बादशाह तो छोटे और आठवां बहुत बड़ा होगा, जो दुनियापर बादशाही करेगा। वह आठवां बादशाह "अमीर तैमूर साहिबे किरा" हुआ और अमीर तैमूरसे आठवें अकबर बादशाह थे, सो इसलिये अबुल फज़लने काचूली बहादुरके सपनेकी यह विधि मि-लायी है कि, अमीर तैमूरसे पहले, जो सात पीढ़ियां हुईं, वे तो बादशाहीको नहीं पहुँची थीं। बादशाह तो तैमूरसे अकबरतक ८ हुए, सो वह आठवें बड़े बादशाह यही हैं।

सिन्ध जाना।

बादशाहने शाहजादेके पैदा हो जानेसे फकीर हो जानेका विचार छोड़कर सिन्ध फतह करनेका इरादा किया और अरगूनियों-का लड़ाईके मतेसे जूनमें जमा होना सुनकर शेख अलीबेगको कुछ फौजसे पहले भेजा; पीछे आप रवाने (१) हुए। शेखने लड़कर

(१) बादशाहने बेटेकी बधाई सुनकर दिनको तो मुकाम रखा और शामको सफर किया। चगताई अमीर और सोढा राजपूत उमरकोटके साथ थे, पांच मञ्जिलें चलकर जूनके पास पहुँचे, जहां जानीबेग बहुतसे सवारोंसे रहता था, जिसके पास पहले उमरकोट था और जो बड़ा धाड़ेती था। बादशाहने ५०० सवार मुगल और राजपूतोंके शेख अलीके साथ उसपर भेजे। पीछेसे आप भी उसकी

उन लोगोंको वहांसे भगा दिया, फिर बादशाह भी आकर जूनमें ठहरे, जो सिन्ध नदीपर अच्छा कसबा था और ख्वाजामोअज्जम नदीम 'कोकलताश' और शमसुद्दीन मोहम्मद गजनवीको बेगम और शाहजादेके लानेके लिये भेजा।

मददको गये। शेखअलीने जानीबेगको बादशाहसे पहुँचनेसे पहले लड़ाईमें हराकर भगा दिया था और उसके आदमियोंको कैद कर लिया था। बादशाहने जाते ही सब कैदियोंको मार डालनेका हुक्म दे दिया, जिनमेंसे मिरजा कुलीने एक जख्मी मुगलको लाकर तुर्की बोलीमें कहा कि, इसने बादशाहको बहुत गालियां दी हैं। बादशाहने कहा इसे छोड़ दो, यह अपनी सजा पा चुका है।

फिर बादशाहने जूनमें आकर एक बड़े बागमें डेरा किया और लशकरकी चारों तरफ खाई खोदी, किला बनाया और आसपासके राजाओंको बुलाया। सोढा और समिजा सरदार उनके पास आये और जाम भी आये, जिनके पास भकरका देश था। इस तरह १५। १६ हजार सवार जमा हो गये। जूनमें दो आदमी पकड़े आये, उनमें एक तो यह था कि, जब बादशाहने सहवानका किला घेरा था, तो ऐसी बन्दूक मारता था कि, उसकी गोली कभी खाली नहीं जाती थी और बादशाहने कहा था कि, मुझे यह उम्मेद है कि, मैं किसी दिन उसे पकड़ लूंगा, दूसरा आदमी वही चोर था, जो बादशाहकी तलवार खेंसकर भागा था। उसके लिये बादशाहने कहा था कि, एक दिन मेरे हाथमें आ जायगा। जब बादशाहने जूनमें अमल किया, तो ये दोनों बोजा (एक प्रकारका नशा) बेचने-वालेकी दूकानपर बैठे हुए अपनी बहादुरियोंकी शेखी मार रहे थे कि, बादशाही जासूसोंने वे बातें सुनकर उनको गांठ लिया। बादशाहने बन्दूकचीके तो मारनेका हुकम छोड़ा और चोरका कसूर माफ करके कुछ इनाम भी उसको दिया।

११ शाबान (मगसर सुदी १२ ता० १८ नवम्बर) को शुभ घड़ी शुभ मुहूर्तमें मरयम मकानी बेगमका कूच उमरकोटसे हुआ। जब बादशाहका लशकर दो मंज़िल रहा, तो सब सरदार पेशवाईको आये। आखीर शाबानमें (१) बादशाह अपने बेटेको देखकर खुश हुए।

इन दिनों अरगूनियोंसे लड़ाइयां होती (२) रहती थीं। एक लड़ाईमें बादशाहका मुसाहिब ताजुद्दीन मारा गया। फिर एक दिन शेख अलीबेग और मरहीबेग किसी कसबेको लूटने गये थे। भक्करका सुलतान महमूद खुद फौजसे उनपर जा पड़ा, मरहीबेग टल गया, शेख अलीबेग उससे लड़कर काम आया, जिससे बादशाहको बहुत दुख हुआ, क्योंकि बड़ा बहादुर और जान झोंकनेवाला था। उसके मारे जानेसे बादशाहने सिन्धको छोड़ने और

(१) २० रमजान (माह बदी ५ ता० २६ दिसम्बर) को शाहज़ादा उमरकोटसे जूनमें पहुंचकर बापकी खिदमतमें हाज़िर हुआ। जब कि, उसको जन्मे हुए ३५ दिन हुए थे। ऐसा जौहर अकबरने लिखा है। इससे और अबुलफज़लके लिखनेसे तारीखों का बड़ा फ़र्क है और इसीलिये उदयपुरके कविराजा श्यामलदासने एक छोटासा लेख छापा है जिसका नाम है "अकबरके जन्म दिनमें सन्देह" है।

(२) शाहहुसेन अरगूं लड़ता भी था और छल कपट भी करता था। उसने बादशाहके सहायकोंको अलग कर देना चाहा और चुपकेसे अपने वकीलके साथ खिलअत तलवार और दूसरी चीजें राणाके पास भेजीं और कहलाया कि, बादशाहको छोड़कर हमारे पास आओ। राणा वह खिलअत बादशाहके पास ले गया। बादशाहने एक कुत्तेको पहिनाकर शाहहुसेनके पास भेज दिया। वह दिलमें बहुत जला।

गुजरात जानेका इरादा किया। इतनेहीमें ७ मोहर्रम (१) ९५० (बैसाख सुदी ८ संवत् १६०० ता० १० अपरैल १५४२) को बैरामखांने गुजरातसे आकर बादशाहके दिलके घावोंको दवा की

(१) शेख अलीबेग रमजानमें मारा गया था, बादशाहने उसको रसद लानेके लिये किले थारीकी तरफ भेजा था। जहां नाज बहुत था, उसने जाकर बहुतसी रसद बादशाहके पास भेजी। शाहहुसेनने यह सुनकर रसदको बादशाहके लशकरमें नहीं पहुंचने देने और शेख अलीसे लड़नेके लिये भक्करके सुलतान महमूदके नाम हुक्म भेजा। इधरसे बादशाहने ईशान तैमूर सुलतानको शेखअलीकी मददपर जानेका हुक्म दिया, उधरसे शाहहुसेनने बादशाहके लशकरपर चढ़ाई की। बादशाहने ठान ली कि, एक बड़ी लड़ाई लड़कर वारे न्यारे कर लें, क्योंकि वे अपने मोरचोंमें दुशमनोंसे घिरे हुए थे, इसलिये एक रातको तड़के ही बाहर निकलकर लड़नेकी तैयारी कर ली और जिनके पास दुबले घोड़े थे, उनको अच्छे दे दिये। रमजानका महीना था। रोजा खोले हुए एक पहर रात गयी थी कि, एक आदमीने नदीपरसे आकर कहा कि, एक आदमी नाव मांगता है और उसका नाम ईशान तैमूर है, तो बादशाहका माथा ठनका और कहा खुदा खैर करे और हुक्म दे दिया कि, उसको नावमें आने दो। वह आया और कहने लगा कि, मेरी हार हुई और शेखअली मारा गया। सुलतान महमूदने आसपासकी जातिवालोंको जमा करके तड़के ही बादशाही फौजपर धावा किया। तवाचीबेगने, जो मेरी तरफसे काम करता था, लड़नेमें सुस्ती की; मगर शेखअली जमकर लड़ा और बड़ी बहादुरीसे काम आया। इस वारदातको सुननेसे बादशाहको बहुत शोक और सन्ताप हुआ और वह रात बड़ी ही बेचैनीसे बीती।

और अजब बात यह हुई कि, वह आते ही लड़ाईमें चला गया। बादशाहसे मिले और अपनेको ज़ाहिर किये बिना ही दुश्मनोंसे लड़ने लगा। बादशाही लशकर हैरान था कि, यह कौन है, कोई

उधर मोहम्मद हुसेनने बादशाहके लशकरसे भागकर शाहबेगसे कहा कि, शेखअली मारा गया और ईशान तैमूर सुलतान भाग आया है। अब बादशाहका इरादा तुझसे एक घमसान लड़ाई लड़नेका है, तू उनके सामने नहीं ठहर सकेगा। शाहहुसेनने सोच समझकर जान लिया कि, जब आदमी निराश हो जाता है, तब खूब जी तोड़कर लड़ता है। इसलिये वह तीन दिनतक बादशाहसे लड़नेको नहीं गया और बाबर कुलीको बादशाहके पास भेजा। उसने बादशाहके पांव छूकर मिसरी और मेवा नजर किया और कहा कि, शाहहुसेन शर्मके मारे हाजिर नहीं हुआ है और अपने कसूरोंकी माफी मांगता है। बादशाहने उसको बिदा करके कहा कि, अब मैं सिन्धसे कूच करके कन्धारको चला जाऊंगा।

मुनशी सुका उल्लाहने अपनी तवारीख हिन्दुस्तानमें लिखा है कि, मुसलमानोंकी इस आदतने कि, वे हिन्दुओंको हिकारतकी नजरसे देखते हैं, शाहहुसेनका काम बना दिया। ख्वाजा गाजीने उमरकोटके रानासे कुछ ऐसी अयोग्य बात कही कि, जिससे बुरा मानकर अपने लशकर समेत वह यह कहकर चला गया कि, मुगलोंके साथ रहना अकारथ है। उसके जाते ही दूसरे राजा और राव भी चले गये और बादशाहके मनाये न माने। अब बादशाहके पास वही पुराने साथी रह गये, जिनमेंसे मुनअमखां जैसा अमीर भागकर शाहहुसेनके पास गया और उसको यह कहकर कि, बादशाह खुले मैदानमें पड़े हैं, चढ़ा लाया। मगर यहां बादशाहने खबर पाकर तीन दिनमें लशकरका किला बांध लिया था। शाहबेगने यह देखकर मुनअमखांसे कहा कि, तू मुझसे झूठ बोला और किलेको फतह भी न कर सका।

शेरके लशकरमेंसे तो नहीं है। जब मालूम हुआ कि, बैरामखां है, तो लशकरके लोग चिल्ला उठे। बादशाह भी खुश हुए और इस प्रसङ्गसे कुछ दिन वहां रहे।

बैरामखांका कुछ हाल।

कन्नौजमें हार होनेके पीछे वह संभलकी तरफ जाकर राजा मित्रसेनसे (जो उधरके जमींदारोंमेंसे था) लखनौरमें मिला और कुछ अरसेतक उसकी हिमायतमें रहा। जब यह खबर शेरखांको पहुंची, तो उसने आदमी भेजकर बुलाया, राजाने लाचार होकर उसके पास भेज दिया। वह मालवेके रस्तेमें शेरखांके पास पहुंचा। शेरखां उठकर मिला और उसको राजी करनेके वास्ते मीठी मीठी बातें करने लगा, जिनमें यह भी कह गया कि, जो इखलास रखता है खता नहीं करता है। बैरामखांने जवाब दिया, हां ऐसा ही है कि, जो इखलास रखता है, खता नहीं करेगा और बुरहानपुरके पाससे बड़ी बेचैनीके साथ गवालियरके हाकिम अबुल कासिम समेत गुजरातको भागा। रस्तेमें शेरखांके वकीलने, जो गुजरातसे आता था, खबर पाकर अबुल कासिमको जो डील डौलमें नमूदका आदमी था, पकड़ लिया। बैरामखांने भलमनसी और जवांमर्दीसे बहुत कहा कि, बैरामखां मैं हूं, अबुलकासिमने भी मरदूमी करके कहा कि, यह मेरा नौकर है, चाहता है कि, मेरे ऊपर कुरबान हो जावे, इसको हरगिज मत छोड़ना।

इस तौरसे बैराम छुटकारा पाकर गुजरातमें सुलतान महमूदके पास गया और अबुलकासिमको शेरखांके पास ले गये। उसने बेसमझीसे ऐसे भले आदमीको मरवा डाला।

शेरखां अकसर कहा करता था कि जब बैरामखांने उस मजलिसमें कहा था कि, जो इखलास रखता है, खता नहीं करता है तो मैंने समझ लिया था कि, यह हमसे मेल नहीं करेगा।

सुलतान महमूद गुजरातीने भी बहुत ठहराना चाहा, मगर बैरामखांने कबूल नहीं किया और मक्के जानेकी छुट्टी लेकर सूरत

बन्दरमें आया और वहांसे मारवाड़ होकर कसमे जूनमें अपने मालिकके पास पहुंचा।

शाहजादेकी करामात।

शाहजादेको सातवां महीना उतरकर आठवां लगा था कि एक दिन जीजी अन्ना उसको दूध पिला रही थी, वह माहमअन्ना और दूसरे लोगोंकी अदावतसे दिलमें बहुत दुखी थी, क्योंकि बादशाहसे यह कहा गया था कि, मीर गजनवीकी औरत यह जादू करती है कि, शाहजादा उसके सिवाय और किसीका दूध न पिये। उस वक्त और कोई वहां नहीं था, इसलिये शाहजादेने और किसीको न देखकर उसकी तसल्ली की और कहा कि, तू कुछ फिक्र मत कर, मैं तेरी ही गोदमें रहूँगा, मगर तू यह हमारा भेद किसीसे मत कहना।

इस खुशखबरीसे जीजीअन्नाकी खुशी दिन दिन बढ़ती जाती थी और यह भेद किसीसे नहीं कहती थी। आखिर एक दिन अकबर बादशाह दिल्लीके पास कसबे पालममें शिकार खेलने गये थे कि, रस्तेमें एक बहुत बड़ा सांप आ गया, जिसके डरसे बड़े बड़े बहादुरोंके छक्के छूट गये; मगर बादशाहने फौरन दुम पकड़कर उस सांपको मार डाला। मिरजा अजीजकोकाके भाई यूसुफ मोहम्मदखांने इस करामातको देखकर जीजीअन्नासे जिक्र किया, तो उस वक्त उसने अपने बेटेसे उस बचपनकी करामातका हाल कहकर कहा कि, जिसने छोटीसी उमरमें ही ऐसी करामात दिखा दी थी, तो बड़ी उमरमें उससे ऐसा बड़ा काम होना कोई बड़ी बात नहीं है और अबतक मैंने यह भेद इसलिये नहीं कहा था कि, कोई इसका यकीन नहीं करता; बल्कि दुश्मन लोग मुझको बेवकूफ बनाते और मुझे ऐसा करनेकी इजाजत नहीं थी। अब जो तुमसे सांपकी बात सुनी, तो मैंने भी तुमसे यह भेद कह दिया।

बादशाहका कन्धार जाना।

बादशाहका दिल सिन्धसे उचट गया था, इसलिये उन्होंने अरगनूयोंसे सुलह (२) करके और कुछ नजराना लेकर ७ रबीउल अव्वल (२) सन ९५० (आषाढ़ सुदी ८ सं० १६०० ता० ८ जून १५४३) को सेवीके रस्तेसे कन्धारको कूच किया। मिरजा असकरी यह सुनकर मिरजा कामरांके इशारेसे बादशाहको पकड़नेके लिये कन्धारसे निकला। अमीर अल्लाह दोस्त और शेख अबदुल वहाब, जो मिरजा कामरांके बेटेकी सगाई शाहहुसेनबेग अरगूनकी बेटीसे करनेके लिये सिन्धको आते थे, यह खबरें सुनकर सेवीके किलेमें ही बैठे। बादशाहने फरमान भेजकर मीरअल्लाह दोस्तको बुलाया, पर वह यह बहाना करके कि, किलेवाले नहीं आने देते हैं, नहीं आया।

जब बादशाह (२) शालकी हद्दमें पहुंचे, जो कन्धारसे तीन कोस है और जिधरके जागीरदार जलालुद्दीन बेगने जो मिरजा

(१) सुलह इन शर्तोंपर हुई थी कि, बादशाह तो शाहहुसेनका राज्य छोड़ दे और शाहहुसेन ३० नावें एक लाख मिसकाल (एक मिसकाल ४॥ मासेका होता है) चांदी दो हजार गोन नाज और ३०० ऊंट बादशाहको दे और वे सिन्ध नदीसे उतरकर कन्धारको चले जावें। जब दोनों तरफसे ये शर्तें मञ्जूर हो गयीं, तो शाहहुसेनने नदीपर पुल बांध दिया और बादशाह ७ रबीउल अव्वलको दो दिनमें उसपरसे गांव रोनाईमें जा उतरे और वहां नाज, नकदी और ऊंट उनके पास पहुंच गये।

(२) वाकेआत हुमायूनीमें सहवान लिखा है।

(३) शालमें पहुंचनेसे पहलेका यह हाल वाकेआत हुमायूनीमें लिखा है कि, बादशाह सहवानसे चलकर दो रातमें फतहपुर गंदावेमें पहुंचे, शाहहुसेनने जो अगवे दिये थे, वे उसके कहनेसे बादशाहको मीठे पानीके कुओंपर न ले जाकर खारा पानी पिलाते

कामरांकी तरफसे था, अपने आदमियोंको खबर लानेपर छोड़ रखा था, तो वे बादशाहकी दो नौकरोंको, जो पानीके भरनेपर पहले जा पहुंचे थे, पकड़ ले गये। उनमेंसे एक आदमी किसी तरह बचकर आ गया। बादशाह उससे उन लोगोंकी नमकहरामीका हाल सुन कन्धारको न गये, मस्तङ्गकी तरफ चल दिये और मिरजा असकरीको अपने हाथसे बहुतसी नसीहतें लिखकर भेजीं। मगर वह सुनी अनसुनी करके बादशाहके ऊपर जाने लगा, तो कासिमहुसैन सुलतान और महदी कासिमखां वगैरा उसके कई नौकरोंने जानेसे रोका और कहा कि, जो बादशाह घबराकर ईरानमें चले जावेंगे, तो बड़े झगड़े उठेंगे। परन्तु अबुलखैर वगैरा खुशामदी लोगोंने उसका जाना ही ठहरा दिया, तब वह तड़के ही मस्तङ्गको चला और दो एक कोस चले पीछे अपने साथियोंसे पूछने लगा कि, किसीने मस्तङ्गका रस्ता देखा है, तो

थे या प्यासे रखते थे। फतहपुरसे दो रात चलनेके पीछे जब बादशाह एक कड़वे पानीपर उतारे गये, तो बादशाहने पूछा कि, मीठा पानी कहां है? उन्होंने कहा कि, वह तो ७ कोस पीछे रह गया। बादशाह लशकरको ठहराकर थोड़ेसे आदमियोंके साथ गये और सब लोगोंके लिये मीठा पानी ले आये। तीसरे पहरको वहांसे कूच हुआ। पानी पीनेके बरतनोंका ऊंट थक गया था, इसलिये लशकरके पीछे रह गया। बलोच उसपर आ गिरे और जोहरको जखमी करके सब बरतन लूट ले गये। आगे एक ऐसा जङ्गल आया, जहां ठण्ड बहुत थी। गरीबोंका क्या कहना अमीरोंके पास भी ऐसे कपड़े न थे, जिन्हें पहनकर वे ठंडमें बचते। बादशाहके पास एक पोस्तीन (चमड़ेका कोट) था, उसीको उन्होंने उधेड़कर अबरा तो बैरामखांको दिया और अस्तर दूसरे नौकरको बखशा। निदान ऐसी ऐसी तकलीफें उठाते हुए बूलानके घाटेसे सालमस्तङ्गमें पहुंचे।

(१)जो बहादुरने कहा कि, मैं कई बेर मस्तङ्ग गया आया हूं। मिरजाने कहा सच कहता है, इधरका जागीरदार रहा है, और उससे कहा कि, तू आगे आगे चलाकर। उसने कहा, मेरा टट्टू बोदा है। मिरजाने तरसून बरलासका घोड़ा दिला दिया। जो बहादुर हिन्दुस्थानमें बादशाहके पास नौकर रह गया था, उसी लिहाजसे दौड़ा हुआ बेरामखांकी चादर (कनात) में आया और सब हाल कहा। बेरामखां उसको बादशाहके पास ले गया। बादशाहने तरदीबेगखां और और दूसरे कई नौकरोंके पास आदमी भेजकर घोड़े मंगाये, पर वे लोग नट गये। बादशाह उनको सजा देनेके

---

(१) जो बहादुर तेज घोड़ेपर चढ़कर टैकाके घाटेतक तो उसको कदम कदम चलाता हुआ आया और फिर सरपट दौड़ाकर बादशाहके लश्करमें पहुंच गया। इसका हाल वाकेआत हुमायूनीमें यों लिखा है कि, शालमें पहुंचनेसे एक रात पहले बादशाह एक बागमें ठहरे हुए थे, वहां एक आदमीने सलाम करके पूछा कि, हजरतको असकरीकी भी कुछ खबर है। बादशाहने कहा, तू जानता हो तो कह। उसने कहा, हां, मैं कुछ अरज किया चाहता हूं। बादशाहने, जौहरके सिवाय जो एक लड़का था, सब नौकरोंको हटा दिया। तब उसने कहा कि, मेरा लड़का मिरजा असकरीके पास नौकर है, वह उसको यहांसे ५ कोसपर पैकेकी घाटीमें छोड़कर आया है और कहता है कि, दुपहरसे पहले पहले मिरजा हजरतके पकड़नेको आवेगा। बादशाहने यह सुनते ही बागसे लश्करमें आकर रोजा खोला। तड़के ही उठकर नमाज पढ़ी, मगर थके हुए बहुत थे। फिर सो रहे और आदमी इधर उधर कामोंको चले गये। दुपहरको एक आदमी घोड़ा दौड़ाता हुआ जङ्गलमेंसे आया। वह बहुत घबराया हुआ था, उसने बादशाहको पूछा नौकरने कहा कि, घोड़ा यहां छोड़कर अन्दर चले जाओ। मगर उसने घोड़ा नहीं छोड़ा, बाग खैंचे हुए डेरेमें गया। बादशाहको

लिये जाने लगे। बैरामखांने कहा, अब वक्त नहीं है। इन नमकहरामोंको खुदापर छोड़कर यहांसे निकल चलो। बादशाह उसका कहना मानकर कुछ आदमियोंसे जङ्गलको चल दिये और काबुल कन्धारका इरादा छोड़कर मक्केको रवाना हुए। ख्वाजामो-अज्जम नदीमकोकलताश मीर गजनवी और ख्वाजा अम्बर नाजिर-को हुक्म दे गये कि, शाहजादा तो खुदाकी हिमायत और हिफा-जतमें है, उसे किसी बातका खटका नहीं है; परन्तु बेगमको जैसे हो सके, ले आओ। उन्होंने ऐसा ही किया।

बादशाह कुछ दूर चले थे कि, रात पड़ गयी और रात भी अंधेरी। बैरामखांने बादशाहसे कहा कि, मिरजा असकरीका लालची होना तो हजरत भी जानते हैं और वह अब दो तीन सुनशियोंके साथ डेरेमें बैठा हुआ बादशाही माल असबाबकी तफ-सील देख रहा होगा, सो अभी चलकर उसको ठिकाने लगा दूं, जब मिरजा न रहेगा तो उसके सब नौकर, जो बादशाही नमकसे पले हुए हैं, खिदमतमें हाजिर हो जायंगे।

बादशाहने हिसाबसे तो इस सलाहकी तारीफ की, मगर नेक मिजाजीसे ऐसा करना पसन्द न करके आगेको चल दिये। उसी वक्त मीर अबुलहसन सदर मिरजा असकरीके पाससे आया, जिसको उसने इसलिये भेजा था कि, बादशाहको आगे नहीं जाने दे। वह मिरजाकी तरफसे कुछ कहने लगा, मगर बादशाहने नहीं सुना।

जगाया और कहा, मिरजा असकरी हजरतके दुश्मनोंको सतानेके लिये आता है बादशाहने नाम पूछा, तो कहा, चोली बहादुर उजबक है और कासमहुसैन सुलतानका भेजा हुआ आया हूं। बादशाहने कहा, सच कहता है और बैरामखांसे पूछा कि, क्या करना चाहिये। उसने कहा, चल देना चाहिये। बादशाहने कहा लड़ना चाहिये, उसने कहा, नहीं हम थोड़े हैं और वे बहुत हैं।

पीछेसे मिरजा असकरीने आकर, अबुलखैर वगैरा बहुतसे आदमियोंको बादशाही उर्दूकी हिफाजतके लिये भेज दिया था कि, कोई उसमें जाने नहीं पावे। इतनेमें मीर अबुलहसन लौटकर आया और उसने जो बहादुरके खबर कर देने और बादशाहके चले जानेका सब हाल मिरजासे कहा। इधर तर्दीबेगखां वगैरा बादशाही नौकरोंने जाकर मिरजाको सलाम किया और मिरजाने सबको अपने मोतबर नौकरोंके हवाले कर दिया।

जब मीर गजनवी जाकर मिरजासे मिला, तो मिरजाने कहा कि, मैं तो बादशाहसे मिलने आया था, वे क्यों जङ्गलमें चले गये और फिर पूछा कि, मिरजा (शाहजादा अकबर) कहां है? मीरने कहा, डेरेमें हैं। मिरजाने कहा खूब हुआ, मैंनेका एक ऊंट रकाबखानेसे ले जाओ, मैं भी आता हूं। फिर मिरजा असकरी रातको अपने डेरेमें बैठकर, जो कुछ बादशाही असबाब डेरेसे लाया गया था, उसको (१) देखने और लिखने लगा और यह वही बात थी, जो बैरामखांने अपनी अगाम बुद्धिसे जानकर बादशाहसे अरजकी थी।

दूसरे दिन, पहर भर दिन चढ़े मिरजा असकरी अपने डेरेसे नक्कारा बजाता हुआ बादशाहके लशकरमें गया और बादशाहकी ड्योढ़ीपर ठहर कर सब छोटे बड़े आदमियोंको पकड़ा। तर्दीबेगको शाहबलदके हवाले किया। ऐसे ही हरेक नमकहरामको सौंपकर कन्धार ले गया और बहुतसे आदमियोंको कैद और शिकञ्जोंमें खेंचकर मार डाला। तर्दीबेगखांसे पूरा रुपया लिया। थोड़े ही दिनोंमें उसको अपने कर्मोंका दण्ड मिल गया।

(१) इस असबाबमें एक सन्दूक था, जिसको मिरजा असकरीने रुपयोंकी लालचसे खुलवाया तो रङ्ग रङ्गके पत्थर भरे हुए निकले। मिरजा उनको देखकर बहुत उदास हुआ।

जब मिरजा बादशाहकी ड्योढ़ीपर आया था, तो मीर गजनवी और माहमअङ्गा शाहजादेको गोदीमें उठाकर मिरजाके पास ले गये थे। मिरजाने बहुत प्यार किया और हंसा खिला, मगर शाह-जादे तो झुन्द ही रहा। तब मिरजाने नाराज होकर कहा, जानता हूं बेटा किसका है, हमसे क्यों खिलेगा।

मिरजा अपनी अंगूठी गलेमें डाले हुए था और उसकी नोकी डोर लटक रही थी। शाहजादेने हाथ बढ़ाकर पकड़ ली, मिरजा-ने उसी दम अंगूठी गलेसे निकाल शाहजादेको सौंप दी। जो लोग वहां थे, उन्होंने इसको बहुत अच्छा शकुन समझा।

फिर मिरजा शाहजादेको अपने साथ कन्धार ले गया। रस्ते-में कूको बहादुरने, जो मिरजा असकरीके भले आदमियोंमेंसे था, शाहजादेके कमावेके पास आकर मीर मोहम्मदसे कहा कि, जो शाहजादेको मुझे दो, तो मैं बादशाहके पास ले जाऊं। मीरने जवाब दिया कि, जब बादशाह खुद नहीं ले गये और यहीं रखना मसलिहत समझा है, तो मैं बगैर हुक्मके ऐसा काम नहीं कर सकता हूं। कूको बहादुरने कहा कि, मैं बादशाहकी खिदमतमें जाना चाहता हूं। शाहजादेको भी लेता जाता, मगर तुम जो मुझको इस बन्दगीसे महरूम रखते हो, तो कोई निशानी ही शाह-जादेकी मुझे दो, जिसे हजरतके पास ले जाऊं; तब मीरने शाह-जादेकी टोपी उसको देदी।

मिरजा असकरी १८ रमजान सन् ९५० (पौस बदी ५ संवत् १६०० ता० १४ दिसम्बर १५४३) को कन्धारमें पहुंचा और शाह-जादेको किलेमें ले जाकर अपनी बीबी सुलतान बेगमको सौंपा। वह बड़े लाड़से उसकी परवरिशका ध्यान रखती थी। माहमअङ्गा, जीजीअङ्गा और अतकाखां शाहजादेकी खिदमतमें बराबर हाजिर रहते थे। उस वक्त शाहजादेकी उमर सवा वर्षकी थी, तो भी ये बातें याद रह गयी थीं। वह कहा करते थे कि, एक दिन अहमद खांकी मा माहमअङ्गाने मिरजा असकरीसे यह अरज की कि, तरु

लोगोंमें रसम है कि, जब बच्चा पांव पांव चलने लगता है, तो बाप या दादा जो उनकी जगह हो, अपनी पगड़ी सिरसे उतारकर उस-की मारता है और वह चलते चलते गिर पड़ता है। अब बादशाह तो हैं नहीं और आप बापकी जगह हो, मुनासब है कि, यह शगुन आप करो। मिरजाने उसी वक्त अपनी पगड़ी उतारकर हमारी तरफ फेंकी और मैं गिर पड़ा, वह मारना और गिर पड़ना मुझे याद है। ऐसे ही मुझे बाल उतारनेके लिये बाबा हसन अब्दाल-में ले गये थे। वह यात्रा और बाल उतारना भी नहीं भूला हूं।

शेरखांका कुछ हाल।

शेरखां ब्यास नदीसे उतरकर धीरे धीरे बहुत होशियारीसे पीछे पीछे आता था और उसके दिलमें डर था कि, कहीं मैं लड़ाईमें फंसकर जीता हुआ हार न जाऊं। मगर जब मिरजा कामरां और दूसरे भाइयोंकी फूटका हाल सुना, तो लाहोरमें आया और वहांसे खुशाबतक जाकर कुछ दिन वहीरेमें रहा। सुलतान सारंग गक्खड़ और सुलतान आदमके बुलानेको आदमी भेजे, मगर वे तो वहां बाबर बादशाहके पाले हुए थे, उसके पास नहीं गये। तब शेरखां हतियापुरमें गया, जो गक्खड़ोंके मुल्कमें है और कुछ फौज उन लोगोंपर भेजी, मगर उन्होंने बहादुरी करके पठानोंको हराया, पकड़ा और बेचा। शेरखां चाहता था कि, खुद उनके ऊपर जावे, मगर उसके सलाहकारोंने कहा कि, ये लोग विकट पहाड़ोंमें रहते हैं; इनको तदबीर धीमेपनसे सर करना चाहिये, आप यहां बहुत सी फौज रखकर एक मजबूत किला बना दें कि, जिससे ये आप ही ताब आकर सिर झुकाने लगें और खुद बदौलत हिन्दुस्थानकी लम्बी चौड़ी बादशाहीका बन्दोबस्त करें। शेरखांने यह सलाह मानकर वहां रुहतासका किला बनाया और बहुतसा लशकर छोड़कर कूच दरकूच आगरेमें आया। वहांसे गवालियरके किलेपर गया। मीर अबुल कासिम किलेमें घिर गया। जब खानेको कुछ न रहा, तो लाकर उससे मिला। फिर शेरखांने मुल्कका बन्दोबस्त करके

बङ्गालेके सिवाय तमाम हिन्दुस्थानको ४७ जिलोंमें बांटा। सिपा-हीके घोड़ेके दाग लगाया। अलउद्दीनको बहुतसी तदबीरोंमेंसे (जो तारीख फीरोज शाहीमें लिखी हैं) थोड़ी सी अमलमें लाया। वहांसे रायसेन और चंदेरीके राजा सूरजमल्लके ऊपर गया और झूठे कौल करार करके राजाको किलेसे बुलाया और बाजे बेईमान मोलवियोंके कहनेसे उस अपने शरणागतको मारकर आया और बङ्गालेके हाकिमोंके तरीकेपर रास्तोंमें एक एक कोसपर सरायें बन-वायीं। फिर बीमारीसे, जो उसपर आगरेमें आयी थी, अच्छा हो-कर मालदेवके ऊपर गया, जो अजमेर नागोर और बहुतसे मुल्कों और शहरोंका हाकिम था और वहां फरेब और चालाकीसे काम बनाकर चित्तोड़ और रणथम्भोर पहुंचा। वहां भी बहुतसे छल और कपट किये, जिससे उन किलोंके किलेदारोंने कुञ्जियां उसके पास भेज दीं। फिर वहां कुछ आदमियोंको छोड़कर बघेलोंकी वलायतमें आया, वहांसे चलकर कालञ्जरके किलेको घेरा, मोरचे लगाये, सुरङ्गें उड़ायीं। १० मोहर्रम सन् ९५२ (चैत सुदी ११ सं० १६०२ ता० २४ मार्च १५४५) को अपनी लगाई हुई आगमें ही गरीबोंकी हायसे जलकर मर गया। मरते मरते किला भी उसके हाथ आ गया था। ५ वर्ष २ महीने १३ दिन नटखटाईसे हिन्दुस्थानकी हकूमत की। उसके पीछे ८ वें दिन उसका छोटा बेटा जलालखां बापकी जगह बैठा और सलीमखां नाम रखकर बादशाह कहलाने लगा। वह बुरे कामोंमें बापसे भी बढ़कर आगे निकला।

मिरजा हैदरका कुछ हाल।

जब वह बादशाहकी मददसे काशमीरको रवाने हुआ, तो नोश-हरेमें काशमीरके अमीर, जिनके नाम पहले लिखे गये हैं, उससे आकर मिले और उसको काशमीर फतह करानेके लिये वहां घाटि-योंमें ले गये। इतनेमें ही बादशाही लशकरमें भगाड़ी पड़ गयी और ख्वाजा कलांबेग वह काम छोड़कर मिरजा कामरांसे जा

मिला। मुजफ्फर तोपची सारंग पहाड़में जा बैठा। मिरजा हैदरके पास उसके पुराने नौकरों या थोड़ेसे बादशाही बन्दोंके सिवाय और कोई नहीं रहा था, तो भी वह कशमीरमें फूट होने और कशमीरके मर्जीकी चाटसे २२ रज्जब सन् ९४७ (अगहन वदी ९ सं० १५९७ ता० २० नवम्बर १५४०) को पुंछकी घाटीसे कश्मीर पहुंचा और वहां कोई पक्का हाकिम न होनेसे सहजमें ही उस मुल्कका हाकिम बन बैठा। उस वक्त नाजुक शाह नाम एक शख्स वहांका बादशाह कहलाता था। अमीर सब बदले हुए थे और छोटी छोटी और बन रहे थे। जाड़ेके दिन थे और मेंह बहुत जोरसे बरसता था कि, काचीचक, जो मिरजा हैदरके सामने था और इस बहानेसे आप हाकिम बना चाहता था, मगर फिर मिरजासे यह उम्मेद न देखकर शेरखांके पास गया और उसको शाहमदशाहके भाई इसमाईलको बेटी देकर २००० सवार अवा-बकखां और हुसैनखांकी अफसरीमें लाया, कशमीरमें आते ही उस-का साथी अब्दाल माकरी तो जलन्धरको बीमारीसे मर गया और मिरजा हैदर अपने बागीयोंको अन्दर बोलमें ले जाकर रखने लगा। कशमीरी सब अलग हो गये। मिरजा थोड़ेसे आदमियोंसे २ म-हीने तक पहाड़ोंमें घिरा रहा। ८ (१) रबीउलसानी चन्द्रवार सन् ९४८ (आसोज सुदी ९ सं० १५९८ ता० २९ सितम्बर १५४२) को लड़ाई हुई। कशमीरी और पठान ५००० सवारसे जियादा थे, सो भी हार गये। बहुतसे मारे गये और कैद भी हुए। मिरजा जीता और कशमीरका मालिक हो गया। वह पहले भी जब कि, काशगरके हाकिम सईदखांका भेजा हुआ ...रकी घाटेमें होकर

---

(१) अकबरनामा जिल्द २ पृ० १४८ में बिस्तुम (२० वीं) तारीख चन्द्रवारको लिखी है, परन्तु पत्राङ्कके हिसाबसे २० वीं नहीं, ८ वीं थी। लेखकके दोषसे "हश्तुम" (आठवीं) की जगह बिस्तुम (बीसवीं) हो गयी है।

आया था, ४ शाबान सन् ९४७ (मगसर सुदी ५ सं० १५९७ ता० १ दिसम्बर १५४०) को कशमीर फतह कर चुका था और ३० शव्वाल (चैत सुदी १ सं० १५९८) को काशगारके बादशाह मोहम्मद शाह और कशमीरके अमीरोंसे सुलह करके और मोहम्मद शाहकी बेटी अपने बेटे इसकन्दर सुलतानके वास्ते लेकर वापस चला गया था। अब जो फिर उसने कशमीर कब्जे किया, तो १० बरसतक वहांका राज करता रहा और उजड़े हुए मुल्कको आबाद बनाया। जगह जगहसे कारीगरोंको बुलाकर बसाया। गान विद्याका तो बहुत ही प्रचार किया। तरह तरहके बाजे बनाये। इसपर भी उसने सिक्का और खुतबा नाजुक शाहके नामका ही जारी रखा, जैसा कि, कशमीरी अमीरोंने रख छोड़ा था, मगर जब हुमायूं बादशाहने काबुल फतह की, तो उसके नामका सिक्का चलाया। सन ९५८ (संवत् १६०८ सन १५५१) में कशमीरियोंने उसपर छापा मारा और वह मारा गया।

मिरजा कामरांका हाल।

मिरजाने बादशाहसे अलग होनेके पीछे खुशाबमें जाकर अपने नामका खुतबा पढ़वाया और धनकोटकी राहसे सिन्धु नदीपर पहुंचा। वहां मोहम्मद सुलतान और उलग मिरजा भी सुलतानसे भाग कर उससे शामिल हो गये जब वहां नाज महंगा हो गया, तो मिरजा दल बांधकर नदीसे उतरा और काबुलको चला गया और मिरजा सुलेमानसे भी बदख्शांमें अपने नामका सिक्का और खुतबा जारी करनेके वास्ते कहलाया, मगर जब उसने इनकार कर दिया, तो मिरजा कामरां बदख्शांपर चढ़ गया। बारी माम गांवमें दोनोंकी लड़ाई हुई, आखिर सुलेमानने हार मानकर मिरजा कामरांसे सुलह कर ली और उसके नामका सिक्का और खुतबा भी जारी कर दिया, तो भी मिरजा कामरांने कुछ परगने बदख्शांके उससे लेकर अपने आदमियोंको सौंप दिये।

इतनेमें भी मिरजा हिन्दालने मिरजा असकरीसे कन्धार ले लिया; मिरजा कामरां बहुतसा माल लेकर गया और ६ महीने तक कन्धारको घेरे रहा। फिर जब खानेको कुछ न रहा, तो मिरजा हिन्दालने किला सौंप दिया।

मिरजा कामरां फिर मिरजा असकरीको कन्धार देकर मिरजा हिन्दालको काबुलमें ले आया। कुछ दिनोंतक तो उसको तकसीफमें रखा मगर फिर जूयशाहीका इलाका उसको दे दिया। (यहां जलालाबाद बस्ता है।)

सिन्धके हाकिमने भी मिरजा कामरांकी बन्दगी कबूल कर ली, मगर जो परगने मिरजा सुलेमानसे ले लिये थे, उनमें फिर मिरजा सुलेमानने अमल कर लिया और सुलह तोड़ दी।

मिरजा कामरां फिर मिरजा सुलेमानपर चढ़कर गया। अन्दराबके पास लड़ाई हुई; मिरजा सुलेमान फिर हारा और किले जफरमें घिर गया। मिरजा कामरांने मौका पाकर किलेको घेरा रसद बन्द कर दी, अकसर बदख्शानी उससे आ मिले। मिरजा सुलेमान अपने नौकरोंकी नमकहरामी और रसद नहीं पहुंचनेसे मिरजा कामरांके पास हाजिर हो गया। मिरजा कामरां कासिम बरलासको बदख्शांमें रखकर मिरजा सुलेमान और मिरजा इब्राहीम दोनों बाप बेटोंको काबुलमें पकड़ लाया, और ऐश आराममें पड़ गया।

यादगार नासिर मिरजा।

बादशाहके सिन्ध जानेके पीछे यादगार नासिर मिरजा दो महीनेतक वहां रहा और जब ठट्ठेके हाकिमकी बातोंमें सच्च न देखा, तो कन्धारमें मिरजा कामरांके पास चला गया जब कि, वह मिरजा हिन्दालसे लड़ रहा था। मिरजा कामरां उसको काबुलमें ले गया और ठट्ठेके हाकिमके पास आदमी भेजकर शहरबानू बेगम और उसके बेटे मिरजा सञ्जरको जो यादगार नासिर मिरजासे अलग होकर भक्करमें रह गये थे, मांगा। उसने उनको और

बादशाहकी बहुतसी नौकरोंको, जो वहां रहे हुए थे जङ्गलके रस्तेसे भेजा, तो वहां तपकी बीमारी लोगोंमें फैली, जिससे बेगम मर गयी और उस दो तीन हजार आदमियोंके काफिलेमेंसे थोड़े से ही कन्धारमें पहुंचे।

बादशाहका खुरासान और इराकको जाना।

बादशाह जब चोल (जङ्गल) के (१) रस्तेसे रवाने हुए थे, तो मालिक हाथी जो उस जङ्गलमें लूट मार किया करता था, आकर मिला। बादशाहको अपने डेरेपर लाया और खूब बन्दगी की; फिर उस विकट जङ्गलसे निकालकर वलायत (२) गर्मसेरमें ले गया।

(१) बादशाह सीस्तानकी तरफ जाते थे; बड़ी बड़ी मञ्जिलें करते थे। मिरजा असकरीने पीछा नहीं किया था, तो भी उसकी तरफका खटका लगा हुआ था। एक रात कुत्तेका भोंकना सुनकर बादशाहने कहा कि, वहां बस्ती होगी। इतनेहीमें बलोचोंने तूपा कर रस्ता रोक लिया। उनकी बोली समझ नहीं पड़ती थी। एशकआकां हसन अलीकी जोरू बलोचनी थी, उसने कहा कि, ये लोग यों कहते हैं कि, हमारा सरदार मालिक हत्था यहां नहीं है, जबतक वह न आ जाय और न कह दे आप आगे नहीं जा सकते। बादशाहने मान लिया। बलोच उनको किलेमें ले गये; सलाम करके बिछौना बिछाया। बादशाह और हमीदा बानू बेगमको उसपर बैठाया। तड़के जब बादशाह नमाज पढ़ रहे थे, तो आदमी मलिकहत्थेको बुलाया। उसने सलाम किया खैरियत पूछी और कहा कि तीन दिन पहले मिरजा कामरांका हुक्म आया है कि, जब बादशाह आवें, तो आगे मत जाने दो और पकड़ लो। मगर आप मेरे मेहमान हुए हैं, इसलिये मैं अपनी सरहदतक साथ चलकर पहुंचा दूंगा।

(२) गर्मसेरका इलाका तो कन्धारमें था, मगर सीस्तानका जिला जो उससे लगा हुआ था, ईरानके शाह तुहमास्पकी अमलदारीमें था।

मीर अबदुलहई, जो वहांका बड़ा जमीदार था, वह खुद तो कुछ सोच विचार करके नहीं आया ; लेकिन सरबराह सब उसने कर दी। मिरजा असकरीकी तरफ ख्वाजा जलालुद्दीन माल तहसील करनेके लिये आया हुआ था। बादशाहने उसको बुलाया, तो वह फौरन आया और जो कुछ उसके पास था, सब नजर कर गया।

बादशाह कुछ दिन वहां रहकर अपने साथियोंको संसारके असार होनेका उपदेश दिया करते थे और चाहते थे कि, ये लोग भी अपना अपना रस्ता ले लें, तो आप दिलजमईसे फकीर होकर किसी कोनेमें बैठ रहें। मगर वे लोग न आप बादशाहका साथ छोड़ा चाहते थे न बादशाहको दुनिया छोड़ने देते थे। आखिर यह सलाह ठहरी कि, ईरानके बादशाहको खत लिखना चाहिये ; अगर वह पिछली दोस्तीका खयाल करके कुछ मदद करे, तो एक दफे फिर बादशाह होनेकी कोशिश करें, नहीं तो फकीर होना तो दिखता ही है।

इसपर १ शव्वाल गुरुवार सन ८५० (पौस सुदी २ सं० १६०० ता० २७ दिसम्बर १५४३) को रवाने किया, जिसमें यह लिखा था कि, तकदीरसे कुछ ऐसे बनाव बने हैं जिनसे आपकी मुलाकात जल्दी हो जावे।

बादशाह गर्मसेरमें कुछ दिनों और रहा चाहते थे, मगर मीर अबुलहईने आदमी भेजकर कहलाया कि, मैं सुनता हूं कि मिरजा असकरीने बहुतसे आदमी भेजे हैं ; शायद वे यहां आवें और कुछ मुशकिल पड़े। इसलिये यदि आप ईरानकी सरहद (१) सीसतानमें तशरीफ ले जावें, तो बिहतर हो।

बादशाह हीरमन्द नदीसे उतरकर एक तालावपर ठहरे। सीसतानके हाकिम अहमद सुलतान शामलूने हाजिर होकर आदाब बजाया और महमानदारी की। बादशाह वहां शिकार खेले

(१) सीस्तान अब भी ईरानकी अमलदारीमें है।

कर सीस्तांमें गये। अहमद सुलतानने अपनी मा और बीबियोंको मरयम मकानीकी खिदमतमें भेजा और अपनी सब दौलत और विलायत बादशाहकी नजर की, बादशाहने थोड़ीसी उसमेंसे उसको राजी रखनेके लिये ले ली, बाकी उसीको लौटा दी।

अहमद सुलतानका भाई हुसैन कुली मिरजा मशहदसे अपनी मा और भाईसे मक्के जानेकी रुखसत लेनेको आया था। वह भी बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हुआ। बादशाहने उससे मजहबके बारेमें बातचीत की, तो उसने कहा कि, मैं शीआ और सुन्नियोंकी किताबें मुद्दतसे देख रहा हूं। शीओंका तो यह सिद्धान्त है कि, सुन्नियोंको बुरा कहनेसे सवाब होता है और सुन्नी कहते हैं कि, बुरा कहना बुरा है। मेरी समझमें सवाबकी उम्मेदमें बुरा कहना ठीक नहीं है।

बादशाह यह बात सुनकर बहुत खुश हुए और उसको अपने पास रखना चाहा, मगर वह न रह सका; क्योंकि वह एक बड़े सफरकी तैयारी कर चुका था।

यहां हाजी मोहम्मद बाबा कशका और हसनकोका मिरजा असकरीका साथ छोड़कर आये और कहने लगे कि, हजरत जमीन-दावरको तशरीफ ले चलें, क्योंकि वहांका हाकिम अमीरबेग खिद-मतमें हाजिर होना चाहता है और यही इरादा वहांके किलेदार चलमावेगका भी है और वहीं बहुतसे नौकर मिरजा असकरीके भी खिदमतमें हाजिर हो जायंगे, जिससे कन्धारमें बादशाहका अमल हो जायगा।

जब ये बातें अहमद सुलतानने सुनीं, तो हाजिर होकर अर्ज की कि, ये लोग हजरतको ईरान जानेसे रोकना चाहते हैं, सो इनकी अरज कबूल न होना चाहिये। यह बात बादशाहको भी पसन्द हुई और जलदीसे हिरातको रवाने हो गये।

जब बादशाहका खत ईरानके शाहतुहमास्पके पास पहुँचा, तो पढ़कर बहुत खुश हुए और इसमें अपने खानदानकी इज्जत समझ

कर कजवीनमें तीन दिनतक खुशीके नक्कारे बजाये। जवाबमें जल्दी तशरीफ लानेकी आरजू लिखी और बहुतसे तुहफे अपने खास मुसाहिबोंके हाथ भेजे और जो खत लेकर गया था, उसको भी बहुत खातिर और इज्जत की; अपने मुल्कों और शहरोंके हाकिमोंके नाम हुक्म लिखे कि, हर मञ्जिल और मुकामपर, बादशाहके लशकर पहुंचनेको हमारे खानदानकी इज्जत समझकर छोटे बड़े आदमी फौरन पेशवाईको जावें और बादशाहोंकी सी जियाफतें करें, अच्छे अच्छे सामान ताजे ताजे खाने शरबत और मेवे जगह जगह तैयार करके नजर करें (१) हिरातके हाकिम मोहम्मदखांको जो फरमान पहुंचा था, उसमें ये बातें लिखी थीं।

शाह तुहमास्पका फरमान हाकिम हिरातके नाम।

हिरातके हाकिम और मीर दीवान मोहम्मदखां शर्फुद्दीन और गलीसकलूं बादशाही इनायतोंका उम्मेदवार होकर जानें कि, इन दिनोंमें उसकी अरजी, जो करासुलतान शामलूके भाई कमाल-उद्दीन शाह कुलीबेगके हाथ भेजी थी, १२ जिलहिज्ज (फागुन सुदी १४ सं० १६०० ता० ६ मार्च १५४४) को पहुंची। बड़े बड़े (२) बादशाहोंके सरताज आली जनाब नसीरुद्दीन मोहम्मद हुमायूं बादशाहके इधर तशरीफ लानेके बारेमें जो कुछ लिखा था, उससे क्या कहें कि, हमको कितनी बहुत खुशी हुई है। उनके आनेको बहुत ही गनीमत समझें और उस खुशखबरी भेजनेके इनाममें हमने विलायत सब जवार उसको इनायत की है, सो अपने दारोगा और वजीर वहां भेज दें। शुरू सालसे माल वाजबी और दीवानी वजूह (लागें) उस जगहकी तहसील करके उनके लशकर और अपने जरूरी कामोंमें खर्च करे और जैसा कि, इस फरमानमें लिखा गया है, फसल बफसल और दिन दिन अमल करके इसके खिलाफ न करे।

(१) हिरात अब अमीर काबुलके पास है।

(२) यहां बहुत लम्बा चौड़ा अलकाब असलमें लिखा है।

जमाना देखे हुए और अकलमन्द ५०० आदमियोंको जो सब एकाएक कोतल घोड़ा, रकाबके असबाब और सामान अच्छे रखते हों, उस साहब इकबाल बादशाहकी पेशवाईमें जानेको तईनात करें। १०० घोड़े सुनहरी जीनके, जो दरगाहसे उन हजरतके वास्ते उसके पास भेजे गये हैं और वह भी अपने तबेलोंमेंसे ६ घोड़े दो आसूदा और खुशरंग बड़े घोड़ोंके साथ, जो उनकी सवारीके लायक हों, छांटकर, लाजवर्दी रंगकी बूटेदार जीनें और जरीकी बुनी हुई बागें (जो सवारी लायक उस बादशाहके हों) उनपर डालकर और हरेक घोड़ा अपने नौकरोंको देकर रवाने करे। तलवारकी खासापेटी, (जो बड़े बादशाहसे हमको मिली थी) और सुनहरी तलवार जड़ाऊ परतले समेत, जो उनको फतहके शकुनोंके वास्ते भेजी गयी है और ४०० थान मखमल और अतलस फरंगी यजदीके भेजे गये हैं, जिनमें १२० सो उन हजरतकी खासा पोशाकके लिये और बाकी नौकरोंके वास्ते हैं। मखमलका कालीचा और सुनहरी दुखवाबा, नमद, तकिया, कुरसी, अतलसके अस्तरका २ जोड़े गोशकानी कालीनके बढ़िया, १२ छुरी, सफेद और किरमिजी चादरें भेजी गयी हैं, सो अच्छी तरहसे पहुंचा दे।

हर रोज मीठे और मजेदार शरबत तैयार करके और सफेद रोटियां, जो घी और दूधमें गूंधकर बनायी गयी हों और जिनमें खशखश और सौंफ लगी हो हजरतके वास्ते भेजता रहे। मुसाहिबों और दूसरे नौकरोंके वास्ते भी अलग अलग भेजे और ऐसा बन्दोबस्त करे कि, कल जिस मुकाममें ठहरें, आज ही वहां साफ रंगकी सफेद और बूटेदार चादरें (कनातें) अतलस और मखमलके सायबान, रकाबखाने, रसोई और सब कारखाने, उनके वास्ते सजाकर खड़े कर दें और हर कारखानेमें उसके सारे जरूरी सामान तैयार रहें।

जब आप आकर उतरें, तो शरबत गुलाब, नीबूके मजेदार अर्क बरफ और पालेमें ठण्डे करके नजर किये जावें।

(१०)

शरबतके पीछे मशहदी, सेबों, तरबूजों और अङ्गूरोंकी कस्तूरीमें बसाये हुए मुरब्बे और सफेद रोटियां जैसी कही गयी हैं, हाजिर की जावें और ऐसी कोशिश करे कि, तमाम शरबत आपको नजरसे गुजराये जावें और उनमें गुलाब और अम्बर मिलाया जावे।

उन ५०० आदमियोंके २ दिन पीछे कज्जाक सुलतान और जाफर सुलतानको अपने बेटों और अपनी कौमके एक हजार आदमियोंसे पेशवाईमें भेजे और उन तीन दिनोंमें अमीरों और लशकरियोंको रंग रंगसे दिखाये। तपचाक (तुर्की) और ताजी (अरबी) घोड़े तैयार रखे, सो (बादशाह) अपने नौकरोंको दे दें। सिपाहीको कोई सजावट अच्छी घोड़ेसे बढ़कर नहीं है। उन १००० आदमियोंके कपड़े भी सिरसे पैरतक रङ्गीन और पाकीजा बनाये हुए हों और ऐसी बात ठहरावे कि, जब ये अमीर हजरतकी खिदमतमें पहुंचें, तो जमीन चूमकर एक बन्दगी करें। सवारी वगैरामें अमीरोंके नौकरों और हजरतके नौकरोंमें कोई तकरार न हो पड़े और किसी तरहसे भी कोई रञ्ज बादशाहके नौकरोंको न पहुंचे। सवारी और लशकरके कूचके वक्त अमीर दूरसे फौजमें खिदमत करें और चौकीके वक्त हरेक अमीर उस जगहके पास पास, जो ठहरा दी गयी हो, फिरता रहे और बन्दगीका कुतका हाथमें लेकर, जिस तरहसे कि, कोई अपने बादशाहकी खिदमत करता है वैसे ही, खिदमत करे और निहायत दरजेका अदब और मुलाहिजा रखकर काम करे। जिस विलायतमें पहुंचें यही फरमान उस विलायतके मालिकको दिखाकर कहला दे कि, वह अमीर भी वैसे ही खिदमत करे और मेहमानी इस तौरसे करे कि, तमाम खाने, हलवे और शरबत १५०० तबक (थाल) से कम न हों; उनकी खिदमत और नौकरी मशहदतक वह अपने जिम्मे में रखे।

जब वे अमीर खिदमतमें पहुँच जावें, तो हर रोज १२०० थाल तरह तरहके खानोंके, जो बादशाहोंके लायक हों, बादशाहकी मजलिसमें पेश करें और उन अमीरोंमेंसे हरेक अमीर अपनी मेहमानीके दिन नौ घोड़े नजर करे, तीन तो खास हों। एक बड़े अमीर मोहम्मद बेरामखां बहादुरको दिया जावे और ५ दूसरे खास खास अमीरोंको, जो जिसके लायक हों, दिये जावें। नवों घोड़े आपकी नजरसे निकाल दिये जावें और अरज कर दी जावे कि, कौन कौनसे हजूरके वास्ते हैं और हरेकको, जो पहले ठहर गया हो (कि कौन कौन अमीर होगा) कह दें कि, यह बात बुरी तो दिखती है, पर मुनासब होगी बुरी न होगी। जिस तौरसे हो सके, उनके नौकरोंको राजी रखें।

और जो कुछ शिकायत गमख्वारी और दोस्तोंकी बात हो, सही करें। उन लोगोंके दिलोंको, जो जमानेकी गरदिशसे कुछ दुखे हुए हैं दिलदारी और गमख्वारीसे, जो ऐसे वक्तोंमें भली मालूम होती है, खुश करें और हर वक्त ऐसा ही करते रहें, जबतक कि, वे हमारे पास पहुँचें। फिर, जो कुछ वाजिब हो, हमारी तरफसे बरता जावेगा।

खानेके पीछे हलवे फालूदे जो कन्द और मिसरीके पकाये हुए हों, तरह तरहके मुरब्बे और खासे खताई लड्डू, जो गुलाब मुश्क और अम्बरसे खुशबूदार किये गये हों, मजलिसमें ले जावें।

विलायतोंके हाकिम इन खिदमतों और मेहमानियोंके पीछे अपनी वलायतसे दिलजमई करें। जिसतक जो कोई खिदमतमें रहे, वह खिदमत करनेकी इन बातोंमेंसे कोई बात भी नहीं छोड़े।

जब उस वलायत (हिरात) से १२ कोसपर पहुँचें, तो वह (हाकिम) अपने किसी खास जाननेवाले मातहतको शाहजादेकी खिदमतमें रखकर (कि जो शहर और शाहजादेकी खिदमतसे खबरदार रहे) बाकी लशकर शहर, वलायत, हजारे और तक-

दरीकी सरहदोंसे गिल्लीके ३००० आदमियोंतक साथ लेकर अपने मददगार नौकरोंसे पेशवाईको आवे। चादर सायबान और सब जरूरी सामान ऊँटों और खच्चरोंपर लाद ले आवे, ताकि भला हुआ उर्दू नजर आवे और जब हजरतकी बन्दगीसे सरफराज हो, तो सब बातोंसे पहले हजारी दुआ कहे और जिस दिन खिदमतमें पहुंचे, तो लशकर और उर्दूको तुजुक और कायदेसे उतारे और खिदमतमें खड़ा रहकर महमानीकीथ रवानगी लेकर तीन दिन उस मंजिलमें मुकाम करे। पहले दिन उनके तमाम लशकरियोंको बढ़िया खिलअत पहनावे, जो अतलस, कमखावबजदी और दाराईयों मशहदी और खाफोंके हों और सबको मखमलके बालापोश दे; उर्दूवालों और नौकरोंमेंसे हरेकको तूमान तबरेजी रोज खर्चके लिये दिया करे और तरह तरहके खाने, जो मुकर्रर हो चुके हैं, तैयार कराये और ऐसी मजलिस बादशाहोंकीसी बनावे कि, जिसमें सब लोग तारीफ करें और दुनियामें शाबाशीका शोर मच जावे और उनके लशकरकी तफसील लिखकर दरगाहमें भेजे। २५०० तूमान तबरेजी, जो खासेकी सरकारके खजानेसे हिरात पहुंचा करती है, नियालकर जरूरतोंमें खर्च करे और जो आखिरी दरजेकी खिदमत और बन्दगी हो वही अपने ऊपर अहसान रखकर करे।

उस मंजिलसे शहरतक ४ दिनमें आने और खानेकी महमानी जैसी पहले दिन करे, वैसी ही हर रोज करता रहे और हरेक महमानीमें उसके बेटे चाकरों और खिदमतगारोंके मुवाफिक कमर बांधकर बन्दगी करें और खुदाकी इस इनायतसे शुकरानेमें कि, इतना बड़ा बादशाह हमारा महिमान हुआ है, उसकी बन्दगी और खिदमतमें, जो आखिरी दरजेकी मिहनत है, वह करें। किसी तरहकी कसर नहीं रखे, उस हजरतके वास्ते जितनी जियादा दौड़ और जानमारी करोगे, उतनी ही ज्यादा पसन्द भी होगी।

जिस दिन कि, शहरमें पहुंचेंगे, उससे पहले दिन ईदगाहके बागमें क्यारोंके आगे वे चादरें लगादें, जिनके अन्दर किरमजी अतलस बीचमें तीबी (तबसी) रंगें और ऊपर अरुफहानी मसकाली (कपड़ा) लगा है और जिनको इन्हीं दिनोंमें तैयार कराकर अरज की थी और देखे कि, जहां हजरतकी तबीअत खुश होती है। फूलोंके हरेक तख्तेमें जिसकी हवा और ताजगी अच्छी हो, नौकरकी तरहसे छातीपर हाथ धरे हुए हजरतके आगे आगे जावे और अरज करे कि, वह उर्दू (लशकर) और सब असबाब हजूरके नजर है। रस्ते और कूच होनेमें दमबदम उनके दिलको उनके साथ बातें करनेसे खुश करता रहे। मगर जो बात करे वह पक्की हो। फिर उस मञ्जिलसे जहांसे चलकर सवेरे ही शहरमें आवेंगे, रुखसत मांगकर लड़के (शाहजादे) की खिदमतमें हाजिर हो जावे और सवेरे ही उसको पेशवाईके वास्ते महलसे बाहर लावे और जो खिलअत पिछले नौरोजमें हमने शाहजादेके वास्ते भेजा था, वही उसको पहिनावे और तकाबू घरानेके बड़े बूढ़ोंमेंसे कोई एक बड़ा आदमी, जो उसके पसन्द और भरोसेका हो, उसको राजधानी (हिरात) में छोड़कर लड़केको सवार करावे और शहरमें आते वक्त कज्जाक सुलतानको नव्वाब (बादशाह) की खिदमतमें रख आवे। पादर (डेरे) ऊंट और घोड़े छोड़ आवे, दूसरे दिन जब नव्वाब (बादशाह) सवारी करें, तो उर्दू भी कूच करे और सुलतान कज्जाक आगे हो जावे और जब लड़का (शाहजादा) शहरसे बाहर आवे तो ताकीद कर दे कि, तमाम लशकरी मामूली शान (दबदबे) से सवार होकर पेशवाईको जावें और जब उस बड़े बादशाहके पास पहुंचें और एक तीरका टप्पा बीचमें रहे, तो वह (हाकिम हिरात) आगे जाकर अरज करे कि, बादशाह घोड़ेसे न उतरें। जो वे कबूल कर लें, तो उसी दम लौट आवे और राजकुमारको घोड़ेसे उतार कर जलदीसे पैदल ले जावे और उस बड़े बादशाहकी रान (जांघ) और रकाबको चूमकर अपने

मश्हूर मर इज्जत ताजीम और बन्दगीके कायदे बजा लावे और जो नव्वाब (बादशाह) नहीं मानें पैदल ही जावें, तो पहले लड़केको घोड़ेसे उतारे और बन्दगी करे फिर पहले हजरतको सवार करावे और उनका हाथ चुमाकर लड़केको सवारीकी तरफ लावे और दस्तूर के मुवाफिक सवार करावे और अपने डेरे और मुकर्रर किये हुए मंजिल और मुकामको रवाने हो और वह (हाकिम) लड़केके पास बादशाहकी खिदमतमें रहे। अगर बादशाह लड़केसे कोई बात पूछे और लड़का शर्मके मारे पूरा जवाब नहीं दे सके, तो वह ठीक जवाब अरज करे।

उस मंजिलपर शाहजादा बादशाहकी मेहमानी करे। इस तौरपर कि, जो सुबहके वक्त उतरें, तो फौरन १०० तबक रङ्ग रङ्गके खानोंके हाजरीके तौरपर मजलिसमें हाजिर किये जावें और दोनों नमाजोंके बीचमें (तीसरे पहर) १२०० तबक तरह तरहके खानोंके मशहूर मोहम्मदखानी तश्तरियों (थालों) और दूसरी चीनी और सोने चांदीकी सेनकोंमें, जिनपर चांदी सोनेके ढकने ढके हों, मजलिसमें लाये जावें। उनके पीछे मजेदार मुरब्बे (जहां तक हो सकें) हलवे और फालूदे लगाये जावें; फिर सात घोड़े अच्छे और खूबसूरत शाहजादेके तबेलोंमेंसे छांटकर उनको मखमल और अतलसकी भूलें पहिनायी जावें, बूटेदार मखमलकी भूलपर तो कसबके बुने हुए रेशमी तङ्ग, लाल मखमलकी भूलोंपर सफेद तङ्ग और हरे मखमलकी भूलोंपर काले तङ्ग खेंचे जावें।

हाफिज साबिर काक, मौलाना कासिम कानूनी, उस्ताद शाह मोहम्मद सुरनाई, हाफिज दोस्त मोहम्मद खाफी, उस्ताद यूसुफ मांदूदी, और दूसरे मशहूर गाने और बाजे बजानेवाले, जो शहरमें हैं, तमाम वक्त हाजिर रहें। जब बादशाह चाहें फौरन गा बजाकर उनको खुश करें। दूर और नजदीकका हरेक आदमी, जो लायक उस मजलिसके हो, खिदमतमें रहे। बुलाते ही हाजिर हो जावे और जिस तरहसे हो सके उनके वक्तोंको हंसी खुशीमें गुजारे

और शनकार, बाज, चरग, बाशा, शाहीन, बहरी और जो कुछ (शिकारी जानवर) लड़के (राजकुमार) या उस (हाकिम) या उसकी औलादकी सरकारोंमें हों, सब नजर कर दें। उनके नौकरोंको रेशमी पूरे खिलअत, हर रङ्ग और हर जिनिसके अलहदा अलहदा रङ्ग रङ्गके मखमल और खाराके (बने हुए) जरी और कलाबत्तूकी तुकमें लगे हुए, जो जिसके लायक हो, पहिनावें। जब वे अपनी मञ्जिल (डेरे) में जावें, तो उनके नौकरोंको शाहजादेके पास लावें और वह बड़ी मेहरबानीसे, जो उसके बाप दादाकी मौरास है, उनके साथ सलूक करके हरेकको अलग अलग खिलअत और घोड़े यथायोग्य दे और इनाम ७ तूमान नकद ३० थैलियोंमें कपड़ोंके साथ नजरें करें और लशकरमें ३ तूमान (१) तबरेजी (जो ६०० शाहीके (२) होते हैं।) हरेक आदमीको दें।

७ दिनतक खयाबान और कारेज (बागबाड़ियों) की सैर करते रहें और कह दें कि, इन ७ दिनोंमें चार बाग शहरके दरवाजेसे, जो बादशाहोंकासा मकान है, खयाबानके सिरे तक, जो बेगशाहके बागमें है, कारीगर लोग चार ताकबन्दी (दरवाजे बनाना) बहुत अच्छी तरहसे करें और हरेक कारीगरके शामिल ऊपरलिखे अमीरोंमें एक एक अमीरको भी रखें, ताकि एक दूसरेको रीससे अपनी कारीगरीको दिखावें।

बादशाह उस वलायतमें आकर पहले उसी शहर (हिरात) में पधारेंगे, जो दुनियाकी आंखोंका उजाला है। इसलिये चाहिये कि, वहांके सुघड़ और मीठी मीठी बातें करनेवाले लोगोंको उनके पास लावें कि जिनसे उनका जी बहले।

तीसरे दिन जब इस चार ताक और शहरके खयाबान और चार बागकी सैर हो चुके, तो कारिन्दोंको शहरके मोहल्लों और

(१) तूमान ईरानी सिक्केका नाम है।

(२) और शाही तूरानी सिक्का था।

पासके गांवोंमें भेजकर यह डौंडी पिटवा दें कि, तमाम औरत मर्द चौथे दिन तड़के ही खयाबानके सिरेपर हाजिर हो जावें और हर दूकान और बाजारमें कालीन और पलास (टाट) की बिछौने बिछाकर औरतें और बेवाएं (रण्डियां) बैठ जायं और जैसा कि, उस शहरका कायदा है औरतें आने जानेवालोंसे हंसी दिल्लगी करें। हर गली कूचेसे ऐसे सखे गवैये बाहर निकलें कि, जिनके बराबर दुनिया भरके शहरोंमें न हों और ये सब लोग पेशवाईको जावें और बादशाहसे बड़े अदब और आदरसे अरज करें कि, रकाबमें पांव डालकर सवार हों और लड़का (शाहजादा) उनके बराबर इस तौरसे चले कि, उनके घोड़ेकी गरदन आगे रहे और वह (हाकिम) पीछेसे पास पास चला करे कि, वे जो इमारतों, महलों और बागोंकी बाबत कुछ पूछें तो उसका जवाब समझकर ठीक ठीक अरज करे। जब शहरमें आयें, तो चारबागकी सैर फरमायें और उस बागीचेमें कि, जब हम वहां रहते थे तो हमारे रहने, सोने, मश्क करने और पढ़नेके लिये बनाया गया था, उनको उतारे। चारबागके हम्माम और दूसरे हम्मामोंमें सफेदी और सजावट करा देवे गुलाब और कस्तूरीमें बसा देवे कि, जब उनमें जावें, तो शरीरको सुख मिले। पहले दिन शाहजादा बहुतसे खानोंसे महमानी करे। जब वे सो जावें, तो वह (हाकिम) उस तौरकी महमानी करे कि, लिखी जावेगी।

जब वे शहरमें आवें, तो उसी दिन अरजी लिखे और दरगाहमें रवाने करे। यह बात मुकर्रर हो चुकी है कि, मोअज्जुद्दीन हुसेन, जो हिरातका बड़ा आदमी है, किसी होशयार और अच्छे लिखनेवालेको तईनात करे, जो ५०० आदमियोंके पेशवाईमें जानेके दिनसे शहरमें दाखिल होनेतक सही रोजनामचा लिखकर उस (हाकिम) की मोहर छाप करावे और उसमें तमाम अच्छी बुरी बातें, जो मजलिसमें गुजरें लिखकर मोतबर आदमियोंके हाथ दर-

राहमें रवाना करे, जिससे हमको बादशाहके मिजाजकी सब खबर मिल जावे ।

उस (हाकिम) को मिहरबानी इस तौरपर हो कि, खाने हलवे, शीरे और मेवोंके ३००० थाल लगाये जावें और जरूरी सामान इतना किया जावे। पहले ५० चादर (कनात) २० सायबान और बड़ी चादर अलायदेकी, जो हमारे वास्ते बनाकर अरज की थी, १२ जोड़े कालीन, १२ गज, १० गज और ७ गजके, ७ जोड़े पांच पांच गजके कालीनोंके ९ कतार आया, २५० तबाक (थाल) चीनीके छोटे बड़े, दूसरे शाल और देशी सफेद कलई की हुई, ढकनों समेत और खच्चर २ कतार और २ थाल वह अपनी मिहमानीमें नजर करे और जिन अमीरोंको मिहमानी करनेका हुक्म हुआ है, वे इस तरहसे करें कि, खाने, हलवे और फालूदेके १५०० तबक भेजें। ३ घोड़े एक कतार ऊंट और एक खच्चर, जिनको पहले उसने देख लिया हो, भेंट करें। गोरियां, बोसञ्ज, फरशूके हाकिम अपनी अपनी वलायतोंमें मिहमानी करें। बाखर्जका हाकिम जाममें मिहमानी करे खाफ, तरशेज, जावा और महलात-के हाकिम सराय फरहादमें, जो मशहदसे ५ कोस है मिहमानी करें। इति।

बादशाहका ईरानमें जाना ।

जब बादशाह फराहमें पहुंचे, तो शाह ईरानका एलची वकील-के साथ आया। बादशाहने आनेको शाहका गनीमत समझना और और खुश होना मालूम करके बादशाहने ईरानमें जानेके लिये हिरातको कूच किया। रस्तेमें जगह जगह जहां मुकाम होता था, एक बड़ा अमीर खुरासानका पेशवाई करके यारां रहनेवालोंकी वकीलोंसे बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होता था। बादशाहका आना सुनकर जाम, तूर्बत, सरखस, और आसपासके लोग सवारी देखनेके लिये हिरातमें जमा हो गये थे।

जब तातार सुलतान और खुरासानके रईसोंके कासिदोंने, जो पेशवाईमें आये थे, मोहम्मदखांको यह खबर दी कि, बादशाह-का लश्कर जियारतगाहके पास पहुंच गया है, तो मोहम्मदखां वैस सुलतान, शाहकुली सुलतान वगैरा बड़े अमीरों, मीर मुरतिजा सदर और मीर हुसेन करबलाई जैसे बड़े मौलवियों तमाम इज्जत-दार आदमियों और ओहदेदारोंके साथ पेशवाईको आया और पुलेमालानपर, जो हिरातकी मशहूर जगह है, उसने बादशाहकी रकाब चूमकर शाहकी दुआ और सलाम पहुँचायी और उनकी तरफसे मुलाकातका बहुत बहुत शौक जाहिर करके बन्दगीका पूरा पूरा आदाब अदा किया।

यह बन्दोबस्त हो चुका था कि, पुलेमानसे बाग जहांआरातक तमाम रस्तोंको झाड़कर छिड़काव कर रखें और शहरके बड़े बड़े आदमी दोनों तरफसे हर रोज आकर रस्ता देखा करें।

जब बादशाहकी सवारी करीब पहुंची, तो सुलतान मोहम्मद मिरजा (शाहजादा) पेशवाईको निकला और जिस कायदेसे उस-को हुक्म था, वह और बड़े बड़े अमीर बड़े अदबसे आदाब बजा लाये। जियारतगाहसे पुलेमानतक और वहांसे जहांआरा बागतक कि, जिसकी तीन चार कोसकी दूरी है, तमाम जङ्गल और पहाड़ शहर तथा गांवोंके लोगोंसे पटे पड़े थे और ऐसा मालूम होता था कि, कोई ईद या नौरोज है।

एक जीकाद सन् ९५० (माघ सुदी २ ता० २५ जनवरी १५४४) को बादशाह जहांआरा बागमें दाखिल हुए। मोहम्मद-खांने बादशाहोंकीसी सभा सजाकर बड़ी बड़ी भेंटें नजर कीं। पहली ही मजलिसमें साबिरकाक नाम गवैयेने जो खुरासान और ईराकमें एका था, एक गजल इस तौरसे गायी कि, जिसके सुननेसे सब लोग राजी हो गये। उसके पहले शेरका यह मतलब था।

वह बड़ी मुबारक मञ्जिल है कि, जिसके घरके वास्ते ऐसा
चांद हो।

और वह बड़ी अच्छी वलायत है कि, जिस मुल्कका ऐसा
बादशाह हो।

जब उसने इस गजलका दूसरा शेर गाया, जिसका अर्थ यह था कि,—

संसारके सुखदुखसे न तो सुखी हो न दुखी हो, क्योंकि दुनिया-की चाल यही है कि, कभी तो ऐसा होता है और कभी वैसा। तो बादशाहको रोना आ गया और वे बहुत बेचैन हो गये। फिर गवैयेको इनाम दिया।

उनको हिरात और वहांके रमणीक स्थान बहुत मन भा गये थे और "नवरोज" (नये वर्षका दिन) भी पास आ गया था, इस लिये कुछ दिन और वहां रहे। जब सैरके वास्ते सवारी करते थे, मोहम्मदखां साथ रहकर खूब नौकरी देता था और दोनों तरफ़से हजरतके ऊपर रुपये निछावर करता था और रोज एक मशहूर मुकाम दिखानेको ले जाता था। नित नई मजलिस कायदेके मुवाफ़िक सजाता था। बादशाह कभी कारेज़में कभी बाग मुरादमें कभी बाग खयाबानमें कभी बाग ज़ागानमें और कभी बाग सफेदमें जाकर जी बहलाते थे और हर जगह रंगीली और सजीली सभाएं करते थे। औलियाओंकी जियारतोंको भी जाते थे; भले आदमियों इल्मवालों और शायरोंसे भी मिलते थे।

जब हिरातकी सैर हो चुकी और नवरोजका त्यवहार भी निकल गया, तो जामके रस्तेसे ईरानको चले। सीस्तानका हाकिम अहमद सुलतान जो साथ आया था, वहांसे अपनी विलायतको विदा हो गया।

५ जिलहज्ज (फागुन सुदी ६ ता० १६ फरवरी १५४४) को बादशाहने जाममें पहुंचकर अहमद जामकी कबरके दर्शन किये। जब महशदके पास पहुंचे, तो शाहकुली सुलतान, जो उस विला-

यतका हाकिम था, बड़े ही सैयदोंके साथ पेशवाईमें आया और आदाब बजा लाया।

१५ मोहर्रम सन ९५१ (बैसाख बदी १ संवत् १६०१ ता० ८ अपरैल) को बादशाहने मशहदमें पहुंचकर इमामअली रजाकी कबरके दर्शन किये और कुछ दिन वहां रहकर नैशापुरको कूच किया। उस विलायतके हाकिम शमसुद्दीनने अपने हालीमुवालों समेत पेशवाईमें आकर सलाम किया। बादशाह फीरोजकी खान देखनेको गये, जो उस जिलेमें था। वहांसे सबजवार और सबजवार से दामुगानमें पहुंचे, जहांकी अद्भुत चीजोंमेंसे एक पुराना टीला है और पुराने ही समयसे वहां एक तिलस्म (तन्त्र) बन हुआ है कि, जब कोई नापाक (अपवित्र) चीज उसमें पड़ आवे, तो तुरन्त आंधी चलकर अंधेरा हो जावे। बादशाहने उसको भी देखा और इमतिहान भी किया।

फिर दामुगानसे बुस्ताममें गये। बायजीद बुस्तामीकी कबर रस्तेसे दूर थी, तो भी बादशाहने वहां जाकर दर्शन किये। वहां से समनानमें जाकर सूफी आलादमें, शेख अलउद्दीनकी कबर देखी।

इस तरह जहां बादशाह जाते जियारतें करते हुए कूच मुकाम करते थे और जगहके हाकिम और बड़े आदमी पेशवाई करके पूरी पूरी नौकरी और महमानी देते थे। शाहकी तरफसे भी चिट्ठियां और सौगातें पहुंचती रहती थीं।

जब "रै"के पास पहुंचे, तो शाह ईलाक (गर्मियोंमें रहने) के लिये कजवीनसे सुलतानिया और दुरजीनकी तरफ चले गये थे बादशाह कजवीनमें दाखिल हुए, जो उन्हीं दिनोंमें पाया तख्त (राजधानी) बनाया गया था। वहांके हालीमुवाली सब पेशवाईको आये। बादशाह ख्वाजा अबदुलगनीके घरोंमें उतरे

वहां शाह भी पहले रह चुके थे। बादशाहने बैरामखांको (१) शाहके पास भेजा। शाह सुलतानियेमें पहुंचे ही थे कि, बैरामखां पैगाम पहुंचाकर लौट आये। बादशाह सुलतानियेको चले। शाह अबहर और सुलतानियेके बीचमें ठहरे हुए थे। जब बादशाह उस जगह पहुंचे, तो पहले बड़े अमीर पेशवाईमें आकर हाजिर (२)

(१) जब बादशाह "रै"के पास दर्सके किलेमें पहुंचे थे, तो शाह ईरानका खत आया था कि, मैं कजवीनमें आ गया हूं, अपने वकील बैरामखांको मेरे पास भेज दो। बादशाहने उसको १० सवारोंसे भेजा। शाहने उससे सिर मुंड़ाने और टोपी पहननेका हुक्म दिया। उसने कहा कि, मैं एक बादशाहका नौकर हूं, बिना अपने बादशाहके हुक्म कब टोपी पहन सकता हूं। शाह-ने कहा तुझको अखतियार है और अपना दबदबा दिखलाने और बैरामखांको डरानेके लिये कई कैदियोंको बुलाया और सुनी सुनी कहकर मरवा डाला। फिर शाह तो कजवीनसे कूचकर गये और बादशाहको लिख गये कि, अभी तो आप वहीं रहें, फिर मैं बुलाऊं तब आवें। बादशाह ठहर गये। शाहने बूबकबेगको भेजकर बादशाहको लिखा कि, तीन दिन कजवीनमें रहकर मेरे पास आवें। बादशाह तीन दिन कजवीनमें रहकर चौथे दिन शाह ईरानके लशकरको चले, जो सुलतानिये और अबहरके बीचमें था। रातभर चलकर ठहरनेके लिये पानीका मकान ढूंढ़ रहे थे कि, बैरामखांने शाहके पाससे आकर अरज की कि, आप बहुत आगे बढ़ आये। बादशाहने कहा कि, अब तो पीछे नहीं जा सकता हूं।

(२) बादशाह तड़केकी नमाज पढ़कर सोनेको गये थे कि, ईरानके बेलदार, जो रस्ता साफ करनेके लिये आये थे, गाने लगे और बैरामखांने आकर अरज की कि, शाह ईरानके आदमी पेशवाईको आते हैं। बादशाह नहाकर और कपड़े बदलकर दीवान-

हुए, फिर शाहके भाई बहराम मिरजा और साम मिरजा बादशाह-को लेनेको आये।

दोनों बादशाहोंका मिलाप।

जमादिउलसानी सन् ९५१ (भादों सु. आसोज बदी अगस्त सितम्बर) में शाहने पेशवाई करके बड़े अदब और आदरसे मुला-कात की और एक बड़े महलमें, जिसको उस्तादोंने बरसोंतक बड़ी कारीगरीके साथ काम करके तैयार किया था बादशाहको ले जाकर उतारा। उसमें यह पहली ही मजलिस बादशाहकी शामिलातमें हुई थी। दोनों बादशाहोंमें मिजाज पूछनेके पीछे

खानेमें बैठ गये। जब खान, सुलतान, मिरजा, वकील और बड़े बड़े सैयद सब आ गये, तो बादशाह भी सवार हुए। सबने पेशवाई की। शाहका भाई साम मिरजा तीरके टप्पेपर घोड़ेसे उतरा। बादशाह भी उतर पड़े। साम मिरजाके भाई बहराम मिरजाने घोड़ा और खिलअत नजर किया। बादशाहने खिल-अत तो पहन लिया, मगर हैदरी ताज जो जड़ाऊ था और शीआ होनेका बाना था, नहीं पहिना। शाहके सब सिपाही और सर-दार भी वैसे ही ताज लाल रंगके पहने हुए थे और इसीसे वे कज-लबाश (लाल सिरवाले) कहलाते थे खिलअत पहनकर बाद-शाह उस घोड़ेपर सवार हुए, जो बहुत चञ्चल था और इसलिये दिया गया था कि, देखें बादशाह कैसे सवार हैं; मगर वह उन-के सवार होते ही सीधा हो गया और राधा हुआ चलने लगा। ईरानी यह देखकर दङ्ग रह गये और उनको यकीन हो गया कि, इनका भाग खुलनेवाला है। बादशाहके सवार होते ही कोरचो-बाशी (बखशी) ने सलाम किया और सब छोटे बड़े वैसे ही किरमानी घोड़ोंपर सवार हो गये। इस तरह आनेसे उनको यह दिखाना था कि, मानो सब छोटे बड़े हुमायूं बादशाहके बरा-बर हैं।

प्यार और प्रीतिकी खूब बातें हुईं। मिरजा कासिम गुनाबादीने एक मसनवी (कविता) शाहके हालकी लिखी है उसमें दोनों बादशाहोंके मिलाप वर्णन इस तौरसे किया है,—

"दो बड़े बादशाह एक मजलिसमें चांद और सूरजकी समान मिलकर बैठे, दोनों इकबाल (ऐश्वर्य) की आंखोंके दो तारे थे। वर्ष और महीनेके लिये दो बड़े व्यवहार थे। दो अब्र कि, जिनसे आसमानकी रौनक (शोभा) थी, एक ही स्थानमें मिथुनकी समान मिले हुए थे। दुनियाकी दो आंखें बराबर थीं और दोनों आपसमें दो भाइयोंकी भांति एक दूसरेकी तवाजे (आवभगत) कर रहे थे। आकाशके दो शुभ ग्रह एक राशिमें और दो उजले मोती एक डिब्बेमें शोभा दे रहे थे।"

शाहने कहा कि, हजरत बाबरको हिन्दुस्थान आपकी ही तलवारसे फतह हुआ था और खराबी, जो इन दिनोंमें पड़ी, वह भाइयोंकी फूटसे थी। आपका उसमें कुछ बस नहीं था और दुनियामें भाइयोंका मेल भी बड़ी चीज है, क्योंकि उससे बहुत काम निकलते हैं, सो अब आप मुझको छोटा भाई जानकर अपना मददगार समझें। जो कुछ मदद दरकार होगी, मैं अपने ऊपर अहसान समझकर उसका बन्दोबस्त करूंगा और जो अगली मिलता है उसको निबाहूंगा और जो खुद मुझे जाना पड़ेगा, तो मददके लिये जाऊंगा। (१)

(१) मुनशी अबुलफजलने अपनी तारीखमें लिखा है कि, अबुलफजलने अकबरनामेमें पेशवाईकी धूमधाम बादशाहकी इज्जत और मान मनोहारकी बातें तो बढ़ा चढ़ाकर लिखी हैं और वे नहीं लिखीं, जो मतहबसे उनको चिढ़ाने और सतानेके लिये की जाती थीं। जौहरने उनको भी वाकेआत हुमायूंनीमें लिख दिया है जिसमेंसे हम कुछ तो ऊपर लिख आये हैं और कुछ नीचे भी लिखते हैं,—

शाहने और भी ऐसी ही बहुतसी बड़ी बड़ी बातें कहीं, जो बड़े आदमियोंके कहनेकी होती हैं और कई दिनतक खूब जलसे खुशीके किये। हर रोज सब कामोंको आप देखकर नयी नयी मजलिसें सजाते थे; अपनी दोस्ती और सचाईको दिन दिन बढ़ाते जाते थे। जब ऐसा बड़ा बादशाह आप आगे होकर बन्दोबस्त करे, तो फिर उन मजलिसोंका कहना ही क्या है, जिनमें कैसी कैसी जरी और मखमलके शामियाने ताने जाते थे और कितने बहुत बूटेदार डेरे खड़े होते थे और कैसे कैसे रेशमी कम्बल और कीमती कालीन बिछाये जाते थे।

"शाहने मिजाज पूछनेके पीछे अपना तआस्सुब (मतद्वेष) जताकर बादशाहसे कहा कि, ताज पहनिये। बादशाहने कहा हां, ताज पहनना तो इज्जतकी निशानी है। तब बादशाहने अपने हाथसे उनके माथेपर ताज रख दिया। यह देखकर सारे खान और सुलतान अल्लाह अल्लाह पुकारते हुए सिजदेमें गिर गये और तुरमनियोंने तुरम बजाया। बादशाहने शाहजादोंसे बैठ जानेको कहा, लेकिन शाहने कह दिया कि, हमारे यहां ऐसा कायदा नहीं है। फिर दोनों बादशाहोंने खाना खाया। खानेके पीछे भी तुरम बजाये और शुक्रके सिजदे किये गये। इसका मतलब तो यह था कि, हुमायूं जैसे बादशाहको खुदाने हमारा मोहताज (आश्रित) किया, परन्तु देखनेवालोंने यह किया कि, हिन्दुस्थानका सुन्नी बादशाह शीआ हो गया। फिर जब बादशाह शाहके पाससे बिदा हुए तो शाहने कहा कि, बादशाह, बैरामखां और कादरखांके डेरोंके बीचमें रहें। फिर शाहने हम्माममें जाकर सिर मुंड़ाया और ईरानियोंकी पूरी रीति बरती। बहराम मिरजा उखलिअत लाया था, बादशाहने एक पहिना और रातभर मजलिसमें बैठे रहे।"

इसी तरहसे शाहतुहफोंको भी, जो बादशाहको दिये जाते थे, खुद ही ध्यान रखकर तैयार कराते थे। चुने हुए इराकी घोड़े सुनहरी और जड़ाऊ जीनोंके, जिनकी बागें और जीनपोश भी वैसे ही बढ़िया और बरदेमें बने हुए असतरोंसे सजे हुए होते थे। खूबसूरत ऊंट और ऊंटनियां अच्छी अच्छी भूलों समेत, कई तलवारें और खञ्जर जवाहरातसे जड़े हुए, नकद तसवीरें (सिक्के) कैशजलगावे, सञ्जाब, और तीनकी पोस्तीनें, पहननेके कपड़े, जरी मखमल, ताजा, भतलस फरङ्गी, यजदी, और काशीके सुश्-व्वार कई थाली, लोटे, शमेदान, चांदी सोनेके मोतियों और याकू-तोंसे जड़े हुए, सजे हुए डेरे तंबू और बढ़िया बड़े बड़े बिछौने, अनोखे और उमदा थे और भी सब असबाब सामान बादशाहोंकेसे शाहने एक एक करके बादशाहकी नजरसे गुजराये और सारे नौकरोंको भी, जो साथ थे अलग अलग बहुतसा नकद रुपया और माल दिया।

बादशाहने पहली मजलिसमें एक बड़ा भारी हीरा, जो कई वलायतोंकी आमदनीके बराबर था और २५० बदखशांके लाल शाहको सौगातमें दिये। शाहको अमलदारीमें आनेसे जानेतक शाहके खजाने और उनकी अमीरोंकी सरकारोंसे, जितना कुछ किसी नाम और दस्तूरसे खर्च हुआ था, उसका बदला इधरसे भी ज्यादा बल्कि दूना हो गया।

"बादशाहने सिर भी मुंड़ाया और हैदरी ताज भी पहना, जो सफवी बादशाह अपने चेलोंको पहनाते थे। मगर मुंहसे शोआ ऐसा नहीं कहा, जिससे शाह नाराज हो गये और दूसरे दिन सुलतानियेको जाते हुए जब बादशाहके डेरेके नीचेसे निकले और बादशाह सलाम करनेको दरवाजेपर गये, तो शाहने कुछ ख्याल न किया। ', बादशाह उदास होकर लौट आये।"

फिर वहांसे कूच होकर सुलतानियेमें आये। यहां भी वैसी ही बादशाहोंकीसी मजलिसें होती रहीं। इन्हीं दिनोंमें कई फसादी लोगोंके बहकानेसे दोनों तरफ दिलोंमें कुछ रञ्ज पड़ गया था, पर बढ़ने नहीं पाया और जल्दीसे सफाई हो गयी। (१) फिर वैसी ही मजलिसें होने लगीं और दोनों बादशाह बड़ी खुशीसे

(१) यह बिगाड़ मतभेदसे हुआ था, क्योंकि, बादशाह और उनके साथी तो सब सुन्नी मुसलमान थे; शाह ईरान और ईरानी लोग शीआ थे। इन दोनों मतवालोंमें ठेठसे विरोध चला आता है। दोनों एक दूसरेको बुरा कहते हैं और अपनी अपनी तरफ खींचते हैं। शाह इन शरणागत सुन्नियोंको जोर और धमकीसे शीया बनाया चाहते थे और इसीलिये बादशाहको दबाते और धमकाते रहते थे। जौहरने लिखा है कि, एक दिन शाहने बादशाहके बबरचीखानेमें ईंधन भेजकर कहलाया कि, जो तुम शीआ हो जाओगे तो तुम्हारी मदद करूंगा, नहीं तो इस ईंधनमें बैठाकर जला दूंगा। बादशाहने कहा कि, हम बादशाहीके वास्ते अपना धर्म नहीं खोयेंगे। यहां तो हम हजको जानेके इरादेसे आये थे, सो अब हमें जानेकी परवानगी दे दो। शाहने कहा कि, मैं तो उसमानिया सुन्नियों (रूमके तुर्कों) को शीया बनानेके लिये चढ़ाई करनेवाला हूं, तुमको शीआ होनेमें नहीं रुकना चाहिये। तुम आप ही मेरे राजमें आये हो। यह ताना कि, बादशाह थे, लेकिन बादशाह होनेका धर्म नहीं निभाया, जिससे इस विपतमें फंसे। क्या अब भी अपने झूठे मतको मानते ही रहोगे। बादशाह इन बातोंसे बड़ी दुबधा और जानजोखममें पड़ गये। एक दिन इसी सोचमें बैठे हुए थे कि, शाहका दीवान जो बड़ा काजी भी था, बादशाहके पास आया और कहने लगा कि, सबसे अच्छी बात तो यह है कि, हुजूर शाहका कहना मान लें नहीं तो आपका और आपके साथके इन ७०० गरीब सुन्नियोंका बहुत बुरा हाल

रहने लगीं। शाहने बादशाहका दिल खुश करनेके लिये कमरगे (हाकेके) शिकारकी तैयारी। शाही लशकर जङ्गली जानवरोंको १० दिनके रस्तेसे घेरकर साहकबुलाक चश्मेपर लाया। शाह और बादशाहने वहाँ जाकर घोड़े दौड़ाये और शिकार खेला।

होगा। बादशाहने कहा, शाह क्या चाहते हैं, उनसे लिखा लाओ। वह गया और तीन कागज लिखा लाया। बादशाहने दो कागज पढ़कर रख दिये और डेरेके दरवाजेपर जाकर अपने आदमियोंको पुकारना चाहा। काजोने कहा कि, हजूर चुप रहें और मौकेको देखकर काम करें, क्योंकि अब और कोई इलाज नहीं है। तीसरा कागज शाहने आप आकर बादशाहको दिया, बादशाहने शाहके सामने पढ़ा और दस्तखत करके उनको दे दिया। इन कागजोंमें क्या लिखा था यह नहीं मालूम हुआ। शीआ मजहबकी बातें लिखी होंगी। फिर दोनों बादशाहोंमें दो मर्तबे-तक मुलाकात और कुछ लिखापढ़ी नहीं हुई और चुगलखोरोंने दोनोंके मन मैले कर दिये।

बादशाहका धा भाई रोशनकोका ख्वाजगाजी और सुलतान मोहम्मद बख्शीत, जो बादशाहको छोड़कर मिरजा कामरांके नौकर हो गये थे और इन्हीं दिनोंमें हज करके वहाँ आये, शाहसे कहते थे कि, जो हुमायूं बादशाही करने जानते, तो उनके भाई ही क्या उनसे अलग हो जाते। आप इनको पकड़कर कैद करें और फौज हमको दें, सो हम कंधारतक आपको मुल्क फतह कर दें।"

दूसरे, कजलबाश और तुर्कमान यह कह कहकर शाहको भड़काते थे कि, हुमायूँ उसी बाबरका बेटा है, जो १७ हजार कजलबाशोंको आपके बापसे अपनी मददपर ले गया था और लड़ाईके वक्त उनको उजबकोंसे कतल कराकर भाग गया था। कहीं यह भी ऐसा ही न करे।

फिर बहराम मिरजा और साम मिरजाको उनके पीछे बैरामखां, हाजी मोहम्मदकूकी, शाहकुली सुलतान, मोहरदार, रोशनकोका, हुसनकोका वगैरा बादशाहके बड़े बड़े नोकरोंको उस शिकारमें जानेकी इजाजत हुई। शाहके अमीरोंमेंसे अबदुल्लाहखां इस्तजलू शाहका जमाई अबुल कासिम सुलतान, सेवन्दक सुलतान, कोरचीबाशी अफशार, बदरखां, इस्तजलू और कई दूसरे अमीर हुक्मसे वहां गये, फिर आम हुक्म हो गया सो सिपाहियों और लशकरियोंने जाकर शिकारें मारीं।

तीसरे बादशाहके दुशमनोंने शाहसे यह भी कहा था कि, "यह जब बहादुर गुजरातीसे जंग करने आया था, तो दो प्रकार २३ खुदाई तीर बनाकर १२ पर तो अपना और ११पर शाह तुहमास्प का नाम खुदवाया था और तख्तपर बैठकर आम दरबारमें कहा था कि, मेरा राज्य शाहतुहमास्पसे बड़ा है।" शाहने बादशाहसे पूछा, तो बादशाहने कहा, हां मेरी सलतनत उस वक्त ईरानसे दूनी थी। शाहने खफा होकर कहा कि, तुम अपनी वह सलतनत न संभाल सके, जो उजड़ पठानोंने छीन ली। तुम्हारी औरत और बच्चे भी दुशमन पकड़ ले गये। बादशाहने कहा खुदाका हुक्म सबके ऊपर है, उससे डरना चाहिये।

चौथे पहली मुलाकातमें जब शाहने जब बादशाहसे पूछा था कि, हिन्दुस्थानकी बादशाही जो आप और आपके बापने तलवारसे फतह की थी, कैसे जाती रही, तो बादशाहने कहा था कि, भाइयोंकी अनबनसे। फिर खाना आया और शाहके भाई बहराम मिरजा लोटा और चिलमची लेकर हाथ धुलानेको खड़ा हुआ, तो शाहने इशारा करके कहा था कि, भाइयोंको यों रखना चाहिये। बादशाहने कहा हां, इस हांमें हां मिलानेसे बहराम मिरजा भी बादशाहका दुशमन हो गया था और उनको ईरानसे निकाल देना क्या जानसे ही मारना चाहता था और शाहसे कहा करता था

बहराम मिरजाने अदावतसे शिकारमें ख्वाजकाको तीर मारा, जिससे वह मर गया मगर मिरजाकी खातिरसे किसीने यह बात शाहको नहीं कही। फौजने जाकर फिर हौज सुलेमानपर शिकार जमा किया। वहां भी दोनों बादशाहोंने शिकार खेला, चौगान-बाजी और कबकअन्दाजी (पोलो खेलने और निशाना उड़ाने) में भी कुछ वक्त लगाया। इसी दिन निशानाबाजीमें बैरामबेगको खान, और हाजी मोहम्मदकूकीको सुलतानका खिताब मिला।

कि, तैमूरके घरानेवालोंको हिन्दुस्थानका बादशाह बनाना समझका काम नहीं है। क्योंकि, हिन्दुस्थान ईरानके पास ही है, और यही बात शाहके अमीर भी कहते रहते थे। परन्तु बादशाहको इन सबकी फेंटोंसे बचानेवाली एक शाहकी बहन सुलतानम खानम थी, जो हमामसहदीको चढ़ाई हुई थी और शाह अपने राज-का काम उसकी सलाहसे करते थे। काजीजहां कजवीनी नाजिर दीवान और हकीम नूरुद्दीन इस बेगमके भेदू थे और दोनों बाद-शाहोंमें सफाई कराना चाहते थे। बादशाहको भी कई बेर गुस्सा भा आ गया था, परन्तु बैरामखांने उनको समझाकर ठण्ढा किया, जिससे बादशाह फिर नरम पड़ गये।

निदान एक दिन सुलतानाखानमने अपने भाईको बादशाहकी बनायी हुई एक रुबाई (चौपाई) सुनायी, जिसका यह अर्थ था कि, हम जी जानसे अलीकी औलादके गुलाम हैं। हमेशा अली-की यादमें मगन हैं। जब हमको अलीके महातमका भेद मिल गया, तो हमने नाद अलीका पाठ करना नित्य नियम बना लिया। फिर बादशाहने एक और रुबाई लिखकर भेजी, जिसका यह मत-लब था कि, सब बादशाह हुमाकी छाया चाहते हैं और तू देखा कि, हुमा तेरी छायामें आ गया। ऐसे ही एक और भी रुबाई कहकर भेजी जिसका यह सारांश है कि, तेरी महरबानी भी हमारा वैसा ही उपकार करेगी, जैसा कि, अलीने जीजनके जङ्गलमें

११ अदहम मिरजा, देव मिरजाका बेटा।
१२ तुहमतन मिरजा, देव सुलतानका बेटा।
१३ हैदर सुलतान शैबानी।
१४ अली कुली } हैदर सुलतानके बेटे।
१५ बहादुर।
१६ मकसूद मिरजा, सुलतान आखतावेगी, जैनुद्दीन सुलतान शामलूका बेटा।
१७ मोहम्मदी मिरजा, मिरजा अहांशाह (शाह वरदीबेग काचल) इस्ताजलूका पोता।
१८ अली सुलतान जलाक, मोहम्मदखांका भानजा।
१९ अबुलफतह सुलतान, अफशार।
२० हसन सुलतान शामलू।
२१ यादगार सुलतान मूसलू।
२२ अहमद सुलतान अशाग चोगली इस्ताजलू।
२३ साफीयली सुलतान, खुफियां खलीफा रूमलूका बेटा।
२४ अलीबेग जुल्फिकार काश।
२५ मोहम्मदीबेगका चार किताबदार।
३०० खासा कोरची भी अच्छे सामानोंसे तईनात हुए थे।
इस बड़ी मजलिसके खतम होनेके पीछे (१) तीसरा "कमरगा"

(१) जब ये फौजें और कारखाने बादशाहकी नजरसे निकल चुके, तो शाह तुहमास्पने दोनों हाथ छातीपर रखकर कहा कि, हुमायूं बादशाह! मुझसे कोई कसूर हुआ हो, तो माफ करो। रातको खुशीका जलसा हुआ, तरह तरहकी शराबें रखी गईं, कोई पिलानेवाला नहीं था, जिसने जितनी चाही अपने हाथसे उंडेलकर पी।

फिर दोनों बादशाहोंके डेरे उखड़ गये। बादशाह जब शाहसे बिदा होने गये, तो शाह छोटेसे बिछौनेपर बैठे थे। दूसरे

शाह जियारतमें जो आखरी मञ्जिल ऐलाक सुरलीक को है, हुआ दोनों बादशाहोंको बड़ी खुशी हुई। ऐलामेकी मञ्जिलमें जहांकी हलकी (मन्द) हवा दुनियामें मशहूर है, शाह बादशाहके डेरेपर आये और अच्छे मजलसमें दोनों बादशाह बड़े अदब और आदाबके साथ एक दूसरेसे बिदा हुए।

बादशाहका कूच।

बादशाह आप तो अमीर तैमूरके दस्तूरके मवाफिक अर्दबेल और तबरेजको रवाने हुए और मरयम मकानीको लावलशकर समेत सीधे रस्तेसे कन्धारको भेजा। १२ हजार सवार, जो साथ जानेके लिये मुकर्रर हुए थे रुखसत लेकर सफरका सामान करनेके लिये गये और यह बात ठहरी कि, जब बादशाह हीरमन्द नदीपर पहुंचें, तो शाहजादा अपने लशकरसे वहां आ मिले।

बादशाह पहले तबरेज देखनेको गये। जब वहां पहुंचे, तो हाकिम और बड़े लोग सब मिरजा मीरां (१) शाहके बन्देतक, जो आदमीके बैठनेको जगह नहीं थी, बादशाह जमीनपर बैठने लगे। हाजी मोहम्मदकशकाने नमकहलालीसे अपने तरकशकी सुनहरी खोली फाड़कर बिछा दी, बादशाह उसपर बैठ गये। शाहने यह नमकहलाली देखकर हाजीसे पूछा, तू कौन है? उसने अरज की कि, मुगल हूं। शाहने कहा, तू मेरी नौकरी करेगा, वह बोला कि, मैं तो क्या हूं, मेरे मालिक ही आपकी खिदमतमें हाजिर हैं। हां, जब उनका बोलबाला हो जायगा, तो मैं उनकी जगह हाजिर हो जाऊंगा।

शाहने कहा कि, बादशाह उनको खाना दें और हिन्दुस्थानी खाने खिलावे। बादशाहने शाहको मिजमानी दी। हिन्दुस्थानी खाने तैयार कराये, उनमें खिचड़ी सबसे बढ़कर शाहको पसन्द आयी।

(१) मीरां शाह अमीर तैमूरका तीसरा बेटा था और औ॰

कदीपर बांधा गया था, पेशवाईको आये। शहरके हाकिमने शाह-के हुक्मसे शहर सजाकर बादशाहको दिखाया और खूब मह-मानी की। भेड़ियोंकी दौड़ और पैदल पोको खेल भी, जो तब-रेजका मशहूर तमाशा था और उन दिनोंमें दङ्गोंके खयालसे बन्द हो गया था, बादशाहको खुश करनेके लिये कराया गया।

बादशाहने उस शहरकी बड़ी इमारतें, जो पिछले बादशाहों-की बनायी हुई थीं, देखीं और नये सिरेसे दुनियाकी जल्दीसे मिट जानेवाली बातोंसे उदास होकर खुदाको याद किया और कहा,—

अफसोस पूँजी हाथसे निकल गयी।
मौतके हाथसे बहुतसे कलेजोंका खून हो गया।
उस लोकसे कोई नहीं आया जिससे पूछूँ।
कि दुनियाके मुसाफिरोंका क्या हाल हुआ।

मुल्ला कुतुबुद्दीन जलंजू बुगदादी यहांसे साथ होकर मशहदतक खिदमतमें रहा और अच्छे हर्फ लिखनेवाला ख्वाज अबुल समद शीरीं (१) कलाम भी यहां बादशाहसे मिला। बादशाहने उसको बहुत पसन्द किया, मगर वह साथ नहीं चल सका।

यहां अजब बात यह हुई कि, बादशाहको, जो ज्योतिष विद्या और ग्रहोंके वेधनेका बहुत शौक था, उसतरलाब (यन्त्रराज) और कुर्रे (भूगोल खगोल) की तलाश रहा करती थी, इसलिये उन्होंने पैक मोहम्मद काखतावेगीसे फरमाया कि, यह शहर पुरानी चीजोंका खजाना है। कोई कुर्रा तलाश करना। वह बेवकूफ

हुमायूं बादशाहके दादाका परदादा था। वह सन् ७६९ (संवत् १४२५) में जन्मा था और २७ जीकाद सन् ८१० (संवत् १४६४ ई० सन् १४०७) को करायूसुफ तुर्कमानकी लड़ाईमें तबरेजके पास ही काम आया था।

(१) यह उसका खिताब था।

कई बकेरोंको घोड़ियों समेत ले आया (क्योंकि कुर्द बकेरेको भी कहते हैं) बादशाहने खुश होकर शकुनके लिये उन्होंको खरीद लिया।

जब तबरेजकी सैर हो चुकी, तो अर्दबेल (१)को रवाने हुए। जब कसबे शम्मामीमें सवारी पहुंची, तो शाहके रिश्तेदारों और सब बड़े बड़े आदमियोंने पेशवाई करके मेहमानी दी। बादशाह अर्दबेलमें एक हफते (२) तक रहकर वहांसे खलखालमें और खलखालसे तारममें गये और वहांसे खर्जबीलमें पहुँचे। यहांकी हवा बहुत अच्छी थी और मेवे भी खूब थे। खास करके बिना गुठलीके

---

(१) अर्दबेलमें ईरानके सफवी बादशाहोंके मूल पुरुष शेख सफी-की कबर है, जो अमीर तैमूरके समयमें था और अमीरने उसके कहनेसे रूमके कैदियोंको छोड़ दिया था, जो लाल टोपियां पहन कर शेखके चेले हो गये थे और कजलबाश कहलाने लगे थे। शेख-के पोते शाह इसमाइल सफवीने उन्हींकी औलादकी मददसे ईरान-का मुल्क तुर्कमानों और अमीर तैमूरके पोतोंके बागी अमीरोंसे सन् ९०८ (संवत् १५६० सन् ई० १५०३) में फतह किया था। शाह तुहमास्प, जिसके पास हुमायूं बादशाह गये थे, शाह इस-माइलका बेटा था और सन् ९३० (सं० १५८१ सन् १५२४) में बापके पीछे बादशाह हुआ था। शेख सफी-शीआ था। उससे और उसकी औलादसे सुन्नियोंको बहुत नुकसान पहुंचा था, इससे और मतभेदसे भी सुन्नी लोग उसकी कबरकी जियारतको नहीं जाते थे।

(२) यहां शाह भी अपनी राजधानीको जाते हुए आ गये और बादशाहके लशकरको देखकर हैरान हुए कि, वह अबतक नहीं गया है और बादशाहको लिखा कि, फौरन १२ फरसङ्ग (४५ मील) चले जावें।

अनार। इस लिये तीन दिन ठहरे रहे, फिर सब्जवारमें अपने लश्करसे जा मिले। यहां मरयम मकानी बेगमके लड़की हुई थी।

ईरान जानेसे लौटनेतक जिस जगह बादशाहकी सवारी जाती थी, वहांके हाकिम और रईस ज्यादासे ज्यादा अदब करके नजर देते थे और मह्मानियां करते थे।

सब्जवारमें मीर शमसुद्दीनने खूब खिदमत की। मह्मानीके दिन बन्द्बाज (बाजीगर) आये और अपने करतब दिखा गये।

बादशाह जब फिर मशहिदमें आये, तो वहांके हाकिमों और रईसोंने पहलेसे ज्यादा अदब और आदर बरता और खिदमत भी बहुत अच्छी की।

बादशाहको शाही लश्करके इन्तजारमें यहां ठहरना पड़ा, मशहदके आलिम (पण्डित) और शाइर (कवि) बादशाहके पास आया करते थे। मशहिदसे कारवां सराय तुरकमें और वहांसे किसलेगाह होकर सीस्तानमें पहुँचे। यहां शाहजादा और ईरानी अमीर भी बादशाही लश्करसे आ (१) मिले। यहांसे गर्मसेरमें डेरे हुए। मीर अब्दुलहई गलेमें तरकश डालकर किसी कुकीसे हाजिर आया अपने पिछले कसूरोंकी माफी मांगने लगा। बादशाहने माफी देकर उसपर बड़ी मह्रबानी की। इस सफरमें जो लोग बादशाहके साथ थे, उनके नाम ये हैं,—

बड़े बड़े अमीर।

१ बैरामखां।
२ ख्वाज मोअज्जम, मरयम मकानीका भाई।
३ आकिल सुलतान उजबक, आदिलसुलतानका बेटा।

---

(१) शाहने जब बादशाहको बिदा किया था, तो कहा था कि आपको मेरा लश्कर सीस्तानमें तैयार मिलेगा, सो ऐसा ही हुआ बल्कि १२ हजारकी जगह १४ हजार सवार मौजूद मिले।

४ हाजी मोहम्मद कूकी, बाबर बादशाहका गुलाम था इसने निशाना उड़ाकर शाह ईरानसे इनाम लिया। शाहने कई बार कहा था कि, बादशाहीको इस तौरकी खिदमतगार चाहिये।

५ रोशनकोका।

६ हसनबेग मरहूमकोकाका भाई।

७ ख्वाजा मकसूद हिरवी. (हिराती।)

८ सैफखां।

९ जैनखां, कोका।

१० ख्वाजा गाजी तबरेजी, बड़ा हिसाबी और तवारीख जाननेवाला था।

११ ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद, हिरवी बड़ा मुनशी और हिसाबी था।

१२ बाबा दोस्त बख्शी।

१३ दरवेश मकसूद बङ्गाली।

१४ हसनअली, एशक आका।

१५ अलीदोस्त, बारबेगी।

१६ इब्राहीम एशक आका।

१७ यूसुफ चूली।

१८ शेख, बहलोल।

१९ मौलाना नूरुद्दीन बड़ा ज्योतिषी था।

२० मोहम्मद कासिम मौजी।

२१ हैदर मोहम्मद आखताबेगी।

२२ सैयद मोहम्मद पकाना।

२३ हाफिज सुलतान अली मोहम्मद रखना।

२४ मिरजाबेग बलूच।

२५ मीरहुसैन।

२६ ख्वाज अम्बर नाजिर।

२७ मरयम मकानीके डीलेका परदेदार।

२८ आरिफ तोशकची।

२९ महलदरखां, खजानची।

३० मह्तर फाखिर तोशकची।

३१ मुल्ला बलाल, किताबदार।

३२ मह्तर तैमूर शरबतची (पानी पिलानेवाला।)

३३ मह्तर जोहर, आफताबची (झारी बरदार।)

३४ मह्तर वकील खजानची।

३५ मह्तर वासिल, मीर आतिश (तोपची)

३६ मह्तर संबुल (तोपची)

३७ सुलतान मोहम्मद करावल बेगी।

३८ अबदुल वह्हाब, साहिबे तबाक (बवरची)

३९ जवाई बहादुर।

४० तोलक या तमगनवीस।

बादशाहका काबुल कन्धार लेनेको ईरानसे लौटना।

मिरजा कामरांने जब बादशाहका आना सुना, तो घबरा कर खिजरखां हजारेके भाई और कुरबान किरावल बेगीको काबुलमें शाहजादे अकबरको ले आनेको भेजा। मिरजा असकरीने, जो अपने सलाहकारोंसे सलाह पूछी, तो कुछ लोगोंने, जो अकलमन्द थे, यह कहा कि, वहां भेजना तो मुनासब नहीं है। मगर बादशाह आ रहे हैं, उनके पास भेजकर अपनी सफाई कर लेना चाहिये। बाकियोंने कहा कि, मिरजा कामरांके पास ही भेजना और उसीको रखना ठीक है, क्योंकि तुमसे ऐसे काम नहीं हुए हैं कि, जो अब बादशाहसे सफाई कर सको।

आखिर मिरजा असकरीने शाहजादेको ऐन जाड़ेमें, जब कि मेह और बरफ गिर रहा था, काबुलको रवाने कर दिया। शाहजादेकी बहन बखशी बेगम, शमशुद्दीन मोहम्मद गजनवी, (अत्काखां) माहमअङ्गा (अदहम खांकी मां) जीजीअङ्गा (मिरजा

अजीज कोकलताशकी मां) और कई एक खिदमतगार साथ थे। रस्तेमें कोई पहचाने नहीं; इस मसलिहतसे शाहजादेको मीरजा और शाहजादीको बीबा कहते थे। जब कालामें पहुंचे और एक हजारेके घरमें उतरे, तो सब लोगोंने देखते ही शाहजादेको पहचान लिया और सबेरे ही उस घरवालेके मुंहसे भी निकल गया कि, शाहजादे भी यहां उतरे थे।

जब काबुलमें पहुँचे, तो मिरजा कामरांने उस दिन तो शाह-जादेको अपनी फूफी खानजादा सुलतानके घरमें उतारा और दूसरे दिन बड़ा दरबार करके अपने पास बुलाया और शाहजादेकी चेष्टा देखते ही दिलमें डरा। उसने अपने बेटे इब्राहीम मिरजाके लिये एक नकशी नक्कारा शबेबरातका त्योहार आ जानेसे बनवाया था। शाहजादेने उसे लेना चाहा, तो मिरजाने टालनेके लिये कहा कि, तुम और इब्राहीम कुश्ती लड़ो, जो जीतेगा, यह नक्कारा पावेगा। इब्राहीमकी उमर बड़ी थी और उसमें ताकत भी ज्यादा समझी जाती थी, मगर शाहजादा तो खम ठोंककर खड़ा हो गया और कुश्तीमें इब्राहीमको गिराकर नक्कारा जीत लिया। सारा दरबार देखता रह गया।

मिरजाने दिलमें बुरा मानकर, शाहजादेके दूध छुड़ानेका वक्त नहीं था तोभी छुड़ा दिया।

बादशाहकी चढ़ाई और किले बस्तकी फतह।

बादशाहने गर्मसेरमें पहुंचकर अली सुलतान तकलूको बस्तका किला फतह करनेको भेजा, जो वलायत गर्मसेरमें दाखिल और कन्धारके नीचे था। आदमअली जलायर और मीर खलज, जो मिरजा कामरांकी तरफसे उस जिलेके जागीरदार थे, किला सजा-कर लड़ने लगे। अली सुलतान गोलीसे मारा गया, उसके आद-मियोंने उसके १२ वर्षके लड़केको उसकी जगह बैठाकर पहलेसे ज्यादा किला लेनेमें कोशिश की और शाह ईरानको भी यह हाल लिख भेजा।

किलेवालोंको काबुलसे मदद नहीं पहुंची, इसलिये उन्होंने लाचार होकर किला सौंप दिया। बादशाह वहां गये। शाहमअली और मीर खलज गलेमें तलवार डालकर सलाम करनेको आये। बादशाह कसूर माफ करके नौकर रख लिया।

अब यह खबर उड़ी कि, मिरजा असकरी अपना खजाना लेकर काबुल जाना चाहता है। बादशाहको सच्ची खबर सानियालोंसे मालूम हो गया था कि, यह झूठी है, मिरजा किला मजबूत करके लड़ेगा, तो भी कई चगत्ताई और बहुतसे कजलबाश (ईरानी) लूटके लालचसे जिद्द करके कन्धारको चले गये।

जब वहां पहुंचे, तो मालूम हुआ कि, मिरजाके काबुल जानेकी खबर गलत थी और किलेवालोंने धावा करके बहुतसे कजलबाशों और कुछ चगत्ताइयोंको मार डाला, बाकी भागकर वापस आये। मगर ख्वाजामोअज्जम हैदर सुलतान और बाबा कशका वगैराने लड़कर कन्धारियोंको किलेमें भगा दिया। बाबा शहरदी, जो मिरजा कामरांका नामी इक्का (सिपाही) था, मारा गया।

कन्धारको घेरना और फतह करना।

बादशाह फतहको खबर पाकर ५ दिन पीछे ७ मोहर्रम सन् ९५२ (चैत सुदी ८ सं १६०२ ता० २० मार्च १५४५) शनिवारको शुभ महूर्त्तमें कूच करके कन्धारके पास पहुंचे और कन्धारके काजी शमशुद्दीनके बागमें ठहरकर मोरचे लगाये। दोनों तरफसे लड़ाई होने लगी। एक दिन हैदर सुलतान, उसके दोनों बेटे, अलीकुलीखां बहादुरखां और ख्वाजा मोअज्जम गनीमको हटाकर कबरस्तान तक ले गये। वहां बाबा दोस्त, यसावल खड़ा हुआ तीर मार रहा था। हैदर सुलताननें, जो सबके आगे था, बरछा उठाकर चाहा कि, उसको ठिकाने लगा दे। मगर हाथ उठाते ही बगलमें तीर लगा। इसमाईल सुलतान, जो मिरजा कामरांकी तरफसे मिरजा असकरीको मददको आया था, वह और मिरजा दोनों किलेकी एक बुर्जके ऊपरसे लड़ाईका समा

देख रहे थे और बीचमें इतनी दूरी थी कि, आदमीका मुंह अच्छी तरहसे नहीं पहचाना जाता था ; मगर ज्योंही हैदर सुलतानके हाथसे बरछा गिरा, इसमाईल सुलतानने मिरजा असकरीसे कहा कि, यह आदमी जिसके हाथसे बरछा गिरा है हैदर सुलतान हो। क्योंकि पहले जब मैं अब्दुल्लाहखांके साथ शहर तूलमें गया था, तब मैं और हैदर सुलतान साथ साथ दौड़े थे और ये २ उंगलियां वहीं गिरी हैं, दौड़नेके ढंगसे मैं कयास करता हूं कि, वही होगा। कुछ देर पीछे जब उस बरछेको लाये, तो उसपर हैदर सुलतानका नाम खुदा हुआ था। सबने इसमाइलकी इस अटकलकी तारीफ की और यह बात मशहूर हो गयी।

इस लड़ाईमें अकसर आदमी जखमी हुए, सबसे ज्यादा खवाजा मोअज्जमके जखम लगे थे।

इसी अरसेमें खबर आयी कि, मिरजा कामरांका कोका "रफीअ" जमीनदावरकी तरफ पहाड़के पीछे, जो अरगन्दाब नदीके ऊपर है, हजारा और तकदरी जातिके लोगोंके साथ जमा हुआ बैठा है। बादशाहने बैरामखां, मोहम्मदी मिरजा, हैदर सुलतान, अलेनुद्दीन शामलूके बेटे मकसूद मिरजा आखतावेगीको उधर भेजा। थोड़ीसी लड़ाई होकर रफीअकोका पकड़ा गया और बहुतसी लूट भी हाथ आयी।

बादशाह यह सोचकर कि, लड़ाइयोंमें ज्यादा नुकसान भाइयोंका न हो और सबके एक हो जानेसे बड़े बड़े काम निकलनेका फायदा हो, बैरामखांको काबुलमें मिरजा कामरांके पास भेजा। अपना और शाह ईरानका फरमान भी, जो मिरजाके समझानेको लिखा गया था, उसको दिया। बैरामखां दोनों फरमानोंको लेकर रवाने हुआ। जब रोगनी घाटीमें पहुंचा, जो कन्धार और गजनीजके बीचमें है, तो हजारा जातिके लोगोंने रस्ता रोक लिया। पिछले दिनसे लड़ाई हुई, बैरामखां उनको हराकर काबुल पहुंचा।

थागुस और बहुतसे आदमी पेशवाईमें आकर उसको शहरमें ले गये।

मिरजा कामरांने चारबागमें दरबार करके बैरामखांको बुलाया। बैरामखांने अकलमन्दीसे सोचा कि, मिरजा बैठा हो अब तो यह दोनों फरमान उसको देना ठीक नहीं है और खड़ा होकर ले, ऐसी उससे उम्मेद नहीं। यह सोचकर वह कुरान लेता गया, क्योंकि मिरजा कुरानकी ताजीमको उठा बैरामखांने कुरानके साथ वे दोनों फरमान भी उसको दे दिये। फिर बादशाह और शाहके तुहफे भी अच्छी तरहसे उसको दिये और मिरजाके पास बैठकर बातें की। मजलिसके आखीरमें शाहजादे अकबर, मिरजा हिन्दाल, मिरजा सुलैमान, यादगार नासिर मिरजा और उलगबेगसे मिलनेकी रुखसत मांगी। मिरजाने रुखसत देकर बाबूसको भी साथ कर दिया।

बैरामखां पहले शाहजादेके पास गये, जो बाबर बादशाहकी बड़ी बहन खानजादा बेगमके पास मकतबके बागमें रहते थे। माहमबेगी उनको बाहर लायी। इसने बन्दगी करके जो कुछ लाया था वह सब दिया। वहांसे बिदा होकर मिरजा हिन्दालके पास गया, जो अपनी माँ दिलदार बेगमके घरमें नजरबन्द था। उसको फरमान खिलअत और खासा घोड़ा दिया। इसी तरह दूसरे दिन मिरजा सुलैमान और मिरजा इब्राहीमसे (जो किलेपर कासम मुखलिसके घरमें कैद थे और उस दिन मिरजा कामरांके हुक्मसे अलाउद्दीन बेगके बागमें लाये गये थे) मिलकर उनको शाह और बादशाहकी इनायतोंसे राजी किया। वहांसे अलकेसियाह सङ्गमें जाकर यादगार नासिर मिरजासे मिला और उसको कसूरोंकी माफी और बादशाही मेहरबानियोंकी खुशखबरी दी। इस तरह बैरामखांने बड़ी सचाई और सफाईसे सबके पास जाकर संदेसे कहे। मिरजा कामरांने बैरामखांको एक महीनेसे ज्यादा रखा। न तो वह अपनेमें लड़नेकी ताकत पाता था और न खिदमतमें

जाना चाहता था। इसी सोच विचारमें पड़ा हुआ था। आखिर बहुत कोशिश करनेपर छेढ़ महीने पीछे बैरामखांको रुखसत किया, तो खानजादा बेगमको भी कन्धार भेज दिया। जाहिरमें तो यह कहा कि, मिरजा असकरी मेरे कहनेमें नहीं है, यह उससे किला लेकर बादशाहोंको सौंप देगी, मगर अन्दर मतलब यह था कि, जब मिरजा हारे, तो यह सिफारिश करके उसको बचा दे।

मिरजा असकरी तो मिरजा कामरांके कहनेसे ही लड़ता था और उसने बहुतसी तोपें और तोपची किलेमें भर रखे थे और किला भी मट्टीका बना हुआ था, जिससे उसका तोड़ना बहुत मुश्किल था और दीवार भी ६० गज चौड़ी थी। बादशाहकी फौज उसको घेरे हुई थी और बादशाहको शाहजादाकी तरफसे फिक्र रहा करती थी। एक दिन जो बहुत घबरायें, तो शाहजादेका जन्म-पत्र मंगाकर देरतक बड़ी गौरसे देखा और कहा कि, शाहजादेके वास्ते कुछ डर नहीं है, उसके दुश्मनोंका घर बिगड़ा हुआ है। अब जलदी ही उसके भागसे हम दुश्मनोंको जीत लेंगे, यह कहकर किला फतह करनेमें कोशिश करने लगे। उधर मिरजा असकरी भी गाफिल नहीं था, रात दिन मोरचोंको बदला करता था कि, कहीं कोई मिल न जावे।

किला फतह नहीं होनेसे कजलबाश हिम्मत हारकर लौट जानेके फिक्रमें पड़ गये। बादशाह यह हाल जानकर एक रात अपने मोरचेसे निकालकर दरवाजेके बहुत पास आ बैठे। तुर्कमान लोगी खबर पाकर सुबह ही सब वहां आ डटे और घेरेको ऐसा तङ्ग कर दिया कि, मिरजा असकरीने तङ्ग होकर अरजी भेजी कि, बेगम साहिबके आनेतक मोहलत दीजिये; फिर मैं उनके साथ दिलजमईसे खिदमतमें हाजिर हो आऊंगा। बादशाहने मछरवानीसे मोहलत देकर बात ढीली डाल दी। मिरजाने इस फुरसतमें किलेको फिर मजबूत कर ली। जब बेगम

साहिब और बैरामखां आये, तो फिर लड़ाईका इरादा किया। बेगमने बहुत चाहा कि, उसको बादशाहके पास ले जाकर सफाई करा दे। मगर उसने नहीं माना और बेगमको भी किलेपरसे बादशाहके पास नहीं जाने दिया।

बादशाहने फिर घेरेको बढ़ाया और काबुलसे उलग मिरजा, शेर अफगान और कासिमहुसेन सुलतान वगैरा भागकर बादशाही लशकरमें आ गये। इनके आनेसे कजलबाश भी किला लेनेकी कोशिश करने लगे। फिर तो किलेवाले भी घबरा गये और वह रोज रोजका हाल लिख लिखकर किलेकी दीवारपरसे फेंक देते थे और मिरजाके नौकर भी एकाएक करके किलेमेंसे आने लगे। तोपची और प्यादे तो कोटपरसे ही कूदने लगे।

आखिर मिरजा असकरीने लाचार होकर बादशाहसे कहलाया कि, किला सौंपता हूं, मुझे काबुल चला जाने दो। मगर यह बात मंजूर नहीं की, तब उसने खानजादा बेगमको कसूर माफ करानेके लिये बादशाहके पास भेजा और बादशाहने उनके कहनेसे मिरजाके कसूर माफ कर दिये।

२५ जमादि उलसानी जुमेरात (१) (आसोज बदी १० सं० १६०२ ३ सितम्बर १५४५ ई०) को मिरजा असकरी बेगमके साथ किलेसे बाहर निकला बादशाहने बड़ा दरबार किया। चगताई और कजलबास अमीर पगा बांधकर अपने अपने दरजेसे खड़े हुए बैरामखां बादशाहके हुक्मसे मिरजाको गलेमें तलवार डालकर लाये। फिर बादशाहके फरमानसे तलवार गलेसे निकाल ली गयी और जब मिरजा आदाब बजा ला चुका, तो बैठनेका हुक्म हुआ।

(१) किसी किसी नकलमें बुध भी लिखा है और महीना भी जमादिउल अव्वल है।

फिर मोहम्मदखां जलायर, शाहमखां वगैरह ३० आदमियोंको तलवार और तरकश गरदनमें डालकर सलाम करानेको लाया। उनमेंसे सिर्फ मुकीमखां और कलीखांको पांवमें जञ्जीर और गरदनमें तख्ता डालकर कैद रखनेका हुक्म हुआ। पिछले दिन सवेरेतक गाना बजाना होता रहा। इसी बीचमें मिरजा असकरीको वह कागज दिखाया गया, जो उसने बादशाहके जङ्गलका रस्ता लेने और फकीर हो जानेके बारेमें लिखा था। देखते ही मिरजाके होश उड़ गये। बादशाहने कहा कि, इसको नजरबन्द रखें और सलाम करानेको लाया करें।

दूसरे दिन बादशाह किलेको गये। मोहम्मद मिरजा, चगताई और कजलबाश अमीर भी साथ थे। बादशाह ३ दिन किलेमें रहे। चौथे दिन शहर मिरजा मुरादको सौंपकर बाबर बादशाहके चारबागमें चले आये, जो अर्गंदाब नदीके ऊपर था। वहां वजीर लोग मिरजा असकरीके माल और असबाबकी तफसील लिखकर लाये। बादशाहने वह सब अपने सिपाहियोंको दिला दिया, जो सब खर्चसे तङ्ग थे।

काबुलका हाल।

मिरजा कामरांने जब कन्धार फतह होने और काबुलपर फौज आनेकी बात सुनी, तो शाहजादे अकबरको खानजादा बेगमके घरसे अपने घरमें लाकर बड़ी बेगम खानम बेगमको सौंपा और शमशुद्दीन (अत्तगाखां) को पकड़कर खराब जगहमें कैद किया और मिरजा सुलेमानके वास्ते अपने अमीरोंसे सलाह पूछी, तो उसके उस्ताद मुल्ला अबदुल खालिक और बाबूसने कहा कि, मिरजा सुलेमानको तसल्ली देकर बदखशांमें भेज देना चाहिये कि, वक्तपर काम आवे। मिरजा सुलेमानके भागनेसे कुछ दिन पहले मीर नजरअली वगैरह कई शख्सोंने किले जफरमें कब्जा और कासिम बरलास वगैरहको कैद करके मिरजा कामरांसे कहला या भी था कि, जो मिरजा सुलेमानको भेजो, तो किला उसको दे दि

जावेगा, नहीं तो इन कैदियोंको कतल करके बदखशानका मुल्क उजबकको सौंप देते हैं।

आखिर मिरजा सुलेमान, मिरजा इब्राहीम और हरम बेगम-को रुखसत दी गयी। ये लोग कुछ दूर पहुंचे थे कि, मिरजा कामरांने मिरजा सुलेमानके छोड़नेसे पछताकर एक आदमी उसके लानेको भेजा और कहलाया कि, कुछ जबानी बातें कहनेको रह गयी हैं सो आकर सुन जाओ।

मिरजा सुलेमानने इस बुलानेसे वहम करके जवाबमें लिखा कि, अच्छे महूर्त्तमें विदा हुआ हूं, लौटना ठीक नहीं समझता। आप महरबानीसे वे बातें लिखकर किसी मोतबर आदमीके हाथ भेज दें।

यह जवाब देकर जलदीसे रवाने हो गया और बदखशांमें पहुंचते ही मिरजा कामरांसे बदल गया। फिर यादगार नासिर मिरजा भी काबुलसे भागकर बदखशांको चल दिया। अब मिरजा कामरांके पास मिरजा हिन्दालके सिवाय और कोई मिरजा नहीं रहा था। उसको भी उसने यह इकरार करके कि, जो मुल्क माल अब मेरे पास है और जो आगे होगा सबमेंसे तीसरा हिस्सा तुझको दूंगा। यादगार नासिर मिरजाके पीछे भेजा। मगर मिरजा हिन्दाल रास्ता काटकर बादशाहके पास चला गया।

मिरजा कामरां यह सुनकर बहुत घबराया और फिर उससे कुछ करते धरते न बना। उसके नौकर भी मारे डरके सच बात नहीं कह सकते थे।

बादशाहकी काबुलपर चढ़ाई।

बादशाह अपने पिताके बागसे कूच करके हसन अब्दालके ऊपर सफेद गुंबदमें उतरे और काबुलपर चढ़ाई करनेकी सलाह करने लगे। कजलबाश लम्बे सफरसे घबराकर कुछ तो बगैर रोखसतके ही चले गये थे और बाकी हठसे रुखसत मांग मांगकर जाने लगे। शाहबदागखां और दूसरे लोग, जो शाह ईरानके पास

थे, शहरके भीतर और बाहर रैयतको लूटते थे, जिसकी पुकार रोज बादशाहके पास आती थी। पर बादशाह शाह ईरानकी नाराजीके खयालसे कुछ नहीं बोलते थे।

जब काबुल जानेकी पक्की ठहर गयी, तो बादशाहने कुछ बेगमों और जरूरी सामानोंको रखनेके लिये शाह बगदादसे कई मकान मांगे और कहा कि, हम अपने कहनेके मुवाफिक कन्धार तो तुमको देही चुके हैं, मगर ऐसी जगहके बगैर भी कि, जहां अपने आदमियों और असबाबको छोड़कर बेफिकरीसे चले जायें, निबाह नहीं हो सकता। शाह बगदादखां नट गया। बादशाह शाहकी खूबियोंकी लिहाजसे उसके हुक्म न माननेको पी गये। यह इरादा किया कि, बदख्शांसे मिरजा सुलेमानको साथ लावें और फिर काबुलपर चढ़ाई करें। मगर काबुल और शाहजादेके देखनेकी भी जल्दी थी और पास रहनेवाले कहते थे कि, कबीलों और सब सामानोंको पहाड़ोंमें लिये लिये फिरना मुशकिल है। इतनेमें शाह ईरानका बेटा मर गया, तो फिर उन्होंने कहा कि, अब कन्धार तुर्कमानोंके हाथमें छोड़ना सलाह नहीं है। जो हमेशा ताबेदार रहनेका हुक्म सुना दिये जानेपर भी जुल्म और हुक्मअदूली करते हैं। इसमें शाह भी कुछ बुरा नहीं मानेंगे। यहांसे काबुल बहुत दूर है और बीचमें हजारा जातिके लोगों और पठानोंका टिड्डी दल भरा पड़ा है, जो मिरजा कामरांसे मिला हुआ है और अपने वास्ते कन्धारसे बढ़कर कोई जगह अमनकी नहीं है। इसलिये शाह बदागखांसे कह देना चाहिये कि, कन्धारको राजी बेराजी छोड़ दे और जो न छोड़े, तो जबरदस्ती छुड़ा लेना और शाहको सब हाल लिख भेजना चाहिये। वे मुरव्वतसे मान लेंगे।

इसमें सबसे ज्यादा बाबा कशकाका कहना था। बादशाहने कहा कि, यह तो सब सही, मगर इन लोगोंपर तलवार खेंचकर ऐसा करनेकी मैं तजवीज नहीं करता। इसमें बादशाह बगदादखांके

आदमी मारे जायंगे और लोगोंमें यह बात बुरी मालूम होगी। इसलिये ऐसी तजवीज करना चाहिये कि, किला बगैर लड़ाईके हाथ आ जाय।

इसपर बदागखांके पास आदमी भेजकर कहलाया गया कि, हम काबुल लेनेको जाते हैं। तुम मिरजा असकरीको कन्धारमें कैद रखो, तो उसकी तरफसे दिलजमई रहे। जब उसने यह बात मञ्जूर कर ली, तो यह तजवीज ठहरी कि, बहादुर और अलू जीते हुए सरदार कन्धारके आसपास घातमें जा बैठें और मौका देखकर किलेमें घुस जावें।

बेरामखां एक दरवाजेपर उलग मिरजा और हाजीबेग दूसरे दरवाजेपर, मुवैयदबेग और कुछ लोग तीसरे दरवाजेपर भेजे गये। दिन निकलते ही हाजीबेग सबसे पहले घासके ऊंटोंके साथ, जो किलेमें जाते थे, दरवाजेमें घुसा। दरबानने रोकना चाहा तो कहा कि, बदागखांके हुक्मसे मिरजा असकरीको किलेमें कैद रखनेके लिये लाये है। दरबानने यह बात नहीं मानी और वह दरवाजा बन्द करने लगा। हाजी मोहम्मदने उसका हाथ तलवारसे काट दिया। इसपर काजलबाश, जो वहां पास ही थे, आकर लड़े और मरे, इतनेमें बेरामखां दूसरे दरवाजेसे अन्दर जा पहुंचा। किला कबजेमें आ गया; काजलबाश भागकर अरक (गढ़ी) में छिप गये।

दोपहरको बादशाह किलेमें दाखिल हुए। बदागखांने हैदर-सुलतानके साथ आकर माफी मांगी। बादशाहने मेहरबानी करके उसको रुखसत किया और शहर बेरामखांको सौंपकर शाहको लिख भेजा कि, बदागखांने हुक्म नहीं माना; इसलिये कन्धार उससे लेकर बेरामखांको सौंप दिया है और यह आपका ही है।

इन्हीं दिनोंमें मिरजा असकरी भागकर एक पठानके घरमें जा छिपा। पठानने बादशाहको खबर कर दी। बादशाहने शाह

मिरजा और अम्बर नाजिरको भेजा। वे जाकर उसको टाटकी नोचेसे निकाल लाये। बादशाहने फिर उसका कसूर माफ करके नदीमकोकाको सौंप दिया, क्योंकि बाबर बादशाह भाइयोंपर मेहरबानी रखनेके लिये कह मरे थे।

फिर बादशाहने विलायत तपरी उलग मिरजाको लश्करके पर-गने हाजी मोहम्मदको, जमीनदावर हसनाईलबेगको, कलात शेर-अफगानको ऐसे ही जागीरें और सब नौकरोंको देकर कन्धार-की वलायत बांट दी।

जब इस तरह कन्धारके इन्तजामसे फुरसत हो गयी, तो बाद-शाह मरयम मकानीको कन्धारमें छोड़कर काबुलकी तरफ रवाने हुए। उस समय हिन्दुस्थानसे एक बड़ा काफिला आया हुआ था, सौदागरोंने मनचाहा सौदा करके तुर्कमानोंसे ईराकी घोड़े खरीदे थे।

काफिलेके सरदारोंने बादशाहके पास आकर कहा, जो हमारे घोड़े हजरत खरीद लें और कीमत हिन्दुस्थान फतह होनेके पीछे दे दें, तो हम राजी हैं। बादशाहने मुँहमांगा मोल देना कहके उनको तमस्सुक लिख दिया (१) और बाबा हसन अबदालके पास एक टीलेपर बैठकर उलग मिरजा, बैरामखां, शेर अफगान और

(१) बादशाह कन्धारका किला लेकर एक महीनेतक खिल-वई बागमें रहे। ईरानियोंको यों बादशाहके पास पड़ा रहना न सुहाया और बदागखांने बादशाहके लश्करमें रसदका आना रोक दिया। बादशाहने अमीरोंसे सलाह पूछी, उन्होंने अरज की कि, अपने लश्करमें घोड़े सवारीके लिये नहीं हैं और ईरानियोंने १००० घोड़े व्योपारियोंको बेचे हैं वे किलेके बाहर बंधे हैं। यह सुनकर बादशाही आदमियोंने व्योपारियोंसे घोड़े छीन लिये, व्योपारी बादशाहके पास पुकार करने आये, तो बादशाहने उनको तमस्सुक लिख दिया।

हैदर मोहम्मद आखताबेगीको फरमाया कि, पहले तो खासा तबेलेके लिये घोड़े छांट लो ; फिर अमीर और नौकर चाकर तरतीब (अनुक्रम) से चुनकर ले जावें। १००० घोड़े जो लिये गये, इस तरह बांट दिये गये।

फिर दूदहबेग हजारा रस्ता बताकर रातको किलेकी तपरीकी तरफ ले गया, जहां उसका हशम (कौम, कबीला) था। जब सवारी वहां पहुंची, तो कबीलोंके बड़े बड़े आदमी, जैसा जिनका बूता था, घोड़े और बकरियोंकी भेंट लेकर आये और बादशाहकी महरबानीमें दाखिल हुए।

उस इलाकेमें अच्छे अच्छे रमने थे, इसलिये बादशाह कुछ दिनोंतक दिल बहलानेको वहां रहे। खानजादा बेगम बीमार होकर मर गयी। बादशाह उसके वास्ते बहुतसी खैरात करके आगेको बढ़े। रस्तेमें मिरजा हिन्दालने आकर बन्दगी की। बादशाह उसके आनेसे बहुत खुश हुए। उसकी देखादेखी और बड़े बड़े आदमी भी काबुलसे आने लगे। हवा बदलनेसे लशकरमें मरी पड़ी। बहुत लोग मर गये, हैदर सुलतान भी उनमें था।

मिरजा हिन्दालने, बीमारी बहुत और आदमी, थोड़े देखकर अरज की कि, इस जाड़ेमें तो लौटकर कन्धारमें रहें और गरमीके शुरू होते ही लशकर तैयार करके काबुलको चलें, तो बिहतर हो।

बादशाहने मुंहपर तो कुछ नहीं कहा, मगर दरबार उठ जानेपर सैयद बिरकाको भेजकर मिरजासे कहलाया कि, जब हमको तुम्हारे आने और यादगार नासिर मिरजाके चले जानेकी खबर नहीं थी, तभी हमने खुदातवक्कुल (रामभरोसे) काबुलपर कूच किया था और अब जो ऐसा हुआ, तो फिर ढीला करनेका क्या सबब है। अगर अपने आदमियोंकी तकलीफके खयालसे यह बात तुम्हारे दिलमें आयी है, तो हम जमीनदावरका मुल्क तुमको देते हैं, तुम जाड़े भर वहां रहो और जब काबुलको गुत्थी खुल जावे, तो आ जाना। मिरजाने पछताकर माफी मांगी।

बादशाह आगेको रवाने हुए। रस्तेमें बाबूसका भाई जामीलबेग (जिसको मिरजा कामरांने अपने जमाई आका सुलतानका अतालीक बनाकर गजनीनमें छोड़ा था) बादशाहके पास हाजिर हो गया और अपने कसूर माफ कराकर साथ हुआ।

जब बादशाही लशकर यौरत शेखअलीके मुकामपर पहुँचा, जो न्यामान और अर्कन्दीके बीचमें है, तो मिरजा कामरांने घबराकर कासिम बरलासको कुछ फौजसे आगे भेजा और कासिम-मुखलिस) मीर आतिश) को कहा कि, तोपखानेको ले जाकर उस जङ्गलके (वन) में लगा दे, जो बाबूसके घरके पास है। लोगोंके कबीलोंको बाहरसे किलेके भीतर बुला लिये, फिर किलेका बन्दोबस्त करके आप भी बाबूसबेगके पास आ पड़ा और सेना सजाने लगा।

कासिम बरलास तकयेचमार नाम गांवमें पहुँचा ही था कि, इधरसे ख्वाजा मोअज्जम, हाजीमोहम्मदखां और शेर अफगान उसपर जा पड़े। वह ठहर न सका, भाग गया।

जब दोनों फौजोंमें थोड़ा फासला रहा, तो मिरजा हिन्दाल अरज करके हिरावल हुआ। ख्वाजपुशताके घाटेसे निकलकर अर्गन्दीमें पहुंचते ही बाबूसबेग अपनी जमईयतसे आकर हाजिर हो गये, शाह वरदीखां भी आया, जो गुर्देज, वंगश और नुगजका हाकिम था; उसके पीछे ख्वाजा कलांबेगका बेटा मुसाहिबबेग भी बहुत आदमियोंसे हाजिर हो गया। बाबूसने अरज की कि, अब देर करनेका वक्त नहीं है, सवारी होना चाहिये, क्योंकि सब आदमी आ रहे हैं। बादशाह सवार हो गये। कुछ देर पीछे कराचाखांने भी आकर जमीन चूमी।

मिरजा कामरांने जो अपनी बात बिगड़ती देखी, तो ख्वाजा खावन्द महमूद और ख्वाजा अबदुल खालिकको कसूर माफ करानेके वास्ते भेजा और कुछ बातें भी अरज करायी थीं। बादशाहने उन बातोंका कबूल करना तो मिरजाके हाजिर होनेपर

उसके और कसूर माफ करके ख्वाजोंको बिदा किया। दोनों लशकरोंमें आध कोसकी छेटी रह गयी थी, मगर बादशाह तो मिरजाकी बातोंमें आकर आगे बढ़े नहीं और मिरजा रात होते ही भागकर काबुलके किलेमें आया और अपने बेटे मिरजा इब्राहीम और बेगमोंको लेकर खिड़की रस्तेसे गजनीनकी तरफ निकल गया।

बादशाहने मिरजाका भागना सुनकर बाबूसको तो काबुलमें लोगोंकी तसल्लीके लिये भेजा और मिरजा हिन्दालको मिरजा कामरांके पीछे रवाने किया। फिर आप भी शादयाना बजाते हुए काबुलको चले और ११ आजर जलाली १२ रमजान सन् ९५२ बुधको २ घड़ी रात गये (अगहन सुदी १३, ता० १८ नवम्बर) वहां पहुंचे, शाहजादा खिदमतमें लाया गया, जो १ वर्ष २ महीने और ८ दिनका हुआ था। बादशाह देखकर बागबाग हो गये। दूसरे दिन बड़ा दरबार करके सब लोगोंका सलाम लिया और यह सुनकर कि, ख्वाजा मोअज्जम सुकहम बेगके साथ भागकर मिरजा कामरांके पास जाना चाहता है सुकहमबेगको तो कशमीरकी तरफ जलावतन किया और ख्वाजा मोअज्जमको नजरोंसे गिरा (१) दिया।

(१) रमजानके दिनोंमें एक दिन बादशाहने पहर रात गये तक रोजा नहीं खोला था। बीबी बीगा बेगमके घरसे खाना मंगाया, तो गौमांस आया। उसको देखकर बादशाहकी आंखें भर आयीं। रोकर कहने लगे कि, मिरजा कामरां तेरा कैसे भला हो सकता था कि, तूने बीबी बीगा बेगम साहिबके बबरचीखानेमें एक बकरी भी खानेको नहीं छोड़ी, जो बिचारी कण्गालोंकासा मांस खाती है। यह वह बीबी है कि, जिसने हमारे बापकी हड्डियोंको यहां लाकर गाड़ा है, बापका जो काम हम ४ बेटोंमेंसे कोई भी नहीं कर सका था वह इसने किया है। फिर बादशाहने मारे गुस्सेके खाना नहीं खाया, थोड़ासा शरबत पीकर रह गये।

शाहजादेकी मुसलमानी।

बादशाहने शाहजादेकी मुसलमानीकी तैयारी उसी बागमें करके कराचाखां और मुसाहिबबेगको कन्धार भेजा वे व ह ९५१ मकानीको ले आये। बादशाह जनानेमें दरबार करके गद्दीपर बैठे, शाहजादा गोदमें था। मरयम मकानीको हुक्म था कि, सब बेगमोंके साथ बगैर किसी खास नाम और निशानके आवे, जब बेगमोंका झुरमट आया, तो बादशाहने शाहजादेकी अकल और होशियारी देखनेके लिये कहा कि, बाबा! अपनी मांको इनमेंसे पहचान लो। शाहजादा सीधा जाकर अपनी मांकी गोदमें बैठ गया। यह अजब बात देखकर सबको बड़ा अचम्भा हुआ और खुशीके मारे बड़ा कोलाहल मचा।

खुशीकी मजलिसें नित नये ढंगसे होती थीं। रोज बड़े बड़े महमान आते थे। यादगार नासिर मिरजा भी इन्हीं दिनोंमें बदखशांसे कन्धार होकर (जहां बैरामखांने खूब खातिर और महमानी की थी।) बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गया। फिर एक अच्छे महूर्त्तमें शाहजादेकी मुसलमानी हो गयी, सबको इनाम इकराम मिले। उन्हीं खुशीके दिनोंमें एक दिन बादशाह ख्वाजा रेगरवां नाम स्थानपर गये और वहां अमीरोंको आपसमें कुश्ती लड़नेका हुक्म हुआ। आप इमाम कौरचीसे लड़े, मिरजा हिन्दाल यादगार नासिर मिरजासे लड़ा। फिर जागीरें बटीं, गजनीन मिरजा हिन्दालको जमीनदावर और तपरी उलग मिरजाको मिली।

शाह तुहमास्पने वलदबेगको फतहकी मुबारकबादका खत और उमदा तुहफे देकर भेजा, मिरजा सुलेमानकी अरजी और सौगात बदखशांसे पहुंची। बादशाहने उसके आनेका हुक्म लिखा।

ठूठी (सिन्ध) से मीर सैयदअली और बलूचस्तानसे लोमक बलोच आया। बादशाहने दोनोंको खिलअत देकर जलदीसे बिदा

कार (१) दिया। यादगार नासिर मिरजाकी मिलावट मिरज़ा असकरीके कोका मुजफ्फरसे साबित हो जानेपर कोका तो मारा गया और मिरजा काबुलके किलेमें असकरीके पास कैद किया (२) गया।

बदख्शांकी फतह।

मिरज़ा सुलेमानके हाजिर न होनेसे बादशाह सन् ९५३ (संवत् १६०३ में) के लगते ही बदखशांको रवाने हुए। उनको यह मनशा थी कि, जितना मुल्क बदख्शांका बाबर बादशाहने मिरजाके बापको दिया था, उतना ही अब भी मिरजाके पास रहे। फिर जब और मुल्क हाथ आयेगा, तो उसको भी ज्यादा दिया जायगा। इसीलिये काबुल फतह होनेके पीछे खोसत और इन्दाबके इलाके मिरजाके पाससे अपने एक अमीरको दिलाये थे और कुन्दुज भी उससे लेना चाहते थे, मगर वह राजी न होकर बागी हो गया था और खुतबा अपने नामका पढ़वाने लगा था।

बादशाहने यह सुनकर शाहजादेको तो काबुलमें छोड़ा, असकरीको साथ लिया और यादगार नासिर मिरजाके बारेमें सोचते थे कि, क्या करना चाहिये। आखिर किराबाग पहुंचकर मोहम्मद तुगायी हाकिम काबुलको मिरजाके मार डालनेका हुक्म दिया, उसने भोलेपनसे कहा कि, मैंने कभी चिड़िया भी नहीं मारी है; मिरजाको कैसे मार सकूंगा। तब मोहम्मद कासिम मोजीको यह

(१) बादशाहने लूमको शाल और मस्तङ्गके परगने दिये।

(२) शेख अबदुलजव्वार मिरजाका सलाहकार था, उसने सब बातें कह दीं। तब बादशाहने किराचाखांको जबानी कहलाया कि, हमने जो तेरे बड़े बड़े कसूर माफ किये थे, तो यह जानते थे कि, आगेको निचला रहेगा और अगले पिछले कसूरोंके बदलेमें कोई अच्छी सेवा करेगा, मिरजा सिर झुकाये सुनता रहा। तब उसपर ३० कसूर गवाहियोंसे साबित हो गये, तो काबुलके किलेमें कैद किया गया जहां असकरी कैद था।

काम दिया गया, उसने रातको तीर मारकर मिरजाकी जान ले ली।

बादशाह इस तरह चचाके बेटेसे अपनेको बचाकर इन्द्राब (१) पहुँचे। मिरजा सुलेमान भी फौज लेकर आया, बादशाहने मिरजा हिन्दाल कराचाखां और हाजी मोहम्मदखांको उसके मुकाबिलेपर भेजा। तीरगरां नाम गांवमें (२) लड़ाई हुई, मिरजा सुलेमान भागकर नारी और अशकमशके रस्तेसे खोसतके घाटेमें चला गया। तोलकतालकानी, मिरजाबेग, बरलास और अवैस सुलतान, जो मगूलिस्तानके (३) बादशाहोंकी औलादमें थे उससे अलग होकर बादशाहके पास आ गये। जब बादशाह शाशानके घाटेसे उतरकर खोसतके घाटेमें पहुंचे, तो मिरजा सुलेमान कोलबकी भाग गया और बदख़शांके बड़े बड़े आदमी सब बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गये। बादशाह बदख़शांके मेवे खाते मुर्गाबी, चकोर, मछली और चिड़ियोंका शिकार खेलते दर्शक और कावकांमें होते हुए कशममें जा उतरे। तब तो मिरजा सुलेमां वहां रहना ठीक न देखकर आमोया नदीके पार उतर गया।

शाह ईरानका खुसरो नाम एक नौकर भागकर बादशाहके पास चला आया था, उसने शाहको कुछ बुरा कहा था। इसपर

---

(१) बायजीद नाम एक इतिहासवेत्ताने लिखा है कि, बादशाह एक दिन शराब पीकर आधी रातको मजलिससे निकले, तो नशेमें चूर होनेसे गिर पड़े। तब मीर सामान जलालुद्दीन महमूदने अरज किया कि, हजरतने ऐसी चीज पी है जिससे चोट लगी, यह बात बादशाहके गले उतर गई और उन्होंने जीतेजी फिर कभी नशा नहीं पिया।

(२) ईरानके वकीलके साथ जो कीरची आये थे वे भी बादशाही फौजके साथ रहकर खूब लड़े थे।

(३) मङ्गोलिया जो अब चीनकी सलतनतमें है।

हुशानबेग, हुसैनबेग, और जाफरबेग, शाहके औरचियोंने, जो बादशाहके साथ थे उसको काशमके बाजारमें मार डाला; उनकी यह खुदहाकिमी बादशाहको बुरी लगी उनको पकड़वा लिया। फिर हुसैन कुली सुलतान मोहरदारकी सिफारिशसे छोड़ दिया।

जब बदख्शां फतह हो गया, तो बादशाहने कुन्दुजका इलाका मिरजा हिन्दालको दिया। ऐसे ही और भी कई परगने अपने नौकरोंको बांटे, मुनअमखांको खोसत और बाबूसको तालकांकी तहसीलपर भेजा और आप काशलाक (जाड़में रहने) के लिये किले जफरको रवाने हुए, मगर शाखदां नाम गांवमें पहुंचकर सख्त बीमार हो गये। ४ दिन तो बेहोश ही रहे, जिससे मरनेकी खबर उड़ गयी। मिरजा हिन्दाल छोटी मनसासे कोकचेकी नदीतक चला आया, उधर मिरजा सुलेमानके चाहनेवालोंने भी सिर उठाया, कराचाखां बादशाहकी ड्योढ़ीपर डेरा लगाकर बैठ गया। पांचवें दिन कुछ होश आया, तो सैयद बिरकासे कराचाखांकी बन्दगीका हाल सुनकर उसे रूबरू बुलाया और खातिर तसल्ली की। फिर उसी दम अपनी तन्दुरुस्तीका फरमान शाहजादेके नाम लिखकर फजीलबेगको दिया। काबुलमें रातको तो बादशाहके मरनेकी खबर उड़ी थी और सवेरे ही फजीलबेग पहुंच गया, जिससे सबको तसल्ली हो गयी। मिरजा हिन्दाल भी लौटकर अपनी जागीरको चला गया।

२१ रमजानकी रात (मंगसर बदी ७ सं० १६०३ ता० १६ नवम्बर १५४६) को ख्वाजा मोअज्जम मसहदेपसे ख्वाजा सुलतान रशीदी वजीरको मारकर भाग गया। बादशाहने उसके पकड़नेका हुक्म काबुलको भेजा, क्योंकि उसका घर काबुलमें था और वह वहीं साथियों समेत पकड़ा गया।

बादशाह दो महीने पीछे आराम हो जानेपर शाखदांसे किले जफरमें गये, वहां एक महल बनवाया और कूचबेगके बेटे शेर

अफगनको काहमर्द जुहाक और बामियां देकर फरमाया कि, जब काबुलमें आयेंगे, तो गोरबन्द भी देंगे।

बादशाहके बदख्शांमें रहनेसे तूरानमें हलचल मच गयी और उजबक सब मिलकर सोच विचार करने लगे।

काबुलमें मिरजा कामरां।

मिरजा कामरां काबुलसे भागकर गजनीनको गया था, मगर वहांवालोंने दरवाजे बन्द कर लिये और उसको अन्दर आने नहीं दिया। तब वह खिजरखां हजारेके घर गया। खिजरखां महमानी करके उसको तपरीमें लाया और फिर जमीनदावरमें ले गया, मगर मीर खलीफाका बेटा यसासुद्दीन अली भी किलेमें बैठकर उससे लड़ा और किला बचा लिया।

बादशाहको जब यह खबर काबुलमें पहुँची थी, तो गजनी मिरजा हिन्दालको और जमीनदावर मिरजा उलगको देकर उधर भेजा था और बेरामखांको लिखा था कि, यादगार नासिर मिरजा-को, जो वहां आया है, उलग मिरजाके साथ कामरांके ऊपर भेज दें। जब दोनों मिरजा जमीनदावरमें पहुंचे, तो हजारा लोग मिरजा कामरांको छोड़कर अपने घरोंको भाग गये और कामरां भक्करमें शाह हुसेन अरगूंके पास चला गया। मिरजा उलग अपनी जागीरमें रहा और यादगार नासिर मिरजा काबुलमें बादशाहके पास पहुंचा, जैसा कि, लिखा जा चुका है।

मिरजा कामरांने ठट्ठेके हाकिमकी लड़कीसे शादी की और कुछ दिन निचला बैठा रहा। अब जो बादशाहकी मरनेकी खबर उड़ी थी तो मिरजाने भी सिन्धमें सुनी और ठट्ठेके हाकिमसे मदद लेकर पहले तो कन्धार लेना चाहा, मगर कन्धारमें बेरामखांका पूरा पूरा बन्दोबस्त था ; इसलिये कलातमेंसे सौदागर पठानोंके घोड़े छीनता हुआ गजनीपर गया। यहां मिरजा हिन्दालका किलेदार जाहिदबेग नशेमें धुत्त पड़ा था। मिरजा कामरांके आदमी कमन्द लगाकर चढ़ गये और उसको मिरजाके पास पकड़ लाये। मिरजाने उसी

बेहोशीमें उसको मरवा डाला और गजनीनमें अपने जमाई मिरजा दौलत सुलतानको, ठट्ठेके हाकिमके नौकर मलिक मोहम्मदके साथ रखकर काबुलपर धावा किया और दरवाजेपर पहुँचकर मोहम्मद तुगाईको खबर मँगायी, तो मालूम हुआ कि, हम्माममें है। मिरजा कोका "अली कुली ऊगली" जाकर उसे हम्माममेंसे नङ्गा पकड़ लाया। मिरजा उसको भी मारकर आहनीं दरवाजेसे, जिसे मिलावटसे पहलवान उगतरने खोल दिया था, शहरमें घुस बैठा। तड़के ही जब हाजी मोहम्मद कोटवाल आकर मिला, तो मिरजाने उससे आकर पूछा कि, मैं कैसा गया और कैसा आया, उसने कहा कि, शामको गये और सुबह आ गये।

मिरजा किलेपर रहने लगा। शमशुद्दीन मोहम्मदखां अतका शाहजादेको मिरजाके पास ले गया। मिरजाने शाहजादेको उससे लेकर अपने आदमियोंको सौंप दिया। बादशाहके गुलाम महतर वासिल और महतर वकीलकी आंखोंमें सलाई फिरा दी। हसामुद्दीन अलीको, जो उलग मिरजाको जमीनदावर मिल जानेसे काबुलमें चला आया था, बुरी तरहसे मरवाया। चूली बहादुरको कतल कराया। ख्वाजा मोअज्जम, बहादुरखां, नदीमकोका, वगैरह बादशाहके मुसाहिबोंको पकड़कर शेर अफगन, हसनबेग कोका और फौज जमा करना शुरू किया।

एक दिन जब कि, मिरजा कामरां काबुलके किलेमें बैठा था और शाहजादा (अकबर) भी उसके पास था। वलदबेग और अबुलकासिम वगैरह शाहके नौकरो, जो बादशाहसे रुखसत होकर ईरानको जाते थे, मिरजासे मिलने आये। अबुल कासिमने वलदबेगके कानमें कहा कि, हम १० आदमी हैं, जो एका करके मिरजाको मार डालें और शाहजादेको गद्दीपर बैठा देवें, तो बादशाहके नमकसे अदा हो जावें। वलदबेगने कहा कि, हम मुसाफिरोंको ऐसे फजूल काममें पड़ना क्या जरूर है।

बादशाहका बदख़शांसे कूच।

बादशाहने बदख़शांमें यह खबर सुनकर मिरजा सुलेमानके कसूर बख्श दिये और उसको वही महाल, जो बाबर बादशाहने उसके बापको दिये थे, देकर कुन्दुज, इन्दराब, खोसत, कहमर्द और गोरी मिरजा हिन्दालको जागीरमें मुकर्रर किये। फिर वहांसे कूच करके बरफ गिरनेसे कई दिनों तालकांमें रहे। वहांसे कुन्दुजमें आकर मिरजा हिन्दालके महमान हुए। बकरा (१) ईदके पीछे शबरतू घाटी और रेगक घाटीके रस्तेसे ख़्वाजासईयारांमें आये। यहां मिरजा कामरांका नौकर शेरअली कुछ लड़ा और फिर भागकर बादशाही लशकरका कुछ सामान, जो पीछे रह गया था; लूट ले गया। जब बादशाह चारीकारानमें पहुँचे, तो बहुतसे आदमी नमकहरामी करके मिरजा कामरांके पास चले गये, जिनमें सिकन्दर सुलतान और बादशाहके भानजे सुलतान जुनैद बरलासका बेटा सुलतान सञ्जर भी था।

बादशाहने बाकी लोगोंसे कौल कसम करके हाजी मोहम्मद खांको तो कुतुलमीनारके रस्तेसे काबुलपर भेजा और आप कुतुल (घाटे) के नीचेसे रवाने हुए। बाबाशपरके रोजेके पास शेर अफगन मिरजा कामरांके काबू आदमियोंको लाकर लड़ा। इस बार भी बादशाहके अकसर सिपाही भाग खड़े हुए; मगर मिरजा हिन्दाल मुकाबिलेपर जमा रहा। बादशाहने कराचाखां और मीर बिरका वगैरहको मददके लिये भेजा, उधरसे हाजी मोहम्मदखां भी आ पहुंचा। मिरजाकी फौज हारी, शेर अफगन पकड़ा आया और बादशाहके सामने मारा गया।

मिरजा कामरां काबुलके किलेमें था। बादशाहने शहरमें अमल करके किलेपर तोपें लगायीं, कई दिनतक लड़ाई होती रही। मिरजाने चारीकारांमें एक बड़े काफलेकी आनेकी खबर

(१) माह सुदी १२ सं० १६०२ के पीछे।

सुनकर अपने बहुतसे आदमियोंको लूटनेके लिये भेजा। उस समय मिरजाके मुसाहिब तकहीबेग मोहम्मदजङ्गने कहा था कि, जो बादशाहको खबर हो गयी और उन्होंने रस्ता रोक दिया, तो फिर हम वापस नहीं आ सकेंगे; लेकिन मिरजाने लालचसे नहीं माना। आखिर ऐसा ही हुआ कि, बादशाह खबर पाकर रस्तेमें आ बैठे और वे लोग जब काफलेको लूटकर आये, तो अन्दर न जा सके। कुछ दिनों पीछे ये इधरसे और मिरजाके आदमी किलेपरसे लड़नेको चढ़े; लेकिन दोनों थोक हारे और बाहरवाले, जो गज़्नीनकी तरफ भागे, तो बादशाही लशकरने पीछा करके उनका माल छीन लिया और बहुतसे लोगोंको पकड़ा। बादशाहने काफिलेवालोंसे, जो रोते पीटते आये थे, कह दिया कि, अपने घोड़े और चीजवस्त पहचानकर ले लें और कैदियोंको, जो बागी थे, मोरचोंके सामने मरवा डाला।

मिरजा कामरांने भी बाबूसके छोटे छोटे तीन लड़कोंको मरवा कर बाहर फेंकवा दिया, उनकी औरत बाजारवालोंको सौंप दी। कराचाबेग और मुसाहिबबेगके बेटोंको किलेके कंगूरोंसे लटकाकर कहलाया कि, यातो मुझको रस्ता दो या बादशाहको उठा ले आओ, नहीं तो मैं तुम्हारे लड़कोंको भी बाबूसके बेटोंकी तरह मार डालूंगा; मगर जब उन्होंने नहीं माना, (१) तो शाहजादे (अकबर) को तोपसे बांधकर जिधरसे गोले किलेपर आते थे, उधर

(१) कराचाबेगने पुकारकर जवाब दिया कि, बादशाह सलामत रहें। हम और हमारे बेटे आखिर तो एक दिन दुनियासे चले जायंगे, जो बादशाहके काम आवें, तो इससे बढ़कर और क्या बात होगी। तुम हमको लड़कोंके मारनेसे क्या डराते हो, जो उनको मार भी डालोगे, तो हमको उनका बदला सहज ही मिल सकता है। तुम बादशाहकी खिदमतमें क्यों नहीं आ जाते हो कि, हम कोशिश करके तुम्हारी जान बचा दें। यही सुस

लटका दिया; पर उसी समय बन्दूकचियोंके हाथ कांपकर गोलियां तिरछी जाने लगीं और तोपें भी रंजक चाट गयीं। जिससे संबुलखां मीर आतिश बहुत गर्म हुआ और कहने लगा कि, यह क्या बात है। इतनेमें ही, जो उसकी नजर किलेकी तरफ़ पड़ी, तो शाहजादेको देखा और पहचानकर जान लिया कि, यही सबब आग ठण्डी हो जानेका (१) था।

मिरजा उलग जमीनदावरसे कासिम हुसेन शैबानी किलानसे ख़्वाजाग़ाज़ी (जो शाहके लश्करमें रह गया था) ईरानसे और शाहकुली सुलतान (बैरामखांका रिश्तेदार) क़न्धारसे और ऐसे ही और लोग बदख़शांसे आकर बन्दगीमें हाजिर हो गये और बादशाहने एक मोरचेपर उनको भी लगा दिया।

आखिर मिरजा कामरांने सब तरहसे नाउम्मेद होकर कराचाखांकी मारफ़त अरज करायी कि, जो जान और मालकी अमां मिले, तो अब मैं अपने कसूरोंसे पछताकर खिदमतमें आना और बन्दगी करना चाहता हूं। बादशाहने मञ्जूर करके घेरा ढीला

हिन्दबेगमने भी कहा, जब बादशाहने यह हाल सुना, तो दोनोंको बुलाकर बहुत खातिर और मेहरबानी की; परन्तु मिरजाने उनकी जोरू बच्चोंको बहुत दुःख दिया। मोहम्मद कासिमकी बीबीकी छातियां बांधकर लटका दी।

(१) जब अकाबेन पहाड़के बादशाही ऊंचे मोरचेसे गोले गिरने लगे, तो मिरजा कामरांने बादशाहको यह धमकी दी कि, तुम्हारा बेटा मिरजा अकबर इन गोलोंको मारके सामने किया जायगा। बादशाहने तोपें बन्द करा दीं; परन्तु सिपाहियोंको मोरचेसे नहीं हटाया (यह बात जौहरने लिखी है, जो उस लड़ाईमें मौजूद था)। कई तवारीख लिखनेवालोंने यों कहा है कि, मिरजाने शाहजादेको तोपोंकी मारके आगे भेजा, तो माहमअङ्गा उसको छातीसे लगाकर खड़ी हो गयी।

कर दिया ; लेकिन मिरजा हिन्दाल कराचाखां और मुसाहिबबेग वगैरा बड़े बड़े आदमियोंने अपने स्वार्थसे मिरजाका आना पसन्द न करके उसे कहला भेजा कि, यहां किस उम्मेदपर आते हो। हुसैनकुली आकाके मोरचेसे बाहर निकल जाओ। मिरजा दिल्ली दरवाजेसे उधर होकर पुरवीउल अव्वल सन् ९५४ (बैसाख सुदी ७ सं० १६०४ ता० १८ अप्रैल सन् १५४७) को बदख्शांकी तरफ भाग गया। बादशाहने हाजी मोहम्मदखांको उसके पीछे भेजकर काबुलमें प्रवेश किया और शाहजादाकी सलामतीसे खुश होकर बहुतसा दान और सदका (१) दिया। मिरजाके सरदारोंमेंसे, जो पकड़े गये थे, सुलतान कुली अत्तका, अब्दुल्लाह मिरजाके दामाद तरसून हाफिज मकसूद, मौलानाओ यरगू और मोलाना कादम अर्बाबको मरवा डाला।

हाजी मोहम्मदखां कुछ दूर मिरजा कामरांके पीछे जाकर चला आया (२)। मिरजा हजारा लोगोंके इलाकोंमें हैकर

(१) बादशाहने अपनी फौजको एक रातकी लूटका हुक्म दिया। सो उसने रातभरमें शहरको खूब लूटा।

(२) हाजी मोहम्मदखांने मिरजा कामरांको जा लिया था। तब मिरजाने तुरकी बोलीमें कहा, क्या मैंने ही तेरे बाप बाबा काशकाको मारा था। हाजी मोहम्मद, जो पुराना तुरक सिपाही था, आगे नहीं बढ़ा; क्योंकि वह मिरजाका अपना बड़ा समझता था और निकल जाने दिया।

बायजीदने लिखा है कि, मिरजा हिन्दालने कामरांको अपने मोरचेमेंसे निकाल दिया। जब लोगोंने उसे पकड़ लिया, तो उसने एक ऐसा इशारा किया, जिसपर उसको छोड़ दिया।

किसी तवारीखमें यों भी लिखा है कि, बादशाहने मिरजा हिन्दालको कामरांके पीछे भेजा था, उसने उसको पहाड़पर चढ़ते हुए जा लिया। जब वह एक आदमीकी पीठपर चढ़ा हुआ था,

मुंहावसे अपने आदमियोंको लेता हुआ गोरीमें पहुंचा और वहांके हाकिम मिरजाबेग बरलासको अपने पास बुलाया। उसने कहा कि, यह नमकहरामी दूसरोंसे होतीहै। मुझसे नहीं हो सकती। यह सुनकर मिरजा गोरीसे जाना चाहता था कि, एक कलकचीने मिरजाको गाली देकर कहा कि, लोगो। इस मोधू-के साथ क्यों जाते हो, जो यह बाबर बादशाहका बेटा हो, तो हाकिम गोरीको छोड़कर ऐसी बेगैरतीसे कभी नहीं जाता। मिरजाने इस तानेसे बुरा मानकर कहा कि, जो तुम लोगोंके पास लड़ाईका सामान होता, तो मैं इस तरह नहीं निकलता, उस बावलेने फिर भी कड़ा जवाब दिया। तब मिरजा, हाकिम गोरी-से लड़ा। हाकिम हारा और मिरजा शेरअलीको गोरीमें छोड़कर बदखशांमें गया। मिरजा सुलेमान और मिरजा इब्राहीमको बुलाने-को आदमी भेजे; मगर वे नहीं आये। तब मिरजा कामरां शेर-मोहम्मदखांकी (१) मददसे बदखशां जीतनेके लिये बलख गया।

बादशाहने कराचाखांको यह कहकर बदखशांमें भेजा कि, मिरजा सुलेमान और हिन्दाल वगैरहसे मिलकर मिरजा कामरांको पकड़ या निकाल दे। कराचाखां बदखशांसे मिरजाओंको लेकर

तब उसने गिड़गिड़ाकर कहा कि, भाई तू मुझे पकड़कर क्यों मौतके मुंहमें ले जाता है। यह सुनकर मिरजा हिन्दालके दिलमें दया आ गयी और उसने उसको घोड़ा देकर कहा कि, चले जाओ।

(१) यह शेबानीखां या मोहम्मदखां शेबानीकी औलादमें था। इसके घरानेको बाबरके घरानेसे पुरानी अदावत थी, इसलिये इसने मिरजा कामरांके आनेको गनीमत समझा और अपने अमीरोंको पेशवाईमें भेजकर बुलाया और अपने घरमें उतारा, खूब खातिर की। फिर उसके साथ बदखशांपर आया, जिससे यह मुराद थी कि, इनको आपसमें लड़ाकर खपा दें और इनका राज ले लें।

गौरीपर गया, लड़ाईके बाद वह किला हाथ आया। इतनेमें ही मिरजा कामरां और पीर मोहम्मदखांके बलखसे आनेकी खबर पहुंची। मिरजा लोग तो उनसे लड़ न सके, पहाड़ोंमें चले गये और कराचाखां काबुलको चल दिया।

बादशाह यह सुनकर बदखशांको रवाने हुए। गोरबन्दमें कराचाखां आता हुआ मिला, उसका असबाब रास्तेमें लुट गया था, इसलिये रुखसत लेकर काबुलको चला गया। बादशाह उसके आनेतक गांव गुलबारमें शिकार खेलते रहे। जब वह आया, तो वक्त निकल गया था; तो भी बादशाह हिन्दूकोहकी घाटीतक गये। आगे बर्फसे रस्ता बन्द देखकर लौट आये।

शाहजादेको पढ़ने बैठाना।

पुशव्वाल सन् ९५४ (मगसर सुदी ७ सं० १६०४ ता० २१ नवम्बर सन् १५४७) को शाहजादे अकबरकी उमर ४ वर्ष ४ महीने ४ दिनकी हो गयी थी, इसलिये बादशाहने उन्हें पढ़नेको बैठानेका एक अच्छा मुहूर्त्त अपनी और ज्योतिषियोंकी सलाहसे देखकर मुल्ला असामुद्दीन इब्राहीमको इस कामपर मुकर्रर किया। मगर जब मुहूर्त्त आया, तो शाहजादा कहीं जाकर ऐसा छिपा कि, ढूंढ़ा नहीं मिला। फिर मिला भी तो पढ़नेमें दिल नहीं लगाया और इसमें पढ़ानेवालेका कसूर समझा जाकर वह बेचारा दूर किया गया और यह काम मुल्ला बायजीदको सौंपा गया।

मिरजा कामरां बदखशांमें।

मिरजा कामरां जब बलख जानेका इरादा करके एबकमें पहुंचा था, तो वहांके हाकिमने अच्छा बरताव करके पीरमोहम्मदखांको खबर की। उसने मिरजाका आना गनीमत समझकर आदमी पेशवाईको भेजे और मिरजाको अपने घरमें ठहराकर खूब खातिर और महमानी की और उसके साथ बदखशांमें आया। मिरजा हिन्दाल और सुलेमान तो पहाड़ोंमें चले गये थे। पीरमोहम्मदखां मिरजा कामरांको कुछ फौजसे छोड़कर बलखको लौट गया।

मिरजाने कामम और तालकानमें आकर रफीफकोंको उजबक और चगत्ताई फौजसे, रोस्ताकमें छोड़ा। मिरजा सुलेमान और मिरजा इब्राहीम किले जफर और तालकाकी तरफसे रोस्ताकपर गये; मगर हारकर फिर पहाड़ोंमें चले आये।

बादशाह काबुलसे बदखशां जानेका इरादा कर रहे थे कि, कराचाखांने, जो बहुत मुंह लग गया था, कहलाया कि, खवाजा गाजी वजीरको बांधकर मेरे पास भेज दें, तो मैं उसका सिर उड़ा (१) कर खवाजा कासिमको उसकी जगह मुकर्रर करूं। मगर जब बादशाहने उसका कहना न माना, तो वह बागी होकर बदखशांको चल दिया। बाबूस, मुसाहबबेग, इसमाईलबेग दोलदी, अलीकुली इन्द्राबी, हैदर दोस्त मुगल, शेखमखवाजा खिजरी, कुरबान किरावल और ३००० सवार भी जो उसके बहकाये हुए थे, कुतल मिनारके रस्तेसे उसके पीछे चल दिये।

बादशाहने इस खबरके सुनते ही उसके पीछे जाना चाहा, मगर महूर्त न होनेसे ठहर गये और नौकरोंमेंसे जो आता गया, उसीको भेजते रहे। दोपहरको जब महूर्त आया, तो आप भी सवार हुए। जो लोग पहले गये थे, वे मोरी नदीपर कराचाखांसे जा भिड़े। मगर रात हो जानेसे वह निकल गया और गोरबन्दके पुलको भी तोड़ गया। ये लोग कराबागमें बादशाहके पास लौट आये। बादशाह भी काबुलमें वापस आ गये और कराचाखां हिन्दूकोहकी घाटीपर उतरकर कशममें मिरजा कामरांसे जा मिला।

---

(१) इस खफगीका सबब यह था कि, कराचाखांने, जो कुलमकुला वजीर था, १० तमान (८०० रुपये) किसी अमीरको दिलानेकी मञ्जूरी तो बादशाहसे ले ली थी; मगर खजानेके नाम यह हुक्म खुद ही लिख भेजा। खवाजा गाजी खजानेका वजीर था, उसने रुपया नहीं दिया और कहा कि, मेरे पास जो रुपया है, वह फौज खर्चका है, दूसरे किसीको देनेका नहीं है।

बादशाहने मिरजा हिन्दाल मिरजा सुलेमान और मिरजा इब्राहीमको तैयार रहनेका हुक्म लिखकर बड़े बूढ़ोंसे सलाह पूछी, तो किसीने कहा कि, कन्धारसे लड़ाईका सामान करके बदख्शां जाना चाहिये और किसीने कहा कि, सीधा बदख्शां जाना ही ठीक है। एक दिन मोहम्मद सुलतानसे पूछा कि, तू क्या कहता है? तो उसने अरज की कि, मिरजा इन नमकहरामोंके जानेसे घमण्डमें आकर जरूर इधरको तरफ कदम बढ़ायेगा, इसलिये जो बादशाही लशकर पहले ही हिन्दूकोहके घाटेसे उतर जावे, तो अपनी फतह हो, नहीं तो नहीं।

बादशाह इस सलाहको पसन्द करके ५ जमादिउल अव्वल सन् ९५५ (आषाढ़ सुदी ६ सं० १६०५ ता० ११ मई १५४८) सोमवारको कूच करके अलंगचालाकमें उतरे। वहांसे २ दिनमें कराबाग पहुँचकर १२ दिन रहे। हाजी मोहम्मदखांके बदल जानेकी अफवाह उड़ गयी थी, तो भी वह बन्दगीमें हाजिर हो गया। ऐसे ही कासिम सुलतान भी बंगशसे आ पहुँचा; उधर बदख्शांसे मिरजा इब्राहीम भी दौड़ा आया।

बादशाह एक दिन आफताबखाने (जलशाला) में खड़े थे और वहां एक सफेद मुर्गा रहा करता था। बादशाहने उसको देखकर अपने दिलमें कहा कि, जो यह हमारे कन्धेपर आ बैठे और बोले तो हमारी फतह है। इतनेहीमें तो वह उड़कर बादशाह कन्धेपर आ बैठा और बादशाहने खुश होकर उसके पांवमें चांदीकी पैजनियां पहना दीं।

एक और अच्छा शकुन यह हुआ था कि, जब मिरजा इब्राहीम इधर आने लगा था, तो पञ्जशेरके पास तिमरअलीगाली आड़े फिरा था, तब मलिकअली पञ्जशेरीने मिरजाकी मदद की और मिरजाने लड़कर तिमरअलीको मारा। फिर मलिकअलीको भी साथ लाना चाहा, मगर उसने जमींदारोंकीसी नासमझीसे इनकार कर दिया और बहुत कहा, तो लड़नेको तैयार हुआ। मिरजा

इब्राहीम उससे भी एक झड़प करके अकेला दरगाहमें आ गया। दूसरे दिन मलिकअलीने अपने भाईको भेजकर माफी मांगी और तिमरअलीका सिर भी भेजा। बादशाहने खिलअत देकर खातिर तसल्लीका फरमान उसको लिख दिया और मिरजा इब्राहीमको महरबानीसे बेटा कहकर मिरजा सुलेमानको तैयार रखनेके लिये आगे रवाने किया। मरयम मकानी और शाहजादेको गांव गुल-बारसे काबुलमें लौटा दिया और मोहम्मद कासमखां मोजीको काबुलकी हकूमत देकर उनके साथ भेजा।

फिर बादशाह कूच करके गांव वाजकमें पहुंचे, जो पञ्जशेरके तूमान (परगने) का था। काजी मोहम्मद बाबा कशका कासिम-हुसेन, सुलतान तरुहीबेग मोहम्मदकुली बरलास, अलीकुली सुलतान, मीर अबदुल लतीफ और हैदर मोहम्मद चूलीको आगे भेजा। ज्योंही ये हिन्दूकोहसे उतरे महदी सुलतान और तवही मोहम्मद जङ्ग जङ्ग इन्द्रावके किलेसे भाग गये। तरुहीबेग और मोहम्मद कुली बरलासको खोसत जानेका हुक्म हुआ कि, वहां जो बालबच्चे इन भगोड़ोंके हैं, उनको गिरफ़ार करें।

मिरजा कामरां उस वक्त किले जफरमें था। उससे रस्ता रोकने-के लिये सबने बहुत कहा ; लेकिन उसने कुछ नहीं किया। तब कराचाखांने मुसाहिबबेगको बालबच्चोंके लानेके लिये भेजा। तरु-हीबेग और मोहम्मदकुली खोसतके पास पहुंच गये थे, तो भी मुसाहिबबेग अपने सब साथियोंके जोरू बच्चोंको खोसतसे निकाल कर तालकामें ले गया।

जब बादशाह इन्द्राबमें पहुंचे, तो मिरजा हिन्दाल कुन्दुजसे आया। बादशाहने महरबानीसे सवारीपर चढ़े चढ़े ही सलाम करनेकी उसको इजाजत दे दी थी। वह शेर अलीको भी पकड़ कर लाया था, जिसने मिरजासे कुन्दुज छुड़ा लेनेके लिये चढ़ाई की थी। मगर बादशाहने उसकी पिछली खिदमतोंको देखकर उसे छोड़ दिया और खिलअत देकर गोरीकी हकूमत भी उसको

नाम बहाल रखी और मिरजा हिन्दालको हाजी मोहम्मदखां वगैरे-के साथ मिरजा कामरांके ऊपर भेजा।

जमादिउल आखिर सन् ६५५ (सावन सुदी सं० १६०५) में बादशाह गांव पश्च अलंगकाजियान परगने इन्द्राबमें जाकर ठहरे। वहां बदख्शांके बहुतसे सरदार सिपाही और मुसाहिबबेगके नौकर आकर हाजिर हो गये, वहांसे तालकांको कूच हुआ। वहां भागे हुए आदमी और मिरजा कामरांके; बहुतसे नौकर थे और मिरजा कामरां भी मिरजा हिन्दालका आना सुनकर आ गया था।

१५ जमादिउलसानी शनिवार सन ६५५ (भादों बदी १ ता०।२१ जुलाई १५४८) को खलसान नाम एक टीलेपर लड़ाई हुई। बादशाही लोग हारकर नदीसे उतर गये। मिरजाके आदमी उनः ा असबाब लूटने लगे। मिरजा टीलेपर खड़ा था कि, इतनेमें बादशाहकी सवारी उसी नदीसे उतरी और मिरजाके ऊपर गयी। मिरजा भागकर तालकांके किलेमें चला गया। मिरजा हिन्दाल और हाजी मोहम्मदखां उसके बहुतसे आदमियोंको पकड़ लाये। बादशाहने किसीको छोड़ा किसीको मारा। दूसरे दिन किलेको घेरा और मुसाहिबबेगका भाई मुबाजरबेग गोलेसे मारा गया। बादशाहने अफसोस करके कहा कि, इसके बदलेमें मुसाहिबबेग क्यों नहीं मारा गया और मिरजा कामरांको महर बानीसे फरमान भेजकर लिखा कि, भाई इस लड़ाईसे बाज आ। शहर और लशकरके लोगोंपर रहम कर। आज जो ये इतने आदमी मारे जायंगे, तो इनका खून काल तेरी गरदनपर होगा। मिरजाने ज.वाबमें लिखा कि, "मुल्करूपी दुलहनको वही अपनी बगलमें खैंचकर लेता है कि, जो तेज तलवारोंका चुम्बन करता है।"

बादशाहने मिरजाके बुरे दिन देखकर घेरा और सख्त किया। मिरजा सुलेमान और इब्राहीम भी बहुत सी फौज लेकर आ

गये ; कोलाबसे चाकरखां भी अपने आदमियों समेत आया।

एक महीने पीछे जब मिरजा कामरांको बहुत तङ्गी पहुंची और पीर मोहम्मदखां उजबककी मददसे भी नाउम्मेदी हुई, तो एक चिट्ठी तीरसे बांधकर बादशाही लश्करमें फेंकी, जिसमें लिखा था कि, मैंने हजरतकी महरबानियोंका गुण नहीं माना, इससे बहुत पछताता हूं। पर अब जो मक्के जानेकी रुखसत मिल जावे तो अपने किये हुए पाप धोकर फिरसे बन्दगीमें आनेके लायक हो जाऊं। मीर अरबमक्कीको मेरे पास भेजिये।

बादशाहने मीरको किलेमें भेजा। मीरने मिरजाके सब कसूर उसकी जबानसे कबूल कराकर कहा कि, उठो बादशाहके पास चलो। मिरजा मीरके साथ हो गया। जब किलेके दरवाजे-पर पहुँचे तो मीरने कहा कि, तुम्हारी सफाई मैंने देख ली कि, तुम दुश्मनी छोड़कर चौखट चूमनेको चलते ही हो। मगर जो अमीर भाग आये हैं, उनको मुश्कें बांधकर दरगाहमें भेजो और बादशाहके नामका खुतबा पढ़ाओ। फिर भले ही परभारे मक्के-को चले जाना। मिरजाने कबूल करके कहा कि, हजरतसे इतनी अरज करो कि, बाबूसको मेरे पास छोड़ दें। यह मेरे पुरानोंमेंसे है और मैंने जो कुछ इसके साथ बुरा किया उसका बदला देना चाहता हूं।

बादशाहने भी मिरजाके कसूर माफ करके जो मीरने उसके वास्ते कहा, वही मञ्जूर कर लिया।

१२ रज्जब सन् ९५५ (भादों सुदी १३ ता० १७ अगस्त) जुमे-के दिन मौलाना बाकी सदरने किलेमें बादशाहके नामका खुतबा पढ़ा। बादशाहने एक बागमें ठहरकर काजी मोहम्मदको कुछ लोगोंसे भेजा कि, मिरजाको थोड़ेसे आदमियोंसे, जो मुकर्रर हो चुके हैं, निकल आने दे और अली दोस्तखां बारबेगी अमीरा दर-वाजेका बन्दोबस्त करके बाजे बाजे अमीरोंको पकड़ लावें।

जब मिरजा कामरां उन्हीं गिनतीके आदमियोंसे निकल कर जाने लगा, तो मिरजा इब्राहीमके एक नौकरने अपना घोड़ा मिरजा कामरांके एक खिदमतगारके पास देखकर मिरजा इब्राहीमको खबर की। उसने अपने आदमी भेजकर वह घोड़ा छिनवा मगवाया। बादशाह इस बातसे नाराज हुए। मिरजा इब्राहीम तो शर्मिन्दगी और ओछेपनसे बेपूछे ही काशमको चला गया और हाजी मोहम्मदपर भी खफगी हुई कि, क्यों तूने जान बूझकर ऐसी हतक मिरजाकी की और मिरजाको खिलअत घोड़ा और राजी करनेका फरमान भेजा।

कुछ रात गयी थी कि, कराचाखांको गरदनमें तलवार डालकर लाये। बादशाहने मशालकी रोशनीमें देखकर तलवार गलेसे निकलवा दी और कसूर माफ करके तुर्की बोलीमें कहा कि, नौकरीमें ऐसे कसूर होते ही आये हैं।

फिर मुसाहिबबेग तरकश और तलवार गलेमें डाले हुए आया। जब मशालके पास पहुंचा, तो उसके गलेसे तलवार और तरकशके निकाल लेनेका हुक्म हुआ। फिर इसी तरहसे कराचाखांका बेटा सरदारबेग भी लाया गया। बादशाहने फरमाया कि, कसूर बड़ोंका है, छोटोंका क्या कसूर। ऐसे ही बारी बारीसे सब अमीर आये और बखशे गये। सबके पीछे कुरबान करावल शर्मिन्दगीसे सर झुकाये हुए आया। बादशाहने तुर्कीमें फरमाया कि, तुझपर क्या बला आयी थी, तू क्यों गया? उसने भी तुर्कीमें जवाब दिया कि, जिनका मुंह कुदरतने काला कर दिया हो, उनसे क्या पूछना चाहिये? हसनकुली मोहरदारने, जिसको हर वक्त बोलनेकी छूट थी, एक शेर पढ़ा, जिसका यह मतलब था—

खुदा जिस चरागको रोशन करता है (उसपर)
जो कोई फूंक मारता है उसकी दाढ़ी जल
जाती है।

यह सुनकर सब अमीर और खास करके कराचाखां जिसकी लम्बी दाढ़ी थी, शर्मिन्दा हुए।

दूसरे दिन बादशाह तालकांकी नदीपर, जहां अच्छी रमणीक जगह थी, जा रहे।

१७ रज्जब बुध (आसोज बदी ३ ता० २२ अगस्त) को मिरजा कामरां बादशाहकी खिदमतमें आया। यह अजब बात इस तौरसे हुई कि, मिरजा कामरांने बादामके दरेमें मिरजा अब्दुल्लाहसे बादशाहकी बहुतसी इनायतोंकी बहुत तारीफ की। उसकी इतने कसूरोंपर भी माफी कर देनेका बहुत बड़ा तअज्जब था। मिरजा अबदुल्लाहने पूछा कि, जो तुम बादशाहकी जगह होते, तो क्या करते? उसने कहा कि, मुझसे कभी इतनी बरदाश्त नहीं हो सकती थी। अबदुल्लाहने कहा कि, अभी तो बात तुम्हारे हाथमें है। मिरजाने पूछा वह कौन बात है। अबदुल्लाहने कहा कि, आज हम ऐसी जगह हैं कि, जहां बादशाहका हाथ नहीं पहुंच सकता है। अगर थोड़े आदमियोंसे बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होकर शुक्रिया अदा करें और अपने कसूरोंकी माफी मांगें, तो हमारी कैसी बड़ी खिदमत हो। मिरजा कबूल करके गिनतीके आदमियोंसे चल खड़ा हुआ। जब उद्दूयमोअल्ला (बादशाहीकैम्प) के पास पहुंचा, तो बाबूसको खबर देनेके लिये भेजा। बादशाहने खुश होकर पहले तो मुनअमखां, तरदीबेग, मीर मोहम्मद मुनशी, हसनकुली सुलतान मोहरदार, बालतूबेग, तवाचीबेगी और ताखचीबेग वगैराको भेजा। फिर कासिमहुसेन, सुलतान शेबानी खिजर खूवाजा सुलतान, इसकन्दर सुलतान, अलीकुलीखां बहादुरखां और और कई अमीरोंको जानेका हुक्म दिया। तीसरे अरतिबे मिरजा हिन्दाल मिरजा असकरी और मिरजा सुलेमान पेशवाईमें गये। इस दिन मिरजा असकरीके पांवसे बेड़ी खोल दी गयी थी।

दूसरे दिन बादशाहने तखतपर बैठकर बड़ा दरबार किया। मिरजा कामरां तसलीमात और सिजदे (दण्डवत) करता हुआ आया। बादशाहने महरवानीसे कहा कि, तोरा (कायदा) तो हो चुका। आओ अब भाइयोंकी तरहसे मिलें। फिर मिरजाको कानोंसे लगाकर ऐसे फूट फूटकर रोये कि, सब लोगोंके दिल भर आये और बहुत इज्जतसे दहने हाथको बैठनेका इशारा किया। जब मिरजा बैठा, तो तुर्कीमें फरमाया कि, पास बैठो। मिरजा सुलेमानको बांयें हाथपर बैठनेका हुक्म हुआ। ऐसे ही और सब मिरजा और अमीर अपने अपने रुतबेसे दायें बायें बैठाये गये। हसनकुली मोहरदार, मीर मोहम्मद मुनशी, हैदर मोहम्मद और मकसूदबेग आखता वगैरा पास रहनेवाले दङ्गलमें (१) खड़े हुए। बड़ी मजलिस जुड़ी। कोच कराचकी, मुबलिसकबूजी, हाफिज सुलतान मोहम्मद रखना, ख़्वाजा कमालउद्दीन हुसेन हाफिज़ महरी और तमाम गवैये कोरके (२) पास बैठकर गाने लगे। काकरअली, शाहमबेग जलायर और तुर्क चीन वगैरः कोरके खड़े रहे। तरह तरहके खाने और मेवे बादशाही कायदेसे लाये गये। शामतक यह दरबार रहा।

बादशाहने मिरजासे बहुतसी बातें प्यारकी कहीं और मिरजा असकरीको भी उसे सौंपकर डेरेपर जानेकी इजाजत दी, जो बादशाही सरकारसे दौलतखानेके पास ही उसके लिये लगाया गया था।

दूसरे दिन बादशाहने बलखपर चढ़ाई करनेके वास्ते मिरजाओं और अमीरोंसे सलाह की। हरेकने अपनी अपनी समझके मुवाफिक जवाब दिया। बादशाहने फ़रमाया कि, जब सवारी नारीमें पहुंचेगी तो जो ठीक बात होगी की जायगी।

(१) कटहरा।

(२) बादशाही हथियार, हथियारोंका मारका।

नारी बदख्शांका एक गांव है कि, जहांसे बलख और काबुल-का रस्ता फटता है।

चौथे दिन वहांसे कूच होकर अशकामशके पास बन्दकुशा नाम ज़मीनपर डेरे हुए। यहीं पहले एक दफे बाबर बादशाह भी उतरे थे। खान मिरज़ा और जहांगीर मिरज़ा उनकी खिदमतमें हाजिर हुए थे। उन्होंने अपने आने और भाइयोंकी ताबेदारी करनेकी तारीख और हकीकत एक पत्थरपर खुदा दी थी। उसी पत्थरपर बादशाहने भी अपने आने, कामरां मिरज़ाकी बन्दगी करने और भाइयोंके जमा होनेकी तारीख और कैफियत खुदवा दी। वहांसे कसबे नारीमें आकर खतलानका जिला तोमीक और करातगीनकी सरहदतक मिरज़ा कामरांको इनायत किया और चाकरखांको उसका अमीरुल उमरा बनाकर उसके पास तई-नात कर दिया। मिरज़ा असकरीको भी मिरज़ा कामरांके साथ करके करातगीनका इलाका बखशा।

किला जफर तालकां और कई परगने मिरज़ा सुलेमान और मिरज़ा इब्राहीमको दिये कुन्दुज, गौरी, कहमर्द, बकलान, अश-कामश और नारी मिरज़ा हिन्दालके पास रखे और शेरअलीको उसके साथ किया। इसतरह बादशाहने मिरज़ाओंको जागीरें देकर और उनसे कौल कसम लेकर शरबतका प्याला मंगाया और उसमें थोड़ासा पीकर मिरज़ा कामरांको दिया और कहा कि, हरेक मिरज़ा अपने अपने दरजेसे बादशाही उलश (जूठन) लेवें और आपसमें प्यार और भाईचारा कर लें। फिर सबको नक्कारे निशान, मिरज़ा कामरां मिरज़ा सुलेमान और मिरज़ा हिन्दालको तुमन और तौग दिये। सब मिरज़ा अपनी अपनी जागीरको रुखसत हुए। बलखकी चढ़ाई अगले वर्षपर ठहरी। बादशाह खोसतमें आ गये और फिर किले परयानके रस्तेसे काबुलको रवाने हुए। यह किला अमीर तैमूरने कत्तूरके हिन्दुओंको सजा देकर बनाया था। बादशाहने १० दिन वहां

ठहरकर उसकी मरम्मत की, कुछ बुर्ज उसमें नयी बनवायी। उसका "इसलामाबाद" नाम रखा और बेगमीरको वहांकी हकूमतपर छोड़कर चांदीकी खान देखने गये, मगर वहां आमदनी खर्चके बराबर न पाकर पञ्जशेरकी नदीसे उतरे और कुतुलउश्तरके घाटेसे काबुलमें पहुंचकर महूर्त्त न होनेसे शहरके बाहर ठहरे रहे। शाहजादा अमीरों समेत पेशवाईमें आया।

२ रमजान शुक्रवार (कातिक सुदी ४ अकतूबर ५) को महूर्त्त आनेपर काबुलमें दाखिल हुए। मिरजा हैदरकी अरजी कशमीरसे आयी; जिसमें कशमीरके फूलों और मेवोंकी बहुत तारीफ लिखी थी। कशमीरमें आकर हिन्दुस्थान फतह करनेकी तजवीजें भी अरज की थीं। बादशाहने जवाबमें बहुत खातिर और महरबानी लिख भेजी।

ख्वाजा मोअज्जम उलग मिरजाको जमीनदावरसे हजारा जातिके लोगोंपर चढ़ा ले गया, जो लूटमार किया करते थे। मगर मिरजा लड़ाईमें मारा गया और बादशाहने तरदी मोहम्मदखांको जमीनदावरकी हकूमतपर भेजा।

काशगरके हाकिम सुलतान सईदखांके बेटे अबदुलरशीदके वकील तुहफे लेकर आये और जलदीसे रुखसत न होकर चले गये।

अव्वास सुलतान, जो उजबक जातिके शाहजादोंमेंसे था, बादशाहकी खिदमतमें आया। बादशाहने अपनी छोटी बहन गुलचहरा बेगम उसको व्याह दी।

बलखकी मुहिम।

सन् ९५६ (फागुन फरवरी १५४९) के लगते ही बादशाहने बलखपर सवारी करके मिरजा कामरां, मिरजा हिन्दाल, मिरजा सुलेमान और मिरजा इब्राहीमके नाम शामिल होनेके वास्ते हुक्म लिखा। मीरतचालाकसे मिरजा कामरांके लानेको कोलाबमें आदमी भेजा। मिरजा इब्राहीम जलदीसे आकर हाजिर हो

गया। जब बादशाह अस्तालकमें पहुंचे अब्बास (१) सुलतान उजबक भाग गया। बादशाह पञ्जशेरकी रस्तेसे कुन्द्रावमें पहुंच कर ३ दिनतक अमीर तैमूरके बनाये हुए महलमें रहे। वहांसे नारी और नारीसे नीलके जङ्गलमें डेरे हुए। यहां मिरजा हिन्दाल और मिरजा सुलेमान हाजिर हो गये। मिरजा इब्राहीम तो बदख्शानकी हिफाजतपर भेजा गया और वकलानके मुकामसे मिरजा हिन्दाल और मिरजा सुलेमानको आगे जाकर उजबकोंसे एबकके फतह करनेका हुक्म हुआ, जो बलखके आबाद शहरोंमेंसे था।

शेर मोहम्मद यशावल एक चीता तीरसे मारकर लाया। हुसेन कुली मोहरदारने कहा कि, तुर्क लोग चढ़ाइयोंमें चीता मारने-को अच्छा नहीं समझते हैं। जब मुझे बेरम औगली कैद करके बलखके हाकिम कितनकराके पास ले गया था, तो एक आदमीने चीता मारा था, इसी सबबसे वह चढ़ाई घटाईमें पड़ गयी थी। मगर बादशाहने इस बातपर कान नहीं दिया और बलख लेनेका पूरा ध्यान रखा।

पीर मोहम्मदखांने अपने अतालीक ख्वाजा माककी बहुतसे आदमियोंसे एबकवालोंकी मददके वास्ते भेज दिया था, मगर बादशाहके पहुंचनेपर ३ दिनके घेरेमें किला फतह हो गया और किलेवाले सब बादशाहकी खिदमतमें लाये गये।

बादशाहने बड़ा दरबार करके अतालीकसे तूरान लेनेकी सलाह पूछी। उसने अरज की कि, ऐसी बातोंका हम लोगोंसे पूछना क्या जरूर है। बादशाहने फरमाया कि, हम तुझमें सचाई देखकर पूछते हैं, जैसा कुछ तेरी समझमें आवे बेधड़क अरज कर दे। उसने कहा कि, पीर मोहम्मदखांके पास जो

(१) अब्बास इसलिये भागा कि, यह चढ़ाई उसके भाइयोंपर होती थी।

कामके आदमी थे, वे तो आपके हाथ आ गये हैं। इनको मार कर कूच करें। तूरान बगैर लड़ाईके कब्ज़ेमें आ जायगा। बादशाहने कहा कि इन लोगोंको तो हम पनाह दे चुके हैं; फिर अपने कौलके खिलाफ कैसे करें। अतालीकने कहा कि, आप जो यह बात ठीक नहीं करते हैं, तो मुझे कैद रखकर सुलह कर लें। खुलमसे इधर उधरका मुल्क आपको मिल जायगा और जब हिन्दुस्थानपर चढ़ाई होगी, तो बहुत लोग खिदमतमें रहकर अच्छा काम देंगे। मगर इन दोनोंमेंसे एक बात भी न हुई। बादशाह एबककी मेवोंपर रीझकर वहीं ठहर गये। मिरजा कामरांके आनेका भी इन्तज़ार था। कहते हैं कि, यह ढील न होती, तो पीर मोहम्मदखांमें लड़नेकी ताकत नहीं थी, या तो वह हार जाता, या बादशाहकी मनचाही सुलह कर लेता। क्योंकि अबदुल अजीजखां और खानान उजबक (उजबक सरदार) उसकी मददको नहीं पहुंच सकते थे। मगर देर हो जानेसे वे लोग औसान पाकर पीर मोहम्मदखांके पास पहुंच गये। बादशाहने उजबक सरदारोंको तो, जो कैद थे, काबुलमें भेज दिया और अतालीकको साथ रखकर खुलमके रस्ते-से बलखपर गये। दो तीन दिन पीछे खुलमसे आगे बढ़कर बाबाशक्कूमें और उसके दूसरे दिन आस्तानेमें पहुंचे। उधरसे वक्कास सुलतान और शाह मोहम्मद सुलतान बहुतसे उजबकोंसे लड़ने आये। लड़ाईमें बादशाही फौज जीती और अबेकन औगलान, जो एक नामी उजबक सरदार था, पकड़ा आया। दूसरे दिन फिर उजबक चढ़कर आये। उबैदुल्लाहखांका बेटा अबदुल अजीजखां तो बीचमें था। पीरमोहम्मदखां उसके दहने और सुलतान हिसारी बायें हाथपर था।

बादशाह भी अपना लश्कर सजाकर आप बीचमें रहे। मिरजा सुलेमानको दायें और मिरजा हिन्दालको बायें रखा। किराचाखां, हाजी मोहम्मदखां, तरदीबेग, मुनअमखां और

सुलतान हुसैनबेग जलायर हिरावलमें थे। लड़ाई दोपहर पीछे शुरू होकर शाम तक होती रही। बादशाही फौजने उजबकोंके हिरावलको उठाकर बलखके पासतक हटा दिया। बादशाहने पीछा करना चाहा, मगर अमीरोंने कपटसे अपना लशकर थोड़ा और गनीमका बहुत बताकर बादशाहको नहीं जाने दिया और यह भी कहा कि, मिरजा कामरां काबुलपर गया है; हमारे बालबच्चे कहीं पकड़े न जायं। बादशाहने अमीरोंको फूटसे हाथमें आये हुए बलखको छोड़कर हिरावलको वापस बुला लिया और मिरजा (१) सुलेमानको चन्दावल करके मिरजा कामरांकी खबर आनेतक काज (गज) के घाटेमें रहनेके लिये कूच किया। यह घाटा काबुलको तरफ था, इसलिये बहुतसे आदमी भागकर काबुल चल दिये। बादशाहने उनके लौटानेकी बहुत कोशिश की मगर नहीं लौटे। उजबकोंने (२) पीछा किया, बाद-

(१) बायजीदने, जो इस लड़ाईमें हाजिर था, यह हाल यों लिखा है कि, उजबकोंके भाग जानेपर बादशाहने रातको अमीरोंसे सलाह पूछी, तो सबने यही कहा कि, कामरां, जो यहां नहीं आया है, जरूर काबुलको गया होगा; काबुलके वास्ते बलखको छोड़ देना चाहिये; क्योंकि सबके जोरू बच्चे वहीं हैं। इधर उबेदखांका बेटा अबदुल अजीजखां, जो उजबकोंमें सबसे बड़ा खान है, बुखारेसे आ रहा है; अभी आमूया नदीसे नहीं उतरा है। सिपाहीसे लेकर बादशाहतक सबके दिलमें काबुलका खटका लगा हुआ था। आधी रातको कौनसल उठी और काबुलको लौट चलनेकी सलाह ठहरी।

(२) बायजीदने इस हालको तफसीलसे लिखा है। हम उसका भी खुलासा यहां लिखते हैं। उजबकोंने पीछा करके बादशाहको काज (गज) के घाटेमें आ मिलाया और उनकी फौजको काट डाला। बादशाह फौजसे कुछ दूर नदीके पार थे। वहां

शाहका घोड़ा तीरसे मारा गया। हैदर मोहम्मद आखताने अपना घोड़ा दिया। बादशाह उसपर सवार होकर बच निकले। उस वक्त बहुतसे साथी बेशरमामोसे इधर उधर चले गये और इतने साथ रहे।

उनके पास खबर आयी कि, उजबक मिरजा हिन्दालके पास जा पहुंचे हैं और मलिक मिरजा मारा गया है। बादशाह यह सुनकर बहुत घबराये, पर मिरजा हिन्दाल नहीं घबराया। उसने मोहरदारसे कहा कि, बादशाह बचे नहीं हैं, वक्तपर आ जावेंगे। बादशाह भी नदीसे उतरकर उधर जाना ही चाहते थे कि, उजबकोंने किनारेपर आकर एक ऊंची जगहसे तीर मारा। बायजीदने उसको ढालसे रोका, तो भी वह घोड़ेके जा लगा। हैदर मोहम्मद आखताने अपना घोड़ा बादशाहको दिया। उजबकोंने बादशाही फौजको मार भगाया। बादशाहने कुछ दूर चलकर हुसैनकुली मोहरदारको हुक्म दिया कि फौजको, जो बिखर गयी है, जमा करके उजबकोंसे लड़ो। उसने कहा कि, अब तो यही अच्छा है कि, जो आदमी हजरतके साथ हैं, यही आगे चलें; क्योंकि, न ये हजरतको छोड़ेंगे और न वे उलटे फिरेंगे। इस वक्त एक आदमी भी मेरा हुक्म नहीं सुनेगा। बादशाहने फरमाया कि, और तो क्या, तूही अब मेरे हुक्मको नहीं सुनता है। उसने कहा मेरा कसूर माफ हो और बायजीदको साथ लेकर भगोड़े अमीरोंके पीछे गया और उनसे बहुत कहा कि, लौटकर उजबकोंसे लड़ो। मगर खिजर ख्वाजा, मुसाहिबबेग, मोहम्मद कासिम कोरची, शाहमबेग, कलायर वगैराने उसकी एक नहीं सुनी कि, क्या बकता है। इनमेंसे हरेक दूसरेके घोड़ेको अपनी तरफ खेंचता था। मोहरदार लाचार होकर दोपहरको बादशाहके पास चला आया। बादशाहने उसकी नमकहलालीकी बहुत तारीफ की।

१ मिरजा हिन्दाल।
२ मिरजा सुलैमान।
३ किराचाखां।
४ हाजीमोहम्मदखां।
५ मोहम्मद कासिम मोजी।
६ तरुदीबेगखां।
७ मुनअमखां।
८ खिज़र ख्वाजा सुलतान।
९ मोहम्मद कुलीखां।
१० कासिमहुसैन।
११ सिकन्दरखां।
१२ शाहकुली नारञ्जी।
१३ लुतफुल्लाह स[illegible]रन्दी।
१४ हैदरमोह[illegible] आख्ताबेगी।
१५ अवदुल्ला[illegible] उजबक।
१६ हुसैनकुलीखां मोहरदार।
१७ मोहबअलीखां।
१८ मीर खलीफा।
१९ सुलतानहुसैन।
२० बाबतू सुलतान।
२१ मुसाहबबेग।
२२ शाह बेदागखां।
२३ शाहबेग जलायर।
२४ अबदुल वहाब ओजी।
२५ बाकी मोहम्मद परवानची
२६ खालिदीन।

३ दिन पीछे बादशाहने यखचार चश्मेपर पहुंचकर एक खर्त

शाहआदेको भेजा। दूसरा काशगरके हाकिम रशीदखांको लिखा, जिसका यह आशय था कि, बदनीयत भाई मोहम्मद कामरांके मोहब्बत छोड़ देने और बहुतसे साथियोंके चले जानेसे बलखकी मुहिम मनचाही पूरी न हुई।

फिर वहांसे एक रात गोरबन्दमें रहकर दूसरी रात ख़्वाजे सई-यारांमें रहे। वहांसे किराबाग और किराबागसे काबुल (१) पहुंचे। मिरजा सुलेमान बदख़शांको और मिरजा हिन्दाल कुन्दुजके रस्ते-से ही चला गया। मुनअमखां मिरजा हिन्दालके साथ हो लिया। शाह बदागखां मीरअली बख़शी ख़्वाजा नासिरुद्दीन अली मस्तोफी मीरमोहम्मद मुनशी, मीरजानबेग, मीर इमारत और ख़्वाजा मोहम्मद अभाज्रुंग पकड़ गये, बाकी लोग सब बचकर चले आये। जब अतालीक वगैरा उजबक, जो एबककी लड़ाईमें पकड़े गये थे, छूटकर अपने देशको गये, तो पीरमोहम्मदखांने बाद-शाही नौकरोंको भी अच्छी तरहसे काबुलमें पहुंचा (२) दिया।

बादशाहने काबुलमें रहकर अपने मुल्कका बन्दोबस्त किया। ख़्वाजा सुलतानअली (अफजलखां) खजानेके दारोगाको खर्च-का दीवान और ख़्वाजा मिरजाबेगको जमाका दीवान बनाया। ख़्वाजा अब्दुल समद और मीर सैयदअली, जो तसवीर उतारने और नकशा खेंचनेमें बड़े उस्ताद थे, बादशाहके पास आकर नौकर हो गये।

(१) बादशाह एक रमजान (आसोज सुदी २ सं० १६०६ ता० २३ सितम्बर १५४९) को काबुल पहुंचे थे।

(२) बादशाहने अतालीक और दूसरे कैदियोंको, जो एबकमें पकड़े गये थे, छोड़ दिया। जब उन्होंने वतनमें जाकर बादशाह-के नेकबख्तीकी तारीफ पीरमोहम्मदखांसे की तो, उसको बड़ा अचम्भा हुआ और उसने भी मेहरबान होकर बादशाही आदमियों-को, जो उसके पास कैद थे, काबुलमें भेज दिया।

मिरजा कामरांका हाल।

मिरजा कामरांने हुन्दावमें जानेके पीछे मिरजा चाकरबेग कोलाबीको बदसलूकीसे निकाल दिया और बादशाहसे आनेके झूठे इकरार करता रहा। जब बादशाह-बलखको रवाने हुए, तो उसने फिर काबुलपर आनेका इरादा किया और उसीके दम-झांसोंसे अमीरोंने भी उस मुहिममें अच्छी तरहसे तनदिही नहीं की थी।

जब बादशाह काबुलमें लौट आये, तो मिरजा कामरां मिरजा असकरीको कोलाबमें छोड़कर मिरजा सुलेमानसे लड़ने गया। मिरजा सुलेमान बगैर लड़े ही तालकांसे किलेजफरको चल दिया। मिरजा कामरां बाबूसको तालकांमें छोड़कर किलेजफर-पर गया। मिरजा सुलेमान और इब्राहीम, इसहाक सुलतानको किलेजफरमें छोडकर बदख़शांके पहाडोंमें जा बैठे। तब मिरजा कामरांने कुन्दुजको जा घेरा। मिरजा हिन्दाल इतना लड़ा कि, कामरांने लाचार होकर उजबकोंको अपनी मददपर बुलाया। मिरजा हिन्दालने फरेबसे एक कागज मिरजा कामरांकी तरफसे अपने नाम आपसमें मेल करने और उजबकोंको धोखा देनेका लिखाकर उजबकोंमें डलवा दिया। उजबकोंने उसके पढ़नेसे यह जाना कि, ये तो एक होकर हमको मारा चाहते हैं, अपना रस्ता लिया। उधर चाकरबेगने कोलाबको घेरकर मिरजा असकरीको हराया और मिरजा सुलेमान भी किलेजफरमें आ गया।

मिरजा कामरां यासीन दौलत और बाबूसको कुन्दुजके घेरेपर छोड़कर कोलाबकी तरफ गया। चाकरबेग तो अलग हो गया मिरजा असकरी आकर मिला। मिरजा कामरां उसको लेकर मिरजा सुलेमानके ऊपर गया। जब रस्ताकके पास पहुंचा, तो बहुतसे उजबक मिरजा कामरांके उर्दूपर जा पड़े। उर्दू लुट गया। मिरजा कामरां मिरजा असकरी और अबदुल्लाह मुगल कुछ आदमियोंसे तालकांमें आ गये। उजबकोंके अफसर सईद-

बेगने मिरजाके कबीलोंको तो बड़ी इज्जतसे भेज दिया और असबाब जो लुट गया था, उसकी माफी मांग ली। अब मिरजा हिन्दाल और मिरजा सुलेमान मिरजा कामरांपर चढ़कर आये। मिरजा बदख्शांमें रहनेका मौका न देखकर खोसत जुहाक और बामियोंमें होता हुआ हजारा लोगोंके इलाकेमें पहुंचा और कपटी अमीरोंके दममें आकर बादशाहको अरजी लिखी कि, अपना कसूर माफ कराने आया हूं। बादशाहने तो अपने दिलकी सफाईसे इसको सच समझा था, मगर खैरख्वाहोंने सुझाया कि, मिरजाका आना इल्लतसे खाली नहीं है। इसपर बादशाह सन् ९५७ (संवत् १६०७ सन् १५५० ई०) में शाहजादेको काबुलमें छोड़कर गोरबन्दको रवाने हुए। कराचाखां और मुसाहिबबेगने मिरजा कामरांको लिखा कि, बहुतसे आदमी आपका रस्ता देख रहे हैं। हम उनको बादशाहसे अलग कर देंगे और जब बादशाह कराबाग और चारे कागनमें होते हुए आबेबारानमें पहुंचे, तो कराचाखां और मुसाहिबबेग वगैरा नमकहरामोंने अरज की कि, पहाड़का मामला है, घाटियां कई एक हैं; मिरजाके पास थोड़ेसे आदमी होंगे; इसलिये बादशाही बन्दोंको कई नाकोंपर भेज देना चाहिये, जो मिरजा किसी रस्तेसे भी न निकल सके।

बादशाह इन नमकहरामोंका मतलब न समझकर हाजी मोहम्मदखां कूकी वगैराको जुहाक और बामियांमें और मुनअमखां वगैराको तालकानमें भेजकर जमी हुई फौज बखेर दी। कराचाखां मुसाहिबबेग और कासिमहुसेन सुलतान वगैरा जो रहे, सो वे रोज रोजका हाल लिखकर मिरजा कामरांको भेजते थे और उसकी तरफसे बादशाहको यही दम देते थे कि, इस दफे मिरजाके दिलमें ताबेदारीके सिवाय और कोई बात नहीं है।

मिरजा इन लोगोंकी बेईमानीसे मदद पाकर जुहाक और बामियांके रस्तेसे गोरबन्दके परगनेमें कबचाकके दर्रेसे जा निकला। उसने अपनी फौजकी दो टुकड़ियां की थीं। यासीनदौलत, मुकद्दम

कोका और बाबा सईद तो आगे आगे थे और आप बीचमें था।

दोपहरके वक्त एक किसानने हाजिर होकर मिरजाके आने और उसके इरादेकी बादशाहको खबर दी। कराचाखांने अरज की कि, ऐसे कमीनोंकी बात माननेसे उन लोगोंका दिल टूट जायगा। जो इस खबरके ऊपर चढ़ाई की जावे और मिरजा कामरांको खबर पहुंचे, तो वह बन्दगीसे बाज आवेगा।

इतनेमें ही तो मिरजाके आनेकी खबरें पहुंचते पहुंचते मिरजा भी आ पहुंचा। बादशाह लड़नेको तैयार हुए; पीरमोहम्मदखां आखता और मोहम्मदखां जलायर वगैरा हरके जाकर आगे लड़े। आखता मारा गया, मिरजा कुली भी जखमी होकर गिरा, उसके बेटे दोस्त मोहम्मदसे यह नहीं देखा गया। बापके मरते मरते उसके मारनेवालेको मारकर आप भी जखमी हो गया।

बादशाह एक ऊंची जगहपरसे अपने नमकहलालोंको काम आते और नमकहरामोंके झुण्डके झुण्ड मिरजाकी तरफ जाते देखकर भेदको (१) आ गये और गुस्सेसे बरछा तानकर दुशमनोंपर दौड़े। वे लोग उनकी धावासे बिखर तो गये, मगर कहींसे एक तीर सवारीके घोड़ेपर आकर लगा और बाबाबेग कोलाबीने जानकर या बेजाने हुए पीछेसे तलवार मारी। बादशाहने मुड़कर

(१) बायजीदने लिखा है कि, बादशाहके बन्दूकचियोंने बन्दूकोंमें गोलियां नहीं भरीं। कासिमहुसेन दरियाके दूसरी तरफ था। उसके आगे रस्ता साफ था और धावा कर सकता था, लेकिन उसने भी धावा नहीं किया। मिरजा कामरां भी अपनी बेगमों और बेटियों समेत एक ऊंची जगहपर चढ़ आया था, बादशाहकी भगई छीननेको दौड़ा। भगड़ेवालोंने जब कोई इलाज न देखा, तो उलटे भागे और कासिम हुसेन भी अपने लशकर सहित भाग आया।

गुस्से की नजरसे देखा, तो उसके हाथ पांव फूल गये। महतर (१) सकाहीने आकर उसको भगा दिया और मिरजा निजातने अपना अबलक घोड़ा बादशाहको नजर किया। बादशाहने उसपर सवार होकर अपना घोड़ा उस मिरजाको दे दिया। अब्दुल वहाब यसावलने अमीरोंके मिरजा कामरांसे मिल जानेका पूरा हाल अरज करके बादशाहके घोड़े की बाग पकड़ी और कहा कि, अब धावेका कौन वक्त है। बादशाह जुहाक और बामियांकी तरफ चल दिये। थक जाने और जखमी होनेकी तकलीफसे अपना बकतर उतारकर सबुदलखांको सौंपा। उसने नासमझीसे गिरा (२) दिया।

दूसरे दिन बहुतसे नौकर बादशाहके पास आ गये। बादशाहने शाह बदागखां, तोलक कोचोन और मजनूंखां काकशाल वगैरा दस आदमियोंको काबुलकी खबर लानेके लिये भेजा; जिसमेंसे तोलक कोचोनके सिवाय और कोई नहीं लौटा। बादशाहने खुश होकर उसको कोरबेगीका काम दिया और मोतबर नौकरोंको बुलाकर सलाह की। हाजी मोहम्मदखां जागीरदार गजनीनने तो कन्धार चलनेकी सलाह दी, मगर बादशाहको मंजूर न हुई तब और लोगोंने बदख्शां चलकर मिरजा सुले-

(१) इसको अकबर बादशाहने फरहतखांका खिताब दिया था।

(२) बादशाह धावसे ऐसे कमजोर हो गये थे कि, घोड़ेकी तेजी नहीं सह सकते थे, इसलिये मीरबिरकाका टट्टू अपना घोड़ा देकर लिया। मीरबिरका और ख्वाजा खिजर दोनों तरफसे टट्टूपर उनको पकड़े जाते थे। पिछली रातको अरतानके घाटेमें पहुंचे तकलीफसे कांपने लग गये थे। मी० बिरकाने अपना बकतर उनपर डाला। दूसरे दिन धूपमें नदीपर पहुंचे घाव धोया, पट्टी बांधी, नमाज पढ़ी। कुछ दिन जुहाक और बामियांके पहाड़ोंमें रहे।

मान, मिरजा हिन्दाल और मिरजा इब्राहीमके साथ काबुल आनेकी सलाह दी। कई बहादुर लोगोंने यह कहा कि, आज मिरजा कामरां नमकहराम नौकरोंके भरोसेपर भूला हुआ है और हम लोग फिर किस दिनके वास्ते हैं, अभी सब मिलकर काबुलको चलें, तो बदख्शां गये बगैर ही मिरजा कामरांका काम तो पूरा हो सकता है; मगर बादशाह तो अपने ही पाले हुओंसे धोखा खा चुके थे, इस लिये इस सलाहका भी भरोसा न करके मकाउलंग-के रस्तेसे बदख्शांको कूच कर गये। हाजीमोहम्मदने ऐसे वक्तमें भी अपने भाई शाहमोहम्मद और आदमियोंको रुखसत लेकर गजनीन भेजना चाहा, बादशाहने शाहजादेके नाम फरमान अपने हाथसे लिखकर उसको दिया और फरमाया कि, जैसे हो सके काबुलमें पहुँचाकर जल्दीसे गजनीनमें पहुँच जावे और आनेतक तैयार हो रहे।

खैरख्वाहोंने बहुत कहा कि, इस वक्त नमकहरामोंको अलग करना अपनेको उनके हाथोंमें सौंप देना है। हाजीमोहम्मद इस बहाने अपने भाईको तो मिरजा कामरांके पास भेजता है और आप जासूसी (खबर भेजने) के लिये यहां रहता है; मगर बादशाहने नहीं माना और शाहमोहम्मदको बिदा कर दिया।

दूसरे दिन कहमर्दको कूच हुआ, जहांसे और भी बहुतसे नौकर अलग हो गये। इस रस्तेमें तीन दिन पीछे तीलकची और सानकाजी कौमोंके (जो उधर रहती थीं) मुखिया लोग घोड़ों बकरियोंकी भेंट लेकर आये। बादशाह रातको इन भले आदमियोंके पास रहे, सवेरे जब सवार होने लगे, तो मीर सैयद-अली सलवारीको सरवराहीमें ईरान और खुरासानके सौदागर घोड़े और बहुतसा सामान लेकर हिन्दुस्थानको जाते थे, पिछले दिनसे उन्होंने हाजिर होकर वे घोड़े और सब सामान नजर कर दिये। बादशाहने कुछ माल थोड़े मोलपर लेकर अपने नौकरों-को बांट दिया और बाकी उन्हींके पास रख [illegible]

दूसरे दिन कहमर्दमें डेरे हुए, वहांके मीरखुर्दका बेटा मोहम्मद ताहिर पेशवाईमें तो आया; मगर खातिरतवाजे अच्छी तरहसे न कर सका।

बादशाह एक रात बीचमें ठेकर बंगी (बालगी) नदीपर ठहरे। दूसरे किनारेसे एक आदमी पुकारके पूछने लगा कि, ऐ कारवानवालो! तुमको बादशाहकी भी कुछ खबर है? बादशाहने सुनकर कहा कि, कुछ न कहो, इसीसे पूछो कि, तू कौन है, किसका भेजा हुआ है और तुम लोगोंमें बादशाहकी क्या खबर है। उसने जवाब दिया कि, मैं नजरी सालउलगका भेजा हुआ हूं और बादशाहकी खबर पूछने आया हूं। हमारे यहां तो यह खबर घूम रही है कि, बादशाह लड़ाईमें जखमी होकर न जाने कहां गये हैं। कुछ पता नहीं है और मिरजा कामरांके आदमी उनका बकतर मिरजाके पास ले गये हैं, जिससे वहां खुशीकी जलसे उड़ रहे हैं। बादशाहने उसे सामने बुलाकर पूछा कि, तू मुझको पहचानता है? उसने कहा कि, खुदाका दिया हुआ अदबा नहीं छुपा रहता। बादशाहने कहा जा नजरीसे कह दे कि, खुश होकर तैयार रहे और जब हम लौटकर आ जावें, तो हाजिर होकर बन्दगी बजा लावे।

अगले दिन नदीसे उतरकर गांव अदीरवजानमें उतरे, मिरजा हिन्दालने आकर नजर निछावर की। वहांसे इन्द्राबमें गये, यहां मिरजा सुलेमान और मिरजा इब्राहीम भी आकर खिदमतमें हाजिर हो (१) गये।

---

(१) जौहरने बामियांसे इन्द्राबतकका, जो वाकेआत हुमायूनीमें लिखा है, उसमें यह अजब बात भी है कि, बादशाह बामियांके कलवार रस्तेमें पाखाने गये, तो बहादुरखांसे बोले कि, मेरे कपड़े खूनसे भरे हैं, मुझे तकलीफ होती है, तेरे पास कपड़ोंका जोड़ा हो तो मुझ दे। उसने अरज की कि, हजूरके पास एक ही

मिरजा कामरांका काबुलमें फिर अमल करना।

बादशाहके जुहाक और बामियां जानेकी खबरको कामरांने बड़े अचम्भेसे सुना और साथ ही इसके बादशाही नमकहराम नौकर झुण्डके झुण्ड मिरजाके पास आने लगे। वहीं बाबा सईद कराचाखांको जखमी लाया। मिरजाने आदर करके पूछा, तो उसने कहा कि, बाबा सईदने अनजाने मुझे जखमी किया है। मिरजाने उसको तसल्ली दी. फिर हुसेनकुली सुलतान मोहरदारको पकड़ ले गये।

मिरजाने उस ऐसे नमकहलाल चाकरको अपने हाथसे तलवार मारी और अपने सामने टुकड़े टुकड़े करवा डाला। फिर लागचीबेगको ले गये। यह गिनतीके चगत्ताई मोतबर अमीरोंमेंसे था, तोभी मिरजाने तलवारके भेंट चढ़ाया। फिर बाबाबेग कोलाबीने आकर बादशाहको जखमी करनेकी बात कही. मिरजाने खुश होकर यासीनदौलत और मुकद्दमकोका वगैराको बादशाहके पीछे भेजा, कासिमहुसेन सुलतान भी मिरजाके पास चला गया।

मिरजा चारीकारानमें आकर उतरा, वहां एक आदमी बादशाहका खासा बकतर मिरजाके पास लाया मिरजाने देखकर बहुत खुशी की और जाकर काबुलको घेर लिया। कासिम बरलासने

ओढ़ा था, वही मुझे पहननेको दिया था, सो मेरे पास है। बादशाहने कहा हां, वही जोड़ा मांगता हूं, तेरे पास हो तो लेआ। बहादुरखां ले आया, बादशाहने पहिन लिया और अपना जोड़ा ओढ़नेको धोने और नमाजके लिये पाक करनेके वास्ते दिया। जब कहमर्दमें पहुंचे, तो एक बुढ़िया मिस्र देशका देबा (रेशमी कपड़ा) नजरके लिये लायी, बादशाहने कहा इसको मर्द तो नहीं पहिनते

मगर: मेरा तख्वान (गठरी) नापाक हो गया है, इसलिये मैं ओढूंगा।

शाहजादेसे पास रहकर किला मजबूत किया, मिरजाने उसको बहुत ही चकमे दिये; मगर वह नमकहलालीसे नहीं डिगा। तब बादशाहके मारे जानेकी अफवाह उड़ायी और खाला बकतर भी भेजा, इस तरह जोड़तोड़ लगाकर ले लिया, शाहजादेको कैद किया। मिरजा असकरीको जूयशाही (१) दिया, गजनीन करा-चाखांको, गोरबन्द याकीन दौलतको दी, इस तरह सब मुल्क अपने आदमियोंको बांटकर बादशाही नौकरोंको पकड़ा, लूटा और मारा। ख्वाजा सुलतानअली दीवानको कैद किया, कामका अखतियार कराचाखां और ख्वाजा कासिमको सौंपा।

तीन महीने पीछे जब बादशाहके बदख्शांसे आनेकी खबर पहुंची, तो मिरजा कामरां हजारा वगैरा कौमोंमेंसे सिपाही और जमीदार जमा करके बाहर निकला। बाबा जोजक और मुल्ला शफाईको काबुलमें छोड़ा, शाहजादे (अकबर) को साथ लिया।

बादशाहका फिर काबुल लेना।

बादशाहने इन्दाबमें लशकर जमा करके अपने नौकरोंसे नमक-हलालीकी सौगन्ध लेना चाहा, (२) तो हाजीमोहम्मद कूकीने कहा कि, हम लोग तो जैसा हुक्म होता है, सौगन्ध खाते ही हैं; मगर

(१) यही अब जलालाबाद कहलाता है, क्योंकि मुनअमखांने शाहजादेके नामपर इसका नाम जलालाबाद रखकर बड़ा शहर बना दिया, जो हिन्दुस्थान और विलायत (तूरान) का फाटक है।

(२) बादशाहने सौगन्ध लेते वक्त कहा कि, सब चीजोंका पैदा करनेवाला खुदा है और उसीकी कुदरतसे नमकहलालोंके चाल चलनमें सचाई और सफाई जाहिर होती है, हमको सबकी तरफसे दिलजमई है; परन्तु लोग जाहिरी बातोंको देखते हैं। दिलोंका भेद नहीं जानते, इसलिये सौगन्ध खानेका लोकिकमें भरोसा किया जाता है।

बादशाह भी सौगन्ध खावें कि, जैसी हम सलाह सोचकर अरज करें, उसको सुनकर वैसा ही करें।

मिरजा हिन्दालने कहा, हाजी मोहम्मद तूने यह क्या कहा। चाकरोंने अपने खावन्दोंसे कभी भी ऐसी बात कही है। बादशाहने कहा कहने दो, हाजीमोहम्मद खैरख्वाहीसे जैसा कहेगा, वैसा ही हम करेंगे।

बादशाह इस तरहपर कौल कसम करके वहांसे रवाने हुए। उशतर किराममें पहुंचे, तो उधरसे मिरजा भी लड़नेको आया। बादशाहने मीर बिरकाके जमाई मिरजा शाहको मिरजा कामरांके पास भेजकर कहलाया कि, हमेशा ही दुशमनी करना ठीक नहीं है, अफसोस है कि, काबुलके वास्ते इतना झगड़ा हो। तू नये पुराने हक याद करके सुलह कर ले और हिन्दुस्थान लेनेको साफ दिलसे साथ चल। मिरजाने जवाब दिया कि, जैसे क़न्धार आपके पास है, वैसे ही काबुल मेरे पास रहे तो मैं बन्दगीमें हाज़िर होकर हिन्दुस्थानको साथ चलूं। बादशाहने फिर मिरजा शाहको मौलाना अबदुल बाकी सदरके साथ भेजकर मिरजासे कहलाया कि, जो यह इरादा तेरा सच्चा और पक्का है, तो तू अपनी लड़कीकी शादी शाहजादेसे कर दे। फिर हम काबुल उनको दे देंगे और जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा, तो हमारा तेरा काबुल भी रहेगा और हिन्दुस्थान भी।

मिरजा तो इस बातपर राजी होता था, मगर क़राचाखांने नहीं होने दिया और कहा कि, काबुल हमारे सिरके साथ है।

उस दिन "शक्कयलदुज" (कोई अशुभ ग्रह या दिशाशूल) मिरजाके सामने था और ज्योतिषी लोग इसके सामने (सम्मुख) होते हुए लड़नेको अपने हाथसे अपनी हारका साधन करना समझते हैं। इसलिये मिरजा लड़ाईको टालता था और बादशाही लशकर लड़नेको तैयार था; लेकिन हाजीमोहम्मदखां नहीं चाहता था और बादशाह भी उसकी खातिरसे ढील कर रहे थे,

इतनेमें ही ख़्वाजा अब्दुल समद वगैरा कई आदमियोंने, जो कबचाककी लड़ाईमें बिछड़ गये थे, आकर मिरज़ाके लश्करकी अफ़रातफ़री अरज़ की. उस वक्त दुपहर दिन ढल गया था। बादशाह फौरन दायें बायें, बीच और आगेके लश्करोंको लड़नेके लिये सजाकर सवार हुए। बीचमें आप थे, दायें मिरज़ा सुलेमान, बायें मिरज़ा हिन्दाल और आगे मिरज़ा इब्राहीम था। अलतमश (बीचकी और अगली फौजके बीच) में हाजी मोहम्मदखां वगैरा थे। उधर मिरज़ा कामरां बीचमें, दायें मिरज़ा असकरी बायें आकसुलतान और आगे कराचाखां था। महतर सक्काका वगैरा बहुतसे बादशाही नौकर, जो कबचाकमें लड़ाई होनेके पीछे मिरज़ासे जा मिले थे, अब दौड़कर बादशाही फौजमें आ गये। मोरी नदीपर पहले मिरज़ा इब्राहीमने मिरज़ा कामरांकी फौजपर धावा किया, फिर सब फौज पिल पड़ी। कराचाखांका सिर कटकर आया और बादशाहके घोड़ेके आगे डाला गया। बादशाहने हुक्म दिया कि, आहनी दरवाजेके आगे ले जाकर लटका (१) दें, इसको एक आदमी पकड़कर बादशाहके पास माफी दिलानेके लिये लाता था कि, मिरज़ा हिन्दालके नौकर कम्बरअलीने पीछेसे दौड़कर तलवार मारी और सिर काट लिया; क्योंकि इसने कन्धारमें उसके भाईको मारा था, इसने कहा था कि, मेरा सिर काबुलके साथ है, सो सच्चा हुआ।

फिर मिरज़ा कामरां भी भागा और बादनजके घाटेसे उतरकर अफगानिस्तानमें चला गया। उसका लश्कर लुट गया, नमकहराम पकड़े जाकर कतल हुए, बहुतसे रोते पीटते हाज़िर भी हो गये। मिरज़ा असकरी पकड़ा आया; मगर बादशाहने जबतक शाहज़ादेको न देखा, इस फतहकी खुशी न हुई और फरमाया कि, आयन्दा शाहज़ादेको भी साथ ही रखेंगे। इसी

(१) क्योंकि उसने कहा था कि, हमारा सिर काबुलके साथ है।

बहुत दो ऊंट बगैर सारबानके र खतमें नजर आये। बादशाहने कहा कि, सब कोई "उलजा" (लूट) लेते हैं। फिर आपने जाकर उनकी नकेलें पकड़ लीं और कहा कि, इनको बैठाओ, खोलो और देखो कि, इन सन्दूकोंमें क्या है? देखा तो बादशाहका खासा कुतबखाना, जो कबचाककी लड़ाईमें जाता रहा था, सारा इन सन्दूकोंमें था। बादशाहको उसके मिल जानेसे बहुत ही खुशी हुई। ख्वाजा कासिम भी, जिसने यह लड़ाईको आग भड़कायी थी, मारा जा चुका था।

बादशाह उस दिन तो चारीकारानके बागमें रहे, फिर अच्छा महूर्त्त देखकर काबुलमें पधारे। पहले किलेमें जाकर बेगमोंसे मिले, फिर उर्ताबागमें आ गये। दीनदारबेग, हैदरदोस्त, सुगलखानची, मस्तअली कोरची, जो कई बेर नमकहरामी कर चुके थे, मारे गये। मिरजा सुलेमानको बदखशां जानेकी रुखसत हुई, मिरजा इब्राहीमको शाहजादी बखशी, बानूबेगमसे शादी करनेके लिये ठहरनेका हुक्म हुआ। चर्ख नाम गांव, जो तूमान (परगने) लहूगिरमें था, शाहजादेको जागीरमें दिया गया। दरीखाना (दरबार) की वकालतका बड़ा काम हाजी मोहम्मदखांको मिला; मगर हाजी राजी न हुआ, क्योंकि वह इससे भी कोई बड़ा ओहदा चाहता था।

मिरजा कामरां अफगानिस्तानमें।

मिरजा कामरां उशतरग्रामसे सज गांवमें होता हुआ पठानोंमें पहुंचा, उस वक्त कुल ८ आदमी उसके साथ थे। मिरजा हिन्दाल हाजीमोहम्मद और खिजरख्वाजा, जो मिरजाके पीछे गये थे, उसके पकड़नेकी ज्यादा कोशिश न करके लौट आये। उधर पठानोंने रस्ता रोककर मिरजाके पास जो कुछ था, लूट लिया। मिरजा पकड़े जानेके डरसे डाढ़ी मूंछ मुंडाकर फकीरी भेसमें मलिक मोहम्मद मन्दावरीके पास पहुंचा, जो एक बड़ा सरदार समगानीका था। उसने मिरजाकी पिछली परवरिश याद करके

बहुत खातिर की और फिर वहां बहुतसे आदमीके पास जमा हो गये ; यह सुनकर हाजी मोहम्मदखां बगैर पूछे ही गजनीनको चला गया। बादशाहने वक्त देखकर कुछ न कहा और कुछ फौज बहादुरखां, मोहम्मदकुली बरलास और कैदूक सुलतानके साथ मिरजा कामरांके ऊपर भेजी। मिरजा अलीकार और अलीशंगके दर्रेमें होकर खलील और महमंद पठानोंमें चला गया, उसके साथी भी बिखर गये ; तब बादशाही फौज भी चली आयी।

बादशाहने मिरजा सुलेमानसे मेलमिलाप बढ़ाने और बदखशां-की तरफसे बेफिकरी हो जानेके लिये ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद और बीबी फातमाको बदखशां भेजा कि, मिरजा सुलेमानकी बेटी खानमको बादशाहके लिये ले आवें और मिरजा असकरीको भी उनके साथ करके मिरजा सुलेमानसे कहलाया कि, बलखके रस्तेसे मक्केको भेज दें। मिरजा सुलेमानने इन लोगोंकी इज्जत करके मिरजा असकरीको बलखमें भेज दिया, जहांसे वह मक्के जाकर सन् ८६५ (संवत् १६१५ सन् १५५८) में मर गया और खानमके बड़ी होनेपर बादशाहकी शादी मञ्जूर करके वकीलों-को रुखसत किया।

बादशाह मिरजा कामरांपर।

फिर मिरजा कामरां खलील और महमंद पठानोंको साथ लेकर लूटमार करने लगा। बादशाहने हाजी मोहम्मदखांको गजनीनसे बुलाया. उसके आते ही मिरजापर जाया चाहते थे कि, इतनेमें मिरजा जलालाबादके पास पहुंचकर एक किलेको घेर लिया। बादशाह यह सुनते ही हाजीमोहम्मदका रस्ता न देख कर जलालाबादको रवाने हो गये, मिरजा कामरां भागकर बङ्गश और गुर्देजके रस्तेसे गजनीनकी तरफ चल दिया ; क्योंकि हाजी मोहम्मदने बादशाही आदमियोंको, जो उसे बुलाने गये थे, बातोंमें लगाकर मिरजासे कहलाया कि, कबतक इधर उधर भटकते फिरोगे, यहां आ जाओ, तो मिलकर कुछ काम करें।

उसी बीचमें बैरामखां कन्धारसे बादशाहके पास जाता हुआ गजनीनमें आ निकला। हाजी मोहम्मदखांसे पेशवाई और दावत करके उसको कैद करनेकी मनशासे किलेमें लिये जाता था; मगर उसके एक आदमीने इशारेसे बैरामखांको मने किया। जिसपर वह दगा समझकर किलेमें नहीं गया और बाहर एक चशमेपर ठहरकर हाजी मोहम्मदको ही लल्लोपत्तोसे अपने साथ काबुलमें ले आया और बादशाहको इस हालकी अरजी लिखी। बादशाह उस वक्त मिरजा कामरांका काबुलपर आना सुनकर काबुलको आ रहे थे और कामरां भी काबुलके पासतक पहुंच गया था; पर जब उसने सुना कि, बैरामखां हाजीमोहम्मदखां-को लेकर आ गया है, तो फिर लमघानकी तरफ भाग गया।

हाजीमोहम्मदखांने आहनी दरवाजेसे काबुलमें जाना चाहा; मगर ख्वाजा जलालउद्दीन महमूद हाकिमने उसको किलेमें नहीं आने दिया, इससे वह मारे वहमके पहाड़ोंके रस्तेसे गजनीनको चला गया। बादशाह जब स्याहसङ्गमें आकर ठहरे, तो बैरामखांने वहां जाकर सलाम किया। बादशाहने पहले तो हुक्म दिया था कि, शहरमें कोई न आवे, मैं मिरजाके पीछे जाता हूं; मगर फिर हाजी मोहम्मदकी तरफसे खटका होकर पहले उसका पाप काटकर फिर मिरजाके पीछे जानेकी ठहरी और बादशाहने शहरमें आकर बैरामखांसे कहा कि, हाजी मोहम्मद जिस तरह आवे, उसी तरह उसको तसल्ली देकर ले आओ।

बैरामखां कौल और कसमसे हाजी मोहम्मदको राजी करके बादशाहके पास ले आया। बादशाहने उसके कसूर माफ करके चार पांच दिन पीछे लमगानोंकी तरफ सवारी की, जब जलाला-बादमें पहुंचे, तो मिरजा कामरां नूरगल घाटीमें भाग गया। बाद-शाहने बैरामखांको उसके पीछे भेजा, तब वह वहांसे भी भागकर नीलाब नदीको चला गया, बैरामखां लौटकर दरेमें बादशाहके पास चला आया।

बादशाहने हाजीमोहम्मदको पकड़ाकर हुक्म दिया कि, ये तो अपनी बन्दगियां, जो खुशीसे या लाचारीसे की हैं, एक तूमार (मिसल) में लिखें और एक बादशाही मुसाहिब इनके कसूरोंको कलम बन्द करे; फिर दोनोंको इनसाफकी तराजूमें तोला जाय।

इस दफतरमें उनके १०२ बड़े बड़े कसूर निकले, जिनके दण्ड-में वे मारे गये, गजनीन बहादुरखांको मिली।

बादशाहने जाड़े भर काबुलमें रहकर गरमी शुरू होते ही अफगानोंपर चढ़ाई की, जो लूटमार किया करते थे; मगर उनमेंसे कुछ लोगोंने हाजिर होकर और बहुतोंने अरजियां और नजराने भेजकर ताबेदारी कबूल कर ली। तब बादशाह बादनजके रस्ते-से आबेबारांमें आये, उस रातको मेह और बरफके बरसनेसे बहुत तकलीफ हुई।

बादशाहने काबुल पहुंचकर बैरामखांको कन्धार जानेकी रुख-सत दी। ख्वाजा गाजीको शाहईरानके पास तुहफे देकर भेजा, गजनीन, गुर्देज, बङ्गश और तूमालङ्गिर मिरजा हिन्दालको जागीर-में दिये, कुन्दुज मिरजासे लेकर मीरबिरकाको दिया। मिरजा हिन्दाल गजनीनको रुखसत हुआ, मीर बिरकाके पहुंचनेसे पहले मिरजा इब्राहीमने दमभांसे देकर कुन्दुजको ताहिर मोहम्मदखांसे ले लिया था। मीर बिरका लौट आया, बादशाहने मिरजा इब्रा-हीमकी बन्दगियोंका लिहाज रखकर वह जिला उसीके पास रहने दिया।

इन्हीं दिनोंमें मीर अबुल मुआली, जो तिर्मिजके सैयदोंमेंसे एक खूबसूरत जवान था, बादशाहके पास आकर मुसाहिब हो गया।

बादशाहका मिरजा कामरांके ऊपर जाना और मिरजा हिन्दालका काम आना।

मिरजा कामरां कुछ दिनों निचला रहकर फिर मोलावरी जुय-शाहीमें आ गया। बादशाह मिरजा हिन्दालको गजनीनसे बुला-

कर उधर गये, हैदर मोहम्मद आखताबेगीको कुछ हकोंसे पहले भेज दिया था; ये लोग सुरखाब और गन्दमकके बीचमें एक नदी-पर ठहरे हुए थे, मिरजाने रातको छापा मारा और हैदर मोहम्मदका माल असबाब लूट ले गया; मगर हैदरमोहम्मद जखमी होकर भी अपनी जगहपर जमा रहा।

बादशाह जब नेकवहार तुमानके गांव चरयारमें पहुंचे, तो आमको दो पठान खबर लाये कि, आज रातको मिरजा और उसके साथी पठान छापा मारेंगे, बादशाहने जगह जगह मोरचे लगा दिये। २१ जीकाद सन् ८५८ (मगसर बदी ८ सं० १६०८ ता० २१ नवम्बर १५५१) इतवारको (१) पहर रात गये मिरजा कामरां बहुतसे पठानोंसे बादशाही लशकरपर आ पड़ा। बादशाह सवार होकर दौलतखानेके पीछे एक ऊंची जगहपर जा खड़े हुए और शाहजादेको भी वहीं बुला लिया। सिपाही अपने अपने मोरचोंमें जमकर लड़ने लगे, अबदुल वहाब, जो मोरचोंमें गिरदावरी करता फिरता था, तीरसे मारा गया। चांद निकलनेपर दुश्मन भागे, बादशाहकी फतह हुई, सब लोग राजी खुशी थे कि, अचानक मिरजा हिन्दालके मारे जानेकी खबर पहुंचनेसे उदासी छा गयी। बादशाहको तो ऐसे लायक भाईकी मौतका तो बहुत ही रञ्ज हुआ।

मिरजा, जो मोरचोंका बन्दोबस्त करके सो गया था, अफगानोंका शोर सुनकर उठा, जो कि मोरचेमें घुस आये थे। रात अंधेरी थी, लोग घबराकर घोड़ोंके बचानेको दौड़े दौड़े फिरते थे। मिरजा पठानोंपर गया, भूरमकोका वगैरा भाग गये, तीर और कमान चलानेकी जगह नहीं रही थी। मिरजाने एक पठानको पकड़कर गिराया। उसके भाई अरन्दानामने, जो कौम महमंदसे था, जहरका बुझा हुआ तीर मारकर मिरजाको मार

(१) पञ्चाङ्गमें शनिवार है।

डाला और निशानोंके लिये एक शिस्त (१) लेकर मिरजा कामरांके पास गया और यह सब हाल कहा, मिरजाने शिस्तको देखते ही पगड़ी उतार कर फेंक दी और कहा कि, हाय! मिरजा हिन्दाल शहीद हो गया।

मिरजाकी लाशपर उसके कई नौकर था निकले और ख्वाजा इब्राहीम बदख्शीने देखा कि, काला कोट पहने हुए एक शख्स पड़ा है; मगर रात अँधेरी थी, लड़ाई हो रही थी। इसलिये उसने ज्यादा ख्याल नहीं किया, मगर फिर यह याद आनेसे कि, मिरजा हिन्दाल काला बकतर पहने हुए थे, लौटा और पहरे-वालोंसे कह दिया कि, आज मिरजाने बहुत मिहनत की है, जिससे थक गये हैं और कुछ जखमी भी हैं; कोई आसपास शोर गुल न करने पावे। फिर बादशाहके पास जाकर मिरजाकी तरफसे मुबारकबाद दी, बादशाहको भी इस बातका कुछ भरम पड़ गया (२) था।

दूसरे दिन मिरजाका (३) तावूत उठा, उस वक्त तो जूयशाहीमें रक्खा गया। फिर काबुल से जाकर बाबर बादशाहके मकबरेमें दफन किया गया।

---

(१) निशाना ताकनेकी एक चीज।

(२) बायजीदने, जो मुनअमखांके साथ था, लिखा है कि, बादशाह एक ऊंची जगहपर बैठे रो रहे थे। मुनअमखांने पूछा कि, हुजूर रोते क्यों हैं? बादशाहने कहा कि, क्या तुझे मालूम नहीं कि, मिरजा हिन्दाल शहीद हो गया है। मुनअमखांने कहा, वाह हुजूर अपना फायदा हो जानेपर भी आप रोते हैं, मिरजा हिन्दाल मरा तो हुजूरका एक दुशमन घट गया। बादशाहने यह सुनकर रोना छोड़ दिया।

(३) मिरजा हिन्दालकी उमर ३२ बरसकी थी।

बादशाह दूसरे दिन वहांसे चलकर बहसूदमें रहे, फिर काबुलमें आ गये।

शाहजादेकी गजनीम।

शाहजादेकी उमर १० वर्षकी हो गयी थी। बादशाहने उसको सलतनतका काम सिखानेके लिये मिरजा हिन्दालकी जागीर और उसकी सब नौकरोंकी हुकूमत शाहजादेके नामपर मुकर्रर की। इससे कुछ दिन पहले एक अजब बात यह हुई थी कि, शाहजादा एक तङ्ग गलीमें बादशाहके साथ सवार जा रहा था, लोगोंकी भीड़से उसकी पगड़ी गिर पड़ी थी, मिरजा हिन्दालने फौरन हाजिर होकर ताज अपने सिरसे उतार कर उसको पहना दिया था।

शाहजादेने मिरजा हिन्दालके नौकरोंपर ऐसी महरबानी की कि, मिरजाका गम भूल गये, इन नौकरोंमें, जो भले आदमी थे, वे तो शाहजादेके पास रखे गये और जो लायक नहीं थे, वे महरूम रहे।

फिर बादशाहने बहसूद गांवमें आकर किला बनाया और मिरजा कामरांकी खबर रखनेके लिये वहां रहकर शाहजादेको पढ़नेके लिये काबुलमें भेज दिया। कुछ दिनों पीछे शाहजादेकी पढ़नेमें जी नहीं लगानेकी शिकायत आयी, तो महरबानीसे फरमान उसके नाम भेजा, जिसमें यह लिखा था कि, गाफिल मत बैठ, यह खेलका वक्त नहीं है, हुनर सीखने और काम करनेका है।

शाहजादा पहले मुल्ला असामुद्दीनसे पढ़ता था, उसको कबूतरबाजीकी लत थी। बादशाहने शाहजादेके नौकरोंकी शिकायतपर उसको बदलकर मौलाना बायजीदको मुकर्रर किया था, शाहजादेके नहीं पढ़नेसे उसकी भी शिकायत हुई। बादशाहने मुल्ला असामुद्दीन, बायजीद और मुल्ला अबदुल कादिरके नामपर चिट्ठी डाली, तो तीनोंमेंसे अबदुल कादिरका नाम [illegible] और [illegible] मौलाना बायजीदको [illegible] शाहजादेका उस्ताद हुआ।

शाहजादेका दिल पढ़ने लिखनेमें नहीं लगता था। ऊंट घोड़े दौड़ाने, कबूतर उड़ाने और कुत्तोंके शिकारका बहुत शौक था; मगर अपने दरजे और हुक्मसे गफलत नहीं थी। एक दिन सफेद सङ्ग पहाड़की तलहटीमें शिकारको गया था, कुछ खिदमतगारोंको सौंपे हुए थे और लोगोंको पहाड़पर हिरनोंके घेर लानेके लिये भेजा था। जब हिरन मैदानमें आये, तो कुछ खिदमतगारोंने वक्तपर चीते नहीं छोड़े, वे शाहजादेको बालक समझकर खाने पीनेमें लग गये थे; मगर शाहजादेने हुक्म दिया कि, इन लोगोंके गलेमें कुत्तोंके पट्टे बांधकर लशकरमें फिरावे और उस वक्त उसको ऐसा गुस्सा चढ़ा हुआ था कि, बड़े बड़े आदमी डरके मारे दांतोंमें उंगलियां दाब दाबकर सुन रह गये थे।

जब बादशाहने यह हाल सुना, तो खुश होकर कहा कि, शाहजादा जल्दी बादशाह होगा।

शाहमखां जलायरको एक दिन बादशाहने फरमाया कि, जाकर शाहजादाकी खबर ला, क्या कर रहा है। शाहमखां गया, तो शाहजादा सो रहा था और नींदमें कभी कभी हाथ हिला हिलाकर बर्राने लगता था कि, दुनियाके बड़े हिस्सेको ले लूंगा और सातों वलायतोंके उम्मेदवारोंकी मुरादें पूरी करूंगा। उस वक्त शाहमखांको ऐसा डर लगा कि, दूर जा खड़ा हुआ।

मगर शाहजादेको खुशामद नहीं भाती थी। जब कोई कहता था कि, आप सातों वलायतके बादशाह हों, तो बुरा मानकर फरमाता कि, ये लोग बादशाहका बुरा चेतकर मेरे खैरख्वाह बनते हैं; मगर यह खैरख्वाही नहीं, बदख्वाही है।

बादशाहका पठानोंपर जाना।

जब जाड़ा बीत गया, तो बादशाहने मिरजा कामरांका पठानोंमें होना सुनकर बहसूदसे पठानोंपर कूच किया और कुछ अमीरोंको सुलतान हुसेनखांकी सरबराहीमें आगे भेजा। पठानोंके कबीले दूरतक फैले हुए थे। मिरजा किस कबीलेमें है, यह कुछ

नहीं मालूम होता था। आखिरको मिरजाके दो नौकर मलिक मोहम्मद मन्दरावीके पास जाते हुए पकड़े गये। उनमेंसे (१) एकने तो गलत पता बताया और दूसरा (२) आगे होकर इन लोगोंको मिरजाके डेरेपर ले गया, जो पठानोंके एक कबीलेमें था। उस कबीलेके बहुत आदमी मारे गये, उनके औरत बच्चे पकड़े गये, मिरजा भाग गया और उसका प्यारा नौकर बेगमलूक पकड़ा गया। शेखयूसफ चारगी और मलिकसख्नी वगैरा अपने डेरोंपर खड़े होकर लड़े और भागे, माल असबाब सब लुट (३) गया।

मिरजा कामरांको काबुलके पास जब कोई जगह ठहरनेको न मिली, तो हिन्दुस्थानको चला गया और बादशाह काबुलमें लौट आये।

शाहजादेको गजनी भेजना।

बादशाहने शाहजादेको अपने पाससे दूर रखकर तजरबा सिखानेके लिये सन् ९५९ के शुरू (संवत् १६०८ के अन्तमें) होते ही गजनीनमें भेजा। अतकाखां ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद और मिरजा हिन्दालके सब नौकर साथ गये, शाहजादा ६ महीने तक वहां रहा। बाबा बलास उन दिनोंमें एक पहुंचा हुआ फकीर था, शाहजादा कई बार उसके पास गया, तो उसने बड़ी उमर होने और बड़े बड़े दरजोंपर पहुंचनेकी बधाई दी।

बादशाह काबुलमें एक दिन शिकार खेलते हुए घोड़ेपरसे गिर पड़े, जिससे बहुत चोट आयी। उस हालतमें उन्होंने मुनासब समझकर शाहजादेको अपने पास बुला लिया।

बादशाहका कश्मीरमें जाना और मिरजा कामरांका पकड़ा आना।

बादशाह सन् ९५९ के अखीर होनेपर (संवत् १६०९ के)

(१) इसका नाम भाहमअली था।

(२) इसका नाम बाबा खजारी था।

(३) १४ हजार लड़नेवालोंमेंसे १२ हजार पकड़े गये थे।

भाड़ोंमें रहनेके लिये शाहज़ादेके साथ होकर गुर्देज और बंगश की तरफ गये और पठानोंको सजा दी। पहले अबदुल रहमानी पठानोंका कबीला लूटा गया और आखीरमें बरमजीदियोंका। फतह शाह पठान बादानीसे लड़ा और भागकर मुनअमखां वगैरा अमीरोंके सामने जा पड़ा, जो जलालाबादसे बादशाहके पास आते थे। इन्होंने सब माल उसका लूट लिया। इसी पकड़धकड़में सुलतान आदमगक्खड़के वकील बादशाहकी खिदमतमें पहुंचे. सुलतानने अरजीमें लिखा था कि, मिरजा कामरां इधर फिर रहा है; अगर बादशाह तशरीफ लावें, तो उसको हाजिर करके अपने पिछले कसूरोंका बदला करूं।

सुलतान आदमगक्खड़ोंका सरदार था। गक्खड़ोंकी बहुतसी कौमें हैं, जो भट और सिन्धु नदियोंके बीचमें रहती हैं। कशमीरके सुलतान जेनुलआबदीनके राजमें गज़नीनका एक अमीर "कद" नाम, जिसको काबुलके हाकिमसे रिश्तेदारी थी, आया और इस भूमिको कशमीरियोंसे छीनकर बस गया। उसके पीछे उसका बेटा परनाम और परनामके पीछे ततार, अपनी कौमका सरदार हुआ। उससे और शेरखां तथा सलीमखांसे बहुत दुशमनी रही; क्योंकि वह अपनेको बादशाहोंका ताबेदार मानता था। जब बाबर बादशाहने हिन्दुस्थान फतह किया था, तो वह हाज़िर होकर अच्छी बन्दगी बजा लाया था। राणासांगाकी लड़ाईमें तो खूब ही बहादुरी की थी। उसके दो बेटे सुलतान सारंग और सुलतान आदम थे, सारंगके पीछे आदम अपनी कौमका सरदार हुआ। सारंगके बेटे कमालखां और सईदखां उसकी ताबेदारी ऊपरके मनसे करते थे।

सुलतान आदमके वकीलोंके साथ मिरजा कामरांका खिदमतगार जोगीखां भी आया था और मिरजाकी अरजी भी लाया था, जिसमें थोथी बातें खुशामदकी लिखी थीं।

मिरजा कामरांका हाल।

मिरजा कामरां खैबरके घाटेसे शाह बदागखांको सलीमखांके पास भेजकर उसके पीछे आप भी कुछ आदमियोंसे हिन्दुस्थानको चल दिया। शाह बदागखांने कसबे बनमें, जो पञ्जाबका एक थाव है, सलीमखांके पास पहुंचकर मिरजाका पैगाम कहा। सलीमखांने कुछ खर्च भेजकर कहलाया कि, वहीं ठहरे रहो, मैं पीछेसे मदद और खजाना भेजता हूं; मगर इस जवाबके पहुंचनेसे पहले मिरजाने अलीमोहम्मदने असको भी सलीमखांके पास भेज दिया था और पीछेसे आप भी गया। सलीमखाने बनसे ४ कोसपर अपने बेटे आवाजखां और मोलाना अबदुल्लाह सुलतानपुरी और बहुतसे अमीरोंको मिरजाकी पेशवाईके लिये भेजा। मिरजा जाकर सलीमखांसे मिला; मगर सलीमखां और पठानोंके सलूकसे राजी न (१) हुआ। हमेशा अकेलेमें शाहबदागखांको बुरा भला कहा करता था, जिसने उसको इधर आनेके लिये उभारा था।

सलीमखां जब पञ्जाबके कामोंसे निबड़कर दिल्लीको जाने लगा, तो मिरजाको भी साथ ले गया; क्योंकि उसका इरादा किसी किलेमें कैद रखनेका था और मिरजा, जो रुखसत मांगता था, तो रुखसत भी नहीं देता।

आखिर मिरजाने सलीमखांकी मदद और रुखसतसे नाउमेद होकर भागनेका इरादा किया और जोगीखांको राजा बखूके

(१) कहते हैं कि, जब मिरजा कामरां सलीमखांके पास जाता था, तो पठान कहते थे कि, मोघू आया। एक मिरजाने सलीमखांके सामने फारसीमें उससे पूछा कि, मोघू किसको कहते हैं? तो उसने कहा कि, बड़े आदमीको कहते हैं, मिरजाने कहा कि, अभी तो सलीमखां बड़ा मोघू है।

(२) किसी नकलमें मखू किसीमें सखू है, शायद कुछ हो।

पास, जो माछीवाड़ेसे १२ कोस पर था, भेजकर मदद मांगी, उसने बड़ी खुशीसे एक जगह पनाहकी बता दी।

जब सलीमखां माछीवाड़ेकी नदीसे उतरा, तो मिरजा यूसुफ आफ़तावचीको अपने बिछौनेपर सुलाकर डेरेसे निकला और उसी जगहपर पहुंचा। राजा बहुत अच्छी तरहसे मिला और जब सुना कि, एक फौज उसके ढूंढ़नेको आ रही है तो राजा कहलूरके पास भेज दिया, जिसका किला इस जिलेमें बहुत मजबूत था। उसने भी अपने दुशमनोंसे डरकर मिरजाको जमूके राजाकी तरफ अपने आदमियोंके साथ भेजा; मगर जमूके राजाने जमीदारोंसे सोच विचारसे मिरजाको अपने इलाकेमें नहीं आने दिया। मिरजा लाचार मानकोटकी तरफ गया, जहां पकड़ा ही जाता; मगर जनानेके भेसमें एक पठानके साथ काबुलको रवाने हुआ और गक्खड़ोंको मिलानेके लिये सुलतान आदमसे मिला। सुलतानने दमभांसे देकर उसको अपने पास रख लिया और बादशाहको अरजी लिखी।

बादशाहने सुलतान आदमकी अरजी आनेपर हिन्दुस्थानमें गक्खड़ोंकी बलायततक जानेका इरादा करके शाहजादे समेत सिन्धको कूच किया और क़ाज़ी आमिदको सुलतान आदम और मिरजा कामरांके पास भेजा; मगर बादशाह सिन्धको उतरे। वहांतक सुलतान आदमका पता न लगा, तब मुनअमखांको उसके और मिरजा कामरांके पास भेजकर बहुतसी बातें खातिर तसल्लीकी कहलायीं। मुनअमखां जाकर अपनी कारस्तानीसे दोनोंको परचालेमें (१) बादशाहके पास ले आया। बादशाहने मिरजापर फिर बहुतसी महरबानी की; मगर खैरख्वाह अमीरोंने अरज की कि, महरबानीकी भी एक हद होती है। मिरजाने जैसे क़सूर और जुल्म किये हैं, सबका भला इसीमें है कि, ऐसे जालिम-

(१) या बुड़ढ़ाला।

का पाप काट दिया जावे ; मगर बादशाह आपका कहना याद-
गारकी इस बातपर राजी नहीं होते थे। आखिर अमीरोंने महजर-
नामा काजियों और मुफतियोंकी मोहरों और अपने दस्तखतोंसे
तैयार करके बादशाहको दिया। बादशाहने मिरजाके पास
भेजा, मिरजाने देखकर कहा कि, जिन लोगोंने आज मेरे कतलकी
वास्ते मोहरें की हैं ; उन्होंने ही मुझको यह दिन दिखाया है।
यह सुनकर बादशाहके दिलमें दया आ गयी, मारनेका तो हुक्म
नहीं दिया, मगर अन्धा कर देनेके वास्ते अलीदोस्त बारबेगी,
सैयद मोहम्मद पकाना और ६ उंगलियोंवाले गुलामअलीको भेजा।
जब ये मिरजाके डेरेमें गये, तो मिरजाने जाना कि, मारनेको
आये हैं, इससे वह मुक्का तानकर खड़ा हो गया।

अलीदोस्तने कहा कि, मिरजा घबराओ मत, मारनेका हुक्म
नहीं है। जैसे तुमने पहले सैयदअली वगैरा बहुतसे बेगुनाहोंको
अन्धा किया है, वैसे ही अब उसका बदला तुमको अपनी आंखोंसे
देखना है।

मिरजा यह सुनकर चित लेट गया। इन्होंने उसकी आंखोंमें
सलाई फेर दी और नश्तर भी बहुत मारे ; मगर मिरजाने दम
नहीं मारा। (१) बादशाह मोहब्बतसे रोते हुए आगे चल दिये

(१) जौहरने मिरजा कामरांको अन्धा करनेका, जो हाल अपनी
आंखोंका देखा हुआ लिखा है, उसका खुलासा भी यहां लिखा
जाता है—

बादशाहने मुझसे कहा कि, तू डेरेमें जाकर, और रातको
नींद मत ले। मैं अखिरकी नमाज (तीसरे पहर) के पीछे काम-
रांके डेरेमें गया, मिरजाने आबमाज मांगी, जो मैंने उसको दी।
उसने अखिरकी नमाज पढ़ी। फिर मगरब (शाम) की नमाज
भी उसी डेरेमें पढ़ी और मुझसे पूछा कि, ऐ गुलाम! तेरा क्या
नाम है? मैंने अरज किया कि, जौहर है। फिर पूछा कि, खिदमत

और बहुतसी बातें हमदर्दी (करुणा) की उनके मुंहसे निकलीं, यह बात सन् ९६० के अखीर (संवत् १६१० सन् १५०३) में हुई।

करना जानता है। मैंने कहा कि, अपने बूतेके मुवाफिक जानता हूं। फिर पूछा कि, कितने बरसोंसे बादशाहका नौकर है, मैंने कहा १९ बरससे हूं, तो कहा कि, बड़ा पुराना नौकर है; भला कभी असकरीकी भी नौकरी है, मैंने कहा नहीं की। फिर कहा कि, रमजानके मेरे ६ रोजे कजा (खण्डित) हुए हैं, तू मेरे बदले रोजे रखेगा। मैंने कहा हां, रखूंगा; लेकिन मिरजा (आप) को इन खण्डित रोजोंके रखनेका अवसर मिल जायगा, ऐसी उदासीकी बातें न कीजिये, अपने दिलको मजबूत रखिये। तब मिरजाने पूछा, क्या मुझे मारेंगे? मैंने कहा कि, बादशाहोंकी बातें तो बादशाह ही जानते हैं; लेकिन मैं अपनी अक्लसे यह जानता हूं कि, कोई आदमी अपने हाथसे हाथको नहीं काटता है, इसके सिवाय हुमायूं बादशाह तो बड़े मुरव्वतवाले हैं। यह बात ऐसी ऐसी बातोंमें देर हुई।

दूसरे दिन बादशाह तो यह हुक्म देकर हिन्दुस्तानको कूच कर गये कि, मिरजाकी आंखोंमें नश्तर लगाया जाये, जब नौकरोंके पास यह हुक्म पहुंचा, तो उनमें यह झगड़ा पड़ा कि, कौन नश्तर लगायेगा। हरेक इस कामके करनेसे नटता था, सुलतान अली बख्शीने अलीदोस्त एशाक आकासे कहा कि, तू लगा। उसने कहा कि, जब तू एक शाहरुखी (रुपया) किसीको देता है, तो बादशाहसे पूछ लेता है। मैं तेरे कहनेसे यह काम क्योंकर करूं, जो कभी बादशाह मुझसे पूछ बैठें कि, तूने मेरे भाईको क्यों अन्धा किया, तो मैं क्या यह जवाब दूंगा कि, सुलतान अलीने मुझसे कहा था। तो यह काम तो मुझसे न होगा।

मिरजाने उसी दिन मुनअमखांसे कहलाया कि, जैसे हो सके बेग मलूकको मेरी खिदमतके वास्ते हजरतसे मांग दो। बादशाहने फौरन उसको मिरजाके पास भेज दिया। मिरजाने प्यारसे

मैंने उनकी यह बातें सुनकर कहा कि, ठहरो, मैं जाकर बादशाहसे पूंछे आता हूं। अलीदोस्त, सुलतान बारबेगी और फराशखानेका दरोगा ६ उंगलियोंवाला गुलामअली मेरे साथ हुए और हम घोड़े दौड़ाकर बादशाहके पास गये। अलीदोस्तने तुरकीमें कहा कि, कोई आदमी नशतर लगानेकी हामी नहीं भरता। बादशाहने भी तुरकीमें उसको गाली देकर कहा कि, तुझे क्या हुआ, जो तू यह काम नहीं करता।

इस हुक्मके पीछे अलीदोस्तने कहा कि, जो मैं यह बात अपनी तरफसे कहता हूं, तो खुदा मेरी जीभ गुद्दीसे निकाल ले; मगर बादशाके हुक्मपर कुछ बस नहीं चलता। उन्होंने हुक्म दिया है कि, आपकी आंखोंमें नशतर लगाये जायं। मिरजा बोला कि, मुझे मार ही क्यों नहीं डालते। अलीदोस्तने कहा कि, बादशाहके हुक्म बिना आपको कौन मार सकता है, यह कहकर वह अपना काम करने लगा। उसके हाथमें एक कपड़ा था, उसका गेंद बनाया और मिरजाके मुंहमें ठूंस दिया। फिर उसको हाथ पकड़कर डेरेसे बाहर लाये और जमीनपर लेटाया और उसकी आंखोंमें थोड़े बहुत नशतर मारे। मिरजाने उफ्र नहीं किया; बल्कि एक आदमीसे, जो घुटनोंपर बैठा था, कहा कि, तू क्यों बैठा है, क्या जबतक अपना काम नहीं कर लेगा, मुझे नहीं छोड़ेगा। इसके सिवाय और कोई बात उसके मुंहसे नहीं निकली और वह खूब मजबूत रहा; मगर जब उसकी आंखोंमें नींबूका रस डालकर नमक छिड़का गया, तो फिर उससे नहीं रहा गया और बिलबिलाकर कहने लगा कि, खुदा मैंने, जो बुरे काम इस लोकमें किये थे, उनका बदला भुगत लिया, परलोक

उसके हाथ अपनी अन्धी आंखोंपर रखकर एक शेर पढ़ा, जिसका यह मतलब था कि,—

मेरी आंखोंने तेरे मुंहपर बहुतसे परदे तान दिये हैं,
तोभी वे उस आंखसे देख रही हैं कि, जिसने तेरे
मुंहको बहुत देखा है।

फिर बादशाह जानवह लोगोंके ऊपर, जो रास्ता रोके हुए थे, गये। उनमेंसे बहुतसे आदमी मारे गये, ख्वाजा कासिम महदी वगैरा बादशाही लोग भी काम आये।

इस तरह बादशाहने इस तरफसे निबड़कर कश्मीरको जाना चाहा, जिसकी लौ बहुत वर्षोंसे लगी हुई थी; मगर अमीरोंने कश्मीरको कुआं और कैदखाना बताकर कहा कि, इस वक्त बादशाहके इधर आनेसे सलीमखां बहुतसे लशकरसे पञ्जाबको आ रहा है और इधर कुछ भी तैयारी नहीं है, जो हम कश्मीरको जावें और पठान रस्ता रोक लें, तो मुश्किल पड़े। इसलिये जो पहले काबुल चलकर पठानोंके निकालनेकी तैयारी करें, तो अच्छा हो; मगर बादशाहने कबूल न करके शाहजादेको तो काबुलकी तरफ रुखसत किया और आप कश्मीरको जाने लगे; लेकिन अमीरोंके बहकानेसे उनके अकसर सिपाही

में मुझपर दया करना। फिर मिरजाको घोड़ेपर बैठाकर फौजके पीछे चलाया और उस जगह उतारा, जहां सुलतान फीरोजशाहने पेड़ लगाये थे; मगर वहां गरमी बहुत थी, इसलिये फिर सवार कराया और लशकरमें लाकर पहाड़ काटनेवाले मिरजा कासिमके डेरेमें जा उतारा। उस वक्त मैंने जो उसको बहुत ही कमजोर और बेचैन पाया, तो देखा न गया; अपने डेरेपर चला आया और सिर झुकाकर बैठ गया। बादशाहने देखकर पूछा, तो मैंने सारा हाल कह दिया, जिसे सुनकर नहानेके लिये पानी मंगाया।

और नौकर चाकर उन्हें छोड़कर काबुलको चल दिये। बादशाह-के पास खास दो अमीरोंके सिवाय और कोई नहीं रहा, तब उन्होंने अपने मोतमदोंको हुक्म दिया कि, जाकर लोगोंको घेर लावें, और जो मारनेकी जरूरत पड़े, तो हुक्म मंगानेपर मौकूफ न रखें। इसी गड़बड़में, जो कुरान सेफाल देखी गयी, तो यूसुफ पैगम्बरका किस्सा निकला, उसका फल कोई कुछ और कोई कुछ कहने लगा। ख्वाजाहुसेन मरवीने अरज किया कि, काश्मीरको, जो कुआ और कैदखाना बताया जाता है, वह सच होगा; क्योंकि यूसुफका किस्सा इन्हीं दोनों बातोंकी खबर (१) देता है।

बादशाह इस तरहसे अमीरोंकी फूट देखकर काश्मीरके इरादे-से बाज आये और काबुलको रवाने हुए। जब सिन्धु नदीपर पहुंचे, तो मिरजा कामरांने मक्के जानेकी रुखसत मांगी। बाद-शाह मञ्जूर करके महरबानीसे रातको उसके डेरेपर गये। मिर-जाने ताजीम देकर पहले तो एक बैत पढ़ी, जिसका भावार्थ यह था कि,—

फकीरकी टोपीका सिरा आसमानपर पहुंचे, जो तुझ जैसा
बादशाह उसके सिरपर अपनी छाया डाले।

और फिर दूसरी बैत पढ़ी उसका यह मतलब था,—

मेरी जानपर जो कुछ तुझसे पहुंचे शुक्रकी जगह है।
चाहे जुल्मका तीर हो, चाहे सितमकी तलवार।

इसमें यों तो शुक्रिया पाया जाता था, पर शिकायत भी भरी हुई थी; मगर बादशाह इन बातोंको मञ्जूर न रखकर रोने लगे और बोले कि, खुदा जानता है कि, मैं इस कामसे, जो मेरे अख-

---

(१) यूसुफ कुएंमें भी गिराया गया था और कैद भी किया गया था।

(२) अर्थात् तुम मुझको पहले अन्धा कर डालते।

तियारमें नहीं था, बहुत शर्मिन्दा हूं, यह हालत मेरी तुमसे पहले ही हो गयी होती (१)।

मिरजाने इस बातसे शर्मिन्दा होकर हाजी यूसुफसे पूछा कि, यहां कौन कौन हैं। उसने कहा तरदीबेगखां, सुनअमखां, बाबूसबेग, ख्वाजा हुसैन मरवी, मीर अबदुलहई, मीर अबदुल्लाह, खस्सर बेग और आरिफबेग है।

मिरजाने कहा यारो तुम सब गवाह रहना कि, जो मैं अपनी बेगुनाही जानता, तो ऐसे वक्तमें हजरत तशरीफ रखते हैं, माफ कर देता; मगर मुझे यकीन है कि, मैं मारा जानेके लायक था। आप, जो मेरी जांबख्शी (प्राणदान) करके मक्के जानेकी रुखसत देते हैं, तो मैं इस करम और फजलके हजारों शुक्रिये अदा करता हूं; क्योंकि मेरी बुराई और बदअहदीका कुछ भी दण्ड नहीं दिया है।

मिरजाने यह कहकर अपने बेटोंकी सिफारिश की। बादशाहने खुशीसे मञ्जूर करके मिरजाको विदा किया।

यह बात पहलेसे ठहर गयी थी कि, मिरजा बादशाहके सामने रोये धोवे नहीं, इस वास्ते वह अपनेको संभाले रहा था; मगर ज्योंही बादशाह दौलतखानेको गये, वह फूट फूटकर रोया।

---

(१) मिरजाने सुनअमखांसे कहलाया कि, मैं इन फूटी आंखोंसे काबुल जाकर क्या मुंह दिखाऊंगा। जहां बरसोंतक बड़ी धूमधामसे बादशाही कर चुका हूं, तुम बादशाहसे मुझे मक्के जानेकी रुखसत दिला दो, नहीं तो मैं अपनी जान दे दूंगा और मेरा खून भाईकी गरदनपर होगा। बादशाहने दिनभर तो यह बात मञ्जूर नहीं की और यही कहते रहे कि, जिसे मैंने अन्धा किया है, उसे कैसे छोड़ सकता हूं; लेकिन फिर सुनअमखां और दूसरे अमीरोंके बहुतसा कहनेपर मान ली और इस शर्तपर कि, मेरे सामने रोये धोये नहीं, उससे मुलाकात भी की।

दूसरे दिन हुक्म हुआ कि, मिरजाके नौकरोंमेंसे, जो कोई साथ जाना चाहे, जाये, कुछ रोक नहीं है; मगर किसीने जाना नहीं चाहा, जो लोग दोस्तीकी शेखी मारते थे, वे भी छोड़ बैठे। चलमाकोका (१) खड़ा था, जो उन दिनों बादशाहका सफरची (२) था और बादशाहकी महरबानी भी उसपर बहुत थी। बादशाहने उससे फरमाया कि, चलमाकोका तू मिरजाके साथ जायगा या हमारे पास रहेगा? उसने अरज की कि, मैं ऐसा मुनासिब समझता हूं कि, इन बुरे दिनों और विखेकी अंधेरी रातोंमें मिरजाके साथ रहूं।

वह बादशाहकी अच्छी खिदमत करता था, तो भी बादशाहने उसकी वफादारीको पसन्द करके उसको रुखसत दे दी, और जो कुछ खर्च मिरजाके सफरका देना ठहरा था, वह भी उसको सौंपकर मिरजाके पास भेज दिया। बेगमलूक उतना दिल रखनेपर भी रस्तेसे लौटकर आ गया। यह बादशाहको बहुत बुरा लगा, वह खूबसूरत होनेपर भी फिर पसन्द नहीं आया।

मिरजा सिन्ध नदीके रस्तेसे (३) ठट्ठेमें गया और वहांसे मक्के पहुंचकर ३ हज बजा लाया और वहीं ११ जिलहज्ज सन् ९६४ (कातिक सुदी १३ सं० १६१३ सन् १९-१०-१५५६) को मर गया।

---

(१) फिर इसको अकबर बादशाहने खानआलमका खिताब दिया था।

(२) खाना खिलानेवाला।

(३) ठट्ठेका हाकिम शाहहुसेन अरगूं मिरजाका ससुर था। उसने मिरजाको एक महलमें ठहराया और मक्के जानेसे रोका; पर उसने नहीं माना। जब जाने लगा, तो उसकी बीबी चोचग बेगम भी साथ हो गयी। सबने कहा कि, अब इस अन्धेके साथ जाकर क्या करेगी, क्यों जाती है; परन्तु वह तो बापसे पूछे बिना ही पतिके साथ जहाजपर चढ़ गयी। शाह हुसेनने उसके लौटा

बादशाह मिरज़ा कामरांको बिदा करके बिक्रामर्मे आये, जो पिशावर कहलाता है। वहांका किला पठानोंने गिरा दिया था, बादशाह उसको फिरसे तैयार कराकर और सिकन्दरखां उजबक-को वहां छोड़के काबुलको लौटे। तब पठानोंने उस किलेपर चढ़ाई की; लेकिन सिकन्दरखांने लड़कर उनको हटा दिया।

सन् ९६१ के शुरूअ (माघ संवत् १६१०) में बादशाह काबुल-में पहुंचे। बेगमोंने खिदमतमें हाजिर होकर मुबारकबाद दी। बादशाहने कहा कि, आने और एक दूसरेके देखनेकी मुबारकबादी तो ठीक ही है; मगर मिरज़ा कामरांका कज़िया मुबारकबादीके काबिल नहीं है; क्योंकि हमने अपने हाथसे अपनी आंख फोड़ी है।

फिर अमीरोंके नाम मज़हरवालीके फरमान भेजे और आगरेके हाकिम अबुलरशीदखांको, जो रिश्तेदार था, सब हाल लिखा।

१५ जमादिउल अव्वल सन् ९६१ (जेठ बदी १ सं० १६१० १८ अपरैल १५५४) बुधको रातको धन लग्नमें माहजोजक बेगम-से लड़का पैदा हुआ। बादशाहने उसका नाम मोहम्मद हकीम रखा। उन्हीं दिनोंमें जूजूक मिरज़ा ख़ावरजसीकी बेटी खानम बेगमसे भी लड़का पैदा हुआ और सुलतान इब्राहीम नाम रखा गया; मगर वह जलदीसे मर गया।

लानेको आदमी भेजे; लेकिन वह नहीं लौटी, तो शाहहुसेन आप उसके लेनेको गया। उसने कहा, तुमने मुझे जिस खावन्द-को सौंपा था, वह उस समय बादशाह था और अब मुझको उससे अलग करते हो, जब कि, अन्धा और कङ्गाल हो गया है। बापने बेटीका यह पतिव्रत देखकर तारीफ की और उसे पतिके साथ जाने दिया और उसके लिये सुख और सम्पत्तिका सारा सामान जहाजपर भेज दिया। वह पतिके जीवनपर्यन्त उसके साथ रही।

कन्धार जाना।

बहुतसे चुगलखोरोंने बेरामखांकी (१) तरफसे झूठी झूठी बातें बादशाहसे अरज की थीं। इसलिये जाड़ा पड़ते ही बादशाहने हिन्दुस्थानपर आनेसे कन्धारपर जाना मुनासिब समझकर अलीकुली हमदानीको काबुलमें छोड़ा और शाहजादेको गजनीनतक साथ लेकर कन्धारको कूच किया। गजनीनमें शाहजादेके वकीलोंने खूब खिदमत और मेहमानी की। जब बादशाह वहांसे आगे बढ़े, तो शाहजादा रुखसत होकर काबुलमें आ गया।

बेरामखां, जो नेकबख्तीका बाना बांधे हुए था, बादशाहका आना खुदाकी दी हुई बड़ी न्यामतोंमेंसे समझकर १० कोसतक पेशवाईको आया और गांव शोरंदाममें कदमोंसे लगा। बादशाहने उसकी यह ताबेदारी देखकर जान लिया कि, उसके वास्ते जो कुछ कहा गया था, सच नहीं था और शुभ महूर्तमें कन्धार पहुंचकर खुशीके जलसे किये। शाह अबुलमुआली, मुनअमखां, खिजरख्वाजाखां, मुहम्मअलीखां, मीरखलीफा, इसमाईल दोलदी, हैदरमोहम्मद आख्तबेगी, ख्वाजाहुसेन मरवी और मौलाना अब्दुल बाकीसदर वगैरा बादशाहके साथ थे। बेरामखांने सबकी बड़ी खातिरतवाजे की। बादशाह जाड़ेभर वहां रहे। इस अरसेमें जिस चीजकी जरूरत बादशाही सरकारोंमें हुई, वही बेरामखांने

(१) बादशाहने कन्धार ईरानके शाह तुहमास्पको दे दिया था; परन्तु फिर यह कहकर ले लिया था कि, हम कुछ दिनों अपने पास रखेंगे और बेरामखां, जो ईरानकी रैयतमेंसे है। दोनों बादशाहोंकी तरफसे कन्धारमें जबतक हाकिम रहेगा कि, यह किला ईरानको न सौंप दिया जावेगा। इसलिये बेरामखां दोनोंका ही ताबेदारी करता था। अमीरोंको यह सन्देह हो गया था कि, कहीं वह आप ही कन्धारका मालिक न बन बैठे और उनमें फूट भी थी। इसीलिये उसकी तरफसे बादशाहको भड़काया था।

निहोरे खा खाकर दी और सब बादशाही नौकरोंको अपने चाकरोंके घरोंमें उतार कर घरवालोंको उनको मेहमानी करनेकी ताकीद कर दी।

ईरानसे ख्वाजागाजी तुहफे लेकर आया और हिरातके हाकिम मोहम्मदखांको नजर भेट भी पहुंची। शोरंदाममें कामरगे-का शिकार हुआ।

कराबेग और शिकारीका बाप शेरअली वगैर हुक्म शाह तुह-मास्पके ईरानसे बादशाहके पास आ गया था और शाहअबुल मुआली मजहबी अदावतसे कहा करता था कि, मैं इसराफजीको मार डालूंगा। बादशाह दिल्लगी समझकर कुछ नहीं कहते थे। आखिर एक रात उसने उस गरीबको मार ही डाला, यह बात बादशाहको बुरी तो बहुत लगी; लेकिन मोहब्बतसे कुछ न कह सके।

बादशाहका इरादा तो पहले तो मुनअमखांको कन्धार देनेका था; मगर फिर बैरामखांकी बन्दगी और तावेदारी देखकर उसीके पास रहने दिया। जमीनदावर, जो ख्वाजा मोअज्जमके पास था, अलीकुलीखांके भाई बहादुरखांको देकर हिन्दुस्थानपर चढ़ाई करनेके लिये काबुलको कूच किया। बैरामखांको हुक्म हुआ कि, इस लड़ाईकी तैयारी करके जल्दीसे खिदमतमें हाजिर हो आवे। गजनीनके पास शाहजादेने पेशवाई की। सन् ८६१ के अखीर (सं० १६११ सन् १५५४) में बादशाह काबुल पहुंचे। मुनअमखांको शाहजादेका अतालीक बनाया गया, उसने इस खुशीमें जलसा करके बादशाहको नजर दी। शाह ईरानको तरफसे हुलाहुल सुलतानका बेटा उलगबेग तुहफे लेकर आया। एक वलीने मौजोंका जोड़ा भेजा। बादशाहने कहा कि, हम इन मौजोंसे हिन्दुस्थान फतह करनेका शकुन लेते हैं; क्योंकि लोगोंमें यह बात मशहूर है कि, तुर्किस्तान सिर है, खुरासान छाती है और हिन्दुस्थान पांव है। ऐसे ही जब कि, अमीर तैमूर तुर्कि-

स्थानसे खुरासान फतह करनेके इरादेसे अन्दखूदमें पहुंचे थे, तो सहीअता नाम एक पहुंचे हुए फकीरसे मिलने गये थे। फकीरने बकरीकी छाती उनको भेंट की थी। उन्होंने अपने पासवालोंसे कहा था कि, हम छातीसे खुरासान फतह करनेकी फाल लेते हैं, क्योंकि खुरासान दुनियाकी छाती है।

ईद रमजानके दूसरे दिन (भादों सुदी ३ ता० ३१ अगस्तको) बैरामखां आकर हाजिर हुआ। बादशाहकी उसपर बहुत मेहरबानी थी, इसलिये ईदकी खुशीको फिरसे करके ईदसे भी बढ़कर मजलिस सजायी। इसी दिन घोड़ोंकी सवारी और निशानेबाजी (घुड़दौड़ पोलो) भी देखी गयी, तो शाहजादेने पहले ही बारमें चांदीके गेंद तीरमें छेद लिये। यह देखकर सब मारे खुशीके चिल्ला उठे और और बैरामखांने इस निशाना उड़ानेकी तारीफमें एक अच्छा कसीदा (काव्य) बनाकर दरबारमें बादशाहको सुनाया।

इन्हीं दिनोंमें खैरख्वाहोंकी अरजियां हिन्दुस्थानसे पहुंचीं, जिनमें सलीमखांके मरने और सलतनतमें फतूर पड़नेका हाल लिखा था।

हिन्दुस्थानका हाल।

जब तारीख ११ रबीउल अव्वल सन् ९५२ (जेठ बदी १३ सं० १६०२। २४ मई १५४५) को शेरखां ५ वर्ष २ महीने १३ दिन सलतनत करके मरा था, तो उसका छोटा बेटा सलीमखां अमीरोंकी सलाहसे बापकी जगह बैठा। उसने ८ वर्ष २ महीने ८ दिन रयासत की। कुछ अरसे तक बड़े भाई आदिलखांसे लड़ता रहा था। खवासखां शेरखांका गुलाम था, उसने बहुतसा माल दे देकर लोगोंमें अपनेको बड़ा मशहूर किया था; मगर मालिकसे लड़नेमें उसको कुछ फायदा न हुआ। फिर कुछ मुद्दततक हैबतखां वगैरा नयाजी पठानोंसे लड़ा, जो पञ्जाबमें हाकिम थे और वे लोग हारकर कुछ तो मारे गये और कुछ काश्मीरकी

पहाड़ोंमें जा छिपे। इसके पीछे गक्खड़ोंसे लड़ने गया; मगर ये लोग उसके नौकर नहीं थे, बादशाही बन्दगीका दम भरते थे, इससे उसके काबूमें नहीं आये।

फिर उसने रोहतासके किलेको पूरा किया, जिसकी नीवें शेरखां रख गया था और सवालक पहाड़ोंमें बुरे दिनकी पनाहके वास्ते मानकोटका किला बनाया।

फिर बहुत दिनों अपनी बदमाशी और बदमाश पठानोंके खटकेसे गवालियरके किलेमें रहा। रईयतके साथ तो उसने अच्छा सलूक किया; मगर सिपाहियोंको नाराज रखा। २२ जीकाद सन् ९६० (अगहन बदी दूसरी ९ सं० १६१०। ११ अकतूबर १५५२) को वह भी अपने नीचेके एक अङ्गमें नासूर पड़ जानेसे मर गया। उसके कहनेसे उसका बालक बेटा फीरोजखां उसकी जगह बैठाया गया था; मगर कई दिन पीछे मुबारजखां, जो फीरोजखांका मामू था, उस बेगुनाह बच्चेको मारकर आप मालिक बन बैठा और अपना नाम मोहम्मद आदिल रखा। यह शेरखांके छोटे भाई निजामखांका बेटा था और अजब हाल यह है कि, निजामखांके एक बेटा और तीन बेटियां थीं। बेटा तो यह बादशाह हो ही गया था; मगर उन तीनों लड़कियोंके खावन्द भी बादशाहीके दरजेको पहुंचे थे, जिनमें एक तो सलीमखां था, जिसका हाल लिखा गया, दूसरा सिकन्दरसूर और तीसरा इब्राहीमसूर, जिनका अहवाल आगे आवेगा।

हेमू खुशामद और चुगलियोंसे बढ़ते बढ़ते मुबारजखांका (जो ऐशमें पड़कर दुनियाके हालसे गाफिल रहा करता था) वकील हो गया था।

हेमूका हाल।

हेमूका न तो अच्छा घराना था, न अच्छी सूरत और आदत थी; मगर खुदाने उसको छिपे हुए गुणोंसे बड़े दरजेको पहुंचाया था, या बुरे आदमियोंको सजा देनेके लिये बुरेसे बुरेको उभगाड़

हाकिम किया था। वह बदशक्ल कोताह कद (ठिंगना) बड़े इरादेवाला रेवाड़ी जिले मेवातके टुटपूंजिये बनियोंमेंसे था और हिन्दुस्थानके बनियोंकी नीची जाति ढूंसरमें (१) पैदा हुआ था और लशकरोंके पीछे नमक बेचता बेचता छलबल करके सलीमखांके मोदियोंमें दाखिल हो गया था। फिर चुगली, चावलूसी बढ़ते बढ़ते सलीमखांके नौकरोंमें जा मिला था। सलीमखांतक पहुंचकर लोगोंको सताने लगा था, जाहिरमें तो यह कहता था कि, अपने मालिककी खैरख्वाही करता हूं; मगर असलमें अपना घर भरता था, मालिककी भी जड़ काटता था और अपने पावोंपर भी कुल्हाड़ी मारता था।

इस तरहसे वह सलीमखांके दिलमें जगह पैदा करके मुल्क और मालके कामोंमें भी दखल देने लगा था। फिर गाफिल मुबारजखांके वक्तमें तो तमाम कारखानोंका हाकिम होकर बड़ा अमीर हो गया और मुबारजखांका, जो अदली कहलाता था, नाम ही नाम रह गया। तमाम पकड़धकड़ और लेना देना वही करता था, उसने शेरखां और सलीमखांके हाथियोंपर भी कब्जा कर लिया था और उनके खजानोंको लुटा लुटाकर बहुतसे आदमी अपनी बन्दगीमें लगा लिये थे। कुछ दिनों तो बसन्तरायके खिताबसे अपनेको मशहूर किया। फिर राजा विक्रमाजीत कहलाने लगा; मगर अकलमन्दोंसे बादशाहीका खिताब अदलीके

(१) अब तो ढूसर अपनेको बनियोंसे ऊंचा मानकर ब्राह्मणोंमें मिलते हैं और ढूंसरके नामसे चिढ़ते हैं। भार्गव कहना और कहलाना पसन्द करते हैं; क्योंकि भृगु ऋषिसे अपनी उत्पत्ति बताते हैं। ब्राह्मण लोग ऐसा कहते हैं कि, उनकी मां वैश्य जातिकी एक स्त्री थीं, जिससे उनका वर्ण भी वैश्य ही है, ब्राह्मण नहीं है। रेवाड़ीके पास ढूंसी नाम एक पहाड़ है, वहां उनकी उत्पत्ति हुई है, जिससे ढूंसर कहलाते हैं।

नामपर ही रहने दिया। उसके दुश्मनोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ा और बहादुरीसे हरेक लड़ाईमें जीता। बहादुरी और कारगुजारीमें मशहूर होकर लोगोंकी जबानपर चढ़ गया।

मुबारजखांका हाल।

मुबारजखांके बादशाह होनेसे हिन्दुस्थानका काम और बिगड़ा। शेरखां और सलीमखां तो इन्तजामका सलीका भी रखते थे और मुबारजखांने तो वह किया कि, कोई नहीं करेगा। इधर अहमदखां सूरने, जो सलीमखांका बहनोई और पञ्जाबका हाकिम था, बादशाहीका दावा करके अपना नाम सिकन्दर रखा, उधर मोहम्मदखांने, जो शेरखांका नजदीकी रिश्तेदार और बंगालेमें हाकिम था, वहां अपनी बादशाहीका झण्डा खड़ा किया। इब्राहीमखां सूरने भी उसी रिश्तेदारीसे हिन्दुस्थानकी बादशाहीको मुंह धोया। शुजाअतखांने, जो सजावलखां कहलाता था, मालवेमें सिर उठा रखा था। बदमाश पठान अलग ही आपसमें लड़ने लगे थे, सिकन्दरने पञ्जाबके लशकरसे राजधानी आगरेपर चढ़ाई की। मुबारजखां और इब्राहीमखां भी इसी इरादेसे निकले थे; आखिर हैमूके छल कपटसे मुबारजखां तो पूरबको चल दिया और इधर आगरेके पास सिकन्दर और इब्राहीमकी मुठभेड़ हुई। इब्राहीम हारकर निकल गया। उसका बाप गाजीखां भी, जो बयानेके जिलेको दबाये हुए था, किलेमें जा बैठा। सिकन्दरका काम बढ़ा, सिन्धसे गङ्गातक मुल्क उसके कब्जेमें आ गये। वह बहुतसा लशकर जमा करके चाहता था कि, पूरबकी तरफ जाकर बादशाहीके दावेदारोंको बीचमेंसे हटा दे और अकेला मालिक हो जाय; मगर इतनेमें ही बादशाहका हिन्दुस्थानपर आना सुनकर ततारखां और हबीबखां वगैरा बहुतसे आदमियोंको पञ्जाबकी रखवालीपर भेजा।

उधर बंगालेके हाकिम मोहम्मदखां और हैमूसे बड़ी लड़ाई हुई, मोहम्मदखां मारा मारा गया। शेरखां और सलीमखांके

तमाम खजाने हेमूके हाथमें आ गये, उसका काम और भी बढ़ गया। फिर उससे और इब्राहीम वगैरा सब दुश्मनोंसे लड़ाइयां हुईं, सब जगह उसीकी जीत रही। वह घोड़ेपर चढ़ना नहीं जानता था, हमेशा उसको हाथीके सन्दूक (हौदे) पर लादपर ले जाते थे, तोभी अपनी छातीके जोर और रुपया खर्च करनेसे बड़े बड़े काम, जो लोगोंकी समझमें नहीं आते थे, ले निकलता था। जब सिकन्दरने आगरेमें जोर पकड़ा था, तो वह (हेमू) बिहार और बंगालेकी तरफ चला गया था और जब मोहम्मदखांके पीछे उसका बेटा खिजरखां जलालुद्दीन नाम रखकर बंगालेमें बादशाह बन बैठा, तब सुबारजखां और हेमू उससे लड़नेको गये।

बादशाहका हिन्दुस्थान जीतना।

बादशाहने हिन्दुस्थानके हरजमरजकी खबरें सुनकर बेगमों, मिरजा मोहम्मद हकीम और मुनअमखांको तो काबुलमें छोड़ा और शाहजादे अकबरको जिसकी उमर १२ साल और ८ महीनेकी हो गयी थी, साथ लेकर एक अच्छे महूर्त्तपर जिलहज्ज सन् ९६१ (अगहन १६११ नवम्बर १५५४) में हिन्दुस्थानको कूच किया। उस वक्त ३ हजारसे भी कम आदमी साथ थे। बैरामखां बादशाही कामों और अपने सफरके सामानोंके लिये रुखसत लेकर काबुलमें रह गया।

३० मोहर्रम सन् ९६२ (पोस सुदी २ ता० २६ दिसम्बर) को बिक्राममें मुकाम हुआ, उस दिन सिकन्दरखां उजबकको अच्छा काम देनेसे खांका खिताब मिला।

५ शफर (पोस सुदी ८ ता० ३१ दिसम्बर) को सिन्ध नदीपर, जो नीलाबके नामसे मशहूर है, डेरे हुए। तीन दिन मुकाम रहा, यहां बैरामखां भी काबुलसे आ गया और इसी दिन यह बधाई भी आयी कि, "ततारखां कासी" जो बहुतसे लश्करसे किले रोहतासकी रखवालीपर रखा गया था, बादशाहका आना सुनते

ही भाग गया है। बादशाहने मज़हरखानीसे फरमान भेजकर सुल-
तान आदम गक्खड़को बुलाया ; मगर वह जमींदारीकासा आगा
पीछा सोचकर नहीं आया और अरज़ीमें लिखा कि, मुझसे और
सिकन्दरसे अहदनामा हो गया है, मेरे बेटे लशकरीको वह साथ ले
गया है। अब जो मैं हाजिर होऊं, तो अहदनामेके खिलाफ
करूं और मेरे बेटेके मारे जानेका भी डर है। इसपर अमीरोंने
अरज की कि, पहले फौज भेजकर इसीसे समझ लेना चाहिये।
ऐसे सरकशको पीछे छोड़कर आगे जाना अक्लमन्दीसे दूर है ;
मगर बादशाहने कहा कि, कदीमसे ताबेदारीमें रहा है और अभी
एक नयी खिदमत भी कर चुका है। इस वक्त हम उसको सज़ा
देना मुनासिब नहीं समझते ; जब कि, वह उज्र और आजजी भी
कर रहा है।

जब बादशाह सिन्धसे उतरे, तो पठान लोग, जो रोहतासमें
जमा हो रहे थे, बिखर कर इधर उधर चले गये और बादशाह
रैयतको अमन और तसल्ली देते हुए आगे बढ़े। उस वक्त जो अमीर
साथ थे, उनके नाम ये हैं।

१ बैरामखां।	२ मीर अबदुल्लाह।
३ शाह अबुलमुआली।	४ मुसाहिबबेग।
५ ख्वाजा खिजरखां।	६ अलीकुलीखां शैबानी।
७ तरदीबेगखां।	८ मोहम्मद कुलीखां बरलास।
९ सिकन्दरखां।	१० ख्वाजा मोअज्जम।
११ खिजरखां हजारा।	१२ अलीकुलीखां इन्द्राबी।
१३ अबदुल्लाहखां उजबक।	१४ हैदरमोहम्मदखां आखतावेगी
१५ बाबूसबेग।	१६ इसमाइलबेग दोलदी।
१७ मिरज़ा हसनखां।	१८ मिरज़ा निजात।
१९ मोहम्मदखां जलायर।	२० सुलतान हुसैनखां।
२१ कन्दूक सुलतान।	२२ मोहम्मद अमीन दीवाना।
२३ शाहकुली नारञ्जी।	२४ तोलकखां।

२५ काकर अलीखां। २६ बाकीबेग यालीश्रवेगी।
२७ लालखां बदखशी। २८ बेग मोहम्मद आखतावेगी।
२८ ख़्वाजा बादशाह मरीज। ३० कीचक ख़्वाजा।
३१ ख़्वाजा अबदुल बारी। ३२ ख़्वाजा अबदुल्लाह।
३३ मीर मुईन। ३४ मीर गनी।
३५ शाह फखरुद्दीन। ३६ मीर मुहसन दाई।
३७ ख़्वाजाहुसैन मरवी। ३८ मीर अबदुल हई।
३८ मीर अबदुल्लाह कानूनी। ४० खञ्जरबेग।
४१ आरफबेग। ४२ ख़्वाजा अबदुल समद।
४३ मीर सैयद अली। ४४ मुल्ला अबदुल कादिर।
४५ मुल्ला अलियास अर्दबेली। ४६ शेख अबदुल कासिम जुरजानी
४७ मौलाना अबदुल बाकी। ४८ अफजलखां मीर बखशी।
४८ ख़्वाजा अबदुलमजीद दीवान। ५० अशरफखां मीर मुनशी।
५१ कासिम मुखलिस। ५२ ख़्वाजाअताउल्लाह दीवान।

ब्यूतात (कारखानोंका)

५३ ख़्वाजा अबुल कासिम। ५४ शहाबुद्दीन अहमदखां।
५५ मुईनखां, फरनखुदी। ५६ ख़्वाजा अमीनुद्दीन महमूद।
५७ मलिक मुखतार।

जब बादशाह कलानूरमें पहुंचे, तो शहाबुद्दीन अहमदखां, अशरफखां और फरहतखांको लाहोरमें अपने नामका खुतबा पढ़ाने, सिक्का चलाने और लोगोंको तसल्ली देनेके लिये भेजा। बैरामखां, तर्दीबेगखां सिकन्दरखां, खिजरखां हजारा, इसमाईल-बेग दोलदी और बहुतसे आदमियोंको नसीबखां पचभइयेके ऊपर कत्लके इरदानेमें भेजा। फिर आप लाहोरको गये, सब लोग पेश-वाईको आये।

२ रबीउलसानी (फागुन सुदी ३ ता० २४ फरवरी १५५५)को बादशाह लाहोरमें दाखिल हुए। अखीर महीनेमें शाहबाजखां पठानके बहुत आदमियोंसे देपालपुरमें होनेकी ख़बर आयी।

बादशाहने अबुल मुआली, अलीकुलीखां शेबानी, अलीकुलीखां इन्द्राबी और मोहम्मदखां जलायरको बहुतसे एमीरोंके साथ उधर भेजा। ये गये और लड़कर पठानोंको भगा आये।

बैरामखां जब हरहानेमें पहुंचा, तो नसीबखां थोड़ीसी लड़ाई लड़कर भाग गया, बहुतसा माल असबाब लूटमें आया और पठानोंकी जोरू बच्चे भी पकड़े गये; मगर बैरामखांने बादशाहसे सुना था कि, अब जो हिन्दुस्थान फतह होगा, तो खुदाके बन्दे जबरदस्ती लोगोंके बन्दे (गुलाम) नहीं बनाये जायंगे। इसलिये बैरामखांने खुद जाकर पठानोंके सारे बालबच्चोंको जमा किया और नसीबखां-के पास पहुंचाकर इस बड़ी फतहके तुहफे, नामी हाथी और उमदा पदार्थ सब बादशाहकी दरगाहमें अरजीके साथ रवाने किये।

फिर वह जालन्धरमें गया। पठान भाग जानेमें अपना भला समझे; मगर बादशाही लशकरमें झगड़ा पड़ जानेसे अपना माल असबाब भी ले गये और वह झगड़ा यह था कि, तरदीबेग तो चाहता था कि, आगे जाकर भागे हुए पठानोंका पीछा करे और बैरामखां मुनासिब नहीं समझकर रुखसत नहीं देता था। तरदीबेगखांने बाबलूखांको बैरामखांके पास भेजा कि, जैसे बने रुखसत ले आवे। यहां ख्वाजा मोअज्जमसे और उससे तकरार हो गयी और ख्वाजाने उसके हाथपर तलवार मार दी। जब बादशाहने यह खबर सुनी, तो हुक्म लिखकर अफजलखांके हाथ भेजा, अफजलखांने पहुंचकर अमीरोंमें सुलह और सफाई करा दी।

बैरामखां आप तो जालन्धरमें रहा और अमीरोंको अलग अलग आसपासके परगनोंमें भेजा। सिकन्दरखां माछीवाड़ेमें गया था, वह काबू समझकर वहांसे बढ़ा और सहरन्दको अपने कबजेमें ले आया, जहां उसको बहुतसा माल लूटमें मिला; मगर जब तातारखां, हबीबखां, नसीबखां और मुबारकखां वगैरा

बहुतसे पठान दिल्लीसे आये, तो सहरन्दमें न रह सका, जालन्धर लोट आया। बेरामखां यह बात ठीक न समझकर खफा हुआ और बोला कि, वहीं जमकर सहरन्दको बचाता और हमको खबर देता।

फिर बहुतसी बातचीत करके सब अमीर जालन्धरसे आगे बढ़े, जब माछीवाड़ेमें पहुंचे, तो तरदीमोहम्मद और अकसर लोग सतलज नदीसे उतरना नहीं चाहते थे। कहते थे कि, बरसात आ गयी है, अभी तो घाटोंको मजबूत करके वहीं ठहर जायं और जब बरसात हो चुके और हवा साफ हो जावे, तो नदीसे उतरें; मगर बेरामखां और कई अकलमन्दोंने नदीसे उतरना ही ठीक समझकर अच्छे अच्छे सवाल जवाब किये। आखिर मुल्ला पीरमोहम्मद, मोहम्मदखां नैशापुरी, वलीबेग और हैदरकुली बेग शामूकी कोशिशसे बेरामखां पार उतर गया। तब तरदीबेगखां और अमीरोंको भी उतरना पड़ा। फौजोंके परे जमाये गये, बेरामखां बीचमें रहा। खिजरखां हजारा और तरदीबेगखां दायें और बायें रखे गये, सिकन्दरखां हिरावल (आगे) हुआ। उधर पठान लड़नेको तैयार ही थे, शामको वक्त दोनों लश्करोंकी भिड़त हुई, लड़ते लड़ते रात पड़ गयी। बादशाही बहादुर अंधेरेमें भी जा जाकर तीर मारते थे, उधर एक बड़ा गांव था, जिसमें पठानोंमेंसे ही किसीने आग लगा दी, जो फूसके छप्परोंमें सुलगकर ऐसी भड़की कि, उसके उजालेमें इधरवाले तो पठानोंको खूब देखकर तीर मारते थे और पठान इधर अंधेरेमें कुछ न देखकर भी अटकलपच्चू तीर चलाते थे; आखिर तीन पहर रात जानेपर पठान घबराकर भाग गये। बादशाहकी बड़ी फतह हुई, हाथी और बहुतसे माल खजाने हाथ आये, जिनमेंसे अच्छे अच्छे पदार्थ बादशाहके पास भेजे गये। दूसरे दिन वहांसे चलकर सहरन्दमें डेरे हुए और अलीकुलीखां शैबानी कुछ फौजसे आगे भेजा गया।

बादशाहको जब बहुतसे लशकरसे तातारखांके माछीवाड़ेमें पहुंचनेकी खबर लगी थी, तो फरमाया था कि, यहांसे वहांतक मञ्जिल फासिला है। हमारे पहुंचनेसे पहले पहले जो खुदाको मञ्जूर होगा, हो जायगा और हाथ उठाकर फतहकी दुआ भी मांगी थी। थोड़े ही दिन पीछे फतहनामा और लूटका माल पहुंचा, हिसाब लगाया तो फतहका भी वही दिन था, जो दुआका था। बादशाहने खुश होकर खुदाका शुक्र किया और बहुत खैरात बांटी।

सिकन्दरसूरने जब यह हाल सुना, तो ८० हजार सजे हुए सवारोंसे लड़नेको आया। बेरामखांने अकलमन्दोंसे किलेमें बैठकर बादशाहके बुलानेकी अरजियां भेजीं, उस वक्त बादशाहके पेटमें दर्द हो रहा था। शाहजादेको भेज दिया, पीछेसे आप भी आकर शामिल हो गये। फरहतखांको शिकदार (कोटवाल) लाहोर, बाबूसबेगको फौजदार पञ्जाब, मिरजा शाह सुलतानको अमीन और मह्तर (१) जौहरको उस सूबेका खजानची करके छोड़ आये।

७ रज्जब (जेठ सुदी ८ सं० १६१२। १९ मई १५५५) को रातको बादशाह सहरन्दमें पहुंचे। अमीर जो १५ दिनसे उतने लशकरका मुकाबला किलेमेंसे कर रहे थे, आदाब बजा लाये। बादशाहने एक बागमें ठहर कर अपने लशकरकी चार फौजें कीं, एकको अफसरी, तो अपने हाथमें ही रखी, दूसरीको शाहजादेको, तीसरीको शाह अबुलमुआलीको और चौथीको बेरामखांको दी। ये चारों फौजें रोज लड़नेको जाती थीं। दोनों तरफसे यह बात ठहर गयी थी कि, जो लोग मारे जायं; उन्हें इज्जतके साथ ले जाकर उनके आदमियोंको सौंप दें, सो ऐसा ही होता था।

---

(१) यह वही जौहर अफताबची है, जिसने तजकिरा वाकेआत हुमायूंनी बनायी है और हम उसमेंसे बहुतसा लिख आये हैं।

एक दिन शाहजादेने शत्रुको किसी छतपर चढ़कर पठानोंके उस बड़े लशकरको देखा और कहा कि, कुछ दिनोंमें इसको हमारे आदमी लूट लेंगे, यह सुनकर सबको फतहकी उम्मेद बंध गयी।

उन्हीं दिनोंमें बादशाहका पुराना खिदमतगार अम्बर नाज़िर काबुलसे आया। बादशाहने उसको शाहजादेके पास रख दिया, वह शाहजादेसे हिन्दुस्थानियोंकी बड़े बखान करता था, जिससे हिन्दुस्थानी लोग शाहजादेके दिलमें भाते जाते थे।

एक दिन वलीबेगने माछीवाड़ेकी लड़ाईमेंसे पकड़ा हुआ चीता शाहजादेको नजर किया, जो अबतक कभी शाहजादेने नहीं देखा था, उसका नाम फतहबाज था। शाहजादेने खुश होकर उसके निगहबान दूंदूका नाम भी फतहखां रख दिया। इस बातसे भी बहुत कुछ नेक शकुन लिये गये।

यह लड़ाई ४० दिनतक होती रही। २ शाबान (आषाढ़ सुदी ३ ता० २२ जून) को शाहजादेके लड़नेकी बारी थी। उस दिन ख्वाजा मोअज्ज़म और बहुतसे आदमी लड़नेको गये। उधर-से सिकन्दरका भाई कालापहाड़ आया और यह बड़ी लड़ाई होने-का दिन भी था, तोभी होते होते लड़ाई इतनी कुछ बढ़ी कि, बादशाही लशकर आकर लड़ाईमें शामिल हो गया, बड़ी लड़ाई हुई, पठान हारे, सिकन्दर थोड़ेसे आदमियोंसे पहाड़को भागा। ख्वाजा मुसाफरीका एक सिपाही उसतक जा पहुंचा था; मगर वह बड़ी मुशकिलोंसे बचकर निकल गया। बादशाहकी फतह हुई, बहुत लूट हाथ आयी। यह फतह भी वैसी ही थी, जैसी कि, बाबर बादशाहने की थी। फतहके पीछे ही आंधी और मेह बहुत जोरसे बरसा, जिससे पठानोंका पीछा न हो सका और वे लोग बचकर भाग निकले, तोभी आंधी और मेहमें बहुतसे मर गये।

बादशाहने दरबारके अमीरोंसे पूछा कि, यह फतह किसके नाम लिखी जावे, तो शाह अबुलमआली और बैरामखां अपने

अपने नाम लिखाया चाहते थे; मगर बादशाहने शाहजादेके नाम लिखे।

सिकन्दरके नाम कुछ खत ख्वाजा मोअज्जमके लिखे हुए मिले। बादशाहने तअज्जुब करके उससे पूछा, तो कहा, जो मैंने बादशाही खैरख्वाहीसे लिखे थे; मगर बादशाहने यह बात क़बूल न करके उसको कैदकर दिया और सहरन्दसे समानेमें पहुंच कर अबुलमुआलीको मोहम्मद कुलीखां बरलास, इसमाईलबेग दोलदी, मुसाहिबबेग और इब्राहीमबेग उजबकके साथ लाहौरको भेजा कि, जो सिकन्दर पहाड़ोंमेंसे मैदानमें आकर लूटमार करे, तो उसको सजा दें।

बादशाह इस तरह पञ्जाबकी सूबाका काम शाह अबुल मुआली-को सौंपकर कुछ दिनों समानेमें रहना चाहते थे; क्योंकि वहांकी हवा अच्छी थी और मेंह भी उमड़ा हुआ था; मगर सिकन्दरखां उजबककी अरजी पहुंचा कि, मैं दिल्लीमें पहुंच गया हूं और पठान भाग गये हैं, हजरत जल्दीसे आकर हिन्दुस्थानके तख्तको इज्जत बख्शें।

बादशाह यह बधाई सुनकर १ रमजान गुरुवार (१) (सावन सुदी २ ता० ११ जुलाई) समानेसे कूच करके सलीमगढ़में पहुंचे, जो दिल्लीसे उत्तरका जमनाके ऊपर है और ४ (सावन सुदी ६ ता० २४ जुलाई) को शहरमें दाखिल हुए।

इन्हीं दिनोंमें एक दिन शाहजादेने एक नीलगाय तलवारसे मारी। बादशाहने जिस दिन यह सफर किया था, उस दिनसे दिल्ली पहुंचने और हिन्दुस्थान फतह होनेके दिनतक मास खाना

---

(१) रमजान पञ्चाङ्गके हिसाबसे गुरुवार नहीं, रविवारको थी। असलमें भूलसे रविवारकी जगह गुरुवार लिखा गया है। आगे जाकर २५ रमज़ान बुधको लिखी है, सो सही है और इससे १ रमजान रविवारको ही होती है।

छोड़ दिया था। इस वास्ते कहा कि, इस नील गायका मांस सुखा रखें, रमजानके पीछे जब हम मांस खाने लगेंगे, तो यह भी खायंगे।

फिर सब नौकरों चाकरोंको जागीरें बांटी गयीं। हिसारका जिला शाहजादेको दिया गया, सरकार सहरन्द और दूसरे कई परगने बैरामखांको मिले, तरदीबेगको मेवातमें, सिकन्दरखांको आगरेमें, अलीकुलीखांको सम्भलमें और हैदर मोहम्मदखां आखता बेगीको बयानेमें भेजा।

इन्हीं दिनोंमें शाहवली असकाने काबुलमें आकर माह जोजक बेगमके शाहजादा पैदा होनेकी बधाई दी। बादशाहने खुश होकर उसका नाम फर्रुखफाल रखा और शाहवलीको सुलतान-का खिताब दिया।

शाहजादेकी तरफसे शाह अबुलकासिम और बहुतसे आदमी हिसारमें अमल करनेको गये थे। वे रोज खरदाद (१) ६ शहरेवर २५ रमजान (भादों बदी १२ ता० १४ अगस्त) बुधवारको हिसारसे दो कोसपर पहुंचे थे कि, रुस्तमखां, तातारखां, अहमदखां, पीर मोहम्मद रूहतकी, बिजलीखां, अफजलखां, ताजखां और आदमखां क्यामखानी वगैरा २००० पठान हिसारसे आकर लड़े। बादशाही आदमी ४०० ही थे, तोभी इनकी फतह हुई। रुस्तमखांने भाग-कर हिसारके किलेको मजबूत किया। बादशाही बन्दोंने उसको घेरा। २३ दिन पीछे रुस्तमखां अमीरोंसे आकर मिला और ७०० आदमियोंसे बादशाहके पास भेजा गया। बादशाहने फर-माया कि, जो अपने बेटोंको विश्वासमें रखे, तो जागीर दी जाय; मगर रुस्तमखां इस बातको मञ्जूर न करके भागा चाहता था; पर बादशाहने पकड़कर बेगमोहम्मदखां एशक आकाको सौंप दिया।

---

(१) इर फारसी महीनेका छठा दिन।

बादशाही लशकरके छोटे आदमियोंमेंसे कम्बर नाम एक दीवाना था। जब सहरन्दसे दिल्लीको कूच हुआ, तो यह कुछ लोगोंको मिलाकर लूटमार करने लगा था और जो लूट मिलती, वह लोगोंको दे देता और बादशाहको भी अरजियां भेजा करता था। सहरन्दसे दौड़कर सम्भलको ले बैठा और अपने बेटे आरिफ़-को बदाऊं पर भेजा, जहां पठानोंका एक बड़ा अमीर रायहुसैन जलवानी था, वह बगैर लड़ाईके ही भाग गया। कम्बरने बदाऊं आकर काटगोलाको लूटा; मगर वहां रुकनखां पठानसे लड़ाई में हारकर बदाऊंको चला आया। यह अजब तरहका दीवाना था कि, बादशाहको तावेदारीकी अरजियां भी भेजता था और लोगोंको अपनी तरफ़से खानी, सुलतानीके खिताब और नक्कारे निशान भी देता था और अपना घर भी लुटा दिया करता था।

बादशाहने उसकी ऐसी हरकतें सुनकर अलीकुलीखां मेवाती-को लिखा कि, उस दीवानेको दरगाहमें भेजे और जो न माने तो सजा दे।

कम्बर रुकनखांसे हारकर बदाऊंमें पहुंचा ही था कि, अली-कुलीखां भी मेवातका बन्दोबस्त करके सम्भलमें पहुंचा और वहांसे बदाऊं आकर कम्बरको बुलाया। उसने कहा जैसा तू बादशाही बन्दा है वैसा हो मैं भी हूं और इस मुल्कको मैंने तलवारसे फ़तह किया है। यह कहकर अलीकुलीखांसे लड़ाई छेड़ी; मगर कुछ दिन पहले हारकर आया था, इसलिये किलेमें बैठकर बादशाहको अरजी लिखी। बादशाहने कासिम मुखलिसको उसके लानेके लिये भेजा; मगर उसके पहुंचनेसे पहले अलीकुलीखांने घेरेसे किला फ़तह होता हुआ देखकर मोहम्मदीबेग तुर्कमान और मुल्ला-ग्यासुद्दीनको किलेमें कम्बरके पास भेजा। उसने उनको कैद कर दिया था, तोभी उन्होंने बहुतसे आदमियोंको मिलाकर कम्बरसे किला ले लिया और अलीकुलीखांने उसका सिर काटकर बाद-शाहके पास भेज दिया। बादशाहने नाराज होकर अलीकुलीखांको

अफगीका फरमान लिखा कि, जब वह तावेदारीमें था, तो फिर उसको क्यों मारा।

तरुदीबेगखां जागीरदार इन्द्राब और अशकमश तो बादशाह-के हुक्मसे हिन्दुस्तानमें साथ आ गया था और वहां उसकी तरफ-से मुकीमखां था। मिरजा सुलेमानने फुरसत देखकर इन्द्राब-को आ घेरा और मुकीम उससे लड़कर काबुलमें चला आया।

हैदरमोहम्मदखां जब बयानेमें पहुंचा, तो इब्राहीमसूरका बाप गाजीखां, जो वहां था, लड़ न सका किलेमें जा बैठा। हैदर मोहम्मदखांने ईमान धर्म देकर किला उससे छुड़ाया और फिर माल असबाबकी लालचसे उसको मार डाला। बादशाहको यह बात भी बुरी लगी और शाहबुद्दीन अहमदखां मीर व्यूतातको तहकीकातके वास्ते भेजा।

शाहजादेका पञ्जाब जाना।

लाहोरसे खबर आयी कि, शाह अबुलमुआलीने फरहतखां हाकिम लाहोरको बगैर हुक्म बादशाहके दूर करके उसकी जगह अपना आदमी रख दिया और बादशाही खजानेमें भी हाथ डाला है; उधर सिकन्दर भी पहाड़ोंसे निकल आया है। बादशाहने पञ्जाबके बन्दोबस्तके लिये शाहजादेको सन् ९६२ के लगते ही भेजा और शाह अबुलमुआलीके वास्ते फरमाया कि, जो मुना-सिब हो, तो हिसार देदें और बैरामखांको अतालीक करके साथ किया।

जब शाहजादेकी सवारी सहरन्दमें पहुंची, जो उनके नौकर, जो हिसार फीरोजमें थे, आकर हाजिर हो गये। उसी दिन उस्ताद अजीज सीस्तानी भी, जो तोप और बन्दूक लगानेमें उस्ताद था और जिसको रूमीखांका खिताब मिला हुआ था, आया शाहजादेके बन्दूक लगानेकी शुरूआत यहांसे हुई और थोड़े ही दिनोंमें इस कामके उस्ताद हो गये।

बादशाहका अन्तकाल।

शाहजादेको रवाने करनेके पीछे बादशाह दिल्लीमें रहकर मुल्कों और फौजोंके बन्दोबस्तकी तजवीजें किया करते थे। कहते थे कि, कई शहरोंको तख्तकी जगह ठहरा कर हिन्दुस्थानका बन्दोबस्त करूंगा, जैसे दिल्ली, आगरा, जौनपुर, मंडू, लाहौर, कन्नौज और भी जहां कहीं ठीक मालूम होगा और हर जगह एक एक लश्कर एक एक मुनसिफ, गरीब परवर और होशियार आदमीकी सरदारीमें रखूंगा, जिससे उस जिलेको दूसरे लश्करकी मददका मोहताज न होना पड़े और हुक्म दूंगा कि, सोने चांदीकी जड़ाऊ (कुरसियां) तैयार करें; जिनपर आम दरबारोंमें शाहजादे और वे लोग, जो बहुत पास रहते हैं, बैठा करेंगे; क्योंकि बड़े आदमियोंके दिल अकेले धन और माल देनेसे ही शिकार नहीं होते हैं, जबतक कि, इज्जत और कद्र न बढ़ायी जावे, इन लोगोंके दिलपर काबू नहीं हो सकता।

वे आखिरत (परलोक)का भी जिक्र किया करते थे। पहले तो ऐसी बातोंको राजनीतिकी रुचिसे पसन्द नहीं करते थे; मगर अब खुद उनको याद करकर खुश होते थे। एक दिन बाबर बादशाहकी बातोंको तारीफ करके कहने लगे कि, एक दिन फरमाते थे कि, मेरा एक नौकर कहता है कि, जब मैं गजनीमक कबरस्तान देखता हूं, तो मुझे करनेकी ख्वाहिश होती है। ऐसे ही जब हम भी दिल्लीके कबरस्तानोंको देखते हैं, तो उसकी बात याद आती है कि, क्या खूब कहता था।

कभी कभी ऐसे शेर कि, जिनमें मरने और परमेश्वरसे मुक्तिको प्रार्थना करनेके मजमून होते थे, पढ़ पढ़कर रोने लगते थे।

पञ्जाब जानेसे पहले शाहजादेको एक रात ऐसा सपना आया कि, कोई उनके बालोंको कतरता है। उन्होंने अदहमखांकी मा माहमअङ्गासे कहा, उसने स्वप्न जाननेवालोंको बुलाकर फल पूछा और बादशाहसे भी पूछा गया, तो जवाब दिया कि, उसके सरसे

बला दूर हो जायगी और चुपकेसे अपने मरनेकी खबर बाहकर तसल्ली कर दी।

उन दिनोंमें हमेशा उनकी बातोंसे मौतकी ही ध्वनि निकला करती थी जिनके सुननेसे लोगोंके दिल टुकड़े टुकड़े होते थे।

अफीम भी कम करते जाते थे और पास रहनेवालोंसे कहते थे कि, मैं देखता हूं कितने दिनोंमें यह दो तीन गोलियोंपर आ रहेगी और ७ दिनकी खुराक एक पुड़ियामें बांधकर अपने खास बन्दोंसे कह दिया कि, बस हमारा अफीमखाना इतना ही है।

१२ रबीउल अव्वल सन् ९६३ (माघ सुदी १४ सं० १६१२ ता० २५ जनवरी सन १५६५ ई०) को जुमेके दिन ४ गोलियां रह गयी थीं, वे मंगाकर गुलाबजलके साथ निगलीं। पिछले दिनको शाहबदाग आलमशाह और बेगमलूक वगैरा मक्केसे चगताईखां वगैरे गुजरातसे और पहलवान दोस्त मीरबर और मौलाना असद मुनअमखांकी अरजियां लेकर काबुलसे आये थे, शामके करीब आपने नये बने हुए किताबखानेकी छतपर चढ़कर लोगोंका सलाम लिया, जो जुमा मसजिदमें जमा हो रहे थे। फिर कुछ देरतक मक्के, गुजरात और काबुलका हाल पूछते रहे, पीछे कुछ ज्योतिषियोंको बुलाया, क्योंकि उस दिन शुक्रके उगनेका भ्रम था और चाहते थे कि, उसको देखकर अच्छे मुहूर्त्तमें बड़ा दरबार करके कुछ लोगोंके दरजे बढ़ावें। शाम पड़ते ही नीचे उतरते थे कि, उसी वक्त मिसकी नाम मुल्लाने अजा दे दी, जिसकी ताजीमके लिये नालमें बैठने लगे, तो पांव पोस्तीनमें उलझा, सीढ़ियां चिकने पत्थरोंकी थीं, लकड़ी फिसली, नीचे जा पड़े। दहनी कनपटीमें चोट लगी, दहने कानमेंसे कई बूंदें लहूकी गिरीं। उसी वक्त लोगोंकी तसल्लीके लिये खैरियतका फरमान भेजा।

इसी दिन दुपहरको आपने अपने मुसाहिबोंसे कहा था कि, आज दुनियाके किसी बड़े आदमीको कोई सदमा पहुंचेगा और वह दुनियासे उठ जायगा।

हजूरी खैरख्वाहोंने इस बातको छिपाकर शाहजादे और बड़े बड़े अमीरोंके पास जो जगह जगह फैले हुए थे, खबरें भेजी और १७ दिनतक आम लोगोंको कुछ पता लगने नहीं दिया और एक दिन मुल्लाबेकसीको बादशाहके कपड़े पहिनाकर महल की छतपरसे, सोच विचारमें पड़े हुए लोगोंको दिखाया, जो सलाम करके तसल्लीके साथ चले गये।

खिदमतखांआगाखां, अलीकुलीखां, लतीफ मिरजा, खिजरखां हजारा, कोन्दूकाखां, कांवर अलीबेग, अशरफखां, अफजलखां, (जो वजीरोंमेंसे थे) और अबुलहई पेशरोखां और महतरखां तो हाजिर ही थे। कुछ दिनों पीछे तरद्दीबेगखां, जो अमीरुलउमरा बननेकी फिक्रमें था, और तमाम अमीर जमा हो गये। तब २८ रबीउल अव्वल (फागुन बदी १४ ता० १० फरवरी) को शाहजादेके नाम खुतबा पढ़ा गया और सब लोगोंको तसल्ली दी गयी। फिर सब अपनी अपनी जगह चले गये और तरद्दीबेगखांने वजीरोंकी सलाहसे, जो दिल्लीमें थे, बादशाहीका सारा लवाजमा गुलामअली और दूसरे मोतबर आदमियोंके साथ शाहजादेके पास भेजकर तावेदारीकी अरजी लिखी और मिरजा कामरांके बेटे मिरजा अबुल कासिमको भी उनकी खिदमतमें भेज दिया।

शाहजादेका हाल।

जब शाहजादे सहरन्दमें पहुंचे थे, तो मोहम्मदकुलीखां बरलास और मुसाहिबबेग वगैरा, जो शाह अबुल मुआलीके पास तईनात और उसके बेजा चालचलनसे तङ्ग थे, वहां आकर हाजिर हो गये। सिकन्दर डरकर पहाड़ोंमें चला गया और शाह अबुल मुआली भी, जो उसके मुकाबिलेको निकलता था, लाहोरमें लौट आया। वहां उसने सुना कि, यह विलायत शाहजादेके नाम हो गयी है, तो अपनी फौजके साथ सुलतानपुरकी नदीपर आकर शाहजादेसे मिला। शाहजादेने मेहरबानी करके बैठनेका हुक्म दिया; मगर उसने डेरेपर जाकर कहलाया कि, मेरी और बाद-

शाहकी तो एक बात है, सो सब लोगोंको मालूम है, तुमको भी याद होगा कि, जुयशाहीके बड़े शिकारमें मैंने और हजरतने एक बरतनमें खाना खाया था और तुम भी वहां हाजिर थे और तुमको जूठन मिली थी। जब इसपर भी मैं तुम्हारे घरमें आया, तो तुमने नमद्दति किया, क्यों मेरे वास्ते अलग डलवाया और किस लिये मेरा दस्तरखान अलग लगवाया। शाहजादेने हंसकर हाजीमोहम्मद सीस्तानीसे, जो यह बात कहनेको आया था, फरमाया कि, जाकर उससे कहो कि, सलतनतका तोरा और है और इश्क कानून और है। हजरतका, जो लगाव तुमसे था वह मुझसे नहीं है; फिर तअज्जुब है कि, इन दोनों बातोंमें फर्क न करके गिला करते हो। शाह शर्मिन्दा हुआ और शाहजादे सिकन्दरको सजा देनेके लिये, जो मानकोटमें रहता था, पहाड़की तरफ गये। जब कसबे हरहानेमें पहुंचे, तो एक कासिद दौड़ा हुआ आया और बेरामखांको बादशाहके गिरनेकी खबर दी। बेरामखां आगे जाना सलाह न देखकर शाहजादेको कलानूरमें ले आया, वहां मजर शेखचूली बादशाहका फरमान लाया, उसके साथ ही बादशाहके मरनेकी भी खबर पहुंची। शाहजादे सुनकर रोने लगे। माहमअङ्गा, बेरामखां और असकाखां, जितना कुछ समझाते थे, उतना ही रञ्ज और गम भी बढ़ता जाता था। आखिर सबर करके बादशाहकी रूह (आत्मा) को सवाब पहुंचानेके लिये खैरात बांटी और गरीबोंको खाने खिलाये। (१)

बादशाहके गुण।

हुमायूं बादशाह अच्छे लिखे पढ़े थे, ज्योतिष विद्या तो खूब ही जानते थे, बड़े बड़े ज्योतिषी उनके पास रहते थे। उनका विचार रसद (यन्त्रशाला) बांधनेका था। बहुतसे यन्त्र और यन्त्रराज भी इकट्ठे कर लिये थे और इस कामके वास्ते कई

(१) आगे जो कुछ हुआ अकबरनामेमें लिखा है।

स्थान भी पसन्द करके रखे थे; परन्तु मृत्युने अवकाश नहीं दिया।

वे फारसी भाषाके कवि भी थे, उनका दीवान (कविता संग्रह ग्रन्थ) बादशाही किताबखानेमें था।

बादशाह होनेके पहले एक दिन वे काबुलके बाहर घूम रहे थे, मौलाना रूहुल्लाह भी साथ था। आपने उससे कहा कि, रास्तेमें ३ आदमी जो आते मिलें, तो मैं उनके नामसे शकुन लूं। उसने कहा कि, शकुन लेनेके लिये तो एक ही आदमी बहुत होता है। जवाब दिया कि, मेरे दिलमें तो तीन ही आते हैं। जब आगे चले, तो एक बूढ़ा आदमी मिला, नाम पूछा तो कहा मुराद ख्वाजा और आगे बढ़े, तो एक आदमी गधेपर लकड़ियां लादे हुए आता था, उससे नाम पूछा, तो बोला दौलतख्वाजा। आपने कहा कि, अब जो सआदतख्वाजा नामका कोई आदमी मिले तो क्या अच्छा हो। फिर आगे गये, तो एक आदमी गायें चरा रहा था, उससे पूछा कि, तेरा नाम क्या है? उसने कहा सआदत ख्वाजा है। यह सुनकर साथियोंको बड़ी खुशी हुई और उन्होंने जाना कि, उनकी मनचाही मुरादें पूरी होंगी।

फिर जब आप बादशाह हुए तो अपने सब नौकरों और मुल्कवालोंके तीन थोक बनाकर दौलतवाले सआदतवाले और मुरादवाले नाम रखे।

भाईबन्दों, अमीरों, वजीरों और सिपाहियोंको तो दौलतवालोंके थोकमें रखा, क्योंकि इनकी मददके बगैर दौलत और सलतनत नहीं मिल सकती।

सब पढ़े लिखे आदमियों, हकीमों, मौलवियों, शेखों, सैयदों, काजियों, शायरों सब लिखे पढ़े हुओं, पक्षों और भले आदमियोंको सआदत (नेकबखती) वालोंमें लिखा कि, इनको सङ्गतके बिना नेकबखती (सज्जनता) नहीं आ सकती।

कारखानेवालों, अच्छी सूरतवालों और गाने बजानेवाले

मुराद (मनोकामना) वाले समूहमें लगाये गये कि, इनसे सब तरहकी मुरादें हासिल होती हैं।

इसी तौरसे हफ़ते (सप्ताह) के दिन भी दौलत, सआदत और मुरादवालोंको बांटे गये थे। शनि और गुरु तो सआदतवालोंको मिले, इन दोनों दिनोंमें इल्म और इबादत (विद्या और ईश्वर आराधना) की चर्चा हुआ करती थी ; क्योंकि इबादतका स्वामी तो शनि और विद्याका बृहस्पति माना गया है।

रवि और मङ्गलको मुल्क और सिपाहकी काम हुआ करते थे और ये दोनों दिन दौलतवालोंके हिस्से में आये थे, क्योंकि रवि राज्यका और मङ्गल फौजका स्वामी है।

सोम और बुध मुरादवालोंके दिन ठहरे थे, इन दोनों दिनोंमें मुसाहिबों और सलाहकारोंसे बातें हुआ करती थीं, किस लिये कि चन्द्रमा और बुध कोशों और कारखानोंके मालिक हैं।

रहा शुक्रवार सो ये सबकी शामिलातमें था, इस दिन सभी लोगोंको बादशाहसे फायदा पहुंचता था।

बादशाहने और भी कई नये कानून निकाले थे, जिनमें एक यह भी था कि, दरबारके दिनोंमें जब बादशाह आकर तखतपर बैठते थे, तो नक्कारे बजाकर लोगोंको खबर दे दी जाती और जब उठते थे, तो बन्दूकें छोड़ी जाती थीं। कपकीराकची (तोशे-खानेवाले) कपड़ोंके कई जोड़े और खजानची कई तोड़े रुपयों-के लिये रहते थे, सो जिस किसीको दिलाना हो तो उसी वक्त मिल जावे। ऐसे ही कुछ सिपाही भी बकतर पहने हुए घोड़ोंपर खड़े रहते थे। दूसरे सोनेके ३ तीर भी तैयार रहते थे, जिनके नाम भी दौलत, सआदत और मुराद रखे गये थे। जिसको जिस सीगेका काम मिलता था, उसी सीगेके नामका तीर भी उस-को दिया जाता था। वह जबतक अच्छा काम करता था, वह तीर उसके पास रहता था, बुरा काम करनेपर छिना जाता था और सजा भी मिलती थी।

मीर आखूंद मीर सुवरख (हतिहासविज्ञांके नायक)

कानून हुमायूंनीमें लिखा है कि, जब मैं नौकर हुआ तो सआदतका तीर मौलाना मोहम्मद फरगलीको मिला हुआ था और सैयदों, शेखों, मौलवियों, काजियों, पढ़ानेवालों, मुफतियोंके काम और इन लोगोंको नौकर रखने दूर करने वजीफा और जागीर दिलानेके अखतियार सब उसको हासिल थे। दौलतका तीर अमीर हिन्दूबेगके पास था। बड़े अमीरों, बड़े वजीरों, सब मुतसद्दियों, सिपाहियों, दरगाहके नौकरों और तनखाहों और दरजों वगैरेके काम उससे जिम्मे थे। मुरादका तीर और कारखानोंका काम अमीरवैसीको दिया था, सब कारखानों और बादशाही ठाटबाटके काम वही करता था।

बारह तरहके और भी तीर थे, जिनपर सब लोगोंके दरजे रखे गये। बारहवां तीर, जो खालिस सोनेका था, बादशाहके तरकशमें रहता था। ग्यारहवां तीर भाइयों, रिश्तेदारों और सब शाहजादोंके नामका था, जो नौकर थे। दसवां तीर सैयदों और शेखों, नवां बड़े अमीरों, आठवां सब मुसाहिबों और मनसब पाये हुए पचकियों (सरदारों), सातवां सब सरदारों, छठा कौमोंके मुखियों, पांचवां बहादुर इक्का जवानों, चौथा फोतेदारों, तीसरा जिरगे (बिरादरी) के जवानों, दूसरा शागिर्द पेशेवालों और पहला दरबानों पहरेवालों वगैराका था।

बादशाहोंके कामोंको चार तत्वों अर्थात् अग्नि, वायु, जल और पृथ्वीके नामोंपर बांट रखा था और चारों सरकारोंके वास्ते चार दिन लगाये हुए थे।

तोपखाने, सिलहखाने और लड़ाईके सब हथियार, जो आगसे सम्बन्ध रखते थे, अग्नितत्वके नामसे ख्वाजा अबुल मालिकको दिये हुए थे।

करकारावखाना, बावरचीखाना, तबेला, शुतरखाना वगैराको हवाई सरकार कहते थे, इसको अफसरी ख्वाजा अब्दुललतीफको दी थी।

शरबतखाने शोषोखाने और नहरों वगैरोंके काम जलतत्वकी सरकारमें थे, इसका वजीर ख़्वाजा हसन था।

खेती, इमारत, खालसा और कुछ कारखाने खाकी सरकार कहलाते थे, जो ख़्वाजा जलालुद्दीन मिरजाबेगको सौंपी हुई थी।

हरेक सरकारमें एक अमीर लगाया हुआ था, जैसे कि, अग्नि तत्त्वकामीर सरकार अमीर नासिर कुली था, जो हमेशा लाल कपड़े पहना करता।

कई चीजें भी आपने नयी नयी तरकीबोंसे बनायी थीं, जिनमेंसे एक बिछौना बिसात निशातके नामसे था, जिसमें कई मण्डलतत्त्वों और आकाशोंके हिसाबसे काटे गये थे और उनके रङ्ग भी तत्त्वों और ग्रहोंके मवाफिक किये गये थे, जैसे पहले मण्डलका सफेद, दूसरेका नीला, तीसरेका काला, चौथेका सन्दलिया, पांचवेंका लाल, छठेका सुनहरा, सातवेंका हरा, आठवेंका सोसनी और नवेंका भी सफेद था। नवें मण्डलके पीछे, जो चन्द्रमाका था, अग्नि और वायुके मण्डल भी बने थे। सातों अकलीम (सप्तखण्ड) के आकार भी दिखाये गये थे।

बादशाह आप तो सुनहरे मण्डलमें तख़्त लगाकर बैठते थे और बाकी दरबारी, जो जिस ग्रहसे सम्बन्ध रखते थे, उसी मण्डलमें बैठाये जाते थे,—जैसे हिन्दुस्थानी अमीर शनिके मण्डलमें, क्योंकि हिन्दुस्थानका स्वामी शनि है। सैयद और मौलवी बृहस्पतिके मण्डलमें बैठाये जाते थे। जिसको मण्डलका हुक्म होता, तो उससे पांसे भी डलवाये जाते थे, जिनमें खड़े और बैठे आदमियोंकी तसवीरें बनी थीं। जिस आदमीके हाथसे जिस ढंगकी तसवीर पांसेमें पड़ती थी, उसको वही ढंग बरतना पड़ता था, जैसे खड़ी तसवीर निकलती, तो खड़ा रहता और बैठी होती तो बैठ जाता और जो झुकी हुई होती, तो तकमा लगा लेता और ये चीजको लाते था।

बादशाह कपड़े भी हर रोज उसी रंगके पहनते थे, जो उस दिनके स्वामीका है, जैसे रविवारको सुनहरे, क्योंकि यह वार सूरजका है, सोमवारको हरे जो चन्द्रमाका रङ्ग है।

ऐसे ही एक डेरा भी बनाया था, जिसके १२ हिस्से १२ राशियोंके नामसे थे और उनमें जालियां लगी थीं, जिनमें होकर ग्रहोंका उजास पड़ता था। इन सबके ऊपर एक बड़ा डेरा आकाशके समान था, जो इन सबको घेरे रहता था और जिसमें कोई जाली नहीं थी।

जमनामें चार चार महराबों और दो दो खण्डोंकी चार नावें ऐसी बनवायी थीं और उनको ऐसी कारीगरीसे जोड़ा था कि, चारों महराबें एक दूसरेके सामने आ गयीं थीं और बीचमें अठपहलू होज बन गया था।

नावोंमें दूकानें और बाजार भी बनवाये थे, जिनको देख देखकर लोग अचम्भेमें रह जाते थे। सन् ९३८ में बादशाह अकसर अमीरों सब सरदारों और दरबारियोंके साथ नावोंमें बैठकर दिल्ली-के फिरोजाबादसे आगरेको आये थे, तो जमनापर एक सजा हुआ बाजार चलता था, जो आदमी जो चीज चाहता था उसमेंसे खरीद लेता था।

इसी तरह बादशाही बागबानोंने भी बादशाहके हुक्मसे पानी-पर बाग लगा रखा था।

ऐसे ही एक चलता हुआ महल भी तीन खण्डका था, जो लकड़ीका बनाया गया था और उसके टुकड़ोंको इस तौरसे जोड़ा था कि, जो देखता था, एक ही जोड़का जानता था; मगर ऐसा नहीं था, जब चाहते थे, खोल लेते थे और जिस बलायतमें चाहते ले जाते थे। उसपर चढ़नेका जीना भी वैसा ही लकड़ोंमें काट-कर बनाया गया था, जो काम पड़नेपर खुल भी जाता था और बन्द भी हो जाता था।

एक बड़ा नक्कारा इनसाफका था, जो किसी फरयादीको किसी झगड़ा हो जाता, तो १ डङ्का उसपर मारता, तनखाह वसूल नहीं होनेकी फरयाद हो तो २ डङ्के और जो किसीने उसका माल असबाब छीन लिया हो तो ३ डङ्के और जो खूनका दावा हो तो ४ डङ्के मारकर बजा देता था।

और भी ऐसी बहुत बातें (१) थीं।

इति।

---

(१) ऐसी बातोंका हुमायूंनामेमें मीर सोअम्माईने बहुत हाल लिखा है।